नुक्रमणिका

महारा जगत्सिंह दूसरे,

बारहवां प्र - १२१७ - १५३४

महाराणा की गद्दी, मरहटों का जोर घटाने के लिए राजपूतानह की रि में इत्तिफाक़, और मरहटों से मालवे की बाबत ख़ाबत १२१७ - १२२०

हुरड़ा मक़ामपर उदय जयपुर, जोधपुर व कोटा, बूंदी वगैरह के राजाओं त्र होकर आपस में अहदनामह करना १२२० - १२२१

महाराणा की शह पर चढ़ाई, और महाराजा जयसिंह के पोलिटिकल वि १२२१ - १२२२

पेश्वा का उदयपु ना, महाराजा अभयसिंह का बर्ताव, और शाहपुरा के राउम्मेदसिंह के नाम उनके वकील की अर्ज़ी १२२२ - १२२३

राजपूतानह की नाइत्तिफ़ाकी, और सलूंबर रावत् की अर्ज़ी महाराणा के। १२२४ - १२२६

मेवाड़ के सर्दार वगैरह नाइत्तिफ़ाकी, और महाराणा व कुंवर प्रतापसिंह कवरोध १२२६ - १२२७

बनेड़ा की जागीर का १२२८ - १२२६

महाराजा अभयसिंह का महाराजा जयसिंह के नाम, और जयसिंह का पुरे ख़ाली करना १२२६ - १२३०

महाराणा जयपुर फौजकशी १२३० - १२३१

जयपुर की ज्यगद्दी बाबत माधवसिंह का झगड़ा १२३१ - १२३२

सलूंबर रा कुंवरसिंह कागज महाराणा के काका बख़्तसिंह नाम १२३२ - १२३३

जगन्निवा महल बनना, और उसका उत्सव १२३३ - १२३५

एक सद मुचल महाराणा के नाम १२३५ - १२३६

महाराणा की फौ के साथ जयपुर वालों की लड़ाई, और माधवसिंह को राजतिलक १२३६ - १२४१

विषय.	पृष्ठांक.
फूलियाकी जागीरके ल, और सीसोदियोंकी जार्ग पर्वानह	१२४१ – १२४४
महाराणाका देहान्त	१२४५ – ०
जयपुरकी तवारीख	१२४६ – १३५४
जुग्राफ़ियह ...	१२४६ – १२६७
जयपुरके प्राचीन राजाओंका संक्षि र्णन, और उनकी ग नीके संवत् राजा पृथ्वी तक	१२६७ – १२७२
पृथ्वीराजसे भार- मल्ल तकका	१२७२ – १२७७
राजा भगवा नान- सिंह, औ राजा भावसिंह	१२७८ – १२८७
मिर्ज़ा रा सिंह अव्वल	१२८७ – १२९५
महाराज व्वल, विष्णुसि वाई जयसिंह	१२९५ – १३००
महाराज सिंह, माधव और पृथ्वीसिंह	१३०० – १३०६
महाराजा पसिंह, जगतसिंह यसिंह तीसरे	१३०६ – १३२०
महाराजा दूसरे	१३२० – १३३७
महाराजा ह दूसरे, और ... वहत ार सर्दार	१३३७ – १३४०
अंग्रेज़ीके साथ ामे	१३४० – १३५४
तवारीख़	१३५५ – १४०४
फ़ियह	१३५५ – १३७४
नरूकोंका प्राचीन इतिहास	१३७४ – १३७६
रावराजा प्रतापसिंह	१३७६ – १३७९
महारावराजा बख़्तावरसिंह	१३७९ – १३८१
महारावराजा विनयसिंह	१३८१ – १३८६
महारावराजा शिवदानसिंह	१३८६ – १३९३
महाराजा मंगलसिंह	१३९३ – १३९४
अलवरके जागीरदार सर्दारोंका हाल	१३९४ – १३९७
गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीके साथ अह्दनामे	१३९८ – १४०४
कोटाकी तवारीख़	१४०५ – १४५२
जुग्राफ़ियह	१४०५ – १४०६
माधवसिंहसे लेकर महाराव किशोरसिंह तक ४ राजाओंका हाल	१४०७ – १४१२
राव रामसिंह व महाराव भीमसिंह	१४१२ – १४१६
महाराव अर्जुनसिंह, दुर्जनशाल, और अजीत सिंह	१४१६ – १४१८
महाराव शत्रुशाल अव्वल, और गुमानसिंह	१४१८ – १४१९
महाराव उम्मेदसिंह, और किशोरसिंह	१४२० – १४२५
महाराव रामसिंह दूसरे	१४२५ – १४२७
महाराव शत्रुशाल दूसरे, और वर्तमान महाराव उम्मेदसिंह	१४२८ – १४३६

इनका राज्याभिषेक विक्रमी १७९० माघ कृष्ण १३ [हि० ११४६ ता० २७ शअ्बान = ई० १७३४ ता० २ फ़ेब्रुअरी] को, और राज्याभिषेकोत्सव विक्रमी १७९१ ज्येष्ठ शुक्ल १३ [हि० ११४७ ता० १२ मुहर्रम = ई० १७३४ ता० १५ जून] को हुआ; लेकिन् राज्याभिषेकोत्सवके पहिले ही इनको मरहटोंके बारेमें फ़िक्र होचुकी थी, क्यौं-कि महाराणा अमरसिंह दूसरेके वक्में पीपलियाके ठाकुर शक्तावत बाघसिंहको मरहटोंके पास बतौर एल्चीके भेजा गया था, जिसको साहू राजाने बड़ी ख़ातिरके साथ रक्खा. महाराणाको सितारांके राजा, अपना मुरब्बी जानते रहे; लेकिन् फिर साहू राजाके नौकर पेश्वा, हुल्कर, सेंधिया, व गायकवाड़ वगैरह बख़िलाफ़ व ज़बर्दस्त होगये. महाराणा संग्रामसिंहने मल्हार राव हुल्करके साले नारायण रावको बूढ़ाका पर्गनह जागीरमें दिया था; जब मल्हार राव हुल्कर महारा रहगया, तब उसकी मा उसको अपने भाई नारायण रावके पास लेगई, जो खौर उक्त महूड़ा ज़मींदार था; नारायण रावके एक

बेटा और एक बेटी थी; बेटेका नाम बापके नामपर ही नारायण राव हुआ, और बेटीका नाम गौतमा बाई था, जो दक्षिणियोंकी रीतिके अनुसार मल्हार रावको ब्याह दी गई. यह नारायण राव, महाराणा उदयपुरका नौकर बना. इस सबबसे कि मरहटोंकी उन दिनोंमें बहुत कुछ तरक़्क़ी होगई थी, और सिताराके सम्बन्धसे महाराणाको वे लोग अपना सर्परस्त जानते थे, यह जागीर नारायण रावको मिली.

नारायण राव कुछ दिनों बाद महाराणाकी ख़िद्मत छोड़कर दक्षिणको चला गया, लेकिन् मरहटोंके लिहाज़से महाराणा इस जागीरकी आमदनी हमेशह उसके पास पहुंचाते रहे. इस तरहका इत्तिफ़ाक़ मरहटोंका पेश्तरसे मेवाड़के साथ था; अब इस वक्त मुहम्मद शाहकी बादशाहतमें ज़ोफ़ आगया, तो उनके नौकर आपसकी फूटसे एक दूसरेके ग़ारत करनेके लिये मरहटोंको उभारते थे; यहां तक कि नर्मदा उतर कर मालवामें वे लोग हमलह करने लगे. महाराणा जगत्सिंह २ को भी इस समय बहुतसे विचार करने पड़े; अव्वल यह कि बादशाहतका ज़ोफ़ है, इस समय मुल्क बढ़ाना चाहिये; दूसरा यह कि मालवापर मरहटे मुख़्तार होगये, तो मेवाड़के पड़ोसी होकर हमेशह दंगा फ़साद करेंगे; इस वास्ते कुल राजपूतानहके राजा एक मत होकर मालवापर क़ब्ज़ह करलेवें, तो उम्दह है. आंबेरके महाराजा सवाई जयसिंहको भी यह बात अपेक्षित थी. विक्रमी १७६५ [हि० ११२० = ई० १७०८] के अहृदनामहसे महाराणाके छोटे बेटे माधवसिंह, जयपुरकी गद्दीका दावा करनेका हक़ रखते थे, जिससे उनके बड़े बेटे ईश्वरीसिंहका दरजह ख़ारिज होता था. महाराजाका ख़याल था, कि अगर मालवाका कुछ हिस्सह भी हाथ लगे, तो माधवसिंहके लिये रामपुरेकी जागीरके शामिल करके बड़ी रियासत बना दीजावे. जोधपुरके महाराजा अभयसिंहको यह लालच था, कि मरहटोंको इधरसे दबादिया जावे, तो गुजरातको मारवाड़में मिलानेसे बड़ी रियासत बनजावे.

इन सबबोंसे तीन रियासतोंका एक इरादह होगया, कि मरहटोंके बर्ख़िलाफ़ कार्रवाई कीजावे; कोटा, बूंदी, करौली, शिवपुर, नागौर, और कृष्णगढ़के, छोटे बड़े राजाओंने भी अपना मत्लब सोचकर महाराणाके शरीक होना चाहा. सब लोगोंने इस कामका सर्गिरोह महाराणा जगत्सिंह २ को ख़याल किया; क्योंकि टूटी कमान दोनों तरफ़ डराती है. दूसरे राजाओंको बिदून बादशाही हुक्मके कोई कार्रवाई करनेमें ख़ौफ़ था. अब यह विचार हुआ, कि सब राजा किस जगह इकट्ठे होकर इस बातका अहृद व पैमान करें; तब वकीलोंकी मारिफ़त यह बात क़रार पाई, कि मेवाड़की हदपर यह बड़ी कौन्सिल इकट्ठी हो. मरहटोंको निकालनेके लिये पहिले कुछ हिक्मत अमली कीगई, कि मालवा ख़ाली करदेनेके वास्ते पांच लाख रुपये उनको दियेगये, जैसा कि नीचे लिखे हुए दोनों काग़ज़ोंसे ज़ाहिर होगा.

कागज़ पहिला,

महाराणाके धव्वा राव नगराजका.

सीध श्री जथा सुभसुथाने सरबओपमा राज श्रीमलारजी राज श्री राणुजी राज श्री अणन्द रावजी जोग्य, विजेलसकर थे धायभाईजी श्री राव नगराजजी लीखावतु जुहार बांचजो जी, अठारा स्माचार भला है, राजरा सदा भला चाहजे जी, अप्रंच- सुबा मालवारा काम बाबत रुपीया पाच लाखरी श्री म्हाराज थे, म्हे नीस्यां लीवी है, सो तीरी वीगत देणारी तफसील-

३०००००) अखरै तीन लाख तो थारी सारी फ़ौज गुजरातकी हदमै जाय पोहता, देणा सो या कबज म्हारी पाछी लीया नीस्या करनी.

२०००००) अंके दोय लाष मास १ एकमै देणा, ती मधै पींडत चिमना जी मालवारा सुबामै थी काट लेवेगा; तथा उजाड़ बीगाड़ नुकसान करैगा, सो ईणा रुपयामैं भरे लीवायगो.

५०००००) अंके पाच लाख.

मालवारा सुबामै चीमनाजी उजाड़ बीगाड़ करेगा, तो ईणा रुप्यामै भरे लेवारो श्री महाराजा धीराज म्हा तीरे लीखो कराय लीयो है; सो मुवाफ़िक़ करारके चालेगा; आपसका बोहारमें कांई खत(रो) न आवे, सो कीजो. म्हें ईत्री बात कीधी है, सो एक थाका भाईचारा वासते करनी पडे है. मी० चैत वदी ९ सं० १७८९ सदर हु रुपयामे वसूल रुपीया ३००००० तीन लाख पोंहचा. मि० चैत सुद १३ सं० १७९०

ऊपरके कागज़का जवाब.
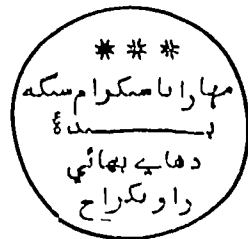
सिध श्री सर्व उपमा जोग्य, राज श्री धायभाई राव नगराजी एतान, लीखायत राज श्री मलार राव होलकर व राणोजी सींदे व अनंद राव पंवार केन राम राम वंचणा; अठाका समाचार भला छे, राजरा सदा भलाई चाहीजे जी, अप्रंच- रुपीया पांच लाख नगदी बाबत सुबे मालवा तीमे रुपीया दोय लाख बाकी था, सो बापुजी प्रभुके साथ मेल्या, सो पोंहचा; जुमले पांच लाख रुपीया पोहचा; घणो कांई लिखां. मिती जेठ सुध २ संमत १७९०

मुहर.

यह ऊपर लिखेहुए रुपये महाराणाके धायभाई नगराजने जयपुरके महाराजा सवाई जयसिंहकी तरफ़से भेजे थे, और उक्त महाराजाने यह खर्च बादशाही खज़ानहसे

लिया था; लेकिन् मरहटे उक्त रुपये लेनेपर भी मालवाको छोड़ना नहीं चाहते थे; तब महाराणाने अपनी राजकुमारी ब्रजकुंवर बाईका विवाह कोटाके महाराव दुर्जन-शालके साथ विक्रमी १७९१ आषाढ़ कृष्ण ९ [हि० ११४७ ता० २३ मुहर्रम = ई० १७३४ ता० २६ जून] को करदिया, और आप मए महारावके उदयपुरसे रवानह होकर मेवाड़की उत्तरी हृदपर हुरड़ा गांवमें पहुंचे; उसी जगह महाराजा सवाई जयसिंह भी आ गये; इसी तरह जोधपुरके महाराजा अभयसिंह, नागौरके राजा बख़्तसिंह, बूंदीके रावराजा दलेलसिंह, क़रौलीके राजा गोपालपाल व बीकानेर, कृष्णगढ़ वग़ैरह के छोटे बड़े राजपूतानहके राजा लोग महाराणासे आ मिले. इस वक्त महाराणाके लाल डेरे देखकर जोधपुरके महाराजा अभयसिंहने भी अपने लिये लाल रंगका डेरा खड़ा करवाया; ख़बरनवीसोंने यह बात मुहम्मद शाहको लिख भेजी; बादशाहने जोधपुरके वकीलको बुलाकर पूछा, वकील होश्यार आदमी था, जिसने अ़र्ज़ की, कि बादशाहत का बन्दोबस्त करनेको सब राजा इकठ्ठे हुए, लेकिन् सलाह करनेके लिये एक दूसरे के डेरेपर नहीं जा सक्ता था, इसलिये महाराजाने बादशाही दीवानखानह खड़ा करवाया, जिसमें सब राजा बैठकर सलाह करें. यह सुनकर बादशाह खुश हुआ.

हुरड़ाके मक़ामपर सब राजाओंकी सलाहके मुवाफ़िक़ एक अ़ह्दनामह लिखा-गया, जिसकी नक़ल नीचे लिखी जाती है :-

सीरदारांरो लीखतरो.

॥ श्री ॥

स्वस्ती श्री सारा सीरदार भेला होय या सल्हा ठेरावी, सो ईणां बातां मांहे तफ़ावत न होय. सं० १७९१ सांवण वदी १३ मुकाम गाम हुरड़े. वीगत-

१ सारांरी एक बात, भलाही बुराही मांहें सारा तफ़ावत न करे, जणीरा सुह सपत कीया, धरम करम थी रेवे, सुख सारांरी लाज गाल एक जणी सारी बात.

१ हराम पोर कोई कणीरो राखवा पावे नहीं.

१ बाद बरसात कास उपज्यां रामपुरे सारा सीरदार जमीत सुदी भेला व्हे, कोई सरीर रे सवब न आवे तो डीलरी वदली कुंवर तथा भाई आवे.

१ जणी कुमरा लोग मांहे चुक बांक थे सीरदार चुकावे, पण और दखल न करे.
१ काम नवो उपजे, तो सारा भेला होय चुकावे- सं० १७९१ वर्षे.
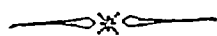
इसके बाद महाराणा जगत्सिंह राजधानी उदयपुरको आये, और दूसरे राजा अपनी अपनी रियासतोंको पीछे गये, इस शर्तपर कि बाद बर्सातके कार्रवाई कीजावे. बूंदीकी तवारीख़ वंशभास्करमें मिश्रण सूर्यमल्लने हुरड़ामें उक्त राजाओंका इकट्ठा होना कार्तिक महीनेमें लिखा है; लेकिन् यह नहीं होसक्ता, क्योंकि हमने अस्ल अ़हदनामहकी जो नक़्ल ऊपर लिखी है, उसकी मिती देखलेना चाहिये. इस सलाहका फल, जैसा कि चाहिये था, न हुआ; क्योंकि महाराणा जगत्सिंह तो ऐ़श व इ़श्रतको ज़ियादह चाहते थे, और उनके सर्दारोंमें आपसका रंज बढ़ता जाता था, इसपर भी भान्जे माधवसिंहका फ़साद इस रियासतमें ऐसा घुसा, कि जिससे दिन ब दिन कम्ज़ोरी बढ़ती गई.

विक्रमी १७९२ पौष [हि० ११४८ .शअ़्बान = ई० १७३५ डिसेम्बर] में महाराणाने शाहपुरापर चढ़ाई की. इसके कई सबब थे, अव्वल वहांके महाराज उम्मेदसिंहने, जिसको महाराणा संग्रामसिंहने कई दफ़ा धमकाया था, इस समय उक्त महाराणाका परलोक वास होनेसे सर्कशी इख़्तियार की, और मेवाड़के दूसरे जागीरदारोंको तक्लीफ़ देने लगा. महाराणाके समझानेका कुछ असर न हुआ, तब महाराणाने बड़ी फ़ौजके साथ शाहपुराको जा घेरा. यह ख़बर सुनकर जयपुरसे महाराजा जयसिंहने भी महाराणाकी मददके लिये कूच किया. यह मुआ़मलह ऐसा न था, कि जयपुरकी मदद दर्कार हो, लेकिन् महाराजा सवाई जयसिंहका यह इरादह था, कि शाहपुरा उम्मेदसिंहसे छीनकर माधवसिंहको दिलादिया जावे, जिसको महाराणा भी मंज़ूर करेंगे. इसमें पेच यह था, कि रामपुरा तो महाराणासे माधवसिंहको दिलाया गया, और शाहपुरा फिर दिलाकर रामपुरासे इ़लाक़ह मिला लिया जावे. इस बड़े इ़लाक़हके एक होजानेसे जयपुर तक कछवाहोंका राज्य एक होगा, और कोटा व बूंदीके राजाओंको भी अपने राज्यके शामिल करलेवेंगे, जिस तरह शैखावतोंको मातहत करलिया था. इन दिनों महाराजा जयसिंहका इरादह मालवाको तह़तमें करनेका कम होगया था, क्योंकि उधर मरहटे ग़ालिब थे, इसलिये यह पेच उठाया गया, कि रामपुरा तक जयपुरकी हद बढ़ाई जावे. यह बात बेगूंके रावत् देवीसिंहके कान तक पहुंच गई थी, जो महाराजा सवाई जयसिंहका मुख़ालिफ़ और मेवाड़का ताक़तवर सर्दार था; वह फ़ज्रमें महाराणाके पास गया, और एक कबूतर उनके साम्हने छोड़ दिया, जिसका एक तरफ़का पर तोड़ा हुआ था; वह कबूतर उड़ना चाहता था, और गिरजाता. महाराणाने पूछा, तो देवीसिंहने कहा, कि यही हाल मेवाड़का है, जिसका एक पर

सलूंबर और दूसरा शाहपुराको जानना चहिये; फिर सवाई जयसिंहकी दग़ाबाज़ीका सब हाल भी कह सुनाया. रावत् देवीसिंहकी मारिफ़त राजा उम्मेद्सिंह महाराणाकी ख़िद्मतमें हाज़िर होगया इससे महाराणाने एक लाख रुपया फ़ौज ख़र्च लेकर शाहपुरासे घेरा उठालिया. यह ख़बर सुनकर महाराजा सवाई जयसिंह पीछे लौट गये.

इन्हीं दिनोंमें मुहम्मदशाहने मालवाकी सूबहदारी बाजीराव पेश्वाके नाम लिख-भेजी, महाराणाने भी मरहटोंसे मिलकर अपना मत्लब निकालना चाहा; और बावा तख़्तसिंह, महाराणा जयसिंहोतको भेजकर पेश्वाको उदयपुर बुलाया. उसने चंपाबाग़के पास डेरा किया. मुलाक़ातके बारेमें उससे कहा गया, कि तुम सिताराके नौकर हो, और उदयपुरकी गद्दीपर सिताराका राजा भी नहीं बैठ सक्ता, इसलिये ख़ास प्रधानकी बराबर तुम्हारी इ़ज़्ज़त की जायगी. तब पेश्वाने कहा, कि मैं ब्राह्मण हूं, इसलिये कुछ इ़ज़्ज़त बढ़ाना चाहिये. इस बातको महाराणाने मन्ज़ूर करके अपनी गद्दीके साम्हने दो गदेले रखवा दिये, एक पर बाजीराव पेश्वा और दूसरे पर महाराणाका पुरोहित बिठाया गया. बात चीत होनेमें यह क़रार पाया, कि मरहटे लोग महाराणाको साहू राजाकी जगह अपना मालिक जानकर हुक्मकी तामील करते रहेंगे. वंशभास्कर में सूर्यमल्लने लिखा है, कि पेश्वाको जगमन्दिर देखनेके लिये बुलाया, तब लोगोंने उसके दिलपर दग़ाबाज़ीका शक डाला, जिसपर वह बहुत नाराज़ हुआ, और महाराणाने पांच लाख रुपया देकर पीछा छुड़ाया; परन्तु यह बात हमको लिखी हुई अथवा जनश्रुतिसे दूसरी जगह नहीं मिली. उसी दिनसे उदयपुरका राज्य पुरोहित महाराणाके साम्हने आसनपर बैठता है. पेश्वा विदा होकर जयपुरकी तरफ़ चला गया, और उसने दिल्ली तक लूट मार मचाई, जिसका हाल महाराणा संग्रामसिंह २ के बयानमें लिखा गया है.

शाहपुराके राजा उम्मेद्सिंहने जयपुरके महाराजा सवाई जयसिंहकी दग़ाबाज़ीका हाल जानने बाद जोधपुरके महाराजा अभयसिंहसे स्नेह बढ़ाया. महाराजा अभयसिंहने उम्मेद्सिंहकी मदद की, उसके कई कारण थे, अव्वल महाराजा जयसिंहसे दिली अ़दावत, दूसरा ज़िले अजमेरके राठौड़ जागीरदार जोधपुरके मातहत होगये थे, और अभयसिंह भी उसे अपना समझते थे, इस सबब सावरके ठाकुर इन्द्रसिंहको महाराणा जगत्सिंह तो अपना मातह्त ख़याल करते, और अभयसिंह अपनी मातहतीमें लेना चाहते थे, जिससे उम्मेद्सिंहको अपनी तरफ़ करलेना मुफ़ीद जाना. विक्रमी १७९४ [हि० ११५० = ई० १७३७] में अभयसिंह उम्मेद्सिंहको अपने साथ दिल्ली लेगये, और मुहम्मदशाहसे उनके बाप राजा भारथसिंहके एवज़ ख़िल्अ़त व राजाका ख़िताब दस्तूरके मुवाफ़िक़ दिलाया. फिर नादिरशाह ईरानीने

हिन्दुस्तानपर चढ़ाई की, जिसका मुफ़स्सल हाल ऊपर लिखागया. उस लड़ाईमें शरीक होनेके लिये महाराजा जयसिंह व अभयसिंहको मुहम्मदशाहने फ़र्मान भेजा, लेकिन् दोनोंने टाल दिया. इस बारेमें एक काग़ज़की नक़्ल, जो शाहपुरासे आई, हम नीचे दर्ज करते हैं:-

शाहपुराके राजा उम्मेदसिंहके नाम, मेड़तासे उनके

वकील गुलाबका काग़ज़.

अपरंच. अठे इसी बात हुई छै. बादशाह बुलाया, महाराजा अभयसिंहजीने तथा जयपुर जयसिंहजीने. जब या दोनों राजावां सलाहकर बादशाहजीके नामें अरजी लिखी, अभयसिंहजी तो महाराज जयसिंहजीका माणसांने गढ़ रणथम्भोर बखशे, और पचास लाख रुपया खर्चीका बखशे. जीसूं जयसिंहजीने लेर हजूर आऊं; और महाराज जयसिंहजी अरज लिखी. सो महाराज अभयसिंहजीको गुजरातका तो सूबा बखशे, और पचास लाख रुपया खरचीका बखशजे, जो महाराजा अभयसिंहजीने लेर हुजूर आऊं. ई तरां दोनो राजावां ऊपर लिखी हुई बातां लिखी छै; और महाराज अभयसिंहजीके और महाराज जयसिंहजीके मुलाकात होवाकी बहुत ताकीद होरही छै; मगर श्री दिवाणजीको लिख्यो आयो है, सो बस्तपंचमीने आय मिलस्यां. सो जाणबासे तो बस्तपंचमीने तीनो राजावांकी मुलाकात होसी.

सेखावत सार्दूलसिंहजी ऊपर महाराज जयसिंहजीकी फ़ौज गई छी, अर अठी सूं बख्तसिंहजीकी फ़ौज सार्दूलसिंहजीकी मदद गई छी; सो महाराज जयसिंहजीको लिख्यो अठे महाराजके नाम आयो छो, जींमें लिखी छी, के या फौज महाराजका हुक्म सूं गई छै, या बखतसिंहजी मोखली छै; और फ़ौज बखतसिंहजी ही मोखली होय, तो म्हाने लिख्यो आजावे; सो बखतसिंहजी सूं नागोरका परगणां सूं समझल्यां; और श्री हजूरसु या भी मालूम होय, सो पहली भणायका मुकाता तावे अरज लिखी छी, जींको जवाब अब तक इनायत हुवो नहीं, सो जाणवामें आवे छै, सो श्री हुजूरकी सलाहमें आई नहीं होसी. अठे भी ई बातकी ताकीद छै, जीसूं श्री हुजूरने अरज लिखी छै; श्री हुजूरको हुक्म आ जावे, तो भणायका मुकाताकी रद बदल कर कमी वेशी कराय लेवां; और श्री हजूरको हुक्म न आवे, जद ई बातकी चरचा करां नहीं; और कंवरजी जालमसिंहजी पर श्रीमहाराज विशेष महरबान है. संवत १७९५ पौष बद १४.

दिल्लीके वादशाहोंकी दिन बदिन बर्बादी देखकर राजपूतानहके राजा और ही घड़ंत घड़ रहे थे, लेकिन् कभी ख़यालीं पुलावसे भूक नहीं जाती; आपसकी फूटने उस इच्छाको पूर्ण नहीं होने दिया. महाराजा अभयसिंहने कुछ अर्से बाद विक्रमी १७९७ वैशाख [हि० ११५३ सफ़र = ई० १७४० एप्रिल] में बीकानेरपर चढ़ाई करदी, और महाराणा जगत्सिंहके बड़े कुंवर प्रतापसिंह जोधपुर शादी करनेको गये, जो महाराजा अजीतसिंहकी बेटी सौभाग्य कुंवरके साथ शादी करके पीछे चले आये. महाराजा सवाई जयसिंहने सब राजाओंकी मददसे जोधपुरको जा घेरा; महाराणाने भी उनकी मददके लिये अपने मातह्त सर्दार सलूंबरके रावत् केसरीसिंह को जमइयतके साथ भेज दिया; महाराजा जयसिंहने सब राजाओंको, जो दम दिया था, उस बातको छोड़कर फ़ौज ख़र्च लेनेपर घेरा उठा लिया; और महाराणा जगत्सिंह भी, जो पुष्कर यात्राके बहानेसे रवानह हो चुके थे, इन सब राजाओंसे शौक़िया मुलाक़ात करके पीछे अपनी राजधानीको आये. महाराज बख़्तसिंह, महाराजा सवाई जयसिंहकी फ़िरेबी कार्रवाईसे ना ख़ुश होकर अपने भाई अभयसिंहसे मिलगये, और दोनों बड़ी फ़ौजके साथ जयपुरकी तरफ़ चले; ज़िले अजमेर गगवाणा गांवमें सवाई जयसिंहसे मुक़ाबलह हुआ, जिसमें बख़्तसिंहको भागना पड़ा, राजा उम्मेदसिंहने उनका अस्बाब मए सेवाकी हथनीके छीन लिया. इससे लड़ाईका नतीजह यह हुआ, कि अभयसिंह और बख़्तसिंहमें ज़ियादह रंज बढ़ गया. इन आपसकी ना इत्तिफ़ाक़ियोंसे हर एक आदमी मरहटोंकी मदद ढूंढने लगा, जिससे दक्षिणी ग़ालिब होकर इनपर हुकूमतका डंका बजाते थे. अगर हुरड़ा मक़ामके अह्दनामहकी तामील होती, तो राजपूतानहको ज़रूर फ़ायदह पहुंचता, लेकिन् बीकानेर व नागौरसे जोधपुरकी ना इत्तिफ़ाक़ी और जयपुरके महाराजाकी दग़ाबाज़ीसे बूंदी व कोटाकी तबाही और माधवसिंह ग़ैर हक़दारको हक़दार बनाकर अपना बड़प्पन दिखलानेमें महाराणाकी कोशिशने राजपूतानहको ऐसा धक्का दिया, कि गवर्नमेन्ट अंग्रेज़ीके अह्द तक सब दुःखसागरमें ग़ोता खाते रहे.

ईश्वर एक ढंगपर किसीको नहीं रखता, इन्हीं क्षत्रियोंके पूर्वजोंने इस भारत-वर्षका बड़प्पन चारों तरफ़ ज़ाहिर किया; फिर मुसल्मानोंने इनकी आज़ादी छीनकर अपनी हुकूमतका डंका बजाया; और थोड़े दिनों तक पहाड़ी बर्साती नालेकी तरह मरहटोंने भी अपना ज़ोर शोर बतलाया; अब गवर्नमेन्ट अंग्रेज़ीकी आईनी राज्यनीति प्रकाशित होरही है. इन बातोंके देखनेसे मनुष्यको ईश्वरकी कार्रवाइयोंपर धन्यवाद करना चाहिये. इन्हीं दिनोंमें फिर महाराणाके मातह्त उमराव सलूंबरके रावत्

कुबेरसिंहने राजपूतानहको एक मत करनेका उपाय किया, और एक ख़ानगी अर्ज़ी महाराणाके नाम लिख भेजी, जिसकी नक़्ल हम नीचे लिखते हैं:-

सलूंबर रावत् कुबेरसिंहकी अर्ज़ीकी नक़्ल.

श्रीरामजी.

समाचार ———

१ श्रीजीरो पास दसपतां रुको आयो, सो माथे चडाय लीधो राज; श्रीजी हुकम कीधो, सो कछवाहा दगापोर है, सो श्रीजी तो प्रमेसर है, ए दगापोर है, तो ईणांरो बुरो होयगो; पण केबामें तो तथा रापे नु हे, ने श्री जेसीघजीरा पटारो गनीम जुआ पाड़े, नें सुलभाड़ करे; हुं हजुर आवुंसु राज; नें नरुको हरनाथसींघ नें वीध्याधर वामणनें लेनें श्री हजुर आऊं हुं. मोने रुको मया व्हे, तो विद्याधर ने नरुका हरनाथसिंघहे लेने आऊं; जरे कांइं चींता रापो मती. ईणांरा पग आगानुं पड़े है, जणी थी रुकारो हुक्म व्हे, ने रुको १ नरुका हरनाथसीघरे नामे हुक्म व्हे, सो थारी सुफारस रावत् कुबेरसीघ लीपी, सो राजने याही जोग है; ने रुको १ वीद्याधररे नामे, सो रावत कुबेरसीघ साथे नचीत आवजो, कोई चींता रापो मती, माधोसीघजीरे वासते तो थानें रावत कुबेरसीघ समभाया ही होसी. ईसो रुको वीद्याधर वामणने लीपाय राज आपरे ने कछवाहांरे माहो माह मेल ठेराय ने हींदुस्थान ऐक करे ने गनीम तीरें थी मालवो पोसे लेणो; ने मालवारा वांटा ५ करणा, सो वांटा २ तो श्रीजीरा, ने वांटो १ राठौड़ांरो, ने वांटो १ कछवाहांरो, अर वांटो ॥ हाड़ांरो, अर वांटो ॥ मे प्रचुनी हींदु. इनी बातरा सूंह सपत हुवा हे; ने श्रीजी डेरो मनदसोर करणो, नें मुकासदारांने गनीम नरबदा ऊतरेने लुटे लेणा; ने पेहली कछवाहां लुटे ने मारे, पछें सारा ई गनीमारा मुकासदारां थीं परा पोटा व्हेणो. ईणी थाप ऊप्रे वीद्याधरहे हजुर ल्याऊं हुं राज. ऐ रुको अरजदास कठे ही जाहर नु होय राज. पींडत गोवंद थी ललो पतो होये, पण पईसा भराय नी; ने श्रीजी हजुर आवे नें पछें जायने राजाजी श्रीजी हजुर आवे, नें श्रीजी नें राजाजी भेला व्हे नें हुरड़े पधारे; नें म्हारावजी राजा अभयसींघजी तीरे जायने लावे, नें हुरड़े मीलेनें सीरदार भेलारा भेला मालवा सारु चाले राज. फागण बदी १४-

पानों दूजो.

श्रीजी हजुर मालंम व्हे राज, श्रीजी सलांमत, मालवामें मुकासा वे, सो उठावे देणा; अर श्रीजी बंट करेदे, जणीं प्रमांणे के ईसी अरज करे हे; सो श्रीजी प्रमेसर हे; पण म्हांरे माथे हाथ देनें जतन करावजे, ने ए समाचार फुटवा पावे न्हीं राज; ने म्हारावजी

पण वेगाई श्रीजी हजुर आवे हे राज, सो हकीकत म्हारावजी मालम करेगा राज; ने बुन्देला तीरे श्री द्रबाररी आड़ी थी तो व्यास रुघनाथ, ने म्हाराजरी आड़ी थी व्यास राजारामरो भाई, म्हारावजीरी आड़ी थी षांडेरावरो जमाई, बुंदेला थी वातरे वासते मोकलाय, अर माने के से जो; व्यास रुघनाथजीने मोकलो, जणी थी वीगर हुकम म्हे त्यारी कीधा हे.
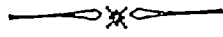
यह अर्ज़ी सलूंबरके रावत् कुबेरसिंहने जयपुरसे लिख भेजी थी, परन्तु इस सलाहका भी कोई नेक नतीजह नहीं दिखलाई दिया. कहावत है, "मनके लड्डू फीके क्यों". महाराजा सवाई जयसिंहका तो किसीको एतिबार नहीं था, जिसकी इसी काग़ज़से तस्दीक़ होती है; और महाराणाके उमरावोंमेंसे भी हर एक आपसकी फूटसे दूसरेकी कार्रवाईको बिगाड़ता था. इस ग्रन्थ कर्ताने अपने पिताकी ज़बानी सुना है, कि विक्रमी १७९७ [हि० ११५३ = ई० १७४०] में सलूंबरके रावत् केशरीसिंहके देहान्तके समय देवगढ़का रावत् जशवन्तसिंह आराम पूछनेके लिये गया, तब केशरीसिंहने अपने बेटों और रावत् जशवन्तसिंहसे कहा, कि भाई भाई आपसमें स्नेह रखना. उक्त रावत् पीछा लौटा, तब उसके आदमियोंमेंसे एकने कहा, कि केशरीसिंह मरते वक्त डरपोक होकर हमारे मालिकको अपने बेटोंकी भलामन देता है. यह बात केशरीसिंहने उसी वक्त सुन ली, और जशवन्तसिंहको पीछा बुलाकर कहा, कि मैंने वह बात मामूली तौरपर कही थी, वर्नह तुमको इष्टकी क़सम है, मेरे बेटोंके साथ अच्छी तरह दुश्मनी रखना, मेरे बेटे भी उसका बदला ब्याज समेत अदा करेंगे. जशवन्तसिंहने अपने आदमीकी बे वकूफ़ी ज़ाहिर करके बहुत लाचारी की, लेकिन् उसका गुस्सह कम न हुआ, और उसी हालतमें दम निकल गया.

जब मुसाहिबोंमें इस तरहकी अदावत हो, तो रियासतका इन्तिज़ाम कब होसक्ता है ? इसके अलावह बेगम और देवगढ़में, बेगम व सलूंबरमें, आमेट व देवगढ़में, और इन चारों चूंडावतोंके ठिकानों और भींडरमें फ़सादोंकी बुन्याद क़ाइम होगई थी; इससे ज़ियादह चहुवान व चूंडावतोंमें व झाला व चूंडावतोंमें भी बिगाड़ था; और यही हाल राजधानीके अह्लकारोंका होरहा था; कायस्थ और महाजनोंमें, और कायस्थोंके आपसमें भी ना इत्तिफ़ाक़ी फैल रही थी. इनके सिवाय गूजर धायभाई अपनेको जुदाही मुसाहिब ख़याल करते थे; यहां तक कि एक हाथीका महावत फ़त्हख़ां भी महाराणाका मुसाहिब बनगया. इतने ही पर ख़ातिमह न हुआ, महाराणा और उनके वलीअह्द प्रतापसिंहमें भी विरोध बढ़ने लगा. इस विरोधकी बुन्याद भी सर्दार व अह्लकारोंकी ना इत्तिफ़ाक़ी थी; क्योंकि महाराणाके मुसाहिबोंसे

वलीअहदके मुसाहिब और वलीअहदके मुसाहिबोंसे महाराणाके मुसाहिब डाह रखते थे. वलीअहदकी उम्र तो अठारह वर्षकी थी, लेकिन् वह बदनके बड़े मज़्बूत, ज़बर्दस्त व दीदारू थे; उनसे कुश्ती करनेकी ताक़त पहलवानोंको भी नहीं थी; जिस पत्थरके मुद्गरको वे एक हाथसे सौ सौ दफ़ा आसानीसे घुमाते थे, और जो अब खीच मन्दिरके बाहर पड़ा है, उसको बड़ा ताक़तवर पहलवान दोनों हाथोंसे एक बार नहीं घुमा सक्ता.

महाराणाको फ़िक्र हुई, कि वलीअहदको क़ैद करना चाहिये; लेकिन् उनका गिरिफ़्तार करना कठिन जानकर अपने छोटे भाई नाथसिंहको तज्वीज़ किया, जो बड़ा ज़बर्दस्त पहलवान था. नाथसिंहने महाराणासे कहा, कि मैं पहिले वलीअहदसे ताक़त आज़मा लूं; तब महाराणाके हुक्मसे खीच मन्दिर नाम महलमें दोनों चचा भतीजोंकी कुश्ती होने लगी, प्रतापसिंहने नाथसिंहको कुछ हटाया, लेकिन् दर्वाज़ेकी चौखटका सहारा पैरको लगनेसे नाथसिंहने वलीअहदको रोका, और खीच मन्दिरके दर्वाज़ेकी चौखटका मज़्बूत पत्थर टूटगया; फिर कुश्ती मौक़ूफ़ हुई. नाथसिंहने महाराणासे कहा, कि मैं वलीअहदको दग़ासे पकड़ सक्ता हूं. विक्रमी १७९९ माघ शुक्ल ३ [हि० ११५५ ता० २ ज़िल्हिज = ई० १७४३ ता० २९ जैन्युअरी] को, जब कि महाराणा कृष्णविलास महलोंमें थे, उनके इशारेसे नाथसिंहने पीछेकी तरफ़से अचानक प्रतापसिंहकी पीठपर गोड़ी लगाकर दोनों हाथ बांध दिये. यह ख़बर सुनकर शक्तावत सूरतसिंहका बेटा उम्मेदसिंह, जो वलीअहदके पास रहता था, तलवार मियानसे निकालकर ड्योढ़ीमें घुसा; किसीकी मजाल न हुई, कि उसको रोके; वह सीधा महाराणाके साम्हने आया; महाराणाके पास उसका बाप सूरतसिंह मए अपने छोटे भाईके खड़ा था; पहिले उम्मेदसिंहने अपने चचाको मारलिया, जो महाराणाकी इजाज़त से उसे रोकनेको आया था; फिर सूरतसिंह तलवार खेंचकर अपने बेटेपर चला; उम्मेदसिंहने बापके लिहाज़से कुछ सब्र किया, इसी अन्तरमें सूरतसिंहका वार होगया, जिससे उम्मेदसिंह क़त्ल होकर गिरा. महाराणाने सूरतसिंहको छातीसे लगाकर कहा, कि तुम दोनों बाप बेटोंने अच्छी तरह हक़ नमक अदा किया; बहुतसी तसल्ली दी; लेकिन् सूरतसिंहका कलेजा टूट गया, क्यौंकि उसका भाई और बेटा दोनों उसके साम्हने मरे पड़े थे. उसके एक छोटा पोता अखेसिंह रहगया, सूरतसिंह उसको लेकर अपने घर बैठ गया. महाराणाने बहुतसी तसल्ली देकर कुछ जागीर व इन्आम देना चाहा, लेकिन् उसने रंजके सबब मंजूर नहीं किया. जब कुंवर प्रतापसिंह गद्दीपर बैठे, तब उन्होंने अखेसिंहको रावत्का ख़िताब और दारूका पट्टा देकर दूसरे नम्बरके सर्दारोंमें दाख़िल किया.

रु० ४५५००० भरोती १ रु० ५२०००० री लीषत पींडत गोविंदराव श्री जीरा दरबार थी प्रगणा वणेडारी जागीरी व्रष ४ म्है रुपया ५२०००० सं० १७९६ थी सं० १७९९ असाढ़ सुद १५ अणी वीगतसु चुकावे लीया.

बीगत

रु० ५५००० हस्ते पींडत स्दासीव जमे रुपया ६६०००० मध्ये.
रु० १०००० हस्ते पींडत रामचंद.
रु० ४५५००० हस्ते पींडत गोवीदराए सं० १७९९ रा असाढ सु० १५.
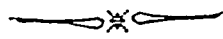
इसी मितीका एक काग़ज़ जोधपुरके महाराजा अभयसिंहका जयपुरके महाराजा सवाई जयसिंहके नाम है, जिससे मालूम होता है, कि महाराणाने इस समय भी राजपूतानहके राजाओंको एक करना चाहा था, लेकिन् इसका अंजाम कुछ भी न हुआ; उस काग़ज़की नक़्ल यह है :-

१ श्री रांमजी.

सीतारांमजी.

सीध श्री माहाराजा धीराज श्री सवाई जैसीघजी सुं मांरो मुजरो मालम होय, अप्रंच श्री दीवांणजीरा हुकमसुं आपसुं इकलास कीयो छै, सो हमे कीणी हींदु मुसलमानरा कयासुं ओर भांत नहीं करसां; इण करार वीची छै, साष श्री दीवांण छै, मीती असाढ सुद ७ वार सोम सं० १७९९.
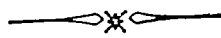
पर्गनह रामपुरा, जो भाणेज माधवसिंहको महाराणा संग्रामसिंहने जागीरमें लिखदिया था, उसका ज़िक्र महाराणा संग्रामसिंहके हालमें लिखा गया है- (देखो पृष्ठ ९७५). महाराजा जयसिंहने माधवसिंहके बहानेसे अपने आदमी भेजकर उस पर्गनेको क़ब्जेमें कर लिया था. इस वक्त महाराणाने महाराजा जयसिंहको कहला भेजा, कि दाजीराजने पर्गनह रामपुरा, भाणेज माधवसिंहको दिया था, अब माधवसिंह होश्यार होगया, इस वास्ते उक्त पर्गनह हमारे आदमियोंकी सुपुर्दगीमें होजाना चाहिये, क्यौंकि उक्त भाणेज यहां मौजूद है. अलावह इसके रामपुराके एवज़ माधवसिंहको मुक़र्रर जमइयत सहित इक़ारके मुवाफ़िक़ नौकरी देनी चाहिये; लेकिन् यह बिना आमदनीके किस तरह होसक्ता है ! इस काग़ज़के भेजनेसे महाराजा

जयसिंहने पर्गनह रामपुरासे अपना दस्ल उठा लिया, क्योंकि इस वक् महाराजा बहुत बीमार थे, जिससे किसी तरहकी चेष्टा नहीं करसके. उन्होंने अपने आदमियोंके नाम यह पर्गनह खाली करदेनेको, जो पर्वाना लिख भेजा, उसकी नक्ल नीचे लिखी जाती है:-

प्रवानो १ कछवाहा दोलतसींघरे नामे म्हाराजा श्री जेसीघजीरो तीरी नकल.

श्री रामजी.

श्री सीता रामो जयति, महाराजा धिराज सवाई जेसीघजी.

स्वस्ति श्री महाराजा धिराज महाराजा श्री सवाई जेसीघजी देव वचनात, दोलतसींघ स्यो ब्रह्म पोता दीस्ये सुप्रसाद वंच्य, अप्रंचि - प्रगनो रामपुरो इस तठा भादवा सुदी ३ संवत् १८०० सो तालक चीमना साधोसीघके कियो छै, अर बेठे अखतयार रावत कुवेरसींघजीको छै; सो वाहकी तरफ़ जो आवे, तींहने अमल दीजो. मीतीभादवावदी १४ सं० १८००. प्रवानो साह वधीचंद हे श्रीजी सोपायो सो सोप्यो संवत १८०० वर्षे सुदी ४ सोमे सोप्यो.
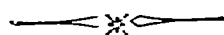
महाराजा सवाई जयसिंह इस वक् ज़ियादह बीमार न होते, तो रामपुरा वापस देनेमें भी कुछ न कुछ दग़ाबाज़ीकी बाज़ी खेलते. बूंदीका मिश्रण सूर्यमल्ल अपने ग्रन्थ वंशभास्करमें लिखता है, कि इन महाराजाने ताक़तके वास्ते धातु औषधी खाई थी, जिससे उनका तमाम बदन फूट गया, और उसकी तक्लीफ़से वह विक्रमी १८०० आश्विन शुक्ल १४ [हि० ११५६ ता० १३ शश्र्बान = ई० १७४३ ता० ३ ऑक्टोबर] को परलोक सिधारे. उनके बाद ईश्वरीसिंह गद्दीपर बैठे. यह बात सुनकर महाराणा जगत्सिंहने विक्रमी १७६५ [हि० ११२० = ई० १७०८] के अहदनामहकी शर्तके मुवाफ़िक़ माधवसिंहको जयपुरकी गद्दीपर बिठाना चाहा, लेकिन् इस बातके लिये ताक़तकी ज़ुरूरत थी, इसलिये सरहटोंसे दोस्ती बढ़ाई, और कोटेके महाराव दुर्जनसालको बुलाया. महाराव अन्नकूटके दर्शन् नाथद्वारेमें करके नाहरमगरामें महाराणाके पास पहुंचे, और उनकी सलाहके मुवाफ़िक़ फ़ौजबन्दीका हुक्म दिया गया. इस वक़ महारावकी फ़ौज भी शामिल होगई. महाराणाने नाहरमगरासे कूच करके जहाज़पुरके ज़िलेके गांव जासोलीमें मक़ाम किया. महाराजा ईश्वरीसिंह भी मुक़ाबलह करनेको अच्छी फ़ौजके साथ जयपुरसे चले, और उनके प्रधान राजामल्ल

खत्रीने हिक्मत अमली करनी चाही. महाराणाने चालीस दिन तक बनास नदीके किनारे जामोलीमें क़ियाम रक्खा, और वहांसे क़रीब पंडेर गांवमें ईश्वरीसिंह आ ठहरे. राजामल्ल खत्री महाराणाके पास आया, और कहा, कि आपको महाराव दुर्जनसालके बहकानेसे हमारी दोस्ती न तोड़ना चाहिये. तब महाराणाने राजामल्लसे कहा, कि माधवसिंहके लिये विक्रमी १७६५ [हि० ११२० = ई० १७०८] के अह्दनामहकी तामील होना ज़रूर है. इसपर राजामल्लने कहा, कि दिल्लीके बादशाह मुहम्मदशाहने हक़दार जानकर ईश्वरीसिंहको जयपुरकी गद्दीपर बिठाया है, और आपको भी बादशाहके हुक्ममें ख़लल डालनेसे फ़ायदह न होगा. इस तरहकी रद बदल होनेके बाद ५०००००) पांच लाख रुपया सालानह आमदनीका पर्गनह टौंक माधवसिंहके लिये क़रार पाया, और दोनों तरफ़के मुसाहिबोंने महाराणा व महाराजाके आपसमें मेल करा दिया. इस बातसे नाराज़ होकर महाराव दुर्जनसाल बग़ैर रुख़्सत लिये कोटा को चले गये, और महाराजा ईश्वरीसिंह भी सुलह करनेके बाद पीछे जयपुर चले गये.

महाराणाके ख़ालिसहका देवली गांव, जो सावरके ठाकुर इन्द्रसिंहने दबा लिया था, वह इस समय महाराणाने छुड़ाना चाहा; ठाकुर इन्द्रसिंह यह गांव देनेपर राज़ी होगया, परन्तु उसके कुंवर सालिमसिंहने मंजूर नहीं किया, और अच्छे अच्छे राजपूतोंके साथ देवलीकी गढ़ीमें घुसकर लड़ाई करनेको मुस्तइद हुआ. यह ख़बर सुनकर महाराणाने वीरमदेवोत राणावत बावा भारतसिंहको फ़ौज और कुछ तोपख़ानह देकर भेजा. भारथसिंहने सालिमसिंहको बहुत समझाया, लेकिन् उसने एक न माना; तब गोलन्दाज़ी होने लगी, तीन दिन तक तोपों और बन्दूक़ोंसे मुक़ाबलह हुआ, चौथे दिन सालिमसिंह बड़ी बहादुरीके साथ गढ़ीके किवाड़ खोलकर बाहर निकला. महाराणाकी फ़ौजने बड़े ज़ोर शोरके साथ हमलह किया; बहादुर सालिमसिंहने तलवार और कटारियोंसे अच्छी तरह रोका, और टुकड़े टुकड़े होकर मारागया. यह कुंवर सालिमसिंह, जिसने चन्द रोज़ पहिले विवाह किया था, शादीके कंकण भी न खोलने पाया था, और बड़ी खुशीके साथ लड़कर दूसरी दुन्यांको सिधारा. उस ज़मानेमें अक्सर ऐसे राजपूत राजपूतानहमें पाये जाते थे, जो इस नाशवान शरीरके एवज़ नामवरी को ज़ियादह पसन्द करते थे. इक्यावन आदमी महाराणाकी फ़ौजके, और सत्तरह सालिमसिंहके साथके मारेगये. बावा भारतसिंहने देवलीकी गढ़ीमें क़ब्ज़ह करलिया, और सावरका सीसोदिया ठाकुर इन्द्रसिंह भी महाराणाके पास जामोलीमें हाज़िर होगया. महाराणा अपने भान्जे माधवसिंह समेत उदयपुर आये, तो शाहपुराके राजा उम्मेदसिंहने महाराणाके पास

हाज़िर होकर तलवार बंधाईके जो ५००००) पचास हज़ार रुपये बाक़ी थे, उनमेंसे ९९२४) नक़्द और १५०००) पन्द्रह हज़ारके दो हाथी विक्रमी फाल्गुन् शुक्ल ४ [हि० ११५७ ता० ३ मुहर्रम = ई० १७४४ ता० १७ फ़ेब्रुअरी] को नज़ किये, और महाराणासे सफ़ाई हासिल करली; क्योंकि राजा उम्मेदसिंह थोड़े दिनोंसे महाराणाकी उदूल हुक्मी करने लगे थे, परन्तु इस समय जयपुरकी चढ़ाईका मौक़ा देखकर उससे बाज़ आये.

विक्रमी १८०१ [हि० ११५७ = ई० १७४४] में जयपुरके महाराजा ईश्वरीसिंह अपनी गद्दीनशीनीको मज्बूत करनेके लिये मुहम्मदशाहके पास दिल्ली पहुंचे. पीछेसे महाराणा जगत्सिंहने अपने मातहत सर्दार बावा बख़्तसिंह और रावत् कुबेरसिंहको मल्हार राव हुल्करके पास भेजा, और एक करोड़ रुपया देना मंजूर करके जयपुरकी गद्दीपर माधवसिंहको बिठलाना ठहराया. महाराणाने ढूंढाड़की तरफ़ कूच किया, तो यह ख़बर सुनकर जयपुरके उमराव सर्दार भी मुक़ाबलह करनेको आये. बूंदीका मिश्रण सूर्यमल्ल वंशभास्करमें लिखता है, कि ढूंढाड़के उमरावोंने महाराणाको धोखा देकर कहा, कि हम माधवसिंहको चाहते हैं, ईश्वरी-सिंहको गिरिफ़्तार करादेंगे. यह धोखा इसी वास्ते दिया गया था, कि दिल्लीसे राजा ईश्वरीसिंहके वापस आजाने तक लड़ाई मुल्तवी रहे. दिल्लीसे ईश्वरीसिंहके फ़ौजमें पहुंचते ही सब सर्दार उनके फ़र्मांबर्दार होगये, और जयपुरके प्रधान राजा-मल्ल खत्रीने मरहटोंको भी लालच देकर मिला लिया; एक मल्हार राव हुल्करने ईमान नहीं छोड़ा, लेकिन् दूसरे मरहटे लोग महाराणासे मुक़ाबलह करनेको तय्यार होगये; तब उनको कुछ रुपया देकर महाराणा मए माधवसिंहके उदयपुर चले आये. यह कुल बात हमने वंशभास्करसे लिखी है, मेवाड़की तवारीख़ोंमें नहीं मिली. एक काग़ज़ रावत् कुबेरसिंहका महाराणाके काका बख़्तसिंहके नामका हमको मिला है, जो उसने मक़ाम कोटा मरहटोंके लश्करमेंसे लिखा था, उसकी नक़्ल नीचे लिखी जाती है:–

काग़ज़की नक़्ल.

सिध श्री सरब उपमा जोग, महाराजा श्री बखतसिंघजी एतान, कोटाथी लखतां रावत् कुबेरसिंघजी केन मुजरो बंचजो राज, अपरंच ॥ मारे आप उप्रांत और कई बात नहीं छे राज, अप्रंच ॥ बुंदीरी लड़ाइ हुई, ने पछे छोड़े, सो समाचार तो पैलका कागदमें लख्या छा, सो पहुंचा होसी राज, ने पोस सुद १५ रवे रे दने कोटे आणे लागा राज, सो जणी दन आपाजीरे गोली लागी, तथा लड़ाई हुई सो

तो समांचार पैली लपा था राज, सो जांणा होसी जी; नै तुरत लड़ाई होवै छै राज. माह वद ८ भोमेरे दन मे कोटे आव्या राज. राजा ईशरीसीघजी सु पण कोल करार सारी बातरो लीदो जी, राजा श्री माधोसीघजीरा पटारो तथा सारा सरदारांरो एक वेवार करणो, तथा महारावजीसुं पण एक वेवार करणो. असो जतन तो ईसरीसीघजी कीदो जी; ने मे, नरुका हरनाथसीघजीने महारावजी सु मलायो छै जी; सो महारावजी पण रजावंद हुआ छे जी; सो ओ सुलुक हुवाथी माहारावजी पण दन ४ तथा ५ पाचमे नाथदवारे आवसी, श्रीजी हजूर आवसी जी. असी थाप ठैराई छै जी, वड़ी मेनत करी छै, राजामलसुं जदी सारा समाचार राजसुं कहसा जदी थे तथा श्रीजी हजूर समाचार मालम करसो, जदी आप पण रजावंद होसो जी; ने श्रीजी पण मेहरवान होसी. राजने दषण्यांसुं आरदल छे राज, सो दषणी तो १७ लप असरा मागे छे राज, ५ पांच लाष हर वरसोदा मागे छे राज, सो रदल वदल करे तो कमजाफा करे ने काम चुकावां छां राज, ने आप मने हमेसे लपे छे, सो आपरे कई काम करणो होवे, सो कीज्यो; अबे में बेगा आवां छां राज, ढील न जाणसे राज. संवत् १८०१ रा महा वदी १२

सुकरे चोडावत जोरावरसीघ.

राणावत सांमतसीघरो जोंहार वंचजो जी, चोंडावत सुजारो मुजरो वंचजो जी.
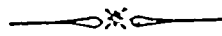
वंश भास्करमें महाराणासे मरहटोंका वदलजाना इसी वर्षके विक्रमी माघ कृष्ण पक्ष [हि० ११५७ ज़िल्हिज = ई० १७४५ जैन्युअरी] में लिखा है, और यह कागज़ भी विक्रमी माघ कृष्ण १२ [हि० ११५७ ता० २६ ज़िल्हिज = ई० १७४५ ता० ३१ जैन्युअरी] को लिखागया, जिस वक्त महाराणा उदयपुरमें मौजूद मालूम होते हैं; शायद आगे पीछे वह मुआमलह हुआ हो, तो तअ़ज्जुब नहीं. इसमें सत्तरह लाख रुपया पहिले और पांच लाख सालानह मरहटोंको देनेकी जो तह्रीर है, शायद यह बात माधवसिंहको जयपुरकी गद्दीपर बिठानेके वारेमें होगी.

विक्रमी १८०२ [हि० ११५८ = ई० १७४५] में महाराणा जगत्सिंहने अपने नामपर पीछोला तालावमें जगन्निवास नाम महल बनवाये, इस वारेमें यह मश्हूर है, कि महाराणा संग्रामसिंहसे जगत्सिंहने अ़र्ज़ किया था, कि मैं चन्द रोज़के वास्ते ज़नानह समेत जगमन्दिरोंमें जाऊं. महाराणाने इस वातको कुबूल नहीं किया, और ताना दिया, कि ऐसी मर्ज़ी हो, तो नये महल वनवाकर उनमें रहना चाहिये. उसी तानेको याद रखकर जगत्सिंहने यह महल तय्यार करवाये. इसकी नीवका मुहूर्त विक्रमी १८०० वैशाख शुक्ल १० गुरुवार [हि० ११५६ ता० ९ रबीउ़ल् अव्वल = ई० १७४३

ता० ४ मई] को हुआ, और विक्रमी १८०२ माघ शुक्ल ९ [हि० ११५९ ता० ८ मुहर्रम = ई० १७४६ ता० १ फ़ेब्रुअरी] सोमवारको वास्तू मुहूर्त किया गया. इसके उत्सवमें लाखों रुपयेका ख़र्च हुआ था, जिसकी तफ़्सील "जगत्‌विलास" ग्रन्थमें अच्छीतरह लिखी है, जो नन्दराम कविने उसी ज़मानेमें हिन्दी कवितामें बनाया था; उस ग्रन्थसे मुख़्तसर मतलब हम नीचे दर्ज करते हैं:-

यह इमारत डोडिया ठाकुर सर्दारसिंहकी निगरानीसे तय्यार हुई थी. नन्दराम कवि लिखता है, कि विक्रमी १८०२ माघ शुक्ल ९ [हि० ११५९ ता० ८ मुहर्रम = ई० १७४६ ता० १ फ़ेब्रुअरी] को वास्तू मुहूर्त हुआ, और दूसरे दिन सब ज़नानह बुलाया गया, जिसकी तफ़्सील नीचे लिखी जाती है:-

१ महाराणा अमरसिंहकी राणी दादी झाली-

१ महाराणा संग्रामसिंहकी महाराणी झाली, जिनके गर्भसे बाघसिंह और अर्जुनसिंह हुए थे.

महाराणा जगत्सिंहकी महाराणियोंके यह नाम थे:-

१- महाराणी बड़ी ईडरेची, २- महाराणी छोटी ईडरेची,
३- महाराणी राठौड़ छप्पनी, ४- महाराणी राठौड़ मेड़तणी,
५- महाराणी भटियाणी, ६- महाराणी चावड़ी,
७- महाराणी झाली, ८- महाराणी छोटी झाली
हलवदकी, जिनके गर्भसे एक कन्या और एक कुंवर अरिसिंह थे;
९- महाराणी देवड़ी,

भाणेज महाराज माधवसिंहकी राणियां:-

१- महाराणी राठौड़ ईडरेची, २- महाराणी सीसोदणी,
३- महाराणी चूंडावत, ४- महाराणी भटियाणी,

भाई नाथसिंहकी ठकुराणियां.

१- बहू बीरपुरी, २- बहू मालपुरी, ३- बहू मेड़तणी, ४- बहू बड़ी जोधपुरी, ५- बहू छोटी जोधपुरी, ६- बहू झाली.

युवराज प्रतापसिंहकी कुंवराणियां.

१- बहू भटियाणी, २- बहू हाड़ी, ३- बहू झाली. भाई बाघसिंहकी ठकुराणियां:- १- बहू भटियाणी, २- बहू छप्पनी, ३- बहू चावड़ी, ४- बहू पंवार. भाई अर्जुनसिंहकी ठकुराणी १- बहू झाली.

इनके बाद कवि नन्दरामने उन सर्दारोंके नाम लिखे हैं, जिनको महाराणाने इस उत्सवमें घोड़े दिये हैं, और उन घोड़ोंके नाम भी लिखे हैं:-

१- भाणेज माधवसिंहको, धसल्‌बाज़ कुमैत. २- चहुवान राव रामचन्द्रको हरबख़्श नीला. ३- चहुवान रावत् फ़तहसिंहको बाज़ बहादुर. ४- रावत् जशवन्तसिंहको, पतंग राज कुमैत. ५- रावत् मेघसिंहको, नीलराज नीला. ६- झाला मानसिंहको, दिलमालक महुआ. ७- चूंडावत रावत् फ़तहसिंह दुलहसिंहोतको, सियाह लक्खी बछेरा. ८- झाला राज कान्हसिंहको, प्राणप्यारा नीला. ९- रावत् पृथ्वीसिंह सारंगदेवोतको, प्राणप्यारा नीला. १०- शक्तावत महाराज कुशलसिंहको, सोनामोती. ११- शक्तावत रावत् हटीसिंहको, सुर्ख़ा. १२- महाराज तख़्तसिंहको, लालप्यारा कुमैत. १३- महाराज नाथसिंहको, पीताम्बर बख़्श कुमैत. १४- महाराज बाघसिंहको, वसन्तराज सुरंग. १५- महाराज बख़्तसिंहको, तेज बहादुर कुमैत. १६- राजा भाई सर्दारसिंहको, कल्याण कुमैत. १७- राजा उम्मेदसिंहको सूरती कुमैत. १८- डोडिया ठाकुर सर्दारसिंहको, सोवनकलस समन्द. १९- बाबा भारतसिंहको, अतिगति कुमैत. २०- राठौड़ मुहकमसिंहको, कन्हवां समन्द. २१- रावत् लालसिंहको, रत्न कुमैत. २२- चहुवान ज़ोरावरसिंहको, प्यारा सुर्ख़ा. २३- चूंडावत् रावत् जयसिंहको, हय गुमान सुरंग. २४- झाला कुंवर नाथसिंहको, रूपवन्त. २५- पुरोहित सन्तोषरामको, रणछोरपसाव. २६- प्रधान देवकरणको, चौगानबाज़ बोज रंगका. इसके सिवाय चारणोंको भी हाथी, घोड़े, कपड़े, व ज़ेवर इन्आममें दिये, तीन दिन तक बड़ा भारी जल्सह रहा.

महाराणा अव्वल जगत्सिंहने तो जगमन्दिर बनवाये थे, जो पीछोला तालाबके दक्षिणी तीरके पास हैं, और इन महाराणा याने दूसरे जगत्सिंहने जगन्निवास बनवाये, जो उत्तरी तटके क़रीब राजधानीके महलोंसे पश्चिमको हैं. ये दोनों मकाम सैरके लाइक़ पीछोला तालाबमें बने हैं, किश्तियोंमें बैठकर लोग देखनेको जाते हैं. उनके बग़ीचे, हौज़ व फ़व्वारोंको देखकर आदमीका दिल यह नहीं चाहता, कि यहांसे दूसरी जगह चलें. यह महाराणा अपने पिताकी तरह मुल्की इन्तिज़ाम भी उम्दह करना चाहते थे, लेकिन् जैसा कि चाहिये, वैसा नहीं हुआ; कुल सर्दार और उमरावोंसे मुल्की अम्नके लिये मुचल्के लिये गये थे, जिनमेंसे एक मुचल्केकी नक़्ल हम नीचे दर्ज करते हैं:-

मुचल्केकी नक़्ल.

सीध श्री श्रीजीहज़ूर, अत्रो हुकम हुवो, जणी मांहे तफावत पड़े, तो महारो

पट्टो खालसे, जणीरी अरज करवा पावे नहीं; ने कोई झूंठी सांची मालम करे तो सांच झूट काडे ओलंभो दे; इत्री वात ठैहरीः-

वगत.

पट्टा परवाणे साथ राखणो; पट्टा मांहे सदा लागत लागे है, जो देणी; पट्टामांहे चोर पासीगररो वंट ले, तो ओलंवो पावे; श्री दरवाररो चीठीवालो आवे, जणीथी बोले नहीं; भोम पंचसाइ हुकम प्रमाणे छांड देणी. सावण वद ६ रवे सं० १८०३ लखतु रावत जसूंतसींघ, ऊपरलो लिख्यो सही.
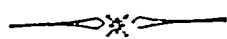
चोर डकैत और पासीगरोंको सर्दार लोग अपने पास रखकर चौथा हिस्सा लेते थे, जिसको चौथान बोलते थे. फिर वे लोग खालिसेके अथवा गैर इलाकेके बाशिन्दोंको खूब लूटते, इस बे इन्तिज़ामीके सबब ऐसे मुचल्के लिखवाये गये; लेकिन् महाराणाके ऐश व इश्रतमें ज़ियादह गिरिफ्तार होनेसे हुकूमतमें भी ज़ोफ़ आनेलगा; कभी सलूंबरके रावत् कुबेरसिंहकी बातोंपर ज़ियादह एतिबार होता, कभी रावत् जशवन्तसिंहको अपना सलाहकार बनालेते, कभी मरहटोंसे मेल मिलाप रखते, कभी उनके बर्ख़िलाफ़ कार्रवाई करते, कभी जोधपुरके महाराजा अभयसिंहको अपना दोस्त बनाते, कभी उनके बर्ख़िलाफ़ महाराज बख़्तसिंहकी सलाहपर चलते, कभी बूंदीके माजूल राव राजा उम्मेदसिंहको मदद देनेके लिये तय्यार होते, और कभी दलेल-सिंहकी मज़्बूती चाहते. ऐसी कार्रवाइयोंसे दिन बदिन बे एतिबारी फैलती जाती थी, और उसका ख़राब नतीजह तरक़्क़ी पकड़ता था, इसपर भी माधवसिंहको जयपुरकी गद्दीपर बिठानेका इरादह माल और मुल्कको बर्बाद करनेवाला होगया.

विक्रमी १८०४ फाल्गुन् शुक्लपक्ष [हि० ११६१ रबीउल् अव्वल = ई० १७४८ मार्च] में राज महलके पास बनास नदीपर महाराणाकी फ़ौज और जयपुर वालोंसे, जो लड़ाई हुई, उसका हाल इस तरहपर हैः-

महाराणाने मल्हार राव हुल्करसे इस काममें मदद चाही, हुल्करने अपने बेटे खंडेरावको मए फ़ौज व तोपख़ानहके भेज दिया; महाराणाने अपनी फ़ौजके शरीक कोटेके महाराव दुर्जनसाल व राव राजा उम्मेदसिंहको भी किया, लेकिन् दुर्जनसालने अपने एवज़ अपने प्रधान दधिवाड़िया चारण भोपतरामको भेज दिया. जयपुरसे राजा ईश्वरीसिंह कूच करके राज महलके पास पहुंचे, और उसी जगह मुक़ाबलह हुआ. इस लड़ाईमें हज़ारहा राजपूत मारे गये, जयपुरकी फ़ौजके पैर उखड़ने वाले थे; परन्तु महाराज माधवसिंह, जो मेवाड़ और मरहटी फ़ौजके शामिल

थे, उनका निशान (झंडा) जयपुरके मुवाफ़िक़ देखकर लोगोंको धोखा हुआ, कि जयपुरवाले हमारी फ़ौजमें आ घुसे; इससे मेवाड़ और कोटा वगैरहके सर्दार भाग निकले, और चन्द सर्दारोंने पीछे लौटकर जान दी; परन्तु फ़त्हका भन्डा जयपुरके हाथ रहा. शाहपुराका राजा उम्मेदसिंह अपनी जमइयत समेत वहीं खड़ा रहा; राजा ईश्वरीसिंहने कहलाया, कि वह चला जावे, पर वह न हटा; तब महाराजाने हमलह करनेके लिये अपने सर्दारोंको हुक्म दिया; शैखावत शिवसिंह, जो हरावलका मुख़्तार था, रुका; वह उम्मेदसिंहका श्वसुर था, जिससे लाचार होकर ईश्वरीसिंह को अपना हुक्म मुल्तवी रखना पड़ा. उम्मेदसिंह वहांसे दूसरे रोज़ कूच करके शाहपुरे आया; और मेवाड़, हाड़ौती और मरहटोंकी फ़ौज भी शाहपुरामें ठहरी. महाराणाने फिर मददगार फ़ौज उदयपुरसे भेजकर लड़ाई करना चाहा; लेकिन् मरहटोंकी यह सलाह थी, कि दो बारह एक ज़बर्दस्त फ़ौज लाकर हमलह किया जावे. इसी सबबसे ईश्वरीसिंह तो जयपुर गये, और मेवाड़की फ़ौजें लौट आईं.

मिश्रण सूरजमल्लने वंशभास्करमें जयपुरकी फ़ौजके हाथसे मेवाड़के क़स्बह भीलवाड़ाका लुटजाना लिखा है, परन्तु हमको इस बातका पता दूसरी जगहसे नहीं मिला. महाराणाको इस शिकस्तसे बहुत शर्मिन्दगी हुई, जिससे विक्रमी १८०५ [हि० ११६१ = ई० १७४८] में उन्होंने महाराव दुर्जनसालको कोटासे बुलाकर सलाह की, और मलहार रावके बेटे खंडेरावको मए फ़ौजके मददपर बुलाया. उक्त महारावको महाराणाने गद्दीपर बिठाया, सरपर हाथ लगाकर सलाम लिया, और उनके नाम ख़रीतह लिखनेका दरजह दिया. इस वक्त तक कोटाके महाराव, महाराणाकी गद्दीके नीचे बैठकर उमराव सर्दारोंके मुवाफ़िक़ दरजह रखते थे; अब पूरे राजा बन गये. इस बातसे इह्सानमन्द होकर दुर्जनसाल तमाम ज़िन्दगी तक उदयपुरका शुभचिन्तक रहा, और अब तक भी उस रियासतमें इस उपकारकी यादगार भूली नहीं गई है. फिर दोबारह फ़ौज तय्यार होकर महाराणा सहित खारी नदीके किनारे तक पहुंची; उसमें मेवाड़ हाड़ौती और खंडेराव शरीक थे. राजा ईश्वरीसिंह भी उक्त नदीके दूसरे किनारेपर आ ठहरे. एक दिन थोड़ासा मुक़ाबलह हुआ, जिसमें मंगरोपके बाबा रत्नसिंह और आरजेके रणसिंहने अपनी जमइयतसे जयपुरकी हरावलको हटा दिया; फिर रात होनेके कारण लड़ाई मुल्तवी रही. इसपर महाराणाने खुश होकर दांदूथल व दांदियावास रत्नसिंहको, और सिंगोली रणसिंहको जागीरमें दी. रातके वक्त जयपुरकी तरफ़से सुलहके पैग़ाम आने लगे; दूसरी तरफ़ सलाहमें फूट थी, हाड़ा चाहते थे, कि हमारा मत्लब ज़ियादह निकले; माधवसिंहने जाना, कि मैं कुछ अपना मत्लब अधिक निकालूं; महाराणाने

कुछ और ही बात ठानी; मरहटे अपना लालच चाहते थे. इसी पसोपेशसे न कोई मत्लब निकला, न लड़ाई हुई.

महाराजा ईश्वरीसिंह तो जयपुरकी तरफ़ गये, और महाराणा, उदयपुर चले आये; महाराज माधवसिंह खंडेरावके साथ रामपुराको चले गये, जो आपसमें पगड़ी बदल भाई बने थे. माधवसिंहने अच्छी तरहसे जानलिया, कि बगैर मरहटोंकी मददके काम्याबी हासिल न होगी, इस वास्ते खंडेरावसे दोस्ती बढ़ाई, जिससे मलहार राव हुल्कर इस कामको पूरा करनेके लिये अच्छी तरह तय्यार था. जयपुरके महाराजा ईश्वरीसिंहने पहिली शर्तोंको तोड़ दिया, जो जामोली और पंडेरके मकामपर महाराणासे की गई थीं. इन शर्तोंका तोड़ना गैर वाजिब नहीं था, क्योंकि महाराणाने इक़ारके बर्ख़िलाफ़ ईश्वरीसिंहपर चढ़ाई करदी, तो जिस तरह महाराणाने पहिले अपने इक़ारको तोड़ा, उसी तरह ईश्वरीसिंहने भी बर्ख़िलाफ़ी की. महाराज माधवसिंह और राव राजा उम्मेदसिंह दोनों मलहार राव हुल्करको जयपुरपर चढ़ा लाये; हुल्करने महाराणा और जोधपुरके महाराजाको भी लिख भेजा; महाराणा तो इस कामके लिये दिलसे तय्यार थे, परन्तु मरहटोंका एतिबार न था, क्योंकि जिससे उनका मत्लब निकलता, उसीके सहायक बन बैठते. इस वास्ते महाराणा खुद तो न गये, चार हज़ार सवारोंके साथ शाहपुराके राजा उम्मेदसिंह, बेगूंके रावत् मेघसिंह, और देवगढ़के रावत् जशवन्तसिंह, बीरमदेवोत राणावत शंभूसिंह और कायस्थ गुलाबरायको भेजदिया. ये लोग ढूंढारकी हदमें मलहार रावकी फ़ौजसे जामिले, राव राजा उम्मेदसिंह व महाराज माधवसिंह पेश्तरसे वहां मौजूद थे; जोधपुरके महाराजा अभयसिंहने दो हज़ार सवारों सहित रीयांके ठाकुर मेड़तिया शेरसिंह और ऊदावत कल्याणसिंह वगैरहको भेज दिया; और कोटाकी फ़ौज भी आमिली. मलहार राव हुल्करने कुछ फ़ौजके साथ तांतिया गंगाधरको जयपुर भेजा, परन्तु वह शिकस्त खाकर वापस लौटा, महाराजा ईश्वरीसिंहने उसका पीछा किया, और भरतपुरके राजा सूरजमल्ल जाटको अपना मददगार बनालिया, इस शर्तपर, कि हम तुमको गद्दीपर बिठाकर बराबरीका रुत्बह देंगे.

९ वगरू गांवके पास विक्रमी १८०५ भाद्रपद कृष्ण ४ [हि० ११६१ ता० १८ शब्वान = ई० १७४८ ता० १४ ऑगस्ट] को महाराजा ईश्वरीसिंह और सूरजमल्ल जाटने मलहार राव हुल्करसे उसकी मददगार फ़ौजों समेत मुक़ाबलह किया; विक्रमी भाद्रपद कृष्ण ६ [हि० ता० २० शब्वान = ई० ता० १६ ऑगस्ट] तक लड़ाई होती रही; आख़िरकार महाराजा ईश्वरीसिंहकी ताक़त और हिम्मत टूटगई, तब उनके मन्त्री केशवदास खत्रीने तांतिया गंगाधरको लालच

देकर मिलाया, उसने मलहार राव हुल्करको कहा, कि ईश्वरीसिंहसे बड़ा भारी दंड लेकर क्षमा कीजिये, जिससे आपकी प्रभुता प्रसिद्ध हो. मलहार राव भी लोभके जालमें फंस गया, लेकिन् बूंदीका राज्य, राव राजा उम्मेदसिंहको, और टौंकके चार पर्गने महाराज माधवसिंहको दिला दिये. अगर इस वक्त मलहार राव लोभ न करता, तो माधवसिंहको जयपुरका राज्य इसी लड़ाईमें मिलसक्ता था; परन्तु ईश्वरको चन्द रोज़ फिर इस मुआमलहको चलाना मंजूर था, इस लिये इसी ढंगपर रहा; लेकिन् शिकस्त महाराजा ईश्वरीसिंहकी गिनीगई, और राव राजा उम्मेदसिंहको बूंदी दिलाकर सब मददगार फ़ौज अपनी अपनी जगहपर पहुंची. यह हाल हमने बूंदीकी तवारीख़ उम्मेदसिंह चरित्रसे लिया है. इस वक्त केशवदास खत्रीने ख़ैरख़्वाहीसे अपने मालिकको बचाया, लेकिन् हरगोविन्द नाटाणी वग़ैरह उसके विरोधी लोगोंने ईश्वरीसिंहसे कहा, कि इसी बदख़्वाह केशवदासने उम्मेदसिंहको बूंदी और माधव-सिंहको टौंकके चार पर्गने हुल्करसे मिलकर दिलाये हैं. ऐसी बातोंको सुननेसे महाराजा ईश्वरीसिंह, केशवदाससे दिन ब दिन दिलसे नाराज़ होने लगे; आख़िरकार विक्रमी १८०६ [हि० ११६२ = ई० १७४९] में केशवदासको महाराजाने अपने साम्हने ज़हर देकर मारडाला, और मरते वक्त कहा, कि "अब तेरा मददगार हुल्कर कहां है!" उसने हाथ जोड़कर महाराजासे कहा, "मुझ बे कुसूर ख़ैरख़्वाहको मारनेका बदला ईश्वर आपको जल्द ही देगा". इस बातपर किसी कविने मारवाड़ी भाषामें एक दोहा कहा, जो नीचे लिखा जाता हैः-

दोहा.

मंत्री मोटो मारियो, खत्री केशवदास॥ जद ही छोड़ी ईसरा, राज करणरी आस॥ १॥

अर्थ- जबसे अपने बड़े सलाहकार केशवदास खत्रीको मारडाला, तबसे हे ईश्वरी-सिंह तुमने राज्य करनेकी उम्मेदको भी छोड़दिया.

यह बात दक्षिणमें मलहार राव हुल्करके कान तक पहुंची, तो वह आग होगया, कि मेरी मिलावटका इल्ज़ाम लगाकर ईश्वरीसिंहने केशवदासको क्यों मारा. वह पेश्वासे रुख़्सत लेकर विक्रमी १८०७ आश्विन शुक्ल १० [हि० ११६३ ता० ९ ज़िल्क़ाद = ई० १७५० ता० ११ ऑक्टोबर] को दक्षिणसे रवानह हुआ, और हाड़ौतीके इलाक़हमें पहुंचने बाद वहांसे ढूंढारकी तरफ़ चला. महाराजा ईश्वरीसिंहने बहुतसी हिक्मत अमली की, परन्तु हुल्कर न रुका. उन दिनोंमें महाराजाने केशवदासके एवज़ हरगोविन्द नाटाणीको अपना प्रधान बना रक्खा था, और आप उस मन्त्रीकी बेटीपर आशिक़ थे; उन्होंने अपनी माशूक़ाको देखनेके लिये महलोंके दक्षिणी किनारे पर एक मीनार बनाया, जो "ईश्वर लाट" के नामसे मश्हूर और अब तक मौजूद है. वह मन्त्री अपनी

बिरादरी वगैरहमें इस बातसे शर्म और बदनामी उठानेके सबब महाराजाका सख्त बदख्वाह बनगया. जब महाराजाने उस प्रधानको हुक्म दिया, कि लड़ाईका सामान करना चाहिये, उस बदख्वाह दीवानने जवाब दिया, कि ३०००० तीन लाख कछवाहोंकी फ़ौज मेरी जेबमें है, मरहटोंकी क्या ताक़त है, जो आपसे मुक़ावलह करसकें ? आप अच्छी तरह आराम कीजिये. मलहार राव हुल्कर जो क़रीब आता जाता था, उसको हरगोविन्दने मिलावट करके लिख भेजा, कि तुम बे खौफ़ चले आओ, यहां लड़ाईका कुछ सामान तय्यार नहीं है.

महाराजा ईश्वरीसिंहके पास छोटे आदमी मुसाहिब बन गये थे, जैसे ख़ान् महावत और शंभू बारी वगैरह. ये लोग भी बड़ा जुल्म करते थे, किसीकी स्त्री पकड़वा मंगाते, किसीका धन लूट लेते, जिससे राज्यके लाइक़ आदमी ख़ामोश हो बैठे. महाराजा शराबके नशेमें बे होश रहकर अय्याशीमें फंस गये, और हरगोविन्द नाटाणी ज़ी इख्तियार दीवान अपनी इज़्ज़त की ख़राबीसे चाहता था, कि जल्द इस बातका एवज़ लियाजावे. मलहार राव हुल्कर, जिसके साथ बूंदीके राव राजा उम्मेदसिंह भी थे, जयपुरके क़रीब आ ठहरा; उस समय हरगोविन्दको बुलाकर महाराजाने कहा, कि अब दुश्मन क़रीब आगया, वह फ़ौज कहां है, जो तू अपनी जैबमें बतलाता था ! दीवानने जवाब दिया, कि आपके दुरा चरण (चूहा) ने मेरी जैब काट डाली. यह सुनकर महाराजा एक दम हैरान होगये, और कुछ भी बात न बनपड़ी; वह विक्रमी १८०७ पौष कृष्ण ९ [हि० ११६४ ता० २३ मुहर्रम् = ई० १७५० ता० २३ डिसेम्बर] को ज़हर खाकर महलमें सो रहे. इस ख़बरके मश्हूर होते ही शहरमें शोर मच गया. दूसरे रोज़ हुल्करने अपने आदमी भेजकर शहरपर क़ब्ज़ह कर लिया, और महाराज माधवसिंहको जयपुर आनेके लिये ख़बर दी. माधवसिंह रामपुरासे उदयपुर आये, और चाहा था, कि कुछ मदद (फ़ौज) लेकर मलहार रावके शामिल होवें, परन्तु किसी ख़ास कारणसे देर हुई. उन्होंने कायस्थ कान्हको, जो महाराणाका मुसाहिब था, मलहार रावकी फ़ौजमें पहिले भेजकर कहला दिया, कि मैं भी आता हूं. हरगोविन्दकी मिलावटसे मलहार राव एकदम ख़ास जयपुरमें जा पहुंचा, और जातेही कामयाब हुआ. माधवसिंह भी ख़बर मिलते ही उदयपुरसे रवानह होकर सांगानेर पहुंचे; मलहार राव हुल्कर, उनका बेटा खंडेराव, बूंदीके राव राजा उम्मेदसिंह, करौलीके राजा गोपालपालने पेशवाई की; और जयपुरके महलोंमें पहुंचाकर सब अपने अपने डेरोंको गये. इसी अरसहमें राणूजी सेंधियाका बेटा जय आपा भी अपने लश्करके साथ आ पहुंचा, जो पेश्वाकी इजाज़तसे हुल्करके साथ दक्षिणसे बिदा हुआ, और किसी ख़ास कामके लिये पीछे रहगया था. हुल्करने पहिले एक करोड़ रुपया फ़ौज ख़र्च जयपुरसे ठहरा लिया था, जिसमें तीन हिस्से पेश्वाके

और एक उसका था; परन्तु सेंधियाके आ पहुंचनेसे अपने हिस्सेमेंसे आधा उसको देना पड़ा.

दूसरे रोज़ मरहटी फ़ौजके आदमी शहर जयपुरमें ख़रीद व फ़रोख़्त देखनेके लिये गये थे, इसी अ़रसहमें एक शैख़ावतने किसी मरहटेकी घोड़ी छिपा दी, जिसको मरहटोंने पहिचानकर छीन लिया; शैख़ावतोंने उन मरहटोंको तलवारसे मार डाला. इस शोर व गुलसे शहरके दर्वाज़े लग गये; चार हज़ार मरहटी फ़ौजके आदमी, जो शहरके अन्दर थे, उनमेंसे तीन हज़ार मारेगये; और एक हज़ार ज़ख़्मी हुए. इस फ़सादको महाराजा माधवसिंहने बड़ी मुश्किलसे मिटाया, और हुल्करके पास आदमी भेजकर अपनी बरिय्यत ज़ाहिर की. जय आपा बहुत नाराज़ हुआ, परन्तु महाराजाकी लाचारीसे हुल्करने उसे समझाया, और महाराजाने टौंकके चार पर्गने और रामपुरा हुल्करको देकर पीछा छुड़ाया. महाराजा माधवसिंहने तमाम इह्सानोंको भूलकर महाराणाका पर्गनह रामपुरा मरहटोंको देदिया; महाराणा जगत्सिंहने चौरासी लाख रुपया और हज़ारों राजपूतोंके सिर माधवसिंहको जयपुरकी गद्दीपर बिठानेमें बर्बाद किये; लेकिन् इस कहावती दोहेको महाराजाने सच्चा कर दिखायाः—

दोहा.

जाट, जवांई, भाणजो, रैबारी रु सुनार ॥
अतरा कदे न आपणा करदेखो उपकार ॥ १ ॥

मरहटी फ़ौजोंने अपनी अपनी राह ली, और महाराणा यह ख़बर सुनकर खुश हुए; परन्तु रामपुरा हुल्करको देनेसे दिलमें नाराज़ हुए होंगे. राजपूतानहके राजा इस वक़्से मरहटोंके शिकार बनगये.

महाराणा जगत्सिंहका उनकी अ़य्याशीने रोब खो दिया था. जब शाहजहां बादशाहने विक्रमी १७११ [हि० १०६४ = ई० १६५४] में चढ़ाईके वक़् मांडल गढ़, पुर मांडल, बधनोर, मेवाड़से छीन लिये, तब पर्गनह फूलिया भी अपने क़ब्ज़हमें करलिया होगा; क्योंकि महाराणा अमरसिंह अव्वलकी सुलहके वक़् यह पर्गनह भी जहांगीरके फ़र्मानमें कुंवर करणसिंहके नाम लिखा हुआ है. उस फ़र्मानके मुवाफ़िक़ कुल पर्गने विक्रमी १७११ (१) [हि० १०६४ = ई० १६५४] तक क़ाइम रहे. शायद उसी वक़् यह पर्गनह सुजानसिंह, सूरजमलोतको बादशाह शाहजहांने जागीरमें देदिया था; परन्तु फिर महाराणा राजसिंहने अपने मातहत करलिया. विक्रमी १७३६ [हि० १०९०

(१) लेकिन् नैनसी महता लिखता है, कि फूलिया बादशाहने १६८४ के संवत्में ख़ालिसे किया था. इस तह्रीरसे शायद शाहपुरेवालोंका बयान सच हो; वे कहते हैं, कि संवत् १६८६ में फूलिया सुजानसिंहको शाहजहांकी तरफ़से मिला था.

= ई० १६७९] की चढ़ाईके बाद आलमगीरने उसको दोबारह मेवाड़से अलह्दह कर-लिया; और महाराणा दूसरे अमरसिंहने विक्रमी १७६३ [हि० १११८ = ई० १७०६] से भारतसिंहको अपना मातह्त बनाया; लेकिन् भारतसिंहकी बादशाही ख़िद्मत मुआफ़ न हुई. महाराणा संग्रामसिंहने विक्रमी १७८५ [हि० ११४१ = ई० १७२८] में फूलियाको मेवाड़के तअ़ल्लुक़में करलिया; राजा उम्मेदसिंह विक्रमी १७९४ [हि० ११५० = ई० १७३७] में महाराजा अभयसिंहके साथ मुहम्मदशाहके पास दिल्ली गये, जिससे फूलियाकी पेशकशी जुदी बतलाने लगे. तब महाराणाने विक्रमी १७९८ [हि० ११५४ = ई० १७४१] में अपना वकील दिल्ली भेजकर बादशाही हुक्मसे वज़ीरों वग़ैरह की तह्रीरें अपने नाम लिखा लीं. उस वक़्के बाज़ फ़ार्सी काग़ज़ातमेंसे तर्जमह समेत एक तह्रीर यहां दर्ज कीजाती हैः-

क़मरुद्दीनख़ां वज़ीरकी तह्रीर, ता० ५ शऊ़बान हिज्री ११५६ [विक्रमी १८०० आश्विन शुक्ल ६ = ई० १७४३ ता० २५ सेप्टेम्बर] (१).

पर्गनह शाहपुरा, सावर, जहाज़पुर और बनेड़ा, ज़िला और सूबा अजमेरके मौजूद और आइन्दह कामदारोंको मालूम हो, कि इन दिनोंमें वकील, इज़्ज़तदार सर्दार, बहादुरीकी

متصدیان مهمات حال و استقبال پرگنهٔ شاهپوره ساور و جهازپور
سرکار صوبهٔ اجمیر بدانند که درین ولا وکیل امارت و ایالت مرتبت

निशानी, बड़े दरजह वाले, हिन्दुस्तानके राजाओंके बुज़ुर्ग, महाराणा जगत्सिंहकेने अ़र्ज़ किया, कि लिखी हुई जागीरें सीसोदिया राजपूतोंकी जागीरमें, जो महाराणाके हम क़ौम हैं, मुक़र्रर हैं; इन पर्गनोंके रहने वाले सूबहदारके नव्वानोंसे बहुत तक्लीफ़ उठाते हैं; महाराणा मिहर्बानी और रिआ़यतके क़ाबिल उम्मेदवार हैं, कि मुआ़फ़ीका पर्वानह इनायत हो. इस वास्ते लिखा जाता है, कि ज़िक्र किये हुए बड़े सर्दारकी ख़ातिरसे सूबहदारके नव्वाने वग़ैरह शुरूअ़् फ़स्ल ख़रीफ़ सन् ११५१ फ़स्लीसे इन जागीरोंकी बाबत मुआ़फ़ किये गये; चाहिये कि इन पर्गनोंको मुआ़फ़ समझकर किसी तरहकी दस्तन्दाज़ी न करें; इस बाबत ताकीद जानें. ता० ५ शअ़्बान, सन् २६ जुलूस (मुहम्मदशाही).

पुश्तकी तग़्रीह.

हुज़ूरके दफ़्तरकी तफ़्सील तारीख़ ९ शअ़्बान सन् २६ जुलूस मुबारक.

मुक़र्रर जागीर, बड़े दरजहके सर्दार, महाराणा जगत्सिंहके वकीलकी अ़र्ज़ीके मुवाफ़िक़ दस्तख़तमें आई, कि पर्गनात शाहपुरा, सावर, जहाज़पुर, बनेड़ा, जो महाराणाके हम क़ौम सीसोदिया राजपूतोंकी ज़मींदारीमें क़दीमसे मुक़र्रर हैं, वहांकी रअ़्य्यत सूबहदारके नव्वानोंसे तक्लीफ़ें उठाती हैं; और महाराणा रिआ़यतके लाइक़ उम्मेदवार हैं, कि सूबेके नव्वानों वग़ैरहकी मुआ़फ़ीका पर्वानह शुरूअ़् फ़स्ल ख़रीफ़ सन् ११५१

ابهت و بسالت منزلت گرامیقدر عالیشان سرامد راجهاے هندوستان مهارانا جگت سنگه التماس نمود، که محالات مذکوره زمینداری راجپوتان سیسودیه، که از برادران موکل الله، از قدیم مقرر است، مالکان پرگنات از پیشکش نظامت تصدیع میکشند - چون مهارانا ے واجب الرعایت امیدوار است که پروانهٔ معافی مرحمت شود، لهذا نگارش میرود، که بپاس خاطر امارت و ایالت مرتبت مذکور از پیشکش نظامت وغیره ابواب محالات مذکوره را حسب الضمن من ابتدا ے فصل خریف ئیل سنه ۱۱۵۱ فصلی معاف نموده شد - باید که محالات مذبور را معاف و مرفوع القلم دانسته بوجهے من الوجوه مزاحم و متعرض نشوند - درین باب تاکید دانند - تاریخ پنجم شهر شعبان سنه ۲۶ جلوس والاقلمی شد فقط *

फ़स्लीसे अह्लकारोंके नाम जारी हो; अ़र्ज़, ऊपर लिखे मुवाफ़िक़ मन्ज़ूर हुई.

मअ़्ल रुजूके दफ्तरके हुक्मोंके दफ्तरके मुवा- मुलाह़-
गोरिस्तहमें पहुंचगई. मुवाफ़िक़ है. फ़िक़ है. ज़ह हुआ.

बयान दस्तख़त ज़ुब्दतुल्मुल्क, मदारुल्महामका यह है, कि मुआ़फ़ीका पर्वानह लिखदिया जावे.

चार पर्गने.

पर्गनह,	पर्गनह,	पर्गनह,	पर्गनह,
बदनौर,	बनेड़ा,	जहाज़पुर,	सावर,
जागीर.	जागीर.	जागीर.	जागीर.

مقررة صمن بموجب عرض وكيل امارت وايالت مرتبت مهارانا
جگت سنگه، که بدستخط رسید، آنکه پرگنهٔ شاهپوره ساور وجاجپور بهره
محالات درزمینداری راجپوتان قوم سیسودیه براداران موکل ازقدیم
مقرراست، رعایای آنجا از پیشکش نظامت نهایت تصدیعه میکشند،
چون موکل واجب الرعایت امیدوار است که پروانهٔ معافی پیشکش
وغیره ابواب نظامت بنام متصدیان حال واستقبال ازابتدای
فصل خریف ئیل سنه ۱۱۵۱ فصلی مرحمت شود، التماس شرح
صدر داره، در باب امر

شرح دستخط جملة الملك مدار المهام آنكه
پروانهٔ معافی بنویسند فقط

تفصیل سیاهه حضور) نقل درسرشته) بموجب سیاهه) موافق دفتر است) ملاحظه شد
بتاریخ ۶ شعبان سنه) صورت رسید و نقل) احکام است)
۲۱ جلوس مبارک *

للعه محال

پرگنه	پرگنه	پرگنه	پرگنه
بدنور	بهره	جاجپور	ساور
محال	محال	محال	محال

विक्रमी १८०८ आषाढ़ कृष्ण ७ [हि० ११६४ ता० २१ रजब = ई० १७५१ ता० १६ जून] को इन महाराणाका देहान्त होगया. इनका जन्म विक्रमी १७६६ आश्विन कृष्ण १० शनिवार [हि० ११२१ ता० २४ रजब = ई० १७०९ ता० २९ सेप्टेम्बर] को हुआ था. वंशभास्करमें लिखा है (१), कि जब यह महाराणा ज़ियादह बीमार हुए, तो जिन लोगोंने वलीअह्द प्रतापसिंहको गिरिफ्तार किया था, उन्होंने डरकर विचार किया, कि कुंवर प्रतापसिंहको ज़हर देदिया जावे; और महाराणाके छोटे भाई नाथसिंहको गद्दीपर बिठा देवें; परन्तु महाराणाने यह बात सुनकर उन लोगोंको शहरसे बाहर निकलवा दिया. यह बन्दोबस्त करने बाद उनका दम निकल गया. कुंवर प्रतापसिंह करणविलास महलमें, जिसको रसोड़ा कहते हैं, नज़र क़ैद थे; ख़ैरख़्वाह लोगोंने उनको बुलाकर गद्दीपर बिठाया.

महाराणा जगत्सिंह दूसरेका मंझोला क़द, साफ़ गेहुवां रंग, चौड़ी पेशानी थी. वह हंसत मुख, और रहमदिल, उदार, क़द्रदान, इल्मके शौक़ीन, अपने मज़्हबके पक्के और अय्याश थे; इक़ारके कच्चे और अपनी मौरूसी बातोंके घमंडी, साफ़ दिल और फ़िरेबको ना पसन्द करने वाले थे. इनके वक्तमें ऐश व इश्रत और बाप बेटोंकी ना इत्तिफ़ाक़ीसे रियासतमें ख़राबीकी सूरत पैदा होकर तनज़्ज़ुलीकी बुन्याद क़ाइम हुई. उन्होंने महलोंमें छोटी चित्रशालीकी चौपाड़में इजारेका काम, पीतमनिवास महलमें चीनीकी ओवरी, तिबारी, जगन्निवास महल और जगन्नाथरायके मन्दिरका, जो बादशाही फ़ौजने बर्बाद किया था, जीर्णोद्धार वगैरह इमारती काम बनवाया. इन महाराणाने अपने पिता महाराणा संग्रामसिंहकी छत्री, अहाड़ ग्राम (महासती) में बहुत बड़ी बनवाई, लेकिन् उसके ऊपरका काम गुम्बज़ वगैरह नहीं बनने पाया था, कि इन महाराणाका देहान्त होगया; वह छत्री अब तक वैसी ही बगैर गुम्बज़ अधूरी पड़ी है.

इन महाराणाके दो महाराजकुमार प्रतापसिंह और अरिसिंह थे.

(१) यह बात हमने यहांकी किसी पोथीमें नहीं देखी, और न किसी कहावतमें सुनी.
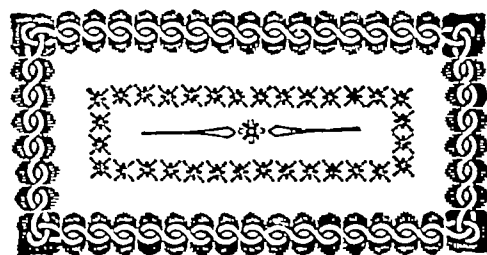
राज्य जयपुरकी तवारीख़.

जुग़्राफ़ियह.

रियासत जयपुरकी उत्तरी सीमा बीकानेर, लोहारु झज्झर और पटियाला; दक्षिणी सीमा ग्वालियर, बूंदी, टौंक, मेवाड़ और अजमेर; पूर्वी सीमा अलवर, भरतपुर, और करौली; और पश्चिमी सीमा कृष्णगढ़, मारवाड़ और बीकानेर है. यह राज्य २५° ४३′ और २८° ३०′ उत्तर अक्षांशके बीच और ७४° ५०′ और ७७° १८′ पूर्व देशान्तरके दर्मियान वाके़ है, जिसका रक्बह १५२५० मील मुरब्बा, आबादी सन् १८८१ ई० की मर्दुम शुमारीके मुताबिक़ २५३४३५७ आदमी, और सालानह आमदनी अन्दाज़न पचास लाख रुपया है.

ज़मीन — इलाक़ेकी ज़मीन बराबर साफ़ और खुली हुई है, लेकिन् कई मक़ामोंपर पहाड़ियोंका समूह व सिल्सिला और ऊंचे टीले नज़र आते हैं. रियासतका दर्मियानी हिस्सह मुसल्लस (त्रिकोण) की सूरतपर समुद्रके सत्हसे १४०० से लेकर १६०० फुट तक बलन्द है, जिसकी दक्षिणी आधार रेखा ख़ास शहर जयपुरके पश्चिमी तरफ़को चलीगई है; पूर्वी अलंग पहाड़ियोंका सिल्सिला है, जो उत्तर दक्षिण अलवरकी सीमाके नज़्दीक है. इस मुसल्लसी टीलेके उत्तर पश्चिमको जुदा जुदा पहाड़ियोंका एक सिल्सिला वाके़ है; वह अर्वली पहाड़का एक हिस्सह है, जो त्रिकोणका सिरा है, और पूर्वी सिल्सिलेको शैख़ावाटी खेतड़ीके पास जुदा करता है. इस जगह पहाड़ियां बहुत बलन्द हैं, जिनका यह सिल्सिला शैख़ावाटीके रेगिस्तानी व जंगली हिस्सों, और बीकानेर और जयपुरकी ज़ियादह उपजाऊ ज़मीनकी उत्तर पश्चिमी कुद्रती सीमा है. जयपुरके पूर्वमें शहरके क़रीब पहाड़ी सिल्सिलेके परे दो तीन मील तक तीन चार सौ फुटकी गहराई (उतार) होगई है, फिर आगे बढ़कर बाणगंगा नदीकी तराईके बराबर भरतपुरकी सीमातक सरल उतार है; और जमुनाकी तरफ़ ज़मीन रफ़्तह रफ़्तह कुशादह होती गई है. जयपुरके पूर्वी हिस्सेमें छोटी छोटी पहाड़ियोंका एक सिल्सिला, और करौली सीमाके पास कई नाले हैं. दक्षिण पूर्वको बनास नदीकी तरफ़ ज़मीनका हिस्सह झुकता हुआ याने ढालू है, और मैदानमें चन्द जुदी जुदी पहाड़ियां नज़र आती हैं; लेकिन् दक्षिणमें फ़ासिलेपर

फिर पहाड़ी सिल्सिला दिखाई देता है, और राज महलके पास, जहां बनास नदी उक्त सिल्सिलेके दर्मियान होकर गुज़रती है, मौक़ा बहुत दिलचस्प मालूम होता है. जयपुरसे पश्चिमी तरफ़ कृष्णगढ़की सीमाकी ओर मुल्कका हिस्सह रफ्तह रफ्तह बलन्द होगया है, और चौड़े खुले हुए मैदान, जिनमें दरख़्त नहीं पाये जाते, मए चन्द जुदा जुदा पहाड़ियोंके वाके हैं. ख़ास शहर जयपुरके आस पासकी ज़मीन, वायु कोणको अक्सर रेतीली है, बाज़ जगहपर सिर्फ़ बालूके खंड हैं; मगर इस रेतीली ज़मीनके नीचे सख़्त मिट्टी, कंकर मिली हुई पाई जाती है. पूर्वी तरफ़ बाण गंगाकी तराईके पास अक्सर ज़मीन काली मिट्टीकी, और कुछ दूर आगे बढ़कर रेतीली, लेकिन् उपजाऊ है. जयपुरके दक्षिण दिशामें अक्सर ज़मीन उम्दह व ज़रखेज़ है; और बनास नदीके पासकी ज़मीन, जो काली मिट्टीकी रेती मिली हुई निहायत उम्दह है, तमाम रियासतमें सबसे ज़ियादह उपजाऊ हिस्सह है; परन्तु शैखावाटीको जुदा करने वाली श्रेणीके उत्तरमें अक्सर रेत ही रेत है.

जयपुरके इलाक़हकी पहाड़ियोंमें, जिनका ज़िक्र ऊपर होचुका है, अक्सर दानादार और रेतीले पत्थर पाये जाते हैं; बाज़ औक़ात सिफ़ेद और काला चमकीला पत्थर और कभी कभी अब्रक़ (भोडल) भी निकल आता है; और दक्षिण पूर्वकी पहाड़ियोंमें रेतीला, और उत्तर वालियोंमें ज़ियादहतर दानादार पत्थर मिलता है. उत्तरकी तरफ़, जहां खेतड़ी और अलवरका पहाड़ी सिल्सिला मिला है, कई क़िस्मकी धातु पाई जाती हैं; पत्थरोंके दर्मियान फिटकरी, तांबा, कोवाल्ट याने सेता और निकेलकी धारियां नज़र पड़ती हैं. खेतड़ीके आसपास तांबा निकाला जाता है, लेकिन् उम्दह कल वगैरह न होनेके सबब नफ़ा नहीं होता; कई खानोंके पानीमें भी तांबाकी सल्फ़ेट और फिटकरी बहुत है, और तांबेकी धारियोंके बीचमें कोवाल्ट (सेता) की तह मिलती है. जयपुरमें कोवाल्ट (सेता) मीनाकारीके काममें ज़ियादह सर्फ़ होता है; और दिल्ली व हैदराबाद वगैरहको भी इसी मक्सदसे भेजा जाता है. सांभर झीलका नमक सबसे ज़ियादह कार आमद चीज़ है, जो दूर दूर तक लेजाया जाता है. अब नमककी झील पर अंग्रेज़ी इन्तिज़ाम है.

इस इलाक़हके कई स्थानोंमें इमारत बनानेका पत्थर बहुत है; आंबागढ़ क़िलेके नीचे शहरके पूर्वी पहाड़ी सिल्सिलेमें एक क़िस्मका रेतीला पत्थर, जो मकानात और फ़र्श बनानेके काममें आता है, निकलता है. जयपुरसे २४ मील पर दनाउ मक़ामसे एक तरहका मोटा रेतीला पत्थर निकाला जाता है, जो चौखट, दिहली और स्थम्भोंके बनानेमें काम आता है. जयपुरसे ३६ मील दौसा गांवके पास भांकरी मक़ामसे एक क़िस्मका पत्थर निकाला जाता है, जो छतके काममें

आता है, और लंबाईमें ३० फ़ुटके क़रीब तक भी होता है. जयपुरसे ८२ मील क़रौलीके पाससे, और ९२ मील वसीसे बहुत उम्दह लाल और भूरे रंगका पत्थर आता है, जो ज़ेवर वग़ैरह बनानेके काममें लाया जाता है. मकराणा वाके मारवाड़से सिफ़ेद पत्थर आता है, जो मूर्ति वग़ैरह बनानेके लिये सबसे उम्दह और नर्म है. रायांवाला वाके जयपुरसे एक तरहका मोटा सिफ़ेद पत्थर, जिसका रंग बाद एक मुद्दतके पीला पड़जाता है, निकलता है; भैसलाना वाके कोटपूतलीसे काला पत्थर मूर्ति वग़ैरह बनाने और मीनाकारीके कामका निकाला जाता है; इलाकेमें चिनियां पत्थर बहुत है, लेकिन् काणोता मक़ामके पासका उम्दह होता है. कंकर तमाम जगहों में मिलता है.

क़ीमती पत्थर— राज महलके पास होता है, और उसीके पास टोडा मक़ामपर पहिले कई क़िस्मका क़ीमती पत्थर पाया जाना बयान करते हैं.

नदियां— देशका ढाल व पानीका बहाव रियासतके दर्मियानी बलन्द हिस्सेसे पूर्व और दक्षिण पूर्व रुख़को है. कई धारा [illegible], पश्चिमको भी बहती हैं, जो उत्तरी पहाड़ियोंका पानी उत्तरके रेतीले मैदानको [illegible] हैं, और जहां पानी जज़्ब हो जाता है.

बनास— यह नदी इस रियासतमें सबसे बड़ी है, जो पहाड़ी सिल्सिले अर्वली मक़ाम सेमलके पाससे निकलकर उदयपुरके उत्तर और पूर्वको बहती हुई १०० मीलसे ज़ियादह फ़ासिले पर जयपुरके राज्यमें देवलीके पास दाख़िल होती है; और बिलासपुरसे १० मील पश्चिम रुख़ होती हुई टोडा श्रेणीके पासकी पहाड़ियोंके दर्मियानी तंग रास्तहसे गुज़रकर पूर्व रुख़ बहने बाद रणथम्भोर और खन्डारकी पहाड़ियोंमें, (जहां रियासत जयपुरके नामी क़िले हैं) होती हुई टोंकसे ८५ मील नीचे चम्बलमें गिरती है. इस नदीकी गहराई औसत ३० फ़ुट है, और कई जगह, जहां पानीके ज़ोरसे गड्ढे पड़गये हैं, बहुत ही गहरी है; चौड़ाई बिलासपुरके पास ५०० फ़ुट और टोंकके क़रीब २००० फ़ुट है; सालमें पांच महीने तक तेज़ीके सबब पार उतरनेके लिये किश्तियें दर्कार होती हैं, बिदून किश्तीके मुसाफ़िर पार नहीं जा सक्ता; गर्मीके मौसममें यह नदी सूख जाती है, लेकिन् गहरे खड्डोंमें सालभरके क़रीब तक पानी रहता है. माशी, ढोल और मोरेल वग़ैरह इसकी बाज गुज़ार यानी पानी पहुंचाने वाली नदियां हैं.

बाण गंगा— यह नदी, मनोहरपुरके पासकी पहाड़ीमेंसे निकलकर जयपुरसे ठीक २५ मीलके क़रीब उत्तर और इसी क़द्र दक्षिण पूर्वको बहती हुई रामगढ़ (जो किसी ज़मानहमें रियासत जयपुरकी राजधानी था,) के पास पहाड़ी सिल्सिलेमें

दाख़िल होजाती है, जहां उसकी पहाड़ी गुज़रगाहकी लंबाई एक मील, चौड़ाई ३५० से ५०० फुट तक, और गहराई ४०० फुट है. वह यहांसे निकलकर ठीक पूर्वको ६५ मील बहने बाद रियासत भरतपुरमें महुवाके पास दाख़िल होती है; इसपर राजपूतानह रेल्वेका एक पुल है, और १० मील आगे बढ़कर इसमें सिशीत मिली है, जो उत्तरसे आती है; इसकी गहराई बहुत है, रामगढ़के पास पहाड़ीके बीचमें यह साल भर तक बहती है, लेकिन् नीचेकी तरफ़ जाकर सूखजाती है, केवल बारिशमें पानी बहता है; रामगढ़के पास २३ फुट पानी चढ़ जाता है.

गंभीरी- हिंडौनके दक्षिणकी पहाड़ीमेंसे निकलकर जयपुरकी पूर्वी सीमामें पूर्व और उत्तर पूर्व बहती है, और जयपुरके इलाक़हमें २५ मील बहकर भरतपुरके इलाक़हमें गुज़रती हुई रूपबासके पास बाण गंगासे मिलकर जमुनामें जा मिली है. इस नदीमें नाले बहुतसे हैं; हिंडौनके पश्चिमकी पहाड़ियोंका पानी, टोडा भीमसे खेरा तक इसी नदीमें जाता है.

बांडी- जयपुरके ठीक उत्तर २० मील सामोद और आमलोदाके पास पहाड़ियोंसे जारी होती, और दक्षिण व दक्षिण पूर्व बहकर कालवाड़ और कालक (१) के पास चटानी पहाड़ी सिल्सिलेकी रुकावटके सबब पश्चिम रुख़को इन पहाड़ियोंके दर्मियानसे गुज़रती हुई १०० मीलके बाद माशीमें जामिलती है. आसलपुर स्टेशनके पास, जयपुरसे २५ मीलपर अजमेर और आगराकी सड़क को पार करती है; इस जगहपर यह ८०० फुट चौड़ी है, बल्कि बाढ़के वक्त हदसे बाहर बहुत दूर तक निकलजाती है, लेकिन् यह ज़ोर सिर्फ़ चन्द घंटों तक रहता है; करारोंकी ऊंचाई १० से १५ फुट तक है.

अमानी शाहका नाला- जयपुर शहरसे उत्तरी तरफ़ इस नदीका मुहाना है, और दक्षिण दिशा क़दीम शहर सांगानेरके नीचे होकर २२ मील बहने बाद ढूंढ नदीमें शामिल होती है. इसमें साल भर तक पानी रहता है; सोतेके पासके सिवाय जयपुर स्टेशनके पश्चिमको एक मीलपर राजपूतानह रेल्वेका एक आहनी पुल है. इसी नदीका पानी नलोंके ज़रीएसे १०४ फ़ुटके क़रीब ऊंचाईपर हौज़ोंमें लेजाया जाता है, जो शहर जयपुरसे ऊंचे हैं; और उनमेंसे शहरके भीतर ५० फ़ुटकी नीचाईपर आहनी नलोंके द्वारा पहुंचता है.

(१) कालककी इन्हीं चटानोंके पास महाराजा रामसिंह २, ने बन्द बंधवाकर पानीको रोका है, और उस भरे हुए पानीका नाम कालक सागर रक्खा है; आसलपुर स्टेशनके क़रीब (जहां इस नदीपर पुल बंधा हुआ है,) एक नहर काटकर काठेड़ेकी तरफ़ निकाली है, जिससे ज़िराअतको बहुत फ़ायदह पहुंचता है.

मोरेल- यह बनासकी सहायक नदी है, जिसका निकास दूणीके पासकी पहाड़ियोंमेंसे है, और ३५ मील बहकर ढूंढसे मिलती है, जो ५० मीलके फ़ासिलेसे आती है- ये दोनों मिलकर मोरेल नामसे दक्षिण पूर्व रुख़को ४० मील बहने बाद खारी नदीका पानी लेती हुई पेचीदह राहसे बनासमें जा मिलती हैं.

माशी- बनासकी एक सहायक नदी है, जो राज कृष्णगढ़से निकलकर जयपुरके इलाक़हमें पचेवरके पश्चिम १० मील बहकर ५० मीलकी दूरीपर पूर्व तरफ़ बांडीसे जा मिली है.

ढूंढ- इस नदीका निकास जयपुरके ठीक उत्तरमें १५ मीलकी दूरीपर अचरोल मक़ामके पासकी पहाड़ियोंमेंसे है, और मोरेलमें जा गिरती है. वह दक्षिणमें बहती है, और आंबेरके पूर्व दो मील तक गुज़रकर काणोतामें होती हुई अजमेर व आगराकी सड़कको पार करती है.

खारी- बामणवासके उत्तरमें १० मीलके क़रीब टोडा भीम और लालसोटके पहाड़ी सिल्सिलेमेंसे निकलकर दक्षिणी ज़रखेज़ ज़मीनमें होतीहुई बीस फ़ुटकी गहराईसे ३५ मीलकी दूरीपर मोरेलमें जा मिलती है.

मींढा- जयपुरके उत्तर जैतगढ़के पासकी पहाड़ियोंमेंसे निकलकर पश्चिमी तरफ़ बहती हुई सांभर झीलमें गिरती है.

साबी- जयपुरसे उत्तर २४ मीलके अनुमान जैतगढ़ और मनोहरपुरके पास की पहाड़ियोंमेंसे बहकर उत्तर पूर्व रुख़को गुड़गांवाकी तरफ़ बहती हुई जयपुर रियासतमेंसे गुज़रकर नाभा रियासतमें दाख़िल होजाती है.

सोता- यह नदी झाड़ली और जैतगढ़के पास पहाड़ियोंमेंसे जयपुरसे ४० मीलके फ़ासिलेपर शुरूअ़ होकर उत्तरी पूर्वी तरफ़ इलाक़ेमें गुज़रती हुई ४० मील बहकर साबीसे जा मिलती है.

काटली- खंडेलाके पास पहाड़ियोंमेंसे निकलती है, और जयपुरके उत्तर पश्चिम और झूंझणूके पूर्व बहकर ६० मीलके क़रीब शैखावाटी इलाक़हमें बहने बाद बीकानेर इलाक़हके रेतेमें ग़ाइब होजाती है.

झील सांभर- यह जयपुरकी रियासतमें सबसे बड़ी झील है, जो २६° ५८′ उत्तर अक्षांश और ७५° ५′ पूर्व देशान्तरके दर्मियान जयपुर व जोधपुरकी सीमापर अर्वली श्रेणीके पूर्व, जो श्रेणी राजपूतानहमें उत्तर पश्चिम है, वाक़े है; जब यह भरती है, तो इसकी लम्बाई २० मील, चौड़ाई $\frac{१}{२}$ मीलसे ७ $\frac{१}{२}$ मील तक और गहराई १ से चार फ़ुट तक होजाती है. झीलके आस पासकी ज़मीनमें अनाज वग़ैरह कुछ

नहीं निपजता. इसमें नमककी पैदावारका सालानह ओसत ९०००० मन समझा जाता है, और कभी ज़ियादह भी होता है, मसलन् सन् १८३९ ई० में २०००००० मन नमक निकला, जो दर्ज रजिस्टर है; और फ़ी मन आध आना, नमक निकालनेकी मज़्दूरी पर ख़र्च पड़ता है, लेकिन् यह बात मालूम नहीं, कि झीलमें नमक क्योंकर जमा होता है; बाज़े लोग कहते हैं, कि उसमें नमककी चटान है, लेकिन् ग़ालिब यह गुमान किया जाता है, कि झीलके आस पासकी पहाड़ियोंमें नमक है, जो बर्साती पानीके साथ गलकर उसमें बह आता है. इस जगह तीन क़िस्मका नमक याने नीला, सिफ़ेद और सुर्ख़, निकलता है. जिसमेंसे नीला व सिफ़ेद रंगका ज़ियादह राइज और क़ाबिल पसन्द है, जो ज़िला रुहेलखंड और राजपूतानह वग़ैरहमें कस्रतसे जाता है; टौंकमें सिर्फ़ लाल रंगके नमककी चाह ज़ियादह रहती है.

आबो हवा व बारिश– जयपुरकी आबो हवा गर्म और सिहत बख़्श (नैरोग्य) है, मुल्ककी ज़मीन ऊंची और रेतीली होनेके सबब सख़्त बीमारियां कम होती हैं. सर्दीके मौसममें आबो हवा उम्दह रहती है, लेकिन् शैखावाटीमें अक्सर ख़राब पाई जाती है; क्यौंकि वहां सूर्य निकलने तक कुहर रहता है. गर्मीके दिनोंमें पश्चिमकी लू शैखावाटी और जयपुरके उत्तरी हिस्सेमें तेज़ चलती है, लेकिन् रेतमेंसे गर्मी जल्द निकल जानेके सबब रातके वक़्त गर्मी कम रहती है, और सुब्हके वक़्त ठंडक होजाती है. दक्षिण और पूर्व तरफ़ लू कम चलती है, लेकिन् ज़मीन रेतीली न होनेसे रात व सुब्हको गर्मी ही रहती है. यहांपर गर्मीके दिनोंमें ज़ियादह गर्मी १०६ दरजे, और सर्द मौसममें ज़ियादह सर्दी ३८ दरजे तक अक्सर पहुंच जाया करती है. शैखावाटीको छोड़कर, जिसमें बारिशका कुछ ठिकाना नहीं है, रियासत भरमें बारिश उम्दह होती है, उसका औसत २६ इंचके क़रीब माना गया है; और बारिश अच्छी होनेकी वजह्, मुल्कका दक्षिण पश्चिमी और दक्षिण पूर्वी मौसमी हवाके बीचमें वाक़े होना है, जिससे दोनों तरफ़से पानी आता है; और यही सबब क़हतसाली कम होनेका है. जयपुरमें ज़मीनसे कई तरहका पानी निकलता है, और कुओं वग़ैरहकी गहराई भी एकसी नहीं है; जयपुर और शैखावाटीके बीचकी श्रेणीके दक्षिण ३० या ४० फ़ुटकी गहराईके दर्मियान पानी निकल आता है, लेकिन् शैखावाटीमें उसी श्रेणीके उत्तर ८० से १०० फ़ुट तक गहरा पाया जाता है; अक्सर जगह पानी खारा है, मगर पूर्व दक्षिण तरफ़ अक्सर मीठा है. उत्तरमें शैखावाटी और जयपुरके आस पास कहीं मीठा कहीं खारा है.

जंगल वग़ैरह– जयपुरकी रियासतमें कोई बड़ा जंगल नहीं है; शहरके पास और रियासतके दक्षिणी हिस्सेकी पहाड़ियोंपर धाव ऊगता है, और ऐसे दरख़्त,

जिनकी लकड़ी जलानेके काम आवे, पैदा होते हैं. नीम, बबूल, आम, इमली, बड़, पीपल, सिरस, शीशम, जामुन, वगैरह दरख़्त आबादीके क़रीब पाये जाते हैं; बबूल और नीम दो क़िस्मके दरख़्त ज़ियादह होते हैं, और इन्हींसे लकड़ीकी तमाम चीज़ें बनाई जाती हैं. शेख़ावाटीमें दरख़्त बहुत कम होते हैं, खेजड़ा और रोंझ (एक क़िस्मका सिरस) अक्सर उगता है, जिसमेंसे पहिलेकी डालियां मवेशीके खानेमें आती हैं, और दूसरेके फूल आदमी और ऊंट खाते हैं. घास इस रियासतमें कई क़िस्मकी होती है, जो मवेशीके चराने, छप्पर छाने, और टट्टे, टोकरे वगैरह बनानेके काममें आती है.

पैदावार—यहांपर पैदावारकी क़िस्म एक तरहकी नहीं है, जैसी ज़मीन होती है, उसीके मुवाफ़िक़ अनाज पैदा होता है. शेख़ावाटीमें ख़ासकर बाजरा और मूंग, जयपुर शहरके पास उत्तरमें भी बाजरा और कुछ गेहूं व जव पैदा होते हैं; दक्षिण पूर्व तरफ़ जवार, मक्की, कपास, और तिल, गेहूं, जव, चना, ईख, अफ़ीम, तम्बाकू, दाल, अलसी और कुसूम ज़ियादह पैदा होता है; पूर्वी ज़िलोंमें किसी क़द्र मोटा चावल भी बोया जाता है; और हरी तर्कारियां, जैसे मूली, पियाज़, बैंगन, मिर्च, ककड़ी, कोला, आलू, सोया (एक क़िस्मका साग) वगैरह होती हैं; गर्मीके मौसममें नालोंके रेतमें तर्बूज़ और ख़र्बूज़े कस्रतसे बोये जाते हैं.

राज प्रबन्धका ढंग— राजपूतानहकी तमाम रियासतोंके मुवाफ़िक़ जयपुरके रईस अपने मुल्कका पूरा इख़्तियार दीवानी और फ़ौज्दारीका रखते हैं, और अपनी रिआयाके जीवन मृत्युका उनको अधिकार है. राजधानीमें आठ मेम्बरोंकी एक कौन्सिल, और ख़ुद महाराजा प्रेसिडेन्टके हुक्मके मुताबिक़ रियासती बन्दोबस्त होता है; एक सेक्रेटरी है, जो ब एतिबार उह्देके मेम्बर भी है. कौन्सिलके कामोंके चार हिस्से हैं— अदालत, माल, फ़ौज और बाहर संबन्धी; यह सब काम मेम्बरोंके तअल्लुक़ हैं. इलाक़ेका न्याय प्रबन्ध ऐसे अफ़्सरोंके तअल्लुक़ है, जो नाज़िम कहलाते हैं, और ज़िला मजिस्ट्रेट या दीवानी जज हैं. हर एक ज़िलेकी नालिशें उन्हींकी अदालतोंमें गुज़रती जाती हैं; ३०० से कमकी नालिश राजधानीके महकमए मुन्सिफ़ीमें, और उससे ज़ियादहकी सद्र दीवानी अदालतमें दाइर होती है, जिसमें निज़ामत व मुन्सिफ़ी अदालतोंकी अपील भी होती है. ख़ास ख़ास मुक़द्दमोंके सिवा, जो कौन्सिलके पास जाते हैं, कुल फ़ौज्दारी मुक़द्दमे पहिले सद्र फ़ौज्दारीमें फ़ैसल होते हैं. राजधानीमें अदालत अपील भी है, जिसमें सद्र फ़ौज्दारी और दीवानीकी अपील होती है, और जिसको ५०० रुपयेसे कम मालियतके दीवानी मुक़द्दमोंका आख़िरी फ़ैसला करनेका इख़्तियार है. इन सबकी अपील कौन्सिलमें

होती है, जो रियासतकी सबसे बड़ी अदालत है; लेकिन् यह बात याद रखनी चाहिये, कि अगर जयपुरमें किसी फ़रीक़को अख़ीर फ़ैसलेकी डिकूरी (डिगरी) मिलजावे, ताहम उसकी तक्लीफ़ दूर नहीं होती.

फ़ौज- रियासत जयपुरके ३८ क़िलोंपर २०० तोपें चढ़ी रहती हैं. नागा लोग, याने दादूपन्थी साधू ४००० और ५००० के दर्मियान तादादमें हैं; नमक हलाल और बहादुर माने जानेके सबबसे उनकी तादाद ज़ियादह है. ये लोग क़वाइद नहीं करते, और वर्दी भी नहीं पहिनते; तलवार, बर्छी, तोड़ेदार बन्दूक़ और ढालसे तय्यार रहते हैं. सन् १८५७ ई० के गद्रमें रईसके नमक हलाल और ख़ैरख़्वाह यही लोग रहे; अगर ये न होते, तो क़वाइद दां फ़ौज रियासतमें फ़साद पैदा करती. पर्गनों व ख़ास राजधानीकी पुलिस जुदा जुदा है. इस रियासतका सालानह फ़ौज ख़र्च ६२०००० रुपया है. राजधानीमें तोपें ढालनेका कारख़ानह है, लेकिन् उसमें बड़ी तोपें ज़ियादह नहीं बनतीं.

टकशाल- ख़ास शहर जयपुरकी टकशालमें अश्रफ़ी (जो १६ रुपयेकी होती है, (१)), रुपये और पैसे बनते हैं.

डाकख़ानह, तारघर और मद्रसह- जयपुरमें ३८ अंग्रेज़ी डाकख़ानोंके सिवा राजके भी डाकख़ाने हैं, जिनके ज़रीएसे रियासतके ज़िलों वग़ैरहमें सर्कारी काग़ज़ात और आम लोगोंके ख़त आते जाते रहते हैं, लेकिन् काग़ज़ात वग़ैरहका महसूल अंग्रेज़ी हिसाबसे ही लिया जाता है.

तारघर- पश्चिमोत्तर देशका बम्बईको जाने वाला तार, जयपुरकी रियासतमें होकर गुज़रा है; और उसका राजधानीमें एक तारघर है.

मद्रसह- राजपूतानहकी तमाम रियासतोंकी बनिस्बत जयपुरके राज्यमें तालीमका सिल्सिलह उम्दह है, जिसने परलोक वासी महाराजा रामसिंह दूसरेके वक़्तसे खूब तरक़ी पाई. राजधानीका कॉलेज सन् १८४४ ई० में जारी हुआ, उस वक़्त तालिब-इल्मोंकी तादाद बहुत ही कम थी; लेकिन् इस वक़्त बहुत ज़ियादह होनेके सिवा तालीमी तरीक़ों व इम्तिहानोंकी पढ़ाईमें सर्कार अंग्रेज़ीके कॉलेजोंकी बराबरी करता है. इसमें १५ अंग्रेज़ी मुदर्रिस, ११ फ़ार्सी पढ़ानेवाले मौलवी, और ४ हिन्दी पाठक हैं. उस वक़्त मद्रसेका सालानह ख़र्च २४००० रुपयेके क़रीब था. कॉलेजमें एन्ट्रेन्स और फ़र्स्ट आर्ट्स तककी पढ़ाई होनेपर विद्यार्थी कलकत्ता यूनिवर्सिटीको इम्तिहानके लिये भेजे जाते हैं. राजधानीमें बड़े अह्लकारों व ठाकुरोंके लड़कोंकी तालीमके लिये एक जुदा पाठशालाके सिवा संस्कृत स्कूल, लड़कियोंकी पाठशाला, कई

(१) आज कल अनुमान २३, रुपये कलदारमें बिकती है.

ब्रांच स्कूल और एक शिल्प शाला भी है. ज़िलोंमेंके ३३ मद्रसोंका ख़र्च राज्यके ख़ज़ानहसे दिया जाता है; और इनके सिवा ३७९ देशी शाला हिन्दी व उर्दूके हैं, जिन सबकी सहायता किसी क़द्र राज्यसे कीजाती है.

ज़ात, फ़िर्क़ह और क़ौम- रियासतमें ब्राह्मण, राजपूत, साधू, बनिया, कायस्थ, गूजर, जाट, अहीर, मीने, मुहम्मदी, क़ाइमख़ानी, वगैरह कई क़ौमें हैं. दर्मियानी इलाक़हमें राजपूतोंके सिवा, जो ज़ियादहतर कछवाहा नस्लसे हैं, बागरे ब्राह्मण बहुत हैं, जो काश्तकारी करते हैं; और इनके अलावह कई दस्तकारी पेशह लोग रहते हैं. पूर्वी सीमाके पास और दक्षिण पूर्वमें मीने ज़ियादह हैं, जिनकी तादाद राजपूत क़ौमके बराबर समझी जाती है; राजपूत व बनियों वगैरहकी संख्या बराबर है. दक्षिणी और मध्य ज़िलोंमें ब्राह्मण व गूजर ज़ियादह आबाद हैं. उत्तर तरफ़ राजधानीके आस पास और पश्चिममें जाट, और शैखावाटीमें मुहम्मदी व क़ाइमख़ानी (१) ज़ियादह हैं. गूजर, जाट, अहीर, वगैरह लोग खेती करते हैं; और मीने, जिनका क़ब्ज़ह राजपूतोंके आनेसे पहिले जयपुरकी ज़मीनपर था, दो तरहके हैं; एक चौकीदार और लुटेरे, दूसरे ज़मींदार खेती करने वाले. नागा साधू, जो एक फ़िर्क़ह दादूपन्थियोंका है, ग्रहस्थी नहीं होते; जयपुरके राज्यमें ये लोग सिपाहगरीका काम करते हैं. जयपुरमें मुहम्मदी कम हैं, लेकिन् शैखावाटीमें क़ाइमख़ानी कस्रतसे आबाद हैं, जो पहिले चहुवान राजपूत थे, पर पीछे मुसल्मान होगये; क़दीम ज़मानहमें इन्हीं लोगोंका इस इलाक़हपर क़ब्ज़ह होना सुना जाता है, जिनको पीछेसे कछवाहा राजा उदयकरणके पोते शैखाने बे दख़्ल करके इलाक़ह छीन लिया, और शैखावत फ़िर्क़ोंकी बुन्याद डाली, जो शैखावाटीके ज़िलेमें मौजूद हैं.

ज़मीनका क़ब्ज़ह व महसूल वगैरह- यह बात तहक़ीक़ मालूम नहीं, कि जयपुरके राज्यमें ख़ालिसह, जागीरदारों और पुण्यार्थकी ज़मीन किस क़द्र है; लेकिन् जयपुरके कई वाक़िफ़कार अफ़्सरों वगैरहके बयानसे ऐसा पाया गया, कि क़रीब $\frac{३}{८}$ हिस्सह

---

(१) क़ाइम ख़ानियोंकी जो एक क़लमी तवारीख़ "शजतुलमुस्लिमीन," शैख़ नज्मुद्दीनकी बनाई हुई फ़ार्सी ज़बानमें हमारे पास है, उसमें तफ़्सीलवार लिखा है, कि धुरेराके चहुवान राजा मोतीरायके पांच बेटे थे, जिनमेंसे बड़ेका नाम जयचन्द, दूसरेका करमचन्द, तीसरेका नाम मालूम नहीं. चौथेका जगमाल और पांचवेंका जशकरण था. पहिला जैनुद्दीनख़ां नामसे मुसल्मान होने बाद नारनौलका हाकिम हुआ; दूसरा क़ियामख़ां नामसे मुसल्मान किया गया; तीसरेका नाम ज़बरुद्दीनख़ां रक्खा गया; और दो पिछले अपनी अस्ली हालतमें राजपूत बने रहे. दूसरे क़ियामख़ांकी औलाद क़ियामख़ानी हुई, जिसको आम लोग क़ाइमख़ानी बोलते हैं.

रियासतका खालिसह, $\frac{3}{8}$ हिस्सह ख़िराजगुज़ार और नौकरी देनेवाले जागीरदारोंका, और $\frac{2}{8}$ याने $\frac{1}{4}$ हिस्सह बख़्शिश व धर्म वगैरहमें दीहुई जागीरोंका है. जोती बोई जानेवाली ज़मीनका अभी पता नहीं, कि किस क़द्र है; और न इस बारेके राज्यमें काग़ज़ पाये गये; लेकिन् वहांके लोगोंके अन्दाज़ेके मुवाफ़िक़ सींचीजानेवाली ज़मीन कुल रियासतका दसवां हिस्सह है, परन्तु बारिशके मौसममें दुगनी ज़मीन जोती बोई जाती है, और साल दरसाल इसमें भी कमी बेशी होती रहती है. जागीरदार राजपूतोंमें कई ठिकानेवाले ख़िराज, और कई सिर्फ़ चाकरी देते हैं, और बाज़ लोग लगान और चाकरी दोनों देते हैं. ख़िराजका कोई क़ाइदह या मामूल नहीं है; धर्मार्पण और मूंडकटी वगैरहकी ज़मीनसे लगान नहीं लिया जाता. काश्तकार लोगोंसे ज़मीनके हासिलमें नक्द रुपया और अनाज दोनों लिया जाता है. फ़ी बीघा या फ़ी हल कोई निर्ख़ मुक़र्रर नहीं. ज़मीन व पैदावारके लिहाज़से छठे हिस्सेसे लेकर आधे तक वुसूल होता है. जयपुरमें पटैल, गांवके मुखियाके तौर तह्सीलदारको जमा वगैरह वुसूल करनेमें मदद देता है; पटवारी गांवका हिसाब रखता और क़ानूंगो उसका मददगार रहता है.

रियासत जयपुरमें मए वांदी कुईके ग्यारह निज़ामतें याने पर्गने हैं, जिनका हाल मए उनकी मातह्त तह्सीलोंके यहांपर लिखा जाता है:-

१ निज़ामत हिंडौन.

इसके मुतअल्लिक़ छः तह्सीलें हैं, १ ख़ास तह्सील हिंडौन, २ तह्सील महुवा, ३ तह्सील वालघाट, ४ रत्न ज़िला, ५ तह्सील घोंसला, और ६ तह्सील टोडा भीम. क़स्बह हिंडौन व्यापारका एक बड़ा स्थान है, जिसमें रियासतकी तरफ़से चार सौ के क़रीब जवानोंकी पल्टन, दो तोप, दो सौ नागे रहते हैं; कचहरीका मकान निहायत उम्दह है. एक थाना, और एक शिफ़ाख़ानह व मद्रसह भी हैं; इस ज़िलेमें गेहूं, जव, चना, जवार, बाजरा, उड़द, मूंग, मोठ, तिल, चीना, सिंघाड़ा, तम्बाकू और मूली व गाजरकी पैदावारके सिवा आबो हवा भी उम्दह है.

महुवा- तक़ीबन दो हज़ार चार सौ घरोंकी बस्तीका क़स्बह है; यहांके क़िलेपर दो तोप और चन्द सवार व पैदल रियासतकी तरफ़से रहते हैं; और १०० नागा व ४० सवार तह्सीलके मातह्त हैं.

वालघाट- क़स्बह पहाड़के दामनमें बस्ता है; यहां १०० नागे और ४० सवार मातह्त तह्सील व थानाके रहते हैं; और पहाड़के दक्षिणी तरफ़ एक झील राजके मुलाज़िम जैकब

साहिबकी मददसे बांधा गया, जिससे काश्तकारीको बहुत कुछ फ़ायदह पहुंचता है.

तह्सील खक्कड़- ब सबब ज़ियादह और उम्दह पैदावार होनेके रत्न ज़िलाके नामसे प्रसिद्ध है; यह क़स्बह एक टीलेपर वाके़ है; राज्यकी तरफ़से थाने व तह्सीलमें १०० नागे, ४० सवार और चन्द सिपाही तईनात हैं. इस तह्सीलकी हद रियासत क़रौलीसे मिली हुई है.

क़स्बह घोंसलामें १०० नागे, एक थाना, और चन्द सवार राज्यकी तरफ़से मुक़र्रर हैं.

टोडा भीम- यह क़स्बह एक पहाड़के दामनमें, जो बहुत दूरतक फैला हुआ है, उदयपुरके महाराणा अमरसिंह १, के बेटे भीमसिंहके नामसे प्रसिद्ध है, जिसमें एक थाना, मद्रसह, १०० नागे और चन्द सवार मातह्त तह्सील व थानाके रहते हैं; आबो हवा इस तह्सीलकी मोतदल है.

२ निज़ामत सवाई माधवपुर.

इसके मुतअल्लिक़ ४ तह्सीलें, ख़ास तह्सील सवाई माधवपुर, खंडार, मलारना-डूंगर, और पूतली हैं. शहर सवाई माधवपुर बहुत उम्दह जगहपर आबाद है, जो चारों तरफ़ पहाड़से घिरा हुआ है; और चन्द दर्वाज़े भी हैं. इस इलाकेमें मश्हूर क़िला रणथम्भोर एक ऊंचे और चौड़े पहाड़पर बना हुआ है, जिसका मुफ़स्सल हाल मश्हूर मक़ामातकी तफ्सीलमें बयान किया जावेगा. यहां एक निशान पल्टन, दो सौ ढाई सौ नागा, और पचास सवार तह्सील व थानेके तईनात हैं; राज्यकी तरफ़से एक मद्रसह और शिफ़ाख़ानह भी क़ाइम किया गया है. क़लम्दान, शत्रंज, गंजफ़ा, और पलंगके पाये यहां उम्दह तय्यार होते हैं; यहांके पहाड़ोंमें शिलाजीत पैदा होता है. बर्सातका मौसम इस जगह ख़राब होनेसे बाशिन्दगानको बुख़ारकी शिकायत ज़ियादह रहती है.

खंडार- यहां पहाड़पर इसी क़स्बहके नामका क़िला खंडार बहुत उम्दह और मज़्बूत बना हुआ है, जिसमें कई तोपें, और पचास जवान बिरादरीके रहते हैं; थाना व राहदारी राज्यकी तरफ़से मुक़र्रर है. रणथम्भोर और खंडारके दर्मियान एक बहुत बड़ा जंगल वाके़ है, जहां शेर, चीते, लंगूर, नीलगाय, रीछ और जंगली कुत्ते कस्रतसे पाये जाते हैं; ये कुत्ते बाज़ वक़ गाय व बैल वगै़रहको भी फाड़ डालते हैं; पहाड़पर शिलाजीत पैदा होनेके अलावह खरिया मिट्टीकी भी खान है. पलंग व बान और पाये यहांपर उम्दह बनाये जाते हैं.

क़स्बह मलारना डूंगर, एक पहाड़के नीचे आबाद है, जिसमें पहाड़पर एक मकानके अन्दर चन्द क़ब्रें हैं. यहांपर भी मिस्ल दूसरी तह्सीलोंके राज्यकी तरफ़से जमइयत रहती है; क़स्बहके साम्हने वाले तालाबमें मवेशी वगै़रह पानी पीते हैं.

पूतली- क़स्बह पहाड़के दामनमें वाके़ है, इस पहाड़पर एक क़िला बहुत उम्दह बना हुआ है, जिसमें चन्द तोपें, दो सौ जवान, १०० नागा, और चालीस सवार

रहते हैं; थाना और मद्रसह राज्यकी तरफ़से है; यहांके इलाक़हमें मीना लोग और तह्सीलके मुतअ़ल्लिक़ गांवोंमें तालाव बहुत हैं. यह पर्गनह लॉर्ड लेकने मरहटोंसे छीनकर ईसवी १८०३ [वि० १८६० = हि० १२१८] में खेतड़ीके सर्दारको फ़ौजी मददके एवज़ दिया था.

३ निज़ामत गंगापुर.

यह क़स्बह एक मैदानमें वाके़ है, और रअ़य्यत यहांकी आसूदह हाल है. यहांपर एक निशान पल्टनका, १०० नागा, और ४० सवार राज्यकी तरफ़से रहते हैं. इस इलाक़ेमें चावल, अफ़्यून, और तम्बाकू, ज़मीन उ़म्दह होनेकी वज्हसे अच्छी तरह पैदा होता है. तम्बाकू ख़ास गांव ऊदीका बहुत उ़म्दह और मश्हूर है. क़स्बहके चारों तरफ़ शहर पनाह, और उत्तरकी तरफ़ वाले मैदानमें क़िलेके गिर्द ख़न्दक़ खुदी हुई है. पानी यहांका मीठा और उ़म्दह है. इस निज़ामतके मातह्त दो तह्सीलें- वामनवास और वज़ीरपुर हैं.

वामनवास- क़स्बह एक टीलेपर आवाद है; यहांपर भी और तह्सीलोंके मुताबिक़ सवार व सिपाही वगै़रह राज्यकी तरफ़से रहते हैं. इस तह्सीलमें ज़ियादह आब्रेज़ोंके सबब पानीसे बन्द और खेत भरे रहते हैं, इसी वज्हसे चावल खूब पैदा होता है; ख़ास क़स्बह और मुतअ़ल्लिक़ गांवोंमें शकरक़न्दी और अफ़ीम ज़ियादह निपजती है. उ़म्दह आबो हवापर भी मौसम बर्सातमें पानीकी कस्रतसे यहांके बाशिन्दोंको तक्लीफ़ और बुख़ारकी बीमारी होजाती है.

वज़ीरपुर- क़स्बहमें १०० नागा और सवार व थाना राज्यकी तरफ़से मुक़र्रर है. इस उ़म्दह पैदावार वाली तह्सीलमें कई तालाब हैं, और ज़मीन सेराब होनेकी वज्हसे चावल, अफ़ीम और गन्ना (सांठा) ज़ियादह पैदा होता है. क़स्बहसे तीन कोस फ़ासिलेपर इस तह्सीलकी ह़द रियासत क़रौली से मिली हुई है.

४ निज़ामत द्यौसा.

द्यौसाके मुतअ़ल्लिक़ लालसोट, सकराय, और बस्वा, तीन तह्सीलें हैं. क़स्बह द्यौसा एक पहाड़के नीचे वाक़े है; इस पहाड़पर क़िलेमें दस पन्द्रह जवान मुतअ़य्यन हैं. क़स्बहमें एक निशान, २०० नागा और ४० सवार, एक थाना और कुछ जवान बिरादरीके रहते हैं; और क़स्बहसे आध मीलपर रेल्वे स्टेशन है. यह क़स्बह पुराने ज़मानेमें आंबेरसे पहिले रियासत जयपुरकी राजधानी था, जिसके

क़रीब परोन जंगलमें मश्हूर बाग़ी तांतिया टोपी ईसवी १८५९ [वि० १९१६ = हि० १२७५] में सर्कारी फ़ौजके हाथ गिरिफ़्तार हुआ था.

क़स्बह लालसोट- पहाड़के नीचे वाके़ है; यहां क़ौम ब्राह्मण कस्रतसे आबाद है. पहाड़पर एक पुख़्तह क़िला वीरान पड़ा है; इस तह्सीलमें पैदावारी अच्छी होती है, और क़स्बह मौरानमें पान कस्रतसे पैदा होता है.

क़स्बह सकरायमें १०० नागा और ४० सवार और एक थाना राज्यकी तरफ़से क़ाइम है. यह तह्सील पैदावारीमें दूसरी तह्सीलोंके मुवाफ़िक़ नहीं समझी जाती, यहांकी ज़मीन कोट क़ासिम कीसी है.

तह्सील बस्वा- क़स्बह बस्वामें एक कच्चा क़िला बना हुआ है, जिसमें दो तोपें और चन्द पहरे सर्कारकी तरफ़से रहते हैं; और तह्सीलके मुतअ़ल्लिक़ १०० नागा और ४० सवार मुक़र्रर हैं. पैदावारीमें यह तह्सील उम्दह गिनी जाती है; इन्आ़म और उदक वग़ैरह जागीरी गांव भी इसमें ज़ियादह हैं; इस तह्सीलकी हद रियासत अलवरसे मिली हुई है. सिट्टीके उम्दह बर्तनों और आध मीलके फ़ासिलेपर राजपूतानह स्टेट रेल्वेका [illegible] स्टेशन क़ाइम होनेसे यह क़स्बह ज़ियादह प्रसिद्ध है; यहांकी ज़मीनमें [illegible] ग़ल्लह दो फ़स्ली पैदा होता है.

५ निज़ामत कोट क़ासिम.

ज़मीन यहांकी ख़राब और कम पैदावारकी है, आबो हवा भी अच्छी नहीं, बर्सातमें रास्तह ख़राब और बन्द होजाता है; बाशिन्दोंको बुख़ारकी शिकायत रहती है. यह तह्सील चारों तरफ़ इलाक़ह नाभा, इलाक़ह अंग्रेज़ी और अलवरसे घिरी हुई है. क़स्बह कोट क़ासिम सात सौ घरोंकी आबादी है, जहां एक निशान, २ तोप, चालीस सवार और चन्द जवान बिरादरीके रहते हैं; एक मस्जिद और अक्सर मकानात और एक मीनारा शाही बना हुआ है; यहां ख़ानज़ादह लोग, (ख़ान ज़ादव नामीकी औलाद) ज़ियादह रहते हैं.

६ निज़ामत छावनी नीब.

ख़ास क़स्बह छावनीसे एक मील दूर है, उसमें ५०० घरोंकी और छावनीमें २०० घरोंकी आबादी है; जहां दो सौ के क़रीब सवारोंका एक रिसाला, १००० नागोंकी जमाअ़त, चार निशान, चालीस सवार, २ तोप और एक थाना राज्यकी तरफ़से मुक़र्रर है. छावनीके अन्दर एक क़िला ख़न्दक़ समेत बना हुआ है, नाज़िम और तह्सीलदार वग़ैरह यहीं रहते हैं; और एक शिफ़ाख़ानह भी है. उदक और इन्आ़मके

गांव इस पर्गनेमें ज़ियादह हैं; बाजरा और जवार यहां ज़ियादह निपजती है.

इस निज़ामतकी मातह्त तह्सील बैराठके गिर्द पहाड़ वाके़ हैं, और एक क़िला पुख़्तह क़स्बहसे नज़्दीक ही मए चारों तरफ़ खाईके बना हुआ है; चार तोप, २५ जवान क़िलेमें रहते हैं. क़स्बह पिरागपुरा और महेड़में, जो इस तह्सील के मुतअ़ल्लिक़ हैं, एक एक पुख़्तह और उ़म्दह क़िला बना हुआ है, जिनमें चन्द तोपें और २५ जवान रहते हैं. महेड़के पास वाले मैदानमें एक खजूरके दरख़्तसे बाणगंगाका निकास है, जो बारह महीने रवां रहती है. इस तह्सीलके जंगलोंमें हर तरहके जानवर पाये जाते हैं, और यहांके सन्दूक़्चे, खुश्बूदार मिट्टी और तम्बाकू क़ाबिल तारीफ़ हैं.

७ निज़ामत शैख़ावाटी.

यह इलाक़ह रेतीला और बहुत कम पैदावारका है. इस तह्सीलके मुतअ़ल्लिक़ कोई ख़ालिसेका गांव नहीं, सिर्फ़ भोमिये लोग रहते हैं, जो कुछ रुपया राज्यको देते हैं; ठिकानोंके वकील इस निज़ामतमें हाज़िर रहते हैं. यहां एक पुख़्तह क़िलेके अन्दर कचहरी निज़ामत होती है; क़स्बहकी आबादी ४००० घरकी है. यहां दो रिसाले, एक जमाअ़त नागोंकी, एक थाना और शिफ़ाख़ानह राज्यकी तरफ़से हैं; इलाक़हकी सर्हद बीकानेर, पटियाला, जोधपुर और अंग्रेज़ी इलाक़हसे मिली हुई है.

८ निज़ामत सांभर.

चूंकि सांभर नमक यहां ज़ियादह पैदा होता है, इसलिये इसका नाम सांभर (१) मश्हूर है. यहांपर रियासत जोधपुरकी हद मिली हुई है, और वहांके अहलकार वगै़रह भी यहां रहते हैं. सांभरकी झील, जिसमें नमक पैदा होता है, सर्कार अंग्रेज़ीके ठेकेमें है; उसका सालानह ७३२५६६ रुपया रियासत वालोंको मिलता है. यहांपर कई कोठियां, बंगले, शाही महलात और एक तालाब मुहम्मदशाह गोरीका बनवाया हुआ मए उ़म्दह घाट व छत्रियोंके, और दादूपन्थी साधुओंके क़ियामके लिये जहांगीरशाहका बनवाया हुआ एक मन्दिर क़ाबिल देखनेके हैं. दांता रामगढ़ और मुअ़ज़्ज़मावाद दो तह्सीलें निज़ामत सांभरके मुतअ़ल्लिक़ हैं.

दांता रामगढ़ अच्छा आबाद क़स्बह है; जिसके पश्चिमी तरफ़ एक पुख़्तह क़िला बना हुआ है, उसमें बहुतसी तोपें और ७५ जवान बे क़वाइद रहते हैं. तह्सील के मातह्त २५ जवान और १०० नागा हैं.

(१) पुराने ज़मानेमें यहां चहुवान राजपूतोंकी राजधानी थी, जहां शाकंभरी देवीका प्रसिद्ध मन्दिर होनेके कारण इस स्थानका नाम शाकम्भरी शब्द बिगड़कर सांभर होगया; यहांसे निकले हुए चहुवान राजपूत अब तक सांभरिया कहलाते हैं.

मुअज़्ज़माबाद दो हज़ार घरकी आबादी है; यहांकी ज़मीन पैदावारके लिहाज़से अच्छी है.

९ निज़ामत मालपुरा.

मालपुरामें दो हज़ार घरकी आबादी है, और क़स्बहके किनारेपर एक उम्दह तालाब है; तह्सीलमें दो जमाअ़त नागोंकी और सौ सवार मुतअ़य्यन हैं. महाराजा दूसरे रामसिंहके हुक्मसे जेकब साहिबने क़स्बहसे तीन कोस दूरीपर एक बन्द बंधवाया, जिसके पानीसे हज़ारों बीघा ज़मीन बोई जोती जाती है; बल्कि इलाक़ह टौंक और दूसरी जागीरके गांवोंको भी उससे बहुत कुछ फ़ाइदह पहुंचता है. तह्सील टोडा रायसिंह, और तह्सील नवाय इस निज़ामतके मातहत हैं.

क़स्बह टोडा रायसिंह, जिसको महाराणा अव्वल अमरसिंहके पोते और भीमसिंहके बेटे रायसिंह राजाने बसवाया था, चारों तरफ़ पहाड़से घिरा हुआ है. क़स्बहकी आबादी उम्दह तर्तीबसे होने और महलों वग़ैरहकी बनावट देखनेसे उक्त राजाका होश्यार और रोबदार होना पाया जाता है; महलोंके दर्मियान मन्सूर शाहकी एक ख़ानक़ाह (दर्वेशोंके रहनेकी जगह) है.

क़स्बह नवाय एक पहाड़के दामनमें आबाद है; और पहाड़पर एक क़िला बना हुआ है.

१० ख़ास निज़ामत सवाई जयपुर.

ख़ास शहर जयपुरकी कैफ़ियत और तर्तीब आबादी वग़ैरहका हाल मश्हूर मक़ामातके बयानमें दर्ज किया जावेगा. तह्सील चाटसू, तह्सील कालक, और तह्सील सहुवा रामगढ़ इस निज़ामतके मुतअ़ल्लिक़ हैं.

चाटसूकी तह्सील पैदावारीके हक़में निहायत उम्दह है, और ज़ियादह पैदावारी होनेकी वजह इलाक़हमें तालाबों और नदी नालों वग़ैरहकी कस्रत होना है. आबो हवा यहांकी अच्छी और ज़मीन हमवार है.

तह्सील कालक- क़स्बह पहाड़के नीचे आबाद है, जिसमें अच्छी आबादी, और पहाड़पर एक मुस्तहकम क़िला है. क़स्बहके पूर्वमें किनारेपर एक बन्द बंधा हुआ है, जिसका पानी मालपुरा और मुअज़्ज़माबादकी ज़मीनको सैराब करता है.

तह्सील रामगढ़का क़स्बह ढाई हज़ार घरोंकी आबादी है. यहां शाही इमारतें महल और कई उम्दह तालाब भी हैं; ज़मीन औसत दरजहकी है.

११ बांदीकुई.

इसका नाम किसी बांदीके कुआं बनानेसे क़ाइम हुआ. यह एक बड़ा सद्र स्टेशन राजपूतानह स्टेट रेलवेपर राज्य जयपुरमें है, और क़स्बह मोहनपुरा स्टेशनसे एक मील दूरीपर है. आबो हवा यहांकी अच्छी है. अगले ज़मानेमें यहां लुटेरे और डाकू वगैरह लोग ज़ियादह रहते थे, जो वीरानह, घाटी और दर्रोंके आने जाने वाले मुसाफ़िरोंको लूट मारकर जंगलमें भाग जाया करते थे; लेकिन् अब रेलवे स्टेशनके नये इन्तिज़ामसे सब शिकायतें मिट गईं. यहां एक नाज़िम राज्य जयपुरकी तरफ़से रहता है, जिसको मॅजिस्ट्रेटी-का काम सुपुर्द है; वह बस्वासे अजमेर तक रियासती मुक़द्दमातमें दख़्ल रखता है; और सर्कार अंग्रेज़ीसे उसको पास मिला हुआ है, कि जिससे मह्सूलकी बाबत कोई रोक टोक न करसके. इस जगह गेहूं, जवार, बाजरा, उड़द, मूंग, मोठ, कपास तिल, चना वगैरह पैदा होते हैं.

मश्हूर शहर व क़स्बे.

जयपुर- यह रियासतकी राजधानी, जो दक्षिणके सिवा हर तरफ़ पहाड़ोंसे घिरी हुई है, एक मुख़्तसर मैदानमें वाके़ है; उत्तरी तरफ़ शहरसे मिला हुआ कई सौ फ़ुट ऊंचा पहाड़, और उसपर आलीशान महल हैं. दक्षिणी तरफ़ इस पहाड़की चढ़ाई बहुत खड़ी और चढ़ने उतरनेके क़ाबिल नहीं है, अल्बत्तह उत्तरकी ओर रफ़्तह रफ़्तह क़दीम राजधानी आंबेर तक नीचा होता गया है. शहर जयपुरकी लम्बाई पूर्व और पश्चिममें क़रीब दो मील, और चौड़ाई उत्तर व दक्षिणमें एक मीलके क़रीब है; उसके हर तरफ़ पक्की शहरपनाह मए ऊंचे बुर्जों व दर्वाज़ोंके है, लेकिन् शहरपनाहकी चौड़ाई इतनी कम है, कि मैदानी तोपख़ानहका मुक़ाबलह नहीं कर सक्ती; और बलन्दी भी कम है, जिससे रेता, जो हमेशह उड़ता रहता है, अक्सर मकानातपर दीवारके पास कंगूरों तक जमा होगया है; और अगर कभी इस दीवारके गिर्द खाई थी, तो उसका निशान मिटादिया है. शहरपनाहसे बाहर दर्वाज़ोंके मुक़ाबिलमें दीवारें हैं, जिनको घोघस कहते हैं; उनमें तोपोंके वास्ते दमदमे और बन्दूक़ोंके मोर्चे बने हुए हैं; शहरके सात दर्वाज़े एकसी बनावटके हैं. हिन्दुओंके आबाद किये हुए तमाम शहरोंमें जयपुर शहर बहुत ख़ूबसूरती और क़ाइदहके साथ बसा है. सद्र बाज़ार पूर्वसे पश्चिमको दो मील लम्बा और चालीस गज़ चौड़ा है; और इसी चौड़ाईके चन्द बाज़ार उत्तर और दक्षिणमें हैं; दोनों तरफ़के बाज़ारोंके हर एक मिलानपर चौक है, जहां गुदड़ीका बाज़ार लगता है. इन बाज़ारोंके

मुक़ाबिलमें दूसरे दरजेके बाज़ार २० गज़ चौड़े, और तीसरे दरजेकी गलियां ९ गज़ चौड़ी हैं; जिस जगह बाज़ार या गलियां बाहम बीचमें मिलते हैं, वह चौक चौपड़ कहलाता है; और कुल शहर चौरस हिस्सोंमें तक्सीम होरहा है. बड़े बाज़ारोंमें तमाम दुकानें एक ही तर्ज़की पक्की बनाई गई हैं, जिन सबके आगे सायवान हैं, और बाज़ारोंको जुदा जुदा रंगोंसे रंग दियागया है.

महाराजा साहिबका महल और बाग़ मए मकानातके शहरके दर्मियानी हिस्सेमें, जिसकी लम्बाई आध मील है, वाके़ हैं; महलका अव्वल मकान 'हवा महल' बाज़ारके किनारेपर सात आठ मन्ज़िल ऊंचा है, उसके गिर्द बलन्द बुर्ज और उनपर छत्रियां हैं; इहातेके भीतर दो बहुत बड़े और कई छोटे दीवान ख़ाने संगीन थम्भोंके हैं, और बाग़, जिसके गिर्द बलन्द मोर्चेदार दीवार है, निहायत ख़ूबसूरत और रौनक़की जगह है, उसकी सड़कोंपर फ़व्वारे और सर्व व शमशाद तथा कई क़िस्मके फूलदार दरख़्त और जा बजा आराइशके चबूतरे कस्रतसे हैं; अगर्चि हरएक तख़्तह ज़ियादह ख़ूबसूरत नहीं है, लेकिन हक़ीक़तमें कुल बाग़ बहुत उम्दह और दिलचस्प है. जैकोमिन्ट साहिबने लिखा है, कि इस बड़े इहातेके अन्दर १२ महल हैं, कि हर एकसे दूसरेको नाल या बाग़में होकर आने जानेका रास्तह है. सबसे उम्दह मकान दीवान ख़ास बिल्कुल संग मर्मरका बनाहुआ है; और यही पत्थर कुल मकानातमें कस्रतसे ख़र्च हुआ है; बड़े बाज़ार और गलियोंमें भी मकानात इसी पत्थरके बड़ी ख़ूबसूरतीसे बने हैं, और ऐसेही मन्दिरों और मस्जिदोंकी बड़ी बड़ी इमारतोंकी कस्रतसे शहरने रौनक़ और दुरुस्ती पाई है. शहरसे चार मीलके फ़ासिलेपर अमानी शाहके नलेसे आहनी नलोंके द्वारा शहरमें मीठा पानी लाया जाता है, जिससे बाशिन्दोंको बड़ा आराम रहता है. इस शहरको महाराजा सवाई जयसिंह दूसरेने विक्रमी १७८५ [हि० ११४० = ई० १७२८] में आबाद करके अपने नामसे नामज़द किया था, और अपने निवासके कारण कुल राज्यका कारख़ानह क़दीम शहर आंबेरसे लाकर यहांपर क़ाइम किया, कि जबसे दिन बदिन कम होकर अब आंबेर वीरान होगया है.

आंबेर- जयपुरसे चार मील उत्तरमें पहाड़ोंके अन्दर एक छोटे तालाबके किनारेपर वाके़ है, उसके मन्दिर और मकानात और गलियां पहाड़ोंके नालोंपर, जो कि तालाबसे मिले हैं, फटी हैं. इन गलियोंमें, जो बहुत पेचदार और गुंजान दरख़्तोंके छायासे अंधेरी हैं, अब सिवा ख़ाकी जटाधारी वैरागियोंके, जो वीरान मकानात और मन्दिरोंमें रहते हैं, कोई नहीं रहता. तालाबके पश्चिमी किनारे और पहाड़के दामनपर आंबेरका बड़ा भारी महल और शिलादेवीका मन्दिर है,

जिसकी इमारत बहुत मज़्बूत और चौड़े आसारोंकी काश्मीरकी क़दीम इमारतसे बहुत कुछ मिलती है. जैकोमिन्ट साहिब और हेबर साहिब दोनोंने लिखा है, कि हमने ऐसा दिलचस्प, खुशनुमा और खूबसूरत मकाम और कोई नहीं देखा. पहाड़के ढालपर और भीतरी अंधेरी जगहमें चार बुर्जोंसे महफ़ूज़ ज़नानह महल, और उससे बढ़कर, मगर बुर्जों व दर्वाज़ोंके ज़रीएसे महलसे मिला हुआ बड़ा क़िला है, जिसके हर तरफ़ दमदमे और मोर्चे बने हुए हैं; और सबसे बलन्दीपर एक उम्दह खूबसूरत मीनार है. लड़ाई झगड़ोंके ज़मानहमें क़िलेके तौर पर काम आनेके सिवा यह मकाम बतौर राज्यके खज़ानह और जेलखानहके काममें लाया जाता है. कहते हैं, कि शिला देवीके मन्दिरमें पुराने ज़मानेमें हर रोज़ आदमी मारा जाता था, अब उसकी जगह बकरा मारा जाता है. जयपुरके आबाद होनेसे पहिले क़दीम ज़मानहमें आंबेर राजधानी था, जिसको कछवाहा राजपूतोंने विक्रमी १०९४ [हि० ४२८ = ई० १०३७] में सूसावत मीनोंसे बड़ी लड़ाईके बाद छीना, और उनको वहांसे हटाकर चन्द गांव देने बाद रियासतके क़िलों और खज़ानहकी हिफ़ाज़त रखनेकी नौकरी सुपुर्द की, जिसका हक़ ज़मानए हाल तक वही लोग रखते हैं. यह शहर २६° ५९′ उत्तर अक्षांश और ७५° ५८′ पूर्व देशान्तरके दर्मियान वाके है.

क़िला रणथम्भोर- यह क़िला शहर जयपुरसे ७५ मील दक्षिणी सर्हद याने बूंदीकी तरफ़ एक पहाड़पर, जिसके हर तरफ़ गहरे और पेचदार नाले तथा पहाड़ हैं, और एक तंग रास्तहसे गुज़र है, वाके है. ऊपर जाकर पहाड़की बलन्दी ऐसी सिधी है, कि सीढ़ियोंके ज़रीएसे चढ़ना पड़ता है; और चार दर्वाज़े आते हैं. पहाड़की चोटी एक मीलके क़रीब लम्बी और इसी क़द्र चौड़ी है, जिसपर बहुत संगीन फ़सील बनी हुई है, जो पहाड़की हालतके मुवाफ़िक़ ऊंची और नीची होती गई है, और जिसके अन्दर जा बजा बुर्ज और मोर्चे बने हुए हैं. इहातेके भीतर क़िलेदारके रहनेका महल है, और किसी मुसल्मान पीरका मज़ार और एक पुरानी मस्जिद बाक़ी है. फ़ौजके लिये कई बारकें भी मौजूद हैं. क़िलेके अन्दर कई ऐसे बर्साती चश्मे और तालाब हैं, जो वहांकी ज़रूरतके लिये काफ़ी होसक्के हैं; क़िलेके पूर्वी तरफ़ एक तंग और संगीन ज़ीनहके ज़रीएसे मिला हुआ क़स्बह आबाद है. इस क़िलेका फ़त्ह करना चारों तरफ़ पहाड़ोंसे घिरे रहनेके सबब हमेशह मुश्किल समझा गया है. राज्य जयपुरकी तरफ़से इसमें एक हज़ारके क़रीब फ़ौज तीस तोपों समेत रहती है.

इस नामी क़िलेको दर्मियानी तेरहवीं सदी ईसवीमें किसी चहुवान राजाने

बनवाया था. विक्रमी १३४८ [हि० ६९० = ई० १२९१] में जलालुद्दीन फ़ीरोज़-शाह खिल्जीने इसपर घेरा डाला; लेकिन् वह कामयाब न होसका. विक्रमी १३५४ [हि० ६९६ = ई० १२९७] में अलाउद्दीन मुहम्मदशाह खिल्जीने क़िलेकी दीवार तक पुश्तह बनाने बाद राजा हमीरदेवको क़त्ल करके, जो पृथ्वीराजका रिश्तहदार था, (१) इसे छीन लिया; और खिल्जियों और तुग़लक़ोंके आख़िर अह्द तक वह दिल्लीके मुतअल्लक़ रहा. तेरहवीं सदी ईसवीके ख़ातमेपर, जब कि तुग़लक़ोंके कमज़ोर होनेसे उनके मातहत सूबहदार, दक्षिण, गुजरात, मालवा, बंगाला वग़ैरहके सूबोंपर खुद मुरूतार बन बैठे, और तीमूर लंगने दिल्लीको ग़ारत और तबाह किया, यह क़िला मालबी बादशाहोंके क़ब्ज़हमें गया; और वह यहांपर विक्रमी १५७२ [हि० ९२१ = ई० १५१५] तक क़ाबिज़ पाये जाते हैं. ख़याल किया जाता है, कि विक्रमी १५७६ [हि० ९२५ = ई० १५१९] में, जब कि मालवेका महमूद सानी मुक़ाबलह करके महाराणा सांगाकी क़ैदमें पड़ा, तो क़िला रणथम्भोर कुछ इलाक़ह समेत मेवाड़के क़ब्ज़हमें आया; और उनके बेटे महाराणा रत्नसिंहके बाद तक वहींसे मुतअल्लक़ रहा. विक्रमी १५८४ [हि० ९३३ = ई० १५२७] में महाराणा सांगाके गुज़रनेपर उनका बड़ा बेटा रत्नसिंह चित्तौड़की गद्दीपर बैठा, और दूसरे विक्रमादित्यके क़ब्ज़हमें रणथम्भोर रहा. तुज़ुक बाबरीसे पायाजाता है, कि इन दोनों भाइयोंमें अदावत होनेसे बड़ा रणथम्भोरको और छोटा चित्तौड़को लेनेकी फ़िक्रमें था; इसी सबबसे विक्रमादित्यने क़िले रणथम्भोरको ज़िले शम्साबादके एवज़ बाबर बादशाहके हवाले करदेनेका इरादह किया था, जो उनके बड़े भाईके गुज़रजाने और उनके राज पानेसे मुल्तवी रहा. विक्रमी १६०० [हि० ९५० = ई० १५४३] में, जब शेरशाह सूरने राजपूतानहपर चढ़ाई और मालदेवसे लड़ाई करके नागौर व अजमेरको लेलिया, तो उस वक़्त या उससे कुछ पहिले उसने रणथम्भोरको दबा लिया; और अपने बड़े बेटे आदिलखांको जागीरमें देदिया. शेरशाहके मरने बाद, जब उसकी औलाद में बद इन्तिज़ामी फैली, और हुमायूंने काबुलकी तरफ़से पंजाब आ दबाया, तो पठानोंको मज्बूल मक़ामातसे हाथ उठाना पड़ा; चुनांचि मुहम्मदशाह अद्लीके अह्द विक्रमी १६१५ [हि० ९६५ = ई० १५५८] में झुझारखां क़िलेदारने राव सुर्जन हाड़ाको, जो मेवाड़का एक मातहत सर्दार और बूंदीका जागीरदार था, कुछ रुपया लेकर क़िला हवाले कर दिया. विक्रमी १६२५ फाल्गुन [हि० ९७६ रमज़ान =

(१) फ़ीरोज़ शाहीमें हमीरदेवको पृथ्वीराजका "नबीसह" लिखा है, जिसका अर्थ 'दोहिता' और 'पोता' होता है.

ई० १५६९ फ़ेब्रुअरी] में अक्बर बादशाहके चढ़ाई करनेपर राव सुर्जनने उसको क़िला हवालह करके मेवाड़के एवज़ बादशाही इताअ़त क़ुबूल की, और फिर इस क़िलेपर मेवाड़ वालोंका दख़्ल न होसका. विक्रमी १६७६ [हि० १०२८ = ई० १६१९] में जहांगीर इस क़िलेकी सैर करके बहुत ख़ुश हुआ. वह लिखता है, कि 'रण' और 'थम्भोर' दो टेकरियोंमेंसे, जो क़रीब हैं, पिछलीपर क़िला बनाया गया था; और दोनों टेकरियोंके नाम मिलाकर क़िलेका नाम रणथम्भोर रख दिया गया है. शाहजहांने अपने शुरूअ़् अ़हद विक्रमी १६८८ वैशाख कृष्ण ८ [हि० १०४० ता० २२ रमज़ान = ई० १६३१ ता० २४ एप्रिल] को यह क़िला राजा विठ्ठलदास गौड़को इनायत किया था; लेकिन् आलमगीरने इसको वापस ख़ालिसेमें दाख़िल किया, जो दर्मियानी अठारहवीं सदी ईसवी तक दिल्लीके मातह्त रहा. अ़ज़ीज़ुद्दीन आलमगीर सानीके अ़ह्द विक्रमी १८१२ [हि० ११६८ = ई० १७५५] में, जब कि मुग़्लियह सल्तनत तबाहीके क़रीब पहुंची, तो बादशाही क़िलेदारने मरहटोंके ख़ौफ़से यह क़िला जयपुरके महाराजा माधवसिंह अव्वलको सौंप दिया, और जबसे अब तक वहींके क़ब्ज़हमें चला आता है. क़िलेदारकी औलादमेंसे कई जागीरदार अब तक जयपुरके मातह्त हैं, जिनकी वहां बहुत कुछ ताज़ीम व इ़ज़्ज़त कीजाती है.

ईसरदा- एक आबाद रौनक़दार क़स्बह शहरपनाह और खाईसे घिरा हुआ जयपुरसे साठ मील बनास नदीके तीरपर वाके़ है. यह एक जागीरदारका ठिकाना है, और इसमें एक गढ़ है.

खेतड़ी- जयपुरके एक बड़े सर्दारकी राजधानी क़िला समेत है, जिसकी पहाड़ीके क़रीब तांबेकी खानें हैं. क़स्बहमें एक मद्रसह, अस्पताल और एक सर्कारी डाकख़ानह भी है.

बगरू- एक मश्हूर क़स्बह आगरा व अजमेरकी सड़कपर राजधानी जयपुरसे १८ मील दूरीपर है, जिसमें रंगसाज़ी और कपड़ा छापनेका काम ज़ियादह होता है.

डिग्गी- एक मश्हूर और आबाद क़स्बह कच्ची शहरपनाह व कच्चे क़िले सहित जयपुरसे ४२ मील दक्षिणको है, और ख़ासकर कल्याणरायजीके मेलेके लिये मश्हूर है, जिसमें १५००० आदमी हर साल जमा होते हैं.

दूदू- आगरा व अजमेरकी सड़कपर कच्ची शहरपनाहसे घिरा हुआ है, जिसमें एक छोटा, लेकिन् मज्बूत क़िला है.

टूणी- यह एक आबाद क़स्बह है, जिसका क़िला विक्रमी १८६६ [हि० १२२४ = ई० १८०९] में दौलत राव सेंधियाके मुक़ाबलहमें मज्बूत रहने और बचाव करनेमें कामयाब होनेके सबब मश्हूर है.

फ़त्हपुर- शैख़ावाटी ज़िलेमें मोर्चा बन्द क़स्बह सीकरके सर्दारका है, जो जयपुरका ख़िराज गुज़ार है; इसको राव राजा लक्ष्मणसिंहने अपने रहनेके लिये आबाद किया था, उस वक़्त यह बड़ी रौनक़पर था.

नाराणा- अगर्चि यह एक छोटा क़स्बह जयपुरसे ४० मील फ़ासिलेपर पश्चिमकी तरफ़ वाके़ है, लेकिन् पुराने ज़मानहका बसा हुआ, और अच्छे अच्छे मन्दिर तथा दादूपन्थी साधुओंका मुख्य स्थान होनेके सबब मश्हूर है. ऊपर लिखे हुए क़स्बोंके सिवा लक्ष्मणगढ़, नवलगढ़, उनियारा, रामगढ़, सामोद, सीकर व सांगानेर, सिंघाणा, सांभर वगै़रह भी अक्सर प्रसिद्ध क़स्बे हैं.

मज़्हबी मक़ामात- गलता; अंबिकेश्वर; सांगानेरके जैन मन्दिर, जिनमेंसे कितने एक १००० से ज़ियादह सालके बने हुए और आबूपर देलवाड़ा मक़ामके मश्हूर जैन मन्दिरोंकी तर्ज़पर बनाये गये हैं; खो, एक छोटासा गांव इस लिये मश्हूर है, कि कछवाहा राजपूतोंने पहिले पहिल जयपुरकी रियासतमें इसी गांवपर क़ब्ज़ह पाया था; चरणपाद; बैराट; गेटोरकी छत्रियां वगै़रह कई प्रसिद्ध और क़दीम ज़मानेके मक़ामात तीर्थ यात्रा आदिके लिये मश्हूर हैं.

मश्हूर मेले- चाटसूमें डूंगरी शैलरमाता, कालकमें ज्वाला माता, नराणामें दादू, आंबेरमें शला देवी, जयपुरमें रामनवमी, तालामें पीर बुर्हान, गोदेरमें गोदेर जगन्नाथ, नईमें महादेव, शामोदमें महिमाई, डिग्गीमें कल्याणराय, हिंडोनमें महावीर, चौसामें रघुनाथ, भांडारेजमें गोपाल, बसवामें पीर शाहखारार, टोडा भीममें खंडमखंडी, सकराय में माता, सवाई माधवपुरमें गणेश व काला गोरा भैरव, बर्वाड़ामें चौथ माता और खंडारमें रामेश्वरका मेला होता है. ऊपर लिखे हुए मक़ामोंके सिर्फ़ व्यापार व धर्म सम्बन्धी मुख्य मेलोंके नाम यहां दर्ज किये गये हैं, जिनमें प्रति वर्ष हज़ारहा आदमी जमा होते हैं, परन्तु सांगानेर व आंबेर वगै़रहमें हर साल कई छोटे छोटे मेले और भी होते हैं.

ख़ास शहर जयपुरमें संगतराशीका काम याने सियाह व सिफ़ेद पत्थरकी मूर्तियां वगै़रह कई चीज़ें उ़म्दह बनती हैं. ऊनी कपड़ा याने बारानी, घुग्घी व चकमे मालपुराके मश्हूर हैं. सोने व चांदीकी लेस, कलाबतूनी कामके जूते, चूड़ियां, दो-पट्टे, छींट, और मीनाकारीकी चीज़ें जयपुरमें बहुत उ़म्दह और मश्हूर बनती हैं; यहांकी बनी हुई मीनाकारीकी चीज़ें पैरिस, लंडन व वियेनाकी नुमाइशगाहोंमें भेजी जाती हैं.

बाहर जानेवाली व्यापारकी ख़ास चीज़ें इस रियासतमें कपास, अनाज, किराना, शक्कर, छपे हुए कपड़े, चमड़ा, शैखा़वाटीकी ऊन, संगमर्मरकी मूर्तें, चूड़ी और जूता वगै़रह हैं. बाहरसे आनेवाली चीज़ें अनाज, विलायती कपड़ा, शक्कर, बर्तन, और मुसालिह (मसालह) वगै़रह हैं.

आमदो रफ़्त व व्यापारके रास्ते- १ जयपुरसे टौंक तक जानेवाली सड़क, ६० मील

लम्बी; २ मंडावर व क़रौलीकी सड़क, मंडावरसे क़रौली तक ४९ मील लम्बी है; ३ आगरासे अजमेरको जानेवाली राजपूतानह रेल्वे लाइन, राजधानी और राज्यके बीचमें होकर पूर्व और पश्चिमको गई है, जो सबसे बड़ा रास्तह तिजारती सामान लाने और नमक व रूई वग़ैरह कई चीज़ें पश्चिमोत्तरी देश व पंजाब वग़ैरहमें लेजानेका है; और भी छोटे छोटे बहुतसे रास्ते हैं, जिनका बयान तवालतके सबब छोड़दिया गया है.

राज्य जयपुरकी तवारीख़,
कछवाहोंका इतिहास.

इस राज्यकी तवारीख़ एकट्ठी करनेके लिये हमने बहुत कुछ कोशिश की, महाराजा धिराज श्री माधवसिंह २, को वर्तमान महाराणाने और रेज़िडेण्ट मेवाड़, कर्नेल वाल्टरने भी कहा; और मैं (कविराज श्यामलदास) ने भी रूबरू निवेदन किया, उक्त राजधानीके मन्त्री व प्राइवेट सेक्रेटरी व सर्दारोंके पास यहांसे एक आदमी भेजा गया, तथापि हमको इच्छानुसार वहांका इतिहास न मिला. तब लाचार नीचे लिखी हुई किताबोंसे काम लिया.

नेनसी महताकी पुरानी तहक़ीक़ात, कर्नेल टॉडका इतिहास, राजपूतानह गज़ेटियर, कर्नेल ब्रुकका जयपुर गज़ेटियर, जयसिंह चरित्र (भाषा कविताका ग्रन्थ, आत्माराम कवि कृत), जयवंश महाकाव्य संस्कृत, राम पंडितका बनाया हुआ, एक पुस्तक जयपुरकी ख्यात भाषावार्तिक, पंडित रामचरण डिप्युटी कलेक्टर झालरापाटनकी भेजी हुई, तथा एक दूसरी ख्यात जयपुरकी, जो हमने छोटू नागर की पुस्तकसे लिखवाई; उक्त नागर महाराणा स्वरूपसिंहके समय जयपुरकी ख़बर नवीसीपर मुक़र्रर था; तीसरी ख्यात जोधपुरके रेज़िडेण्ट पाउलेट्की हिन्दी पुस्तकसे नक़्ल करवाई, शिखर वंशोत्पत्ती, चारण कविया गोपालकी बनाई हुई, जो कर्नेल पाउलेट्की पोथीसे नक़्ल कराई गई; वंशभास्कर, बूंदीके मिश्रण चारण सूर्यमल्ल कृत भाषा कविता. इनके अलावह फ़ार्सी तवारीख़ें अक्बर नामह, इक़्बाल-नामए जिहांगीरी, तुज़ुक जिहांगीरी, बादशाह नामह, अमल स्वालिह, आलम-गीर नामह, मआसिरे आलमगीरी, मुन्तख़बुल्लुबाब, मिरातिआफ़्ताब नुमा,

सैरुल्मुतअख़्ख़िरीन, मआसिरुल् उमरा वग़ैरहसे राजा भारमल्लके बाद इस वंशका हाल चुनागया; परन्तु हमारी तसल्लीके लाइक़ नई तहक़ीक़ात और जयपुरके दफ़्तरसे अथवा वहांके मुलाज़िमोंसे कोई काग़ज़ात नहीं मिले; और ऊपर लिखी हुई सामग्रीसे राजा भारमल्लके बादका हाल कुछ ठीक होगा, परन्तु उक्त राजासे पहिला इतिहास, जो कहानी व क़िस्सोंके मुवाफ़िक़ मिलता है, वह अगर्चि क़ाबिल इत्मीनान नहीं है, लेकिन् लाचारीके सबब उसीका आश्रय लेना पड़ा.

इस वंशको सूर्य कुलकी एक शाख़ बतलाते हैं, परन्तु ईशासिंह और सोढ़देवके पहिलेका इतिहास बिल्कुल अन्धकारमें पड़ा हुआ है, टटोलनेसे भी अस्ल मत्लब हाथ नहीं लगता, कुर्सीनामे अनेक तरहके मिलते हैं, किसीमें दस पांच नाम ज़ियादह किसीमें कम; किसीमें नये ही नाम घड़ंत किये गये हैं; बाज़ रामचन्द्रके पुत्र कुशसे जुदी ही शाखा ईशासिंह तक मिलाते हैं, और किसीने अयोध्याके आख़िरी राजा सुमित्रसे ईषासिंह तक वंश चलाया. इस इख़्तिलाफ़को देखकर दिल क़बूल नहीं करता, कि मैं भी उन लकीरोंमेंसे किसी एकपर चलूं; आख़िरकार यही ठहराया, कि राजा सुमित्रसे पहिला हाल तो भागवत पुराण, और महाभारतके हरिवंश वग़ैरह संस्कृत ग्रन्थोंमें लिखा हुआ है, जिसमें हेर फेर नहीं होसक्ता; और सुमित्रसे लेकर ईषासिंहके बीचका हाल छोड़कर ईशासिंहसे तवारीख़ लिखना शुरूअ् किया है.

देवानीकके पुत्र १ राजा ईशासिंह ग्वालियरका राज्य करते थे. एक समय विद्वान ब्राह्मणोंके कहनेसे धन दौलत उन्होंने कुलब्राह्मणोंको लुटादी, और ग्वालियरका राज अपने भानजेको देकर किसी दूसरी जगह जारहे. उनका पुत्र २ सोढ़देव विक्रमी १०३३ कार्तिक कृष्ण १० [हि० ३६६ ता० २४ मुहर्रम = ई० ९७६ ता० २२ सेप्टेम्बर] को नैशध देश बरेलीमें अपने बापकी जगह राजा हुआ, और यादव कुलकी राजकन्याके साथ विवाह किया, जिसके गर्भसे दुर्लभराज अर्थात् दुल्लहराय कुंवर पैदा हुआ. इस कुंवरने अपने बापके हुक्मसे फ़ौजकशी करके धौसामें अमल करलिया, जहां बड़गूजर राजपूतोंका राज था, और जो बहुतसे मारे गये. इस राजकुमारने भांडारेजमें अमल किया, और इसी तरह मांचीपर हमलह किया, जो मीना लोगोंके रहनेका बड़ा विकट स्थान था; परन्तु वहां फ़ौज सहित यह ख़ुद ज़ख़्मी हुआ. ख्यातमें लिखा है, कि अपनी कुलदेवीकी दुआ (बरदान) से उसने फिर मीनोंको मारकर मांचीमें अमल करलिया, और वहां एक क़िला बनाकर उसका नाम रामगढ़ रक्खा; और अपनी कुलदेवी जमुहाय माताका भी एक मन्दिर बनवाया. सोढ़देवने अपने पुत्र दुल्लहरायको युवराज बना दिया. कुछ अर्से बाद सोढ़देवका इन्तिक़ाल हुआ, और

३ दुल्हराय राजा होने बाद मीणा वगैरह सर्कश लोगोंको दबाकर ज़बर्दस्त होगया. फिर वह ग्वालियरकी तरफ़ लड़ाईमें मारा गया. तब उनके बेटोंमेंसे बड़ा कांकिल गादी बैठा, और छोटा बिकल था, जिसके बिकलावत कछवाहा कहलाये, और जिसकी औलाद रामपुर वगैरहमें है.

४ कांकिलने अपनी बहादुरी और जमुहाय माताके हुक्मसे मीणा लोगोंको मारकर अम्बिकापुर (आंबेरके) शहरकी नीव डाली; और अम्बिकेश्वर महादेवका मन्दिर बनवाया. कांकिलका देहान्त हुआ, तो उनके चार बेटोंमेंसे बड़ा ५ हणूं गादी बैठा; दूसरा अलखरायके, झामावत कछवाहा हुए, जिनका वंश अब कोटड़ीमें है; तीसरा देलण, जिनकी औलाद पूर्वमें हरड़्या वैद्यनाथके पास है; चौथा रालण, जिनकी औलाद नंगली पालखेड़ाके पास लहरका कछवाहा कहलाती है. हणूंका इन्तिकाल होने बाद उनका बेटा ६ जानड़देव गादी बैठा; और उनके बाद ७ प्रजूनराय राजा बना, जो बड़ा पराक्रमी और राजा पृथ्वीराज चहुवानके सामंतोंमें नामवर था. यह भी लिखा है, कि पृथ्वीराजकी बहिनके साथ उसकी शादी हुई थी. प्रजून के बाद ८ मलेसीने अपने पिताका पद पाया, और उनके बाद ९ बीजलदेव क्रमानुयायी हुआ, जिनके पीछे १० राजदेव गद्दीपर बैठा, जिसने अपने पूर्वज कांकिलके बनाये हुए आंबेर स्थानमें शहर आबाद करके राजधानी बनाई. इसके छः बेटे हुए, १ कीलहण, २ भोजराज, इनकी औलाद लवाणगढ़के कछवाहे कहलाते हैं; सिवाय इसके इनके वंशकी शाखा प्रशाखा और भी कई शाखें हैं. ३ सोमेश्वर (१), ४ बीकमसी, ५ जयपाल, ६ सीहा, जिसके सीहावत कछवाहा कहलाते हैं.

राजदेवके पीछे ११ कील्हण गद्दी नशीन हुआ. महाराणा रायमल्लका रासा, जो उक्त महाराणाके ही समयमें बना था, और जिसकी दो सौ वर्ष पहिलेकी लिखित एक पुस्तक हमारे पास है, उसमें महाराणा कुंभाके हालमें कुंभलमेरुपर कीलहणका सेवा करना लिखा है. यह बात अच्छी तरह खुलासह नहीं हुई, कि वह उक्त महाराणाकी पनाहमें रहता था, या ताबेदारोंकी गिन्तीमें था; लेकिन् जैसे उस समयमें मालवी और गुजराती बादशाह बड़े ज़बर्दस्त थे, महाराणा राजपूतानहके दूसरे राजाओंपर ग़ालिब थे, जिससे दोनों बातें संभव हैं. कील्हणके तीन बेटे थे, १ कूंतल, २ अखेराज, जिसके वंशके धीरावत कछवाहा हैं; ३ जसराज, जिसके जसरेपोता कछवाहा कहलाते हैं.

---

(१) इनकी औलादको नेनसी महता राणावत कछवाहा कहलाना लिखता है, और जयपुरकी ख्यातकी पुस्तकमें लिखा है, कि सोमेश्वरकी औलाद वाले सोमेश्वर पोता कछवाहा कहलाते हैं.

कील्हणके बाद १२ राजा कूंतल गादी बैठा. इनके चार बेटे थे, १ भोणसी, २ हमीर, जिनके हमीरदेका कछवाहा, ३ भड़सी जिसके भाखरोत कीनावत कछवाहा, ४ आल्हण, जिसके जोगी कछवाहा कहलाते हैं. कूंतलके बाद राजा १३ भोणसी ने अधिकार पाया. भोणसीके चार बेटे थे, १ उदयकरण, २ कुंभा, जिसके कुम्भाणी कछवाहा, ३ सांगा, ४ जैतकरण.

भोणसीके बाद १४ उदयकरण आंबेरके राजा बने. इसके छः बेटे थे, १ नृसिंह २ बरसिंह, जिसकी औलाद नरूका (अलवर, उणियारा, लांवा, लदाना वगैरह) हैं; ३ बाला, जिसके शेखावत; ४ शिवब्रह्म, जिसके शिवब्रह्म पोता; ५ पातल, जिनके पातल पोता; ६ पीथा, जिसके पीथल पोता कछवाहा कहलाये.

१५ नृसिंह आंबेरकी गादीपर बैठा, जिसके १ बनवीर, २ जैतसी, ३ कांधल, तीन कुंवर हुए; इनमेंसे बड़ा १६ बनवीर आंबेरके मालिक हुए. इनके १ उद्धरन २ नरा, ३ मेलक, ४ बरा, ५ हरा और ६ वीरम थे; इन छः मेंसे ३ मेलकके मेलक कछवाहे हैं; बाक़ी सबकी औलाद बनवीर पोता कहलाई.

बनवीरके बाद १७ राजा उद्धरन हुआ, इसके बाद १८ राजा चन्द्रसेन गादी बैठा. इनका चाटसूके मक़ाम मांडूके बादशाहसे लड़ाई करना लिखा है, लेकिन् उस बादशाहका नाम नहीं लिखा. इसके पुत्र १ पृथ्वीराज, २ कुम्भा, ३ देवीदास हुआ. जब चन्द्रसेनका इन्तिक़ाल हुआ, तब १९ पृथ्वीराज आंबेरकी गादीपर बैठा.

जयपुरकी ख्यातमें चन्द्रसेनका देहान्त और पृथ्वीराजका गद्दी नशीन होना विक्रमी १५५९ फाल्गुन् कृष्ण ५ [हि० ९०८ ता० २० रजब = ई० १५०३ ता० १८ जेन्युअरी] लिखा है; परन्तु हमको इस समयसे पहिले की ख्यातोंमें लिखे हुए साल संवतोंपर एतिबार नहीं है; शायद पृथ्वीराज रासाके संवत्से धोखा खाकर बड़वा भाटोंने क़ियासी संवत् बनालिये, और उन्हींके अनुसार रियासती लोगोंने भी अपनी अपनी ख्यातोंमें लिख लिया है. जयपुरकी ख्यातमें गादी नशीनीके संवत् नीचे लिखे मुवाफ़िक़ दर्ज हैं:-

१- ईसासिंह----

२- सोढ़देव विक्रमी १०२३ कार्तिक कृष्ण ९ [हि० ३५५ ता० २४ शव्वाल = ई० ९६६ ता० १३ ऑक्टोबर].

३- दुल्हराय, विक्रमी १०६३ माघ शुक्ल ६ [हि० ३९७ ता० ५ जमादियुल्-अव्वल = ई० १००७ ता० २८ जेन्युअरी].

४- कांकिल विक्रमी १०९३ माघ शुक्ल ७ [हि० ४२८ ता० ६ रबीउस्सानी = ई० १०३७ ता० २७ जेन्युअरी].

५- हणूं विक्रमी १०९६ वैशाख कृष्ण १० [हि० ४३० ता० २४ जमादियुस्सानी = ई० १०३९ ता० २२ मार्च].

६- जानड़देव विक्रमी १११० कार्तिक शुक्ल २ [हि० ४४५ ता० १ रजब = ई० १०५३ ता० १९ सेप्टेम्बर].

७- प्रजून विक्रमी ११२७ चैत्र शुक्ल ६ [हि० ४६२ ता० ५ जमादियुस्सानी = ई० १०७० ता० २२ मार्च].

८- मलेसी विक्रमी ११५१ ज्येष्ठ कृष्ण ३ [हि० ४८७ ता० १७ रबीउ़स्सानी = ई० १०९४ ता० ६ मई].

९- बीजलदेव विक्रमी १२०३ फाल्गुन शुक्ल ३ [हि० ५४१ ता० २ रमज़ान = ई० ११४७ ता० ५ फ़ेब्रुअरी].

१०- राजदेव विक्रमी १२३६ श्रावण शुक्ल ४ [हि० ५७५ ता० ३ सफ़र = ई० ११७९ ता० ११ जुलाई].

११- कील्हण विक्रमी १२७३ पौष कृष्ण ६ [हि० ६१३ ता० २० शअ़्बान = ई० १२१६ ता० २ डिसेम्बर].

१२- कूंतल विक्रमी १३३३ कार्तिक कृष्ण १० [हि० ६७५ ता० २४ रबीउ़स्सानी = ई० १२७६ ता० ५ ऑक्टोबर].

१३- जोणसी विक्रमी १३७४ माघ कृष्ण १० [हि० ७१७ ता० २४ शव्वाल = ई० १३१७ ता० ३० डिसेम्बर].

१४- उदयकरण विक्रमी १४२३ माघ कृष्ण २ [हि० ७६८ ता० १६ रबीउ़स्सानी = ई० १३६६ ता० २० डिसेम्बर].

१५- नरसिंह, विक्रमी १४४५ फाल्गुन कृष्ण ३ [हि० ७९१ ता० १७ मुहर्रम = ई० १३८९ ता० १६ जेन्युअरी].

१६- बनबीर- विक्रमी १४८५ भाद्रपद कृष्ण ६ [हि० ८३१ ता० २० शव्वाल = ई० १४२८ ता० ३ ऑगस्ट].

१७- उद्धरन विक्रमी १४९६ आश्विन कृष्ण १२ [हि० ८४३ ता० २६ रबीउ़ल्अव्वल = ई० १४३९ ता० ५ सेप्टेम्बर].

१८- चन्द्रसेन विक्रमी १५२४ मार्गशीर्ष कृष्ण १४ [हि० ८७२ ता० २८ रबीउ़स्सानी = ई० १४६७ ता० २७ नोवेम्बर].

१९- पृथ्वीराज विक्रमी १५५९ फाल्गुन कृष्ण ५ [हि० ९०८ ता० २० रजब = ई० १५०३ ता० १७ जेन्युअरी].

इन संवतोंमें हमको सन्देह होनेका यह कारण है, कि प्रजूनरायकी गद्दी नशीनी

का संवत् ११२७ लिखा है, जो एक सौ वर्षके बाद याने संवत् १२२७ होता, तो पृथ्वीराजके अस्ली संवत्के बराबर होता; लेकिन् "पृथ्वीराज रासा" के बनाने वालेने ग़लती की; उसको सहीह मानकर राजपूतानह के बड़वा भाटोंने ऐसे संवत् बना लिये, जिसका मुफ़स्सल हाल हमने एशियाटिक सोसाइटीके जर्नल सन् १८८६ ई० [विक्रमी १९४३ = हि० १३०३] में लिखा है.

दूसरा शक यह है, कि कील्हणरायका संवत् १२७३ लिखा है, जो पृथ्वीराजके मारे जानेसे २४ वर्ष पीछे हुआ; और प्रजूनसे कील्हण तक पांच पुश्तें होती हैं, जिनके लिये २४ वर्ष बहुत कम ज़मानह होता है; लेकिन् यह क़ियासी वजूह कुछ माकूल सुबूत नहीं है. एक दूसरी दलील इस ख़याली बातको मज़्बूत करनेवाली यह है, कि महाराणा रायमल्लके रासेमें कील्हणरायका महाराणा कुम्भाकी सेवामें रहना लिखा है, और उक्त ग्रन्थ उसी ज़मानहके कविने बनाया था; महाराणा कुम्भा विक्रमी १४९० [हि० ८३६ = ई० १४३३] में गद्दी नशीन हुए, और विक्रमी १५२५ [हि० ८७२ = ई० १४६८] तक राज्य करते रहे; लेकिन् सोचना चाहिये, कि विक्रमी १२७३ [हि० ६१३ = ई० १२१६] से विक्रमी १४९० [हि० ८३६ = ई० १४३३] के बाद तक कील्हणरायका ज़िन्दह रहना ख़यालमें नहीं आता; अगर विक्रमी १३७३ [हि० ७१६ = ई० १३१६] ख़याल कियाजावे, तो भी ग़ैर मुम्किन् है. हमारा ख़याल है, कि बड़वा भाटोंने इस ग़लतीको राव चन्द्रसेनके बनावटी इन्तिक़ालसे ऊपर लिखे मुवाफ़िक़ दर्ज करादिया होगा; हमारे अनुमानसे राजा पृथ्वीराजके इन्तिक़ालका संवत् ठीक मालूम होता है, जिसकी तस्दीक़ बीकानेरकी तवारीख़से भी मिलती है, इस वास्ते हम उक्त संवत्को सहीह मानकर वहांसे तारीख़ी सिल्सिलह रक्खेंगे.

राजा पृथ्वीराज.

यह राजा आंबेरके रईसोंमें बड़े सीधे सादे, हरि भक्त, सर्व प्रिय और प्रजा पालक थे. इनकी राणी बालाबाई, जो बीकानेरके राव लूणकरणकी बेटी थी, वह भी बड़ी भक्त कहलाई. राजा पृथ्वीराज, उनकी राणी, और उनके गुरु कृष्णदास पैहारीका हाल "भक्त माल" नाम ग्रन्थमें नाभाने बहुत बढ़ावेके साथ लिखा है; कृष्णदास पैहारी रामानुज संप्रदायमें बड़ा मश्हूर शख़्स हुआ है, जिसके क्रमानुयायी आंबेरमें गलता मक़ामपर बड़ी प्रतिष्ठाके साथ अब तक राज्य गुरु कहलाते हैं. "भक्त माल" और जयपुरकी ख्यातोंमें लिखा है, कि पहिले राजा पृथ्वीराजके गुरु

कन्फटा जोगी, जो कापालिक मतमें नाथ कहलाते हैं, थे. लिखा है, कि कृष्णदासने अपनी करामातसे नाथोंको रद करके राजा और राणीको अपना चेला (शिष्य) बनाया,) और गलताको अपना प्रतिष्ठित स्थान क़रार दिया. बालाबाई भी मीरांबाई के मुवाफ़िक़ बड़ी नामवर हरिभक्त कहलाई, और चित्तौड़के महाराणा सांगाने भी राजा पृथ्वीराजके साथ अपनी बहिनकी शादी करदी. इस राजाका ज़ियादह हाल मज़्हबी व करामाती बातोंके अलावह तवारीख़ी तौरपर बहुत कम मिलता है. राजा पृथ्वीराजका देहान्त विक्रमी १५८४ कार्तिक शुक्ल १२ [हि० ९३४ ता० ११ सफ़र = ई० १५२७ ता० ५ नोवेम्बर] को हुआ. इनके १९ बेटे थे- १ पूर्णमल्ल, जो राणी तंवर से पैदा हुआ, जिसकी औलाद नींबाड़ेमें पूर्णमल्लोत कछवाहा कहलाती है; २ भीम, जिसकी औलाद नर्वरमें गई; ३ भारमल्ल, जो बालाबाईसे पैदा हुआ था; ४ रामसिंह, बालाबाईके गर्भसे, जिसकी सन्तान खोहमें रामसिंहोत कछवाहा कहलाई; ५ सांगा, बालाबाईके गर्भसे; ६ गोपाल, बालाबाईसे, जिसके वंशवाले सामोद व चौमूं के नाथावत कछवाहा कहलाते हैं; ७ पंचायण, बालाबाईसे, जिसकी औलादके नायले वगैरह में पंचायणोत हैं; ८ जगमाल, बालाबाईसे, जिसके साईवाड़ तथा नरायणामें खंगारोत हैं; ९ सुल्तान, बालाबाईसे, जिसकी सन्तान काणोते वाले सुल्तानोत कछवाहा हैं; १० प्रताप, बालाबाईके गर्भसे, जिसका वंश कोटड़ेमें प्रतापपोता नामसे क़ाइम है; ११ बलभद्र, बालाबाईका, जिसकी औलाद अचरोल वाले बलभद्रोत हैं; १२ सांईदास, यह भी बालाबाईसे पैदा हुआ था, जिसके वंशमें बड़ोदके सांईदासोत हैं; १३ कल्याण, चित्तौड़के महाराणा सांगाकी बहिन राणावत के गर्भसे पैदा हुआ, इसके कल्याणोत कालवाड़ वाले हैं; १४ भीका, राणावतके गर्भसे; १५ चत्रभुज, बालाबाईसे, जिसके वंशमें बगरू वाले चत्रभुजोत हैं; १६ रूपसी, राणी गौड़के गर्भसे, जिसने अजमेरमें रूपनगर आबाद किया; १७ तेजसी, राणावतके गर्भसे; १८ सहसमल्ल; और १९ रायमल्ल.

राजा पृथ्वीराजका देहान्त होनेपर २०- पूर्णमल्ल गादीपर बैठा, जो राजका हक़्दार था, लेकिन् विक्रमी १५९० माघ शुक्ल ५ [हि० ९४० ता० ४ रजब = ई० १५३४ ता० १९ जैन्युअरी] को पूर्णमल्लका देहान्त होगया, और उनका बेटा सूजा अपनी माके साथ ननिहाल चला गया, तब २१- भीमसिंह पृथ्वीराजोत आंबेरकी गादीपर बैठा; परन्तु ईश्वरेच्छासे विक्रमी १५९३ श्रावण शुक्ल १५ [हि० ९४३ ता० १४ सफ़र = ई० १५३६ ता० १ ऑगस्ट] को उनका भी इन्तिक़ाल होगया, और भीमसिंहकी जगह उनका बेटा २२- रत्नसिंह गादी बैठा; लेकिन् यह ग़ाफ़िल हमेशह शराबके नशेमें चूर रहता था, भाइयोंने चारों तरफ़से इलाक़ह दबालिया; सांगा पृथ्वीराजोत उससे नाराज़ होकर

अपनी ननिहाल बीकानेरको चला गया, और अपने मामूसे मदद चाही; तब बीकानेर के राव जैतसिंहने नीचे लिखे सर्दार मए फ़ौजके उसके साथ दियेः-

१- वणीर वाघावत, चेचावादका; २- रत्नसिंह लूणकरणोत, महाजनका; ३- रावत् कृष्णसिंह कांधलोत राजासरका; ४- खेतसिंह संसारचन्दोत, द्रोणपुरका; ५- महेशदास मंडलावत, सारूंडेका; ६- भोजराज सदावत, भेलूका; ७- बीका देवीदास घड़सीसरका; ८- राव वैरीसिंह भाटी, पुंगलका; ९- धनराज शैख़ावत, बीठणोक वालोंका पूर्वज; १०- भाटी कृष्णसिंह वाघावत, खारवेका; ११- जोइया हांसा, मिलकका; १२- सिंहाणाका वैद्य महता अमरा; १३- वछावत महता सांगा; १४- पुरोहित लक्ष्मीदास, देवीदासोत वग़ैरह; पन्द्रह हज़ार (१) फ़ौज लेकर सांगा ढूंढाड़ को रवानह हुआ. अमरसर पहुंचनेपर रायमल्ल शैख़ावत आ मिला, और उसने तेजसिंहको भी आंवेरसे बुलालिया, जो रत्नसिंहका मुसाहिब था. सांगाने तेजसिंह से कहा, कि तुम्हारी मुसाहिबीमें आंबेरका इलाक़ह भाइयोंने दबा लिया; तब तेजसिंह ने जवाबमें रत्नसिंहकी ग़फ़्लत और शराब ख़ोरीकी शिकायत की, और कहा, कि अब आप चाहेंगे, तो सब छीनलिया जायेगा. सांगाने कहा, कि नरूका करमचन्द दासावतको मारे बिना यह काम मुश्किल है; तेजसिंहने कहा, कि यह बात भी होसकेगी. तब सांगा मए फ़ौजके मौज़ाबाद पहुंचा, और तेजसिंहके पास जो नरूका करमचन्दका भाई जयमल्ल रहता था, उसे कहा, कि तू अपने भाई को लेआ. जयमल्लने जवाब दिया, कि उसने जो ४० गांव आंबेरके दबा लिये हैं, उनको सांगा लेना चाहता है; और वह नहीं देगा. तेजसिंहने उसको समझाया, कि मुझसे भी सांगा नाराज़ था, परन्तु उसके पास पहुंचकर मैं नर्मीसे पेश आया, तबसे वह बहुत मिहर्बानी रखता है. नर्मी करनेसे करमचन्दका भी नुक्सान नहीं होगा. जयमल्ल अपने भाईको लेनेके लिये चला, और सांगा व तेजसिंहने करमचन्दके मारने को नापाके भाइयोंमेंसे लाला सांखलाको तय्यार किया; जब करमचन्द और जयमल्ल मौज़ाबादकी छत्रीमें सांगाके पास पहुंचे, उस समय इशारा होते ही लालाने तलवारसे करमचन्दके दो टुकड़े करडाले; तब जयमल्लने तेजसिंहको मारलिया, और सांगापर चला, उस समय उसका छोटा भाई भारमल्ल पृथ्वीराजोत बीचमें आया; जयमल्लने उसको हाथसे झिड़ककर कहा, कि तुझ छोकरेको क्या मारूं? इसके बाद एक कटारी छत्रीके स्तम्भमें मारी, जिसका निशान इस वक़्त तक मौजूद बतलाते हैं. इसी अ़रसहमें लाला सांखलाने जयमल्लको भी मार लिया. इस बातसे सांगाका रोब जमकर आसपासके

(१) यह हाल बीकानेरकी तवारीख़में लियागया है, जो साहिब रेज़िडेन्ट मारवाड़से हमको मिली.

कुल इलाक़ोंमें उसका क़ब्ज़ह होगया, और बाग़ी लोगोंने तावेदारी इख़्तियार की. सांगा रत्नसिंहको टीकैत मानकर आंबेर नहीं गया, परन्तु उसके क़रीब ही सांगानेर शहर बसाकर वहां रहने लगा. उसने मौज़ाबाद वग़ैरह सब ज़मीनपर अपना क़ब्ज़ह करलिया.

करमचन्द और जयमल्ल नरूका, जो मारे गये, उनके राजपूतोंमेंसे एक चारण कान्हा आड़ाने, जो करमचन्दके मारेजानेके वक्त कहीं गया था, ताना देकर राजपूतोंसे कहा, कि तुमको करमचन्दने बड़े आरामसे इसलिये रक्खा था, कि उसका आख़िर तक साथ दो. तब किसी राजपूतने जवाब दिया, कि ऐ कान्हा करमचन्दने तक्लीफ़ तो तुमको भी नहीं दी थी; अगर बहादुरी रखते हो, तो उनका एवज़ लेना चाहिये. कान्हाने उसी वक्त यह प्रण लिया, कि जबतक मैं सांगाको नहीं मारूं, अन्न न खाऊंगा; और उसी दिनसे दूध पीने लगा. वह सांगाके पास जारहा, सो दो तीन ही दिनके बाद मौक़ा पाकर कान्हाने सांगाको कटारीसे मार लिया, और उसी हालतमें वह ख़ुद भी मारागया. उस समयसे कान्हा चारणकी औलादके लोग उणियाराके रावके पास बड़ी इज़्ज़तके साथ रहते हैं.

सांगाके मारेजाने बाद उसके कोई औलाद न होनेके सबब उसका छोटा भाई भारमल्ल पृथ्वीराजोत सांगानेरका मुरूतार बना, और कुछ अरसह बाद आसकरण भीमसिंहोत, रत्नसिंहके छोटे भाईको राजका लालच देकर मिला लिया, और विक्रमी १६०४ ज्येष्ठ शुक्ल ८ [हि० ९५४ ता० ७ रबीउस्सानी = ई० १५४७ ता० २७ मई] को उसके हाथसे ज़हर दिलवाकर रत्नसिंहको मरवा डाला.

२३- राजा भारमल्ल.

रूपसी, राणी गौड़वंशको आसकरणने ज़हर देकर मारा, उसी वक्त भारमल्लने आंबेरपर
राणावतके गर्भसे; १ और उस बेईमान आसकरणको, जो अपने भाईको मारकर राज्यका
राजा पृथ्वीराजका राज्यसे बाहर निकाल दिया. वह दिल्ली पहुंचा, शेरशाह सूरके
था, लेकिन् विक्रमी १५९० मा... जागीरमें दिया, जहांपर उसकी औलाद मुद्दत तक
ता० १९ जैन्युअरी] को पूर्णमल्लका दे... ख़ारिज हुई.
साथ ननिहाल चला गया, तब २१- भीमा... निकालकर दोबारह दिल्लीके तख़्तपर बैठा, और
ईश्वरेच्छासे विक्रमी १५९३ श्रावण शुक्ल १... गया, तब कलानौरमें विक्रमी १६१२ फाल्गुन्
ता० १ ऑगस्ट] को उनका भी इन्तिक़ाल... = ई० १५५६ ता० १५ फ़ेब्रुअरी] को
२२- रत्नसिंह गादी बैठा; लेकिन् यह ग... हुआ, उसके राज्यमें चारों तरफ़ बखेड़ा फैला हुआ
भाइयोंने चारों तरफ़से इलाक़ह दबालिया; ...ख़ां पठानने राजा भारमल्ल कछवाहेकी मददसे

नारनौलको घेरा, जो मजनूंखां क़ाक़शालके क़ब्ज़हमें था. राजा भारमल्लने बुद्धिमानी और दूर अन्देशीसे मजनूंखांको माल अस्बाव व बाल बच्चों समेत हिफ़ाज़तसे निकाल दिया. जब अक्बर बादशाहने हेमूं ढूंसर वग़ैरह ग़नीमोंको बर्बाद करके दिल्लीमें क़ब्ज़ह किया, तब मजनूंखां क़ाक़शालकी सिफ़ारिशसे राजा भारमल्ल भी दिल्ली पहुंचे. बादशाहने उसे और उसके बड़े दरजे वाले कुल राजपूतों वग़ैरहको ख़िल्अ़त दिये; और वे साम्हने लाये गये. बादशाह एक मस्त हाथीपर सवार थे, जो राजपूतोंकी तरफ़ दौड़ा, परन्तु ये लोग अपनी जगहसे न हिले. हाथी रोक लिया गया, और इसी दिनसे बादशाहको राजपूत लोगोंकी क़द्र मालूम होगई, कि यह क़ौम कैसी दिलेर है ! फिर राजा अपने वतनको चले आये. आंबेरमें मीनोंने बहुत फ़साद कर रक्खा था, जिनको राजाने मारकर सीधा किया.

बादशाहने मिर्ज़ा शरफ़ुद्दीन हुसैनको अजमेरका सूबहदार बनाया था, जिसने कुछ रुपया वग़ैरहके लालचसे पूर्णमल्ल पृथ्वीराजोतके बेटे सूजाकी हिमायत करके भारमल्ल पर चढ़ाई करदी; और भारमल्लके बेटे जगन्नाथ और उसके भतीजे राजसिंह आसकरणोत और खंगार जगमालोतको गिरिफ्तार करलिया. बादशाह अक्बर भी विक्रमी १६१८ के माघ [हि० ९६९ जमादियुलअव्वल = ई० १५६२ जेन्युअरी] में आगरेसे राजपूतानहकी तरफ़ रवानह हुआ, और कलावली ग्राममें भारमल्लके दोस्त चग़त्ताख़ांने बादशाहसे राजाकी तक्लीफ़का हाल अ़र्ज़ किया. तब बादशाहने मिहर्बान होकर राजा भारमल्लको बुलानेकी इजाज़त दी. धौसा मक़ामपर उनका भाई रूपसिंह अपने बेटे जयमल्ल समेत हाज़िर होगया, और जब बादशाह सांगानेरमें पहुंचा, तो राजा भारमल्ल भी बादशाहकी तावेदारीमें आया. राजपूतानहके राजाओंमेंसे यह पहिला राजा है, जो बादशाही तावेदार बना. इस राजाका बहुत बड़ा राज्य नहीं था, परन्तु एक बड़े गिरोह कछवाहोंका पाटवी होनेके कारण वह ताक़तवर गिना जाता था; क्योंकि इस गिरोहके शैखावत व नरूका वग़ैरह राजपूत जो जुदा जुदा अपने इलाक़ोंपर मुरूतार थे, बाहरके दुश्मनोंकी चढ़ाईके समय अपने सरगिरोहको अकेला छोड़देनेमें बड़ी शर्मिन्दगीकी बात जानते थे. इस राजाने बादशाही तावेदार होनेसे पहिले अपने बेटे भगवानदासको चित्तौड़के महाराणा उदयसिंहकी ख़िद्मतमें भेजदिया था, (१) जिससे वे इनके सरपरस्त और मददगार बने रहे.

चग़त्ताख़ांकी सलाहसे यह राजा अपनी बेटी बादशाहको देनेके लिये राज़ी होगया. इस बातके लिये ईरानके बादशाहकी नसीहतसे हुमायूंशाह अभिलाषा रखता था, और

(१) यह बात अमरकाव्यमें लिखी है.

अक्बरने भी अपने बापकी ख्वाहिश और नसीहत पूरी करनेके लिये इस शादीको ग़नीमत समझा. वह राजापर जल्द मिहर्बान होगया, कि उसको पांच हज़ारी ज़ात व सवारका मन्सबदार बनाकर इज़्ज़तें दीं. अक्बरने राजाको शादीका लवाज़िमा तय्यार करनेकी रुख्सत देकर कूच किया, और राजा शादी व जिहेज़का सामान मए अपनी बेटीके लेकर मक़ाम सांभरपर हाज़िर होगया. बड़ी खुशीके साथ उस राजकुमारीसे शादी हुई, और मिर्ज़ा शरफ़ुद्दीन हुसैनकी क़ैदसे राजाके बेटे व भतीजोंको अपनी खिद्मतमें बुलाकर फाल्गुन् शुक्ल १० [हि० ता० ८ जमादियुस्सानी = ई० ता० १२ फ़ेब्रुअरी] को आगरेकी तरफ़ लौटा. राजा भारमल्ल बड़ी इज़्ज़त व इन्आमो इक्राम पाकर आंबेर गया, और उनका बेटा भगवानदास व पोता मानसिंह वग़ैरह बादशाहके साथ आगरे गये. विक्रमी १६२४ [हि० ९७५ = ई० १५६७] में, जब बादशाह अक्बरकी चढ़ाई क़िले चित्तौड़की तरफ़ हुई, तो यह राजा भी उसके साथ था; और राजपूतोंकी लड़ाई के तरीक़े व खानगी बर्ताव की बातें बादशाहको बताया करता था, जिससे अक्बर बादशाह उसपर दिन ब दिन ज़ियादह मिहर्बान होतागया. विक्रमी १६२५ [हि० ९७६ = ई० १५६८] में बादशाहने क़िले रणथम्भोरको घेरा, तब वहांके क़िलेदार राव सुर्जणको इसी राजाने सलाह देकर बादशाही ताबेदार बनाया.

विक्रमी १६२६ आश्विन कृष्ण ३ [हि० ९७७ ता० १७ रबीउल्अव्वल = ई० १५६९ ता० ३० ऑगस्ट] को राजा भारमल्लकी बेटीके गर्भसे फ़तहपुर सीकरी के मक़ाममें शैख़ सलीम चिश्तीके घरपर बादशाह अक्बरके शाहज़ादह सलीम पैदा हुआ, और इससे खानदान कछवाहाकी रिश्तहदारी मुग़ल बादशाहोंके साथ ज़ियादह मज्बूत होगई. (ईश्वर जिसको बढ़ाना चाहे, उसके लिये हर सूरतसे तरक़्क़ीके सामान खुद बखुद मौजूद होजाते हैं.) विक्रमी १६३० माघ शुक्ल ५ [हि० ९८१ ता० ४ शव्वाल = ई० १५७४ ता० २८ जैन्युअरी] को इस राजाका देहान्त होगया.

इनके आठ (१) कुंवर - १ भगवन्तदास (२); २ भगवानदास, जिनके बांकावत लवाण वाले हैं; ३ जगन्नाथ, जिनके जगन्नाथोत; ४ परसराम; ५ शार्दूल; ६ सुन्दरदास; ७ पृथ्वीदीप; और ८ रामचन्द्र थे.

---

(१) इन आठके सिवा जयपुरकी एक ख्यातमें १ शलहदी, २ विट्ठलदास, और एक ख्यातमें भोपत, तीन नाम ज़ियादह पायेगये हैं; लेकिन् इन नामोंकी बाबत हमको कुछ तहक़ीक़ नहीं है.

(२) जयपुरकी तवारीखमें बड़ेका नाम भगवन्तदास और उससे छोटेका नाम भगवानदास लिखा है, लेकिन् फ़ार्सी तवारीखोंमें भगवानदासको ही भगवन्तदास लिखना पायाजाता है.

२४- राजा भगवानदास.

जब राजा भारमल्लका इन्तिक़ाल हुआ, तो भगवानदास मए अपने कुंवर मानसिंह के बादशाह अक्बरकी ख़िद्मतमें हाज़िर होगये. बादशाहने मिहर्बान होकर उसके बापका मन्सब उसके नामपर बहाल रक्खा, और दिन बदिन मिहर्बानी ज़ियादह की. इस राजाने विक्रमी १६२९ [हि० ९८० = ई० १५७२] में गुजरात फ़त्ह होने बाद सरनालकी लड़ाईमें, जब अक्बर बादशाह ने इब्राहीम हुसेन मिर्ज़ापर पांच सौ सवारोंके साथ हमलह किया, अच्छी बहादुरी दिखलाई, जिसके इन्आममें इसको नक़ारह और निशान मिला. गुजरातकी चढ़ाईमें भी इस राजासे बड़ी बहादुरी ज़ाहिर हुई. बादशाहने इसको फ़ौज देकर ईडर व मेवाड़की तरफ़ रवानह किया, इस सफ़रमें भी वह फ़ौजी व अक़्ली कार्रवाइयां करता हुआ बादशाहके पास पहुंचा.

विक्रमी १६४२ [हि० ९९३ = ई० १५८५] में इस राजाकी बेटी की शादी बड़े शाहज़ादह सलीमके साथ बड़ी धूमधामसे हुई, जिसकी तफ्सील अक्बर नामहकी तीसरी जिल्दके पृष्ठ ४५५ व ५६ में बहुत कुछ लिखी है. खुद बादशाह अपने बेटेको लेकर राजाके मकानपर गये, और राजाने एक सौ हाथी और बहुतसे घोड़े इराक़ी, अरबी, तुर्की कच्छी वग़ैरह, और बहुतसे लौंडी गुलाम ज़र व ज़ेवर समेत जिहेज़में दिये. दो करोड़ रुपया मिहर (१) दुलहिनका क़रार पाया. मआसिरुल उमरामें लिखा है, कि खुद बादशाह और शाहज़ादह दुलहिनका डोला उठाकर बाहर लाये. इसी राजकुमारीके पेटसे विक्रमी १६४४ [हि० ९९५ = ई० १५८७] में सुल्तान खुस्रो पैदा हुआ.

अक्बरके तीसवें जुलूसमें यह राजा सीस्तानकी हुकूमतपर भेजा गया, लेकिन् ज़ियादह सामान वग़ैरहका उज़्र करनेसे यह हुक्म मुल्तवी रहा; और फिर वह आजिज़ी करनेपर वहां रवानह किया गया; परन्तु जब सिन्धु उतरकर खैराबादमें पहुंचा, तो एकदम दीवाना होगया. कुछ दिनों बाद विक्रमी १६४६ मार्गशीर्ष शुक्ल ७ [हि० ९९८ ता० ६ सफ़र = ई० १५८९ ता० १५ डिसेम्बर] को लाहौरमें इस राजाका इन्तिक़ाल हुआ. वह टोडरमल्लके दाग़में गया था, वापस आनेपर क़ै (उछांट) हुई, और पेशाब बन्द होकर पांचवें रोज़ मरगया. मआसिरुल उमरा में लिखा है, कि इस राजाने लाहौरमें (मुसल्मानोंको खुश करनेके लिये) एक

---

(१) मुसल्मानोंमें शरअ़के मुवाफ़िक़ मिहर एक तरहका अ़हदनामह क़रार पाता है, अगर औरत को उसका ख़ाविन्द तक्लीफ़ या तलाक़ दे (छोड़ दे), तो मिहरका रुपया मुक़र्ररह उसको दे देना पड़ता है.

मस्जिद बनवाई थी, जिसमें अक्सर मुसल्मान लोग जुमएकी नमाज़ पढ़ा करते थे.

इनके ४ कुंवर थे. १ मानसिंह; २ माधवसिंह, जिसके माधाणी कछवाहे हैं; ३ सूरसिंह, जिसके सूरसिंहोत हैं; और ४ बनमालीदास, जिसके बनमाली दासोत कछवाहा कहलाते हैं.

२५-राजा मानसिंह.

इन महाराजाका जन्म विक्रमी १६०७ पौष कृष्ण २ [हि० ९५७ ता० १६ ज़िल्क़ाद = ई० १५५० ता० २७ नोवेम्बर] को, राज्याभिषेक विक्रमी १६४६ मार्गशीर्ष शुक्ल ७ [हि० ९९८ ता० ६ सफ़र = ई० १५८९ ता० १५ डिसेम्बर] को, और राज्याभिषेकोत्सव माघ कृष्ण ५ [हि० ९९८ ता० १९ रबीउल्अव्वल = ई० १५९० ता० २६ जैन्युअरी] को हुआ.

यह राजा जब अपने दादा और बापके साथ बादशाही ख़िदमतमें पहिले पहुंचा था, उसका ज़िक्र शुरूअ़में लिखागया है. यह अपनी अ़क्ल और बहादुरी व बादशाही ख़ैरख़्वाहीसे ऐसा बढ़गया था, कि बादशाह अक्बर कभी इसको फ़र्ज़न्द और कभी मिर्ज़ा राजा कहकर बोलता था; वह अव्वल दरजेके उमराओंसे भी ज़ियादह इ़ज़्ज़तदार गिनागया. अक्बरके ज़मानेमें पांच हज़ारीसे ज़ियादह मन्सब नौकरोंको नहीं मिलता था, लेकिन् दो सर्दारोंको सात हज़ारी तक मन्सब मिला, जिनमें एक राजा मानसिंह और दूसरा कोका अ़ज़ीज़ था. यह राजा अपने बापकी मौजूदगीमें ही नामवर हो था, अक्बर बादशाहने पहिले गुजरातपर चढ़ाईके वक़्त और उस मुल्कको फ़त्ह करने[illegible] ईडर, डूंगरपुर और उदयपुरकी तरफ़ राजा भगवानदास और कुंवर मानसिंहको भेजा जिसका हाल महाराणा प्रतापसिंह अव्वलके ज़िक्रमें लिखागया है - (देखो पृष्ठ १४६). विक्रमी १६३३ [हि० ९८४ = ई० १५७६] में बादशाहने मेवाड़पर फ़ौज कशीके लिये खुद अजमेरमें ठहरकर कुंवर मानसिंह को लड़ाईके लिये भेजा. इसका हाल भी महाराणा प्रतापसिंह अव्वलके ज़िक्रमें दर्ज कियागया है- (देखो पृष्ठ १५०). जयपुर की ख्यातकी पोथियोंमें इसी लड़ाईके बाद राजा भगवानदासका मरना लिखा है, जबकि मानसिंह मेवाड़की मुहिमपर थे; परन्तु यह बात ठीक नहीं, क्योंकि उक्त लड़ाईसे पीछे तेरह बरससे ज़ियादह अ़र्से तक राजा भगवानदास जीते रहे हैं, जैसा कि पहिले लिखागया और फिर लिखा जायेगा.

विक्रमी १६४२ [हि० ९९३ = ई० १५८५] में मिर्ज़ा हकीम, बादशाहका सौतेला भाई मरगया, जो काबुलका हाकिम था; कुंवर मानसिंहने बादशाही हुक्मके

मुवाफ़िक़ काबुल पहुंचकर वहांके लोगोंकी दिलजमई की, और उक्त मिर्ज़ाके लड़कों अफ़ासियाव व कैक़ुबादको उनके साथियों समेत बादशाहके पास ले आया. बादशाह भी नीलाव (सिन्धु) नदी तक आपहुंचे थे, कुंवरको काबुलकी सूबहदारी दी; उसने वहां पहुंचकर ख़ैबर वग़ैरहके रास्ते लूटने वाले पठानोंको सज़ा देकर सीधा करदिया; जब यूसुफ़ ज़ई पठानोंकी मुहिमपर राजा बीरबर व ज़ैनख़ां कोका व हकीम अबुल्-फ़तह गये, तो बीरबरके मारेजाने बाद ज़ैनख़ां व अबुल्फ़तहको बादशाहने वापस बुलालिया, और वहांका बन्दोबस्त कुंवर मानसिंहके सुपुर्द किया; फिर सीस्तानकी हुकूमत राजा भगवानदासको मिली, परन्तु वह रास्तहमें दीवाना होगया, जिससे वह इलाक़ह भी कुंवरके सुपुर्द हुआ.

विक्रमी १६४४ चैत्र [हि० ९९५ रबीउस्सानी = ई० १५८७ मार्च] में बादशाहने कुंवर मानसिंहके राजपूतोंकी तरफ़से रिआयापर जुल्म करने और मानसिंहकी चश्मपोशी करने, और सर्द मुल्कमें रहनेसे कुंवरको तक्लीफ़ जानकर बुलालिया, और सूबह विहारमें राजा भगवानदास व कुंवर मानसिंहको जागीर देकर उसी तरफ़ भेजदिया. विक्रमी १६४७ [हि० ९९८ = ई० १५९०] में राजा भगवानदास लाहौरमें गुज़रे, तब यह अपने बापकी जगह राजा हुए. इसी सालमें पूर्णमल्ल केदोरियापर चढ़ाई की, जिसको फ़तह करके राजा संग्रामको जा दबाया, और उससे हाथी वग़ैरह चीज़ें पेशकश लेकर पटनाके बाग़ियोंको सीधा किया. झाड़खंडके रास्तेसे मुल्क उड़ीसापर चढ़ाई की, उस व [illegible]रु क़त्लू लौहानी पठान बड़ा ज़बर्दस्त होरहा था; जब राजा वहां पहुंचा, उसने पाया [illegible]लह किया. इस मक़ा[illegible] [illegible]फ़ौजके पैर उखड़ गये थे, परन्तु राजा न डोला [illegible] बाहिर लाये, [illegible] बादशाही [illegible] पर [illegible] [illegible] ईसा = ईश्वरकी कुद्रतसे क़त्लू एकदम बीमार होकर मरगया, तब उ[illegible] [illegible]त्लूके बेटे नसीरको सर्दार क़ाइम करके सुलह करली. राजाने जगन्नाथपुरीको [illegible]लाक़ह समेत उसके क़ब्ज़ेसे निकाल लिया; फिर आप विहारको चलाआया. जब तक ईसा जीता रहा, तब तक इक़ारमें फ़र्क़ नहीं पड़ा; परन्तु उसके मरने बाद क़त्लूके बेटे ख़्वाजह सुलैमान व ख़्वाजह उस्माननें फिर बग़ावत इख़्तियार की, जिसका हाल अक्बर नामहकी तीसरी जिल्दके ६४१ पृष्ठसे यहां लिखाजाता है:-

"ईसा पठान जब मरगया, तो फिर पठानोंने हर तरफ़ दंगा फ़साद करके जगन्नाथपुरी लेली; और राजा हमीरके इलाक़े पर लूट मार शुरूअ् की. हिज्री १००० [विक्रमी १६४९ = ई० १५९२] में राजा मानसिंह फ़तहका इरादह करके दर्याके रास्तेसे चला, और तोलकख़ां, फ़र्रुख़ख़ां, ग़ाज़ीख़ां, मेदिनीराय, मीर क़ासिम बदख़्शी, राय भोज बूंदीके हाड़ा सुर्जणका बेटा, संग्रामसिंह, शाह, अगर और सगर तीनों महाराणा उदयसिंहके बेटे, चत्रसेनका बेटा बज़ा, भोपतसिंह और बर्ख़ुरदार वग़ैरह ख़ुश्कीके रास्ते

गये. मानसिंहका भाई माधवसिंह, लखमीराय कोकश, पूर्णमल्ल केदोरिया, रूपनारायण सीसोदिया वगैरह कश्मीरके जागीरदार यूसुफ़खांकी मातहतीमें झाड़खंडके रास्तेसे रवानह हुए. जब फ़ौज बंगालेमें पहुंची, तो वहांका हाकिम सईदखां बीमारीके सबब ठहरा रहा, और राजा आगे बढ़ा; सईदखां आराम होनेपर बहादुरखां, ताहिरखां वगैरह साढ़े छः हज़ार सवार साथ लेकर फ़ौजमें जा पहुंचा. उस इलाक़हके बहुतसे मक़ाम क़ब्ज़ेमें आगये; पठानोंने बहुतसे हीले हवाले करने चाहे, लेकिन् उनकी बातें कुछ न सुनीगईं; लड़ाईकी तय्यारी होगई, और राजा मानसिंहके मातहत् राय भोज, राजा संग्राम, बाक़रखां, फ़र्रुख़खां, दुर्जनसिंह, सुजानसिंह, सबलसिंह, मीर क़ासिम, शिहाबुद्दीन वगैरह हर रोज़ हमले करते थे, और फ़सादी लोग भागते थे."

"पहिली फ़र्वर्दीको राजाने अपना हरावल आगे रवानह करदिया, पठान लोग नसीबखां, जमालखां, क़त्लूके बेटों वगैरहकी मातह्तीमें लड़ाईपर मुस्तइद हुए; मुक़ाबलह होनेपर दुश्मनोंका 'मियां लहरी' हाथी तोपका गोला लगनेसे कई हाथियों समेत जल मरा; दूसरे लोगोंने और हाथी बढ़ाया; मीर जम्शेद बख़्शी बहादुरीसे हमलह करके काम आया, हाथीने कई आदमियोंको नुक़्सान पहुंचाया, लेकिन् बाज़ों ने घोड़ोंसे उतरकर हाथीको ज़ख़्मी करने बाद पकड़ लिया. 'बहादुर कोह' हाथीने फ़र्रुख़खांको दबाया, राय भोज और राजा संग्रामने जल्द क़दम बढ़ाया. जगत्सिंह भी दुर्जनसिंह वगैरहको साथ लेकर पठानोंपर दौड़ा, और उनको बीचमेंसे हटता हुआ देखकर दाहिनी तरफ़से ज़ोर किया. बाबू मंगली शाही फ़ौजमेंसे बढ़कर हट आया; बहारखांने पीछेसे पहुंचकर बड़ा काम किया, एक जवान सिपाही आगे बढ़ा, जिसको बहारखांने रोका, लेकिन् वह दूसरी दफ़ा बढ़कर मारागया; मख़्सूसखां ने भी बहुत कोशिश की, और ख़्वाजह हलीम अपने साथियों समेत मौक़ेपर, जब मुख़ालिफ़ लोग भागने वाले या मारेजानेकी जगह थे, मददको पहुंचा, जिसके साथ ख़्वाजह वैस मारा गया. तीन सौ से ज़ियादह पठान लड़ाईके मैदानमें बेजान हुए; और बादशाही फ़ौजमेंसे चालीस आदमी काम आये; बादशाही फ़ौजने काम्याबी हासिल की."

क़त्लूके बेटोंने सारंगगढ़के राजा रामचन्द्रकी पनाह ली; बंगालेका सूबहदार सईदखां वापस लौटगया, परन्तु राजाने पीछा न छोड़ा; और सारंगगढ़को जा घेरा. तब वे दोनों लाचार होकर मानसिंहके पास हाज़िर होगये. राजाने उनको बादशाही हुक्मसे कुछ जागीर देदी. विक्रमी १६४९ [हि० १००० = ई० १५९२] के अन्दर कुल उड़ीसेपर बादशाही अमल होगया.

विक्रमी १६५१ [हि० १००२ = ई० १५९४] में बादशाहके पोते सुल्तान

ख़ुस्रोके नाम उड़ीसा जागीरमें मुक़र्रर होकर यह राजा शाहज़ादेका अतालीक़ बनाया गया, और राजाको बंगालेमें जागीर देकर उसी तरफ़ रवानह किया. उसने वहां पहुंचकर अपनी बहादुरी व बुद्धिमानीसे बंगाली राजाको ताबे बनाया. विक्रमी १६५३ [हि० १००४ = ई० १५९६] में एक अच्छी मौक़ेकी जगह देखकर एक शहर 'अक्बरनगर' नाम आबाद कराया, जिसको 'राजमहल' भी कहते हैं. विक्रमी १६५४ [हि० १००५ = ई० १५९७] में कूचके राजा लक्ष्मीनारायण (१) को ताबे बनाया, जिसका मुल्क मआसिरुलउमरामें दो सौ कोस लम्बा और चालीससे लेकर सौ कोस तक चौड़ा लिखा है. इस राजाने अपनी बहिनकी राजा मानसिंहसे शादी भी करदी. लक्ष्मीनारायणसे जो मुक़ाबलह हुआ, उसमें राजा मानसिंहका बेटा दुर्जनसिंह मारागया.

जयपुरकी तवारीख़में लिखा है, कि बंगालेकी तरफ़ केदार नामी एक कायस्थ का राज्य था, और उस कायस्थके पास शिला देवी की मूर्ति थी, जिसे केदारपर फ़त्ह पाकर राजा लेआया, और वह अब आंबेरमें मौजूद है. लिखा है, कि इस देवीको मनुष्यका बलिदान लगता था; राजाने इसको पशुबली करदिया.

विक्रमी १६५७ [हि० १००८ = ई० १६००] में जब बादशाह अक्बर दक्षिण की तरफ़ गया, और इस राजाको वलीअ़हद शाहज़ादह सलीम सहित उदयपुरके महाराणाकी लड़ाईपर अजमेर छोड़गया, तब मानसिंहने अपने बड़े बेटे जगत्सिंहको बंगालेके बन्दोबस्तके लिये रवानह किया; परन्तु वह रास्ते ही में मरगया; तब जगत्सिंहके बेटे महासिंहको, जो बच्चा था, बंगालेकी तरफ़ भेजदिया; और आप शाहज़ादहके पास अजमेरमें रहा. बंगालेमें क़त्लूके बेटे उस्मानने मौक़ा देखकर फ़साद करना शुरू किया, राजाके लोगोंने सहल जानकर मुक़ाबलह किया, परन्तु शिकस्त खाई; पठान बंगालेमें बहुतसे इलाक़ोंपर क़ाबिज़ होगये. शाहज़ादह उदयपुरकी चढ़ाईके एवज़ शाही हुक्मके बर्ख़िलाफ़ इलाहाबाद चलागया, और राजा उससे अ़लहदह होकर बंगालेके बन्दोबस्तको रवानह हुआ. उसने शेरपुरके पास पठानोंको

---

(१) जयपुरकी ख्यात जयसिंह चरित्र वग़ैरहमें इस राजाका नाम प्रतापदीप और शहरका नाम हेला लिखा है, और एक दोहा भी मश्हूर है, जो हरनाथ कविने कहा था, जिसको सुनकर राजा मानसिंहने दस लाख रुपया इन्आ़म दिया; वह दोहा इस जगह अर्थ सहित दर्ज किया जाता है:—

दोहा.

जात जात गुन अधिक हौ सुनी न अजहूं कान ॥ राघव वारिधि बांधियो हेला मार्‌यो मान ॥ १ ॥

अर्थ- पूर्वजसे औलादका गुण अधिक हो, यह कानसे नहीं सुना; परन्तु रामचन्द्रको तो समुद्र बांधना पड़ा (लंका जानेके लिये), और मानसिंहने हेला शहरको मारा, (जो लंकासे भी ज़ियादह मुश्किल था).

लड़ाईमें शिकस्त दी; मीर अब्दुर्रज़ाक़ मामूरी बख़्शी सूबह बंगालेका, जो मुख़ालिफ़ोंके पास क़ैद था, इस लड़ाईमें बेड़ी तौक़ समेत राजाके हाथ आगया. जब राजा बंगालेके बन्दोबस्तसे फ़ारिग़ (निश्चिन्त) होकर बादशाहके पास आया, तो सात हज़ारी ज़ात व छः हज़ार सवारका मन्सब पाया. मआसिरुल उमरामें लिखा है, कि उस वक़ इतना मन्सब किसी उमराव सर्दारको नहीं मिला था.

जब अक्बर बादशाहका इन्तिक़ाल हुआ, तो यह राजा अपने भानूजे शाहज़ादह खुस्रौका मददगार था, लेकिन् जहांगीरने इसको बंगालेकी सूबहदारी वगैरह देकर वहां भेजदिया. वह इसी सालमें बंगालेसे अलह्दह हुआ, कुछ दिनों रुह्तासके सर्कशों को सज़ा देनेके लिये मुक़र्रर रहा, फिर हुज़ूरमें आगया.

विक्रमी १६६४ [हि० १०१६ = ई० १६०७] में इस तज्वीज़से राजाको घर जानेकी रुख़्सत मिली, कि दक्षिणकी लड़ाईका बन्दोबस्त करके ख़ानख़ानांकी मदद के वास्ते जल्द पहुंचे, सो राजा मुद्दत तक दक्षिणमें रहा, और वहीं वह नवें साल जुलूस जहांगीरी, विक्रमी १६७१ आपाढ़ शुक्ल १० [हि० १०२३ ता० ९ जमादियुस्सानी = ई० १६१४ ता० १७ जुलाई] को बीमार होकर गुज़र गया, जिसके साथ साठ औरतें सती हुईं. इस राजाकी आदत, बर्ताव व इ़ज़्ज़त वगैरहका हाल मआसिरुल-उमराके मुसन्निफ़ने उस ज़मानेकी किताबों वगैरहसे लेकर मुफ़स्सल लिखा है, जिसका ख़ुलासह नीचे लिखा जाता है:-

"राजा मानसिंह बंगालेकी हुकूमतमें बड़ी सर्दारी और बहुत कुछ सामान रखता था; इसके कवि (१) के पास १०० हाथी थे, और नौकर, मोतबर सर्दार और सब सिपाह बेश क़रार दरमाहा दार रखता था, जिस ज़मानेमें दक्षिणकी मुहिम ख़ानिजहां लोदीके सुपुर्द हुई थी, तब उसके साथ १५ पंज हज़ारी, नक़ारह और निशान वाले थे, जैसे ख़ान ख़ानां, राजा मानसिंह, मिर्ज़ा रुस्तम सफ़वी, आसिफ़ख़ां, जाफ़र, शरीफ़ अमीरुलउमरा वगैरह; और चार हज़ारीसे एक सदी तक एक हज़ार सात सौ मन्सब्दार मददको तईनात थे. जब बालाघाट मक़ामपर ग़ल्लेके न मिलनेसे बड़ा अकाल पड़ा, जिसमें कि रुपयेका एक सेर आटा भी नहीं मिलता था, एक दिन राजाने सरे दर्बार खड़े होकर नर्मीसे कहा, कि अगर मैं मुसल्मान होता, तो हर रोज़ एक वक़ खाना तुम्हारे साथ खाता, लेकिन् मैं बुड्ढा हूं, सो एक बीड़ी पानकी मेरी तरफ़से क़ुबूल करो. यह सुनकर सबसे पहिले ख़ानिजहांने सलाम करके कहा, "मुझे क़ुबूल है".

---

(१) यह शख़्स चारण छापा बारहठ था, जिसका ज़िक्र अबुल्फ़ज़्लने अक्बरनामहमें गुजरात की लड़ाईके वक़ किया है.

इसी तरह सबने कुबूल किया. राजाने सौ रुपये रोज़ानह पंज हज़ारीके हिसाबसे एक सदी तक सबका वज़ीफ़ह मुक़र्रर करदिया. हर रात उसी क़द्र रुपया थैलियोंमें रखकर और उनपर उन शख़्सोंके नाम लिखकर हिस्से मुवाफ़िक़ हर एकको भेज देता था. यह हाल तीन चार महीने, जब तक यह सफ़र पूरा न हुआ, रहा; राजाने कभी नाग़ह न किया, और जब तक लश्करके लोगोंको रसद मिलती, जिन्स भी निर्ख़के मुवाफ़िक़ अपने पाससे देता था. कहते हैं, कि उसकी राणी रायकुंवर बड़ी दाना और तद्बीर वाली थी; यह सारा सरंजाम वही अपने वतनसे करके भेजती थी. राजा सफ़रमें मुसल्मानोंके वास्ते कपड़ेके हम्माम और मस्जिद बनवाकर खड़े करवादेता था; और एक वक़्का खाना अपने पाससे सब साथियोंको भेजता था."

"कहते हैं, कि एक दिन एक सय्यद और एक ब्राह्मण आपसमें अपने अपने दीनकी बड़ाईपर वहस करने लगे, और दोनोंने राजाको मध्यस्थ मुक़र्रर किया; राजाने कहा, कि अगर मैं दीन इस्लामको अच्छा कहता हूं, तो लोग कहेंगे, कि बादशाही वक़्की खुशामद से कहता है; और जो हिन्दुओंके दीनको अच्छा कहता हूं, तो तरफ़दारी समझी जायेगी. जब दोनोंने ज़ियादह हठ की, तो राजाने कहा, कि मैं ज़ियादह तो नहीं कह सक्ता, परन्तु इतना जानता हूं, कि हिन्दुओंमें बहुत मुद्दतसे साहिबे कमाल मज्हबके पैदा होते हैं, जब वे मरे, जलादिये जाते हैं, और बर्बाद होजाते हैं; जब कभी कोई रातको वहां जावे, तो भूत, प्रेत वग़ैरह आसेबका डर पैदा होता है; और मुसल्मानोंके हरएक क़स्बोंमें बहुतसे बुजुर्ग क़ब्रोंमें हैं, जिनकी ज़ियारत कीजाती है, बरकत लीजाती है, और तरह तरहके जल्से होते हैं.

बंगाले जाते वक़्त जब वह मुंगेर पहुंचा, तो वहां शाह दौलतकी ख़िद्मतमें, जो उस वक़्के बड़े साहिबे कमाल थे, गया; शाह साहिब ने कहा, कि इतनी दानाई और शुऊरके उप्रान्त भी तुम मुसल्मान क्यों नहीं होजाते ? राजाने कहा, कि कुर्आन शरीफ़में लिखा है, कि बहुतसोंके दिलोंपर अल्लाहकी छाप लगी है, (ختم الله على قلوبهم) जिससे ईमान नहीं लाते. अगर आपकी कृपासे यह ताला मेरी छातीसे खुल जावे, तो मुसल्मान होजाऊं. इस बातपर एक महीने तक राजा वहां ठहरा, परन्तु दीन इस्लाम उसके नसीबमें नहीं था, फ़ायदह न हुआ."

इस राजाके डेढ़ हज़ार औरतें, राणियां वग़ैरह थीं, और हर एकसे दो दो तीन तीन लड़के पैदा हुए, जो राजाके रूबरू ही मरगये, सिर्फ़ भाऊसिंह बाक़ी रहे थे.

राजा मानसिंह छोटे क़द व काले रंगके आदमी थे, और कुछ ख़ूबसूरत न थे; इसपर एक कहावत मश्हूर है, कि एक दिन अक्बर बादशाहने पूछा, कि मानसिंह खुदाके यहां जिस वक़्त नूर बंटता था, तब तुम कहां रहगये ! राजाने कहा, कि हां हज़्रत जहां अक्ल

और बहादुरी बंटती थी, उसके लेनेमें फंसगया. मानसिंह उदारतामें भी बड़े मश्हूर हुए. उनकी एक शादी बीकानेरके राजा रायसिंहकी बेटीके साथ हुई थी; एक दिन महाराणी बीकानेरीने जल्सा किया, तब राजाने पूछा, कि आज तुमको किस बातकी खुशी है ? राणीने जवाब दिया, कि मेरे बापने करोड़ पशाव दिया है, जो आज तक किसी राजाने नहीं दिया. यह बात सुनकर राजा चुप होरहे, और ख़ानगीमें अहल्कारोंको हुक्म दे दिया, कि फ़ज्रको छः करोड़ पशावका सामान और छः चारण हाज़िर रहें. अह्लकारोंने हुक्मके मुवाफ़िक़ छः ही चारणोंको मए बख़्शिशके हाज़िर किया, और महाराजाने उन छओंको करोड़ पशाव देकर रोज़मर्रहका मामूली काम काज किया. शामके वक्त उन्हीं बीकानेरी राणीके महलमें गये, तब राणीने शर्मिन्दह होकर कहा, कि आपसे तो बिह्तर नहीं, लेकिन् दूसरे राजाओंसे तो मेरा बाप बढ़कर है. इस इन्आमके बारेमें किसी मारवाड़ी शाइरने अपनी ज़बानमें एक छप्पय कहा था, जो नीचे लिखाजाता है :-

छप्पय.

पोळ पात हरपाळ । प्रथम प्रभता कर थप्पे ॥
दळमें दासो नरू । सहोड़ घण हेत समप्पे ॥
ईसर कसनो अरघ। वड़ी प्रभता बाधाई ॥
भाई डूंगर भणे । क्रीत लख मुखां कहाई ॥
अई अई मान उनमान पहो । हात धनो धन धन हियो ॥
सुरज घड़ीक चढ़तां समो । दे छ कोड़ दातण कियो ॥ १ ॥

अर्थ- १- पहिला हरपाल हापावत बारहठ, जो उनके दर्वाज़ेपर नेग पाने वाला था, उसकी वड़ी इज़्ज़त बढ़ाई (कोट गांव दिया).

२- दासा खड़िया, (जिसको गंगावती गांव दिया).

३- नरू अलूंओत कविया, (जिसको भैराणा दिया).

४- ईसर दास रतनू, (जिसको खेड़ी गांव मिला).

५- किसना (कृष्ण) भादा (जिसको कचोल्या गांव दिया).

६- डूंगर कवियाको (डोगरी गांव मिला), जिसको भाईका ख़िताब था.

इन छओंकी औलाद वालोंके क़ब्ज़ेमें ऊपर लिखे छः गांव मए उनकी दस्तावेज़ोंके अब तक मौजूद हैं.

२६- मिर्ज़ा राजा भावसिंह.

इनका जन्म विक्रमी १६३३ आश्विन शुक्ल २ [हि० ९८४ ता० १ रजब =

ई० १५७६ ता० २६ सेप्टेम्बर] को, और राज्याभिषेक विक्रमी १६७१ आषाढ़ शुक्ल १० [हि० १०२३ ता० ९ जमादियुस्सानी = ई० १६१४ ता० १६ जुलाई] को हुआ. महाराजा मानसिंहके बाद उनके कुंवर जगत्सिंहके बड़े बेटे महाराज महासिंह आंबेरके हक़दार थे; परन्तु बादशाहने महाराजा मानसिंहके छोटे बेटे भावसिंहको राजा बना दिया, जिसका हाल खुद बादशाह जहांगीरने अपनी किताब तुज़ुक जहांगीरीके एष्ठ १३० में इस तरहपर लिखा है:-

"पांचवीं अमरदादको राजा मानसिंहके मरनेकी ख़बर पहुंची, यह राजा मेरे बापके मातहत बड़े सर्दारोंमेंसे था, मैंने कई दफ़ा अपने जिन सर्दारोंको दक्षिणमें भेजा, उनमें यह राजा भी उसी नौकरीपर तईनात था; जब राजा उस जगह मरगया, तो मैंने उसके बेटे मिर्ज़ा भावसिंहको बुलाया, जो शाहज़ादगीके दिनोंसे ही मेरी ख़िद्मत बहुत ज़ियादह करता रहा था. हिन्दुओंके रवाजके मुवाफ़िक़ रियासत और पाटवीका हक़ मानसिंहके बड़े बेटे जगत्सिंहके कुंवर महासिंहका (जिसका बाप अपने बापकी ज़िन्दगी ही में मरगया,) था; लेकिन् मैंने उसको मंज़ूर नहीं किया, और भावसिंहको मिर्ज़ा राजा ख़िताब और चार हज़ारी ज़ात तीन हज़ार सवारका मन्सब देकर उसके बुज़ुर्गोंकी जगह आंबेरका हाकिम बनाया. महासिंहको खुश करनेके लिये पांच सदी मन्सब उसके पहिले मन्सबपर बढ़ादिया; इन्आममें मांडूके इलाक़हमें जागीर मुक़र्रर करके कमरपटका, जड़ाऊ ख़न्जर, घोड़ा व ख़िल्अ़त उसके लिये भेजा."

राजा भावसिंह शराब ज़ियादह पीते थे, जिनकी मौतका हाल तुज़ुक जहांगीरीके ३३७ एष्ठमें इस तरह लिखा है:-

"हिज्री १०३१ सफ़र [विक्रमी १६७८ पौष = ई० १६२२ जैन्युअरी] में अ़र्ज़ हुआ, कि दक्षिणके सूबहमें राजा भावसिंह बहुत शराब पीनेसे मरगया. वह शराबकी ज़ियादतीसे बहुत कमज़ोर और दुबला होगया था, एक दिन ग़श (तान या तासीर) आनेसे एक रात व दिन बे होश पड़ारहा; हकीमोंने बहुत कुछ इलाज किये, और सिरपर दाग़ भी दिया, परन्तु कुछ फ़ाइदह न हुआ, और वह मरगया. उसके बड़े भाई जगत्सिंह और भतीजे महासिंहने भी इसी मरज़में जान खोई थी, लेकिन् भावसिंहने उनके अह्वालसे इब्रत न पकड़ी. वह बहुत बहादुर, नेक और शायस्तह आदमी था. शाहज़ादगीके ज़मानेसे मेरी ख़िद्मतमें रहकर उसने पांच हज़ारी मन्सब पाया था. उसके कोई लड़का नहीं था, जिससे उसके बड़े भाईके पोतेको, जो थोड़ी उम्रका था, राजाका ख़िताब और दो हज़ारी ज़ात व सवारका मन्सब दिया. आंबेर, जो उनका क़दीम वतन है, जागीरमें बहाल रक्खा. भावसिंहके साथ दो राणियां और आठ सहेलियां सती हुईं."

भावसिंहका देहान्त विक्रमी १६७८ पौष शुक्ल १० [हि० १०३१ ता० ९ सफ़र = ई० १६२१ ता० २३ डिसेम्बर] को दक्षिणमें हुआ. उनके कोई पुत्र नहीं था.

२७- मिर्ज़ा राजा जयसिंह—१.

इनका जन्म विक्रमी १६६८ आषाढ़ कृष्ण १ [हि० १०२० ता० १५ रबीउल्अव्वल = ई० १६११ ता० २९ मई] को, और राज्याभिषेक विक्रमी १६७८ पौष शुक्ल १० [हि० १०३१ ता० ९ सफ़र = ई० १६२१ ता० २३ डिसेम्बर] को हुआ. जब मिर्ज़ा राजा भावसिंहके कोई पुत्र नहीं रहा, तब राजा मानसिंहके पड़पोते, जगत्सिंहके पोते और महासिंहके बेटे जयसिंहको आंबेरकी गद्दी मिली, जैसा कि ऊपर लिखा गया है. कुंवर जगत्सिंह, जो अपने बापके साम्हने मरगये थे, उनका जन्म विक्रमी १६२५ [हि० ९७६ = ई० १५६८] में, और देहान्त विक्रमी १६५५ कार्तिक शुक्ल [हि० १००७ रबीउस्सानी = ई० १५९८ ऑक्टोबर] में हुआ. उनके बेटे महासिंहका जन्म विक्रमी १६४२ [हि० ९९३ = ई० १५८५] में हुआ, जिनका हाल मआसिरुल उमरामें इस तरहपर लिखा है:-

" महासिंह, जगत्सिंहका बेटा, जो राजा मानसिंहका पोता है, अपने बापके मरने बाद अपने दादाका क़ाइम मक़ाम होकर बंगालेकी हुकूमतपर गया; पैंतालीसवें जुलूस अक्बरीमें, जिन दिनों बंगालेके पठानोंने फ़साद कर रक्खा था, वह कम उम्र था. मानसिंहका भाई प्रतापसिंह काम चलाता था; उसने इस फ़सादको थोड़ासा जानकर पक्का बन्दोबस्त न किया, और एकदम भदरक मकाममें मुक़ाबलह कर बैठा, जिसमें पठान ग़ालिब रहे; बहुतसे राजपूत मारे गये, और महासिंह ठहर न सका. सैंतालीसवें सन् जुलूसमें, जब जलाल गक्खड़ और क़ाज़ी मोमिनने इलाक़ए बंगालामें फ़साद मचाया, तो महासिंहने उन लोगोंको सज़ा देनेमें खूब जुर्अत और मर्दानगी दिखलाई. पचासवें साल जुलूसमें उसका मन्सब दो हज़ारी तीन सौ सवार किया गया."

"दूसरे सन् जुलूस जहांगीरीमें वह फ़ौजके साथ बंगशकी मुहिमपर तईनात हुआ. तीसरे साल जुलूसमें उसकी बहिनकी शादीके वास्ते अस्सी हज़ारका सामान भेजा गया, और वह बादशाही महलमें दाख़िल हुई. दादा राजा मानसिंहने उसके साठ हाथी जिहेज़में दिये. पांचवें सन् जुलूसमें उसको निशान मिला. इसी सालमें बांधूका राजा विक्रमादित्य बाग़ी होगया, उसको सज़ा देनेके लिये यह

मुक़र्रर हुआ. नवें साल जुलूसमें राजा मानसिंहके मरनेपर उसने पांच सौ ज़ात पांच सौ सवारकी तरक़्क़ी पाई, क्योंकि बादशाहकी भावसिंहपर बड़ी मिहर्बानी थी, जिसको उसकी क़ौमका बुज़ुर्ग बनाकर उसके बदलेमें इसके मन्सबपर पांच सदी ज़ातका इज़ाफ़ह किया, ख़िल्अ़त व ख़न्जर जड़ाऊ इसके वास्ते भेजा, और मांडूमें जागीर इनूआमके तौर दी. दसवें साल जुलूसमें राजाका ख़िताब पाया, और नक़ारह मिला. ग्यारहवें साल जुलूसमें उसने पांच सौ ज़ात व पांच सौ सवारकी तरक़्क़ी पाई. बारहवें साल जुलूस हिज्री १०२६ ता० ३ जमादियुस्सानी [वि० १६७४ ज्येष्ठ शुक्ल ४ = ई० १६१७ ता० ८ जून] को वह बालापुर, बरारके मुल्कमें मरगया. उस का बेटा १ मिर्ज़ा राजा जयसिंह था, जो राजा भावसिंहके मरने बाद आंबेरका राजा हुआ."

जगत्सिंहका छोटा बेटा जुझारसिंह था, जिसकी औलादमें भलाय, साइवाड़, बगड़ी और मूंडे वगैरहके जुझारसिंहोत कछवाहे कहलाते हैं.

जब शाहजहां दक्षिणसे विक्रमी १६८५ [हि० १०३७ = ई० १६२८] में अजमेर होता हुआ आगरेको बादशाह बननेके लिये जाता था, रास्तेमें राजा हाज़िर हुआ, और आगरा पहुंचने बाद महाबनका फ़साद मिटानेके लिये उनको भेजा. जब विक्रमी १६८६ चैत्र कृष्ण ६ [हि० १०३९ ता० २० रजब = ई० १६३० ता० ५ मार्च] को निज़ामुल्मुल्क वगैरहपर फ़ौज कशी हुई, उसमें यह भी भेजेगये. उस वक़ इनका मन्सब एक हज़ारकी तरक़्क़ीसे चार हज़ारी चार हज़ार सवार कियागया था, और उस बड़ी फ़ौजमें वह हरावल मुक़र्रर हुए थे. विक्रमी १६८७ पौष कृष्ण ५ [हि० १०४० ता० १९ जमादियुल्अव्वल = ई० १६३० ता० २५ डिसेम्बर] को बीजापुरपर फ़ौज गई, तो उसमें भी वह तईनात थे.

विक्रमी १६९० ज्येष्ठ कृष्ण ३० [हि० १०४२ ता० २९ ज़ीक़ाद = ई० १६३३ ता० ८ जून] को हाथियोंकी लड़ाईमेंसे एक हाथीने शाहज़ादह औरंगज़ेबपर हमलह किया, इस राजाने पीछेसे पहुंचकर हाथीके एक बर्छा मारा, जिससे वह चलदिया. विक्रमी १६९० भाद्रपद कृष्ण ८ [हि० १०४३ ता० २२ सफ़र = ई० १६३३ ता० २१ ऑगस्ट] को बादशाहज़ादह मुहम्मद शुजाअ़के साथ, जो बहुतसी फ़ौज समेत बीजापुर गया था, राजा जयसिंह भी थे. उन्होंने वहांकी लड़ाइयोंमें बड़े बड़े काम किये. विक्रमी १६९२ वैशाख कृष्ण ५ [हि० १०४४ ता० १९ शव्वाल = ई० १६३५ ता० ८ एप्रिल] को जश्नके दिन उन्होंने पांच हज़ारी ज़ात पांच हज़ार सवारका मन्सब पाया, और विक्रमी १६९२ भाद्रपद शुक्ल १५ [हि० १०४५ ता० १४ रबीउस्सानी = ई० १६३५ ता० २७ सेप्टेम्बर] को दक्षिणसे बादशाहके पास

वापस आगये. विक्रमी १६९२ माघ कृष्ण ३ [हि० १०४५ ता० १७ शअ्बान = ई० १६३६ ता० २५ जैन्युअरी] को जब साहू और निज़ामुलमुल्कके लोगोंने दक्षिणमें फ़साद उठाया, और उनको सज़ा देनेके लिये बीस हज़ारके क़रीब फ़ौज तईनात हुई, उसमें जयसिंह भी भेजदिये गये. बहुतसी लड़ाइयोंके बाद देवगढ़के क़िलेपर धावा हुआ, और कई सुरंगें लगाकर क़िलेके बुर्ज वग़ैरह उड़ादिये गये. एक बुर्जके गिरनेसे रास्तह होजानेपर सिपहदारख़ां और यह राजा अन्दर घुसगये, और बड़ी मर्दानगीके साथ दुश्मनोंको मारने बाद वहांके क़िलेदार देवाको ज़िन्दह पकड़कर क़िलेपर बादशाही अमल जमादिया. विक्रमी १६९३ चैत्र कृष्ण ११ [हि० १०४६ ता० २५ शव्वाल = ई० १६३७ ता० २२ मार्च] को दक्षिणसे ख़ानिदौरां अपने साथ इब्राहीम आदिलशाहके पोते इस्माईलको लेकर साथियों समेत बादशाहके पास आया, तो उस वक़ जयसिंहका मन्सब पांच हज़ारी पांच हज़ार सवार हुआ; और चाटसूका पर्गनह, ख़िल्अ़त, जड़ाऊ खपुवा फूलकटारा समेत इन्आ़ममें मिला. इनको विक्रमी १६९४ वैशाख शुक्ल १५ [हि० १०४६ ता० १४ ज़िल्हिज = ई० १६३७ ता० ९ मई] को आंबेर जाकर कुछ दिनों आराम करनेकी रुख़्सत मिली. इनके मुल्कमें एक एक हज़ार रुपयेकी क़ीमतका घोड़ा पैदा होता था, इसलिये बीस घोड़ियां बच्चे लेनेके वास्ते साथ दीगईं.

विक्रमी १६९४ फाल्गुन [हि० १०४७ शव्वाल = ई० १६३८ फ़ेब्रुअरी] में बीस हज़ार फ़ौजके साथ शाहज़ादह शुजाअ् क़न्धार भेजे गये, तो राजा जयसिंह उसके साथ थे. विक्रमी १६९६ वैशाख कृष्ण ११ [हि० १०४८ ता० २५ ज़िल्हिज = ई० १६३९ ता० २९ एप्रिल] को राजा जयसिंह, जो नौशहरेमें बादशाहज़ादह दाराशिकोहके पास था, रावलपिंडी मक़ामपर शाहजहांके काबुल जाते वक़ हुक्मके मुवाफ़िक़ उसके पास आगया. नौशहरमें फ़ौजकी हाज़िरी होनेके वक़ राजाको बादशाहने एक घोड़ा और मिर्ज़ा राजाका ख़िताब, जो उनके बाप दादाको था, दिया; और काबुलसे वापस आजाने बाद विक्रमी १६९६ मार्गशीर्ष कृष्ण ३० [हि० १०४९ ता० २९ रजब = ई० १६३९ ता० २५ नोवेम्बर] को आंबेर जानेकी रुख़्सत और ख़िल्अ़त मिला. विक्रमी १६९७ फाल्गुन शुक्ल १३ [हि० १०५० ता० १२ ज़ीक़ाद = ई० १६४१ ता० २२ फ़ेब्रुअरी] को वह वापस शाहजहांके पास गया. विक्रमी १६९८ चैत्र शुक्ल १० [हि० १०५० ता० ९ ज़िल्हिज = ई० १६४१ ता० २१ मार्च] को शाहज़ादह मुराद बख़्शके साथ राजा जयसिंहको काबुल जानेका हुक्म हुआ, और ख़िल्अ़त, मीनाकार जम्धर, फूलकटारा और घोड़ा सुनहरी सामान समेत इन्आ़ममें मिला. विक्रमी १६९८ मार्गशीर्ष [हि० १०५१ रमज़ान

= ई० १६४१ डिसेम्बर] में शाहज़ादह मुरादबख़्श सियालकोट होता हुआ जगत्सिंह की जागीर पीयाननें पहुंचा, जो मऊसे तीन कोस है. इस मकामसे जगत्सिंहके मुक़ाबलहपर सईदख़ां बहादुर ज़फ़रजंग, राजा जयसिंह और असालतख़ांको आगे भेजा. वहांपर बहुतसी लड़ाइयां हुईं, और बहुतसे आदमी ग़नीमके मुक़ाबलहमें मारेगये, बाक़ी भागगये. इन मारिकोंमें राजाने बड़ी बहादुरी दिखाई, जिससे उसका मन्सब पांच हज़ारी ज़ात पांच हज़ार सवार, दो हज़ार सवार दो अस्पह सेअस्पह किया गया. विक्रमी १६९८ चैत्र कृष्ण ११ [हि० १०५१ ता० २५ ज़िल्हिज = ई० १६४२ ता० २६ मार्च] को जगत्सिंहको गिरिफ़्तार करके शाहज़ादह और उसके साथी बादशाहके पास चले आये.

विक्रमी १६९९ चैत्र शुक्ल [हि० १०५२ मुहर्रम = ई० १६४२ एप्रिल] में शाहज़ादह दाराशिकोहकी तय्यारी कन्धारपर जानेको हुई, तो राजा जयसिंह भी ख़िल्अ़त, जम्धर जड़ाऊ, फूलकटारा, घोड़ा और हाथी इन्आ़म पाकर उसके साथ तईनात हुए. विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण ८ [हि० ता० २२ शअ़्बान = ई० ता० १४ नोवेम्बर] को बादशाहने लाहौरसे अक्बराबाद आतेहुए राजा को ख़ास्सह ख़िल्अ़त दिया. विक्रमी १७०१ कार्तिक कृष्ण १ [हि० १०५४ ता० १५ शअ़्बान = ई० १६४४ ता० १७ सेप्टेम्बर] को ख़ानिदौरां नुस्रत जंग किसी ज़रूरतके सबब दक्षिणसे बादशाही दर्बारमें बुलायागया, राजा जयसिंहके नाम क़ाइम मक़ाम काम करनेके लिये दक्षिण जानेका हुक्म हुआ; और उनके लिये दक्षिणमें विक्रमी १७०२ श्रावण कृष्ण २ [हि० १०५५ ता० १६ जमादियुल अव्वल = ई० १६४५ ता० १० जुलाई] को ख़िल्अ़त भेजा गया. विक्रमी १७०३ आश्विन कृष्ण १३ [हि० १०५६ ता० २७ शअ़्बान = ई० १६४६ ता० ८ ऑक्टोबर] को राजा जयसिंह, जो दक्षिणमें थे, बादशाहने पिशावरसे उनके बुलानेका हुक्म भेजा; और उनके बेटे रामसिंहको ख़िल्अ़त और घोड़ा सुनहरी सामान समेत देकर घर जानेकी रुख़्सत इनायत की. विक्रमी १७०४ ज्येष्ठ कृष्ण १० [हि० १०५७ ता० २४ रबीउस्सानी = ई० १६४७ ता० २९ मई] को राजा जयसिंह हस्बुल हुक्म दक्षिणसे वापस बादशाहके पास आगये.

विक्रमी आश्विन [हि० रमज़ान = ई० ऑक्टोबर] में, जब बादशाही फ़ौज बल्ख़ और बदख़्शांका इलाक़ह दबाये हुए थी, राजा जयसिंह भी वहां पीछेसे भेजे गये. दुरुस्त इन्तिज़ाम न होनेके सबब वह मुल्क वहांके पहिले बादशाह नज़र मुहम्मदख़ांको वापस दियागया; और बादशाही चार क्रोड़ रुपया फ़ुज़ूल ख़र्च

पड़ा. शाहज़ादह दाराशिकोहके मुल्क सौंपने बाद बादशाहज़ादह औरंगज़ेब फ़ौज लेकर अलीमर्दानखां, राजा जयसिंह, बहादुरखां, मोतमदखां, व पृथ्वीराज समेत काबुलको लौटा. रास्तहमें बर्फ़के पड़ने और लुटेरोंके हमलोंके सबब बहुत तक्लीफ़ पाई. विक्रमी १७०७ [हि० १०६० = ई० १६५०] में जश्नके दिन इन्होंने आंबेर आनेकी रुख़्सत ली, और इनके छोटे कुंवर कीर्तिसिंहको मेवातका इलाक़ह जागीरमें मिला, जहांके मेव लोग बड़े सर्कश और लुटेरे थे. कीर्तिसिंहने वहांका इन्तिज़ाम अच्छा किया. विक्रमी १७०८ चैत्र कृष्ण २ [हि० १०६२ ता० १६ रबीउल्अव्वल = ई० १६५२ ता० २५ फ़ेब्रुअरी] को बादशाहने सादुल्लाहखां वज़ीरको कन्धारपर भेजा, तो राजा जयसिंहको उस फ़ौजका हरावल अफ़्सर मुक़र्रर किया. विक्रमी १७१४ कार्तिक कृष्ण ६ [हि० १०६८ ता० २० मुहर्रम = ई० १६५७ ता० २७ ऑक्टोबर] को राजा जयसिंह एक हज़ारकी तरक़्क़ीसे छः हज़ारी ज़ात छः हज़ार सवारका मन्सब पाकर सुलैमांशिकोहके साथ, जब कि शाहज़ादोंमें शाहजहांकी बीमारीसे तख़्तके दावेपर फ़साद उठा, बंगालेकी तरफ़ शुजाअ़पर भेजे गये. इस मारिकेमें राजाने बड़ी बहादुरी दिखलाई, जिससे विक्रमी १७१४ चैत्र कृष्ण १२ [हि० १०६८ ता० २६ जमादियुस्सानी = ई० १६५८ ता० २९ मार्च] को एक हज़ारकी तरक़्क़ीसे सात हज़ारी सात हज़ार सवारका मन्सब हुआ, लेकिन् राजा औरंगज़ेबके ग़ालिब होजानेसे विक्रमी १७१५ आषाढ़ शुक्ल ६ [हि० १०६८ ता० ५ शव्वाल = ई० १६५८ ता० ५ जुलाई] को सुलैमांशिकोहका साथ छोड़कर मथुरामें उसके पास चले आये. विक्रमी भाद्रपद कृष्ण २ [हि० ता० १६ ज़ीक़ाद = ई० ता० १४ ऑगस्ट] को औरंगज़ेबने दिल्लीसे लाहौर जाते हुए सिकन्दर बाड़ी मक़ामपर इनको एक करोड़ दाम (ढाई लाख रुपया) सालानह की जागीर दी. औरंगज़ेबको इन महाराजाके मिलनेसे बड़ा फ़ाइदह हुआ, क्योंकि इनके समझानेसे बहुतसे हिन्दू राजाओंने दाराशिकोहका साथ छोड़दिया. बर्नियरने अपनी किताबमें औरंगज़ेब और महाराजा जयसिंहके मिलनेका जो हाल लिखा है, वह महाराणा जयसिंहके प्रकरणमें दर्ज किया गया है- (देखो पृष्ठ ६८५). इन महाराजाने औरंगज़ेबको खुश करनेके लिये महाराजा जशवन्तसिंहको समझा बुझाकर जोधपुरसे बुलाया; और विक्रमी भाद्रपद कृष्ण ११ [हि० ता० २५ ज़ीक़ाद = ई० ता० २३ ऑगस्ट] को पंजाबमें सतलजके किनारेपर औरंगज़ेबके पास हाज़िर किया.

औरंगज़ेबने राजा जयसिंह और दिलेरखांको लाहौरकी तरफ़ इस मतलबसे भेजा,

कि सुलैमांशिकोह, जो कश्मीरसे आता था, दाराशिकोहके शामिल न होजावे. ये लोग विक्रमी भाद्रपद कृष्ण ३० [हि० ता० २९ ज़ीक़ाद = ई० ता० २७ ऑगस्ट] को लाहोरमें पहुंचे, कश्मीरके राजा राजरूपको व्यासा नदीपर विक्रमी भाद्रपद शुक्ल ७ [हि० ता० ६ ज़िल्हिज = ई० ता० ३ सेप्टेम्बर] को ऑरंगज़ेबके पास ले आये. विक्रमी १७१५ फाल्गुन् शुक्ल १५ [हि० १०६९ ता० १४ जमादियुस्सानी = ई० १६५९ ता० ७ मार्च] को ऑरंगज़ेबने अजमेरमें दाराशिकोहसे लड़ाईके वक्त राजा जयसिंह और दिलेरखांको अपने हरावलका अफ़्सर बनाया, जिन्होंने बड़ी बहादुरीके साथ काम दिया. इस राजाने जसवन्तसिंहको भी समझाकर दाराशिकोहसे अलग करदिया. जब दाराशिकोह अजमेरसे भागा, तब औरंगज़ेबने राजा जयसिंह और दिलेरखांको उसका पीछा करनेके लिये भेजा; उस वक्त राजाको खिलअ़त, हाथी, तलवार और एक लाख रुपया नक़्द इन्आ़म दिया. इन लोगोंने दाराशिकोहको अहमदाबाद और गुजरातकी तरफ़से निकाल दिया, और कच्छके राव तमाची को मिला लिया, जो दाराका मददगार बनगया था. जब दाराशिकोह क़त्ल होचुका, तो पीछेसे विक्रमी १७१६ आश्विन कृष्ण ९ [हि० १०६९ ता० २३ ज़िल्हिज = ई० १६५९ ता० ९ सेप्टेम्बर] को इस राजाने आलमगीरके पास आकर एक हज़ार मुहर और दो हज़ार रुपया नज़्र किया; बादशाहने ख़ास खिलअ़त, जड़ाऊ पहुंची, एक हाथी, एक हथनी, चांदीके ज़ेवर और सुनहरी सामान समेत, और दो सौ घोड़े इन्आ़ममें दिये. विक्रमी १७१६ मार्गशीर्ष शुक्ल ५ [हि० १०७० ता० ४ रबीउ़ल्अव्वल = ई० १६५९ ता० १८ नोवेम्बर] को बयालीसवीं साल गिरहपर आलमगीरने राजा जयसिंहको एक लाख रुपया नक़्द और इनके कुंवर कीर्तिसिंहको जड़ाऊ सर्पेच और कामां पहाड़ीकी फ़ौज्दारी दी. विक्रमी १७१७ आषाढ़ [हि० १०७० ज़ीक़ाद = ई० १६६० जुलाई] में राजाने एक लाख तीस हज़ार रुपये क़ीमतके हथियार व जवाहिर बादशाहको नज़्र किये. विक्रमी १७१७ पौष शुक्ल ६ [हि० १०७१ ता० ५ जमादियुल अव्वल = ई० १६६१ ता० ६ जेन्युअरी] को इनके बड़े कुंवर रामसिंहने दाराके बेटे सुलैमांशिकोहको श्रीनगरके राजाकी मददसे गिरिफ़्तार करलिया, जिसको आलमगीरने क़ैद करदिया. यह बयान बादशाह आलमगीरके हालमें लिखागया है-(देखो पृष्ठ ६८९). फिर विक्रमी १७१८ ज्येष्ठ [हि० शुरू शव्वाल = ई० जून] में इन राजाको पहिलेके सिवा ढाई लाख आमदनी की जायदाद और मिली.

विक्रमी १७२० मार्गशीर्ष कृष्ण २ [हि० १०७४ ता० १६ रबीउ़स्सानी = ई० १६६३ ता० १६ नोवेम्बर] को राजा जयसिंह दिलेरखां समेत दक्षिणकी तरफ़ शिवा

मरहटेके मुक़ाबलहपर भेजेगये, जिसका हाल मुख़्तसर तौरपर आलमगीर नामहसे यहां लिखाजाता है:-

"हिज्री १०७५ ज़िल्हिज [वि० १७२२ आषाढ़ = ई० १६६५ जुलाई] में राजा जयसिंह और दिलेरख़ांने दक्षिणमें बहुतसे क़िले और मक़ाम फ़त्ह करके वहांपर क़ब्ज़ह करलिया, और शिवाको राजगढ़के क़िलेमें घेरलिया; तब वह भागकर शिवापुर गांवमें जाछिपा, और उसने वहांके थानहदार सर्फ़राज़ख़ांकी मारिफ़त बादशाही ताबेदारीके इरादहसे राजाकी मुलाक़ात करनी चाही. राजाने अपने मुन्शीको पेश्वाई के लिये भेजा; लश्करके भीतर राजाके फ़ौजी बख़्शी जानीबेगने पेश्वाई की, ख़ेमेमें पहुंचनेपर राजाने खड़े होकर उसको अपने पास बिठाया. शिवाने बड़ी लाचारीके साथ क़ुसूरोंकी मुआफ़ी चाही, और कई क़िले सौंपनेपर बादशाही ताबेदारी इख़्तियार की. दिलेरख़ां और कीर्तिसिंहने क़िलेपर गोलन्दाज़ी बन्द की, और राजाकी दर्ख़्वास्तपर बादशाही फ़र्मान और ख़िल्अ़त शिवाके लिये पहुंचा, जिसको उसने तीन कोस पेश्वाई करके लिया. राजा और दिलेरख़ांने पैंतीस क़िलोंमेंसे, जो निज़ामके इलाक़ेके उसने दबालिये थे, बारह क़िले एक लाख हौन (पांच लाख रुपये) जागीर के शिवाको छोड़े; और तेईस क़िले, जिनकी जागीरी आमदनी दस लाख हौन (पचास लाख रुपया) थी, बादशाही क़ब्ज़हमें लिये. शिवाका बेटा शम्भा, जिस की उम्र आठ वर्षकी थी, बादशाही नौकरोंके तौर राजाकी ख़िद्मतमें रक्खागया."

"हिज्री १०७६ रबीउ़ल्अव्वल [वि० १७२२ भाद्रपद = ई० १६६५ ऑक्टोबर] में बादशाहने राजा जयसिंहकी दर्ख़्वास्तपर शिवाके बेटे शम्भाको पांच हज़ारी ज़ात व सवारका मन्सब दिया. शिवा, राजा जयसिंहके पास मुलाक़ातको बग़ैर हथियार आता था, इसलिये राजाने एक तलवार और जड़ाऊ जम्धर देकर उसको शस्त्र बांधनेकी इजाज़त दी. राजाने मए दिलेरख़ांके बीजापुरके इलाक़हमें पहुंचकर उसको तबाह किया, तब आदिलख़ां (शाह) बीजापुरीने सुलह करना चाहा. राजाके तसल्ली देने और समझानेसे शिवा, हिज्री १०७६ ता० १५ ज़ीक़ाद [वि० १७२३ ज्येष्ठ कृष्ण १ = ई० १६६६ ता० १९ मई] को बादशाही दर्बारमें आगया, जिसकी कुंवर रामसिंहने पेश्वाई करके बादशाहके साम्हने सलाम कराया; शिवाने डेढ़ हज़ार मुहर और छः हज़ार रुपया नज़्र किया. कुछ अ़रसह बाद वह पंज हज़ारियोंकी सफ़में खड़े रहनेको बेइ़ज़्ज़ती समझकर शर्मसे भाग गया. इस क़ुसूरमें बादशाहने जयसिंहके कुंवर रामसिंहको मन्सबसे माज़ूल करके उसकी ड्योढ़ी बन्द करदी."

इसका अस्ल मतलब यह था, कि शिवाको राजा जयसिंहने क़स्मियह तसल्ली

देकर बादशाहके पास भेजा था, लेकिन् आलमगीर अपनी आदतके मुवाफ़िक़ दग़ाबाज़ीको काममें लाया, कि राजा शिवाको क़ैद करदिया; उसके भागजानेसे रामसिंहपर इल्ज़ाम रक्खा. अगर अस्लमें रामसिंहने ही शिवाको निकाल दिया हो, तो भी तअ़ज्जुब नहीं; क्योंकि रामसिंहको उसके बापने लिखदिया होगा, कि बादशाह दग़ाबाज़ी करे, तो तुम ख़बरदार रहकर इसको बचाना. यह बात फ़ार्सी तवारीख़ोंमें नहीं लिखी, लेकिन् जयसिंह चरित्र वग़ैरह जयपुरकी पुस्तकोंमें साफ़ साफ़ मौजूद है, कि कुंवर रामसिंहने शिवा राजाको निकाला, और शिवा राजाके जमाई नेतू (१) को राजा जयसिंहने एवज़में पकड़कर बादशाहके पास भेजदिया. राजा, बर्सात आजानेके सबब बीजापुरका फ़ैसलह मुल्तवी रखकर औरंगाबादमें चले आये. कुछ दिनों बाद बादशाही फ़र्मान् पहुंचा, कि शाहज़ादह मुअ़ज़्ज़म, जिसको औरंगाबादकी सूबहदारी मिली थी, उसके वहां पहुंचने बाद राजा यहां चला आवे.

आलमगीर नामहमें लिखा है, कि बुर्हानपुरके वाक़िअ़ह नवीसोंकी अ़र्ज़ियोंसे मालूम हुआ, कि राजा जयसिंह, जो औरंगाबादसे हुक्मके मुवाफ़िक़ हुज़ूरमें आता था, बुर्हानपुरमें विक्रमी १७२४ श्रावण कृष्ण १४ [हि० १०७८ ता० २८ मुहर्रम = ई० १६६७ ता० १९ जुलाई] को बीमारीसे मरगया; और जयपुरकी पोथियोंमें इनके मरनेका हाल इस तरहपर लिखा है, कि शिवा राजाके निकालनेके क़ुसूरमें आलमगीर, कुंवर रामसिंहसे नाराज़ हुआ, और इसी सबबसे राजा जयसिंह और आलमगीरके दर्मियान रंज बढ़तागया, जिससे वह ख़ुद आलमगीरके पास आनेको रवानह हुआ; तब आलमगीरने अन्देशहके सबब बुर्हानपुरमें इस राजाको किसी ख़वासके हाथसे ज़हर दिलवाकर विक्रमी १७२४ आश्विन कृष्ण ६ [हि० १०७८ ता० २० रबीउ़ल्अव्वल = ई० १६६७ ता० ८ सेप्टेम्बर] को मरवाडाला. राजा जयसिंहका नाराज़ होकर दक्षिणसे आना तो फ़ार्सी तवारीख़ोंसे नहीं मालूम होता, लेकिन् ज़हरसे मरवाडालना आलमगीरकी आदतसे तअ़ज्जुबकी बात नहीं है; क्योंकि उसने अपने भाइयोंको बकरोंकी तरह मरवाया, बापको क़ैद किया, और बड़े बेटे सुल्तान मुहम्मदको सख़्त क़ैदमें डाला, जिसकी बहादुरीसे उसको तख़्त मिला था; और मीर जुम्लाके मरनेसे ख़ुश हुआ, जो उसका दिली ख़ैरख़्वाह मददगार था.

राजाके मरनेकी तारीख़में जयपुरकी पोथियों व फ़ार्सी तवारीख़ोंके देखनेसे पौने दो महीनेका फ़र्क़ मालूम होता है; और हमने जयपुरके मोतबर आदमियोंसे दर्याफ़्त किया, तो उनका बयान यह है, कि हमारे यहां उक्त महाराजाका सांवत्सरिक

(१) आलमगीर नामहमें कुछ अ़र्सह बाद इसका मुसल्मान होजाना लिखा है.

श्राद्ध आश्विन कृष्ण ६ को होता है, इस सबबसे यह तिथि ग़लत नहीं होसक्ती. आ़लमगीरनामहका मुसन्निफ़ भी उसी ज़मानेका आदमी है, जिसकी तह़रीरको भी हम ग़लत नहीं कहसक्ते; अल्बत्तह आ़लमगीरनामहके लिखेजाने या छपनेमें ग़लती होगई हो, तो तअ़ज्जुब नहीं. हमको मरने वग़ैरहकी तिथियोंमें जयपुरकी पोथियों पर ज़ियादह एतिबार है, क्योंकि उस समयसे आज तक जो सांवत्सरिक श्राद्ध होता चला आया है, उसमें मज़्हबी ख़यालसे फ़र्क़ नहीं होसक्ता.

महाराजा जयसिंहके साथ एक राणी बीकावत, दो ख़वास और दो पातर कुल पांच सतियां हुईं.

इनके बेटोंमेंसे इस वक़ रामसिंह और कीर्तिसिंह, जिसको कामां जागीरमें मिला, मौजूद थे. यह महाराजा बुद्धिमान, बहादुर, फ़य्याज़, मज़्हब व ईमानके सच्चे, और पोलिटिकल मुआ़मलात, याने राजनीतिमें बहुत होश्यार थे.

---

२८ - महाराजा रामसिंह - १.

इन महाराजाका जन्म विक्रमी १६९२ द्वितीय भाद्रपद कृष्ण ५ [हि० १०४५ ता० १९ रबीउल्अव्वल = ई० १६३५ ता० १ सेप्टेम्बर] को, और राज्याभिषेक विक्रमी १७२४ आश्विन कृष्ण ६ [हि० १०७८ ता० २० रबीउ़लअव्वल = ई० १६६७ ता० ८ सेप्टेम्बर] को हुआ था. जब बादशाह शाहजहां अजमेर आये, तब विक्रमी १६८९ [हि० १०४२ = ई० १६३२] में यह अपने बापके साथ बादशाही ख़िदमतमें पहुंचे; और विक्रमी १७०२ [हि० १०५५ = ई० १६४५] में बादशाह शाहजहांके लाहौरसे काबुलकी तरफ़ जानेके वक़ इनको पांच सौ सवारकी तरक़्क़ी और निशान मिला. जिस वक़ बादशाह शाहजहांके बेटोंमें लड़ाइयां हुईं, उस समय महाराजा जयसिंह तो सुलैमांशिकोहके साथ बंगालेकी तरफ़ भेजेगये; और यह अपने भाई कीर्तिसिंह समेत दाराशिकोहके साथ थे.

विक्रमी १७१७ [हि० १०७० = ई० १६६०] में यह सुलैमांशिकोहके लानेको श्रीनगरकी तरफ़ भेजेगये, सो वहांके राजासे मिलावट करके उक्त शाह-ज़ादहको लेआये. जब मरहटा राजा शिवाके भागजानेसे इनपर बादशाही नाराज़गी हुई, तो इनका मन्सब ज़ब्त और सलाम बन्द किया गया. इनके बाप राजा जयसिंह के बुर्हानपुरमें इन्तिक़ाल होने बाद इन (कुंवर रामसिंह) को आगरेसे बुलाकर बादशाह आ़लमगीरने ख़िल्अ़त, जड़ाऊ जम्धर, मोतियोंकी कंठी, तलवार जड़ाऊ सामान समेत, अ़रबी घोड़ा सुनहरी सामान समेत, ख़ासह हाथी ज़रदोज़ी झूल

और चांदीके ज़ेवर समेत, चार हज़ारी ज़ात और सवारका मन्सब और राजाका ख़िताब दिया. फिर विक्रमी १७२६ आषाढ़ शुक्ल १२ [हि० १०८० ता० ११ सफ़र = ई० १६६९ ता० ९ जुलाई] को आलमगीरने इन्हें एक हज़ारकी तरक़ी देकर एक बड़ी फ़ौजके साथ आसामकी तरफ़, जहां कि फ़सादियोंने फ़ीरोज़ख़ां थानेदारको मारडाला था, भेजा. विक्रमी १७३१ आश्विन कृष्ण १० [हि० १०८५ ता० २४ जमादियुस्सानी = ई० १६७४ ता० २५ सेप्टेम्बर] को महाराजा रामसिंहके कुंवर कृष्णसिंह, आग़रख़ां, व नुस्रतख़ां वग़ैरह समेत जम्रोद और खैबरके पठानोंको सज़ा देनेके लिये भेजेगये; और विक्रमी १७३३ चैत्र कृष्ण १० [हि० १०८८ ता० २४ मुहर्रम = ई० १६७७ ता० २८ मार्च] को उस तरफ़की नौकरी बजा लाकर बादशाहके पास आने पर उनको चार महीनेकी रुख़्सत घर जानेके लिये मिली.

विक्रमी १७३९ चैत्र शुक्ल १४ [हि० १०९३ ता० १३ रबीउस्सानी = ई० १६८२ ता० २३ मार्च] को वह किसी ख़ानगी फ़सादमें लड़कर मारेगये. जयपुरकी ख्यातमें उनका बादशाही दक्षिणकी लड़ाईमें माराजाना लिखा है; लेकिन् फ़ार्सी तवारीख़ोंमें ख़ानगी फ़सादके सबब माराजाना पाया जाता है. कृष्णसिंहका जन्म विक्रमी १७११ द्वितीय भाद्रपद कृष्ण ९ [हि० १०६४ ता० २३ शव्वाल = ई० १६५४ ता० ५ सेप्टेम्बर] को हुआ था. जयपुरकी ख्यात व जयसिंह चरित्रमें महाराजा रामसिंह (१) का काबुलकी तरफ़ भेजा जाना लिखा है, परन्तु फ़ार्सी तवारीख़ोंमें इनका पिछला हाल बहुत कम मिलता है. इन महाराजाका देहान्त विक्रमी १७४६ आश्विन शुक्ल ५ [हि० ११०० ता० ४ ज़िल्हिज = ई० १६८९ ता० १९ सेप्टेम्बर] को हुआ. यह महाराजा बड़े बहादुर और सच बोलने वाले थे; इनको मज़्हबी तअस्सुब भी ज़ियादह था, अपने बाप दादोंके मुवाफ़िक़ मुसल्मानोंसे हिलमिलकर रहना नापसन्द करते थे, इसलिये आलमगीर इनसे खुश नहीं था. राजा रामसिंहके बाद उनके पोते विष्णुसिंह आंबेरकी गद्दीपर बैठे.

२९- महाराजा विष्णुसिंह.

इनका जन्म विक्रमी १७२८ [हि० १०८२ = ई० १६७१] में, और राज्याभिषेक विक्रमी १७४६ आश्विन शुक्ल ५ [हि० ११०० ता० ४ ज़िल्हिज = ई० १६८९ ता० १९

---

(१) यह वही रामसिंह हैं, जिनका हवाला महाराणा राजसिंहने अपने काग़ज़में दिया है, जो जिज़्यहकी बाबत आलमगीरको लिखा था— (देखो पृष्ठ ४६०).

सेप्टेम्बर] को हुआ था. जब इनके दादा रामसिंहका इन्तिक़ाल हुआ, तब यह उन्हींके साथ (१) काबुलमें थे; वहां इनके नाम बादशाह आलमगीरका हुक्म पहुंचा, कि हिन्दुस्तानमें सिनसिनीके जाटोंने फ़साद उठाया है, तुम वहां पहुंचकर बन्दोबस्त करो. तब वे रवानह होकर आंबेर आये, और वहांसे जाटोंको सज़ा देनेके लिये गये. इस मुहिमको तै करने बाद वे मुल्तानमें तईनात हुए, जहांके लोगोंने बग़ावत कर रक्खी थी.

विक्रमी १७४७ मार्गशीर्ष कृष्ण ५ [हि० ११०२ ता० १९ सफ़र = ई० १६९० ता० २१ नोवेम्बर] को, जब बादशाह दक्षिणमें थे, वहांपर इनकी अर्ज़ी इस मत्लबसे पहुंची, कि विक्रमी १७४७ ज्येष्ठ शुक्ल ४ [हि० ११०१ ता० ३ रमज़ान = ई० १६९० ता० ११ जून] को सक्खरकी गढ़ी फ़त्ह होगई. फिर उसी तरफ़ तईनात रहे. विक्रमी १७५५ आश्विन कृष्ण ३० [हि० १११० ता० २९ रबीउ़लअव्वल = ई० १६९८ ता० ५ ऑक्टोबर] को शाहज़ादह मुअ़ज़्ज़मके साथ काबुलको गये, वहां पहुंचनेपर बंगश वग़ैरह पठानोंकी लड़ाईमें बड़ी दिलेरी और बहादुरीके साथ नौकरी दिखलाई, परन्तु ईश्वरेच्छासे विक्रमी १७५६ माघ कृष्ण ५ [हि० ११११ ता० १९ रजब = ई० १७०० ता० १० जैन्युअरी] को काबुलमें ही इनका इन्तिक़ाल होगया. इनके दो बेटे, बड़े जयसिंह और छोटे विजयसिंह थे; राजा भगवानदाससे लेकर विष्णुसिंह तक जयपुरका मुल्की हाल तवारीख़में लिखने क़ाबिल नहीं मिलता, क्यौं कि बादशाही नौकरीके सबब वतनमें रहनेकी फ़ुर्सत उनको बहुत कम मिली; जो हालात बादशाही नौकरीमें रहनेके वक्त़ क़ाबिल लिखनेके थे, ऊपर लिखेगये.

३०- महाराजा सवाई जयसिंह- २.

इनका जन्म विक्रमी १७४५ मार्गशीर्ष कृष्ण ६ [हि० ११०० ता० २० मुहर्रम = ई० १६८८ ता० १४ नोवेम्बर] को और राज्याभिषेक विक्रमी १७५६ [हि० ११११ = ई० १७००] के अख़ीरमें काबुलसे विष्णुसिंहके मरनेकी ख़बर आनेपर हुआ, और वह जल्दी ही आंबेर से रवानह होकर दक्षिणमें आलमगीरके पास पहुंचे. वहां हाज़िर होनेपर बादशाहने इनके दोनों हाथ पकड़लिये, और कहा, कि अब तू क्या करसक्ता है ? राजाने जवाब दिया, कि अब मैं सब कुछ करसक्ता हूं, क्योंकि मर्द औरतका एक हाथ पकड़ता है, तो उसको बहुत कुछ इख्तियार देता है, और हुज़ूरने मेरे दोनों

(१) इनका काबुलमें होना जयपुरकी तवारीख़ोंमें लिखा है.

हाथ पकड़ लिये, जिससे यक़ीन है, कि मैं सबसे बढ़कर हो गया. तब बादशाहने खुश होकर कहा, कि यह बड़ा होश्यार होगा; और कहा, कि इसको सवाई जयसिंह कहना चाहिये (याने अव्वल जयसिंहसे ज़ियादह). इनका अस्ली नाम विजयसिंह था, लेकिन् बादशाहने यह नाम इनके छोटे भाईको दिया, और इनका नाम सवाई जयसिंह रक्खा. मआसिरे आलमगीरीके ४२४ पृष्ठमें यह बयान इस तरह लिखा है :-

"विजयसिंह आंबेरके भोमियेको उसका बाप मरजानेसे राजा जयसिंहका ख़िताब और उसके भाईको विजयसिंह नाम दियागया; उसको ५०० पांच सौ ज़ात दो सौ सवारकी तरक़ीसे डेढ़ हज़ारी ज़ात हज़ार सवारका मन्सब अता हुआ."

इन महाराजाका ज़ियादह हाल महाराणा अमरसिंह दूसरे व संग्रामसिंह दूसरे के ज़िक्रमें इनकी पॉलिसीके साथ लिखदिया गया है, इस वास्ते हम यहां वही हाल लिखते हैं, जो मआसिरुलउमरा वग़ैरह फ़ार्सी तवारीख़ोंमें दर्ज है; क्योंकि मुल्की हाल इनका ऊपर आचुका, दुबारह लिखना बे फ़ाइदह होगा.

जब ये आलमगीरके पास रहने लगे, तो दक्षिणमें क़िले खेलनाके फ़त्ह करनेको मुक़र्रर हुए; वहां इनकी और इनके राजपूतोंकी हम्लहके वक्त बड़ी बहादुरी दिखलाई दी, जिससे आलमगीरने पांच सौ की तरक़ीसे दो हज़ारी ज़ात व दो हज़ार सवारका मन्सब इनको दिया. आलमगीरके मरने बाद ये राजा शाहज़ादह मुहम्मद आज़मकी फ़ौजमें थे, जब उसका आगरेके पास बहादुरशाहसे मुक़ाबलह हुआ, और आज़म मारा गया, (मआसिरे आलमगीरीमें लिखा है), उसी दिन वह बहादुरशाहके पास चला आया; इस वास्ते उस राजाकी बातका एतिबार न रहा. इनका छोटा भाई विजयसिंह, जो काबुलमें बहादुरशाहके साथ था, उसको बहादुरशाहने तीन हज़ारी ज़ात और सवारका मन्सब देकर जयसिंहके एवज़ आंबेरका मालिक बनाना चाहा; और आंबेरके ख़ालिसहपर सय्यद हुसैन अलीको भेज दिया. बहादुरशाह काम्बख़्शकी लड़ाईपर दक्षिणको गये, तब यह राजा, जो बादशाहके हमराह थे, राजा अजीतसिंह सहित नाराज़ होकर नर्मदा नदीसे लौट आये; और उदयपुर शादी करके जोधपुरको गये. इनके दीवान रामचन्द्रने सय्यदोंको आंबेरसे निकाल दिया, और सांभरके मक़ामपर सय्यद हुसैन अलीख़ां वग़ैरह इन दोनों राजाओंसे लड़कर मारे गये. जब बहादुरशाह दक्षिणसे पीछा राजपूतानहमें आया, तो ये दोनों राजा ख़ानख़ानांकी मारिफ़त बादशाहके पास हाज़िर होगये; बादशाह भी सिक्खोंकी बग़ावतके सबब इनसे दर्गुज़र करके लाहोरको चलेगये. यह हाल महाराणा दूसरे अमरसिंहके बयानमें मुफ़स्सल लिखा गया है-(देखो पृष्ठ ९२९).

बादशाह फ़र्रुख़सियरने इनको राजाधिराजका ख़िताब दिया, जिसके पांचवें सन् जुलूस विक्रमी १७७२ [हि० ११२७ = ई० १७१५] में चूड़ामणि जाटने

बग़ावत की, और उसपर इनको भेजा. क़रीब था, कि चूड़ामणि बर्बाद होजावे; सय्यद अब्दुल्लाहख़ां वज़ीरने राजाधिराजसे दुश्मनीके सबब ख़ानिजहां बारहको पीछेसे भेजकर बाला बाला सुलह करवाली. यह बात राजाधिराजको बहुत नागुवार गुज़री. हुसैनअलीख़ां दक्षिणसे आया, तब उससे दबकर फ़र्रुख़सियरने राजाधिराजको वतनकी रुख़्सत देदी, और पीछेसे खुद बादशाह मारा गया. यह हाल महाराणा संग्रामसिंहके ज़िक्रमें लिखागया है-(देखो पृष्ठ ११४०).

मुहम्मदशाहके तख़्तपर बैठने बाद राजा दिल्लीमें हाज़िर होगये, तो बादशाह बड़ी मिहर्बानीसे पेश आये. फिर वह चूड़ामणि जाटपर तईनात किये गये, और जाटोंसे कुल इलाके छीन लिये. विक्रमी १७८९ [हि० ११४५ = ई० १७३२] में मुहम्मदख़ां बंगशसे मालवेकी सूबहदारी उतरकर राजाधिराजको हासिल हुई. विक्रमी १७९२ [हि० ११४८ = ई० १७३५] में इनकी दर्ख़्वास्तसे ख़ानिदौरांकी मारिफ़त मालवेकी सूबहदारी बाजीराव पेश्वाको मिली.

विक्रमी १७८४ श्रावण [हि० ११३९ ज़िल्हिज = ई० १७२७ जुलाई] में महाराजाने आंबेरके दक्षिणी तरफ़ अपने नामपर जयपुर शहरकी बुन्याद डाली, जिसके बाज़ार, गली कूचे, महल वगैरह सब लैन डोरीसे मापकर बनवाये गये. इसके सिवा उन्होंने जयपुर व बनारस वगैरह कई शहरोंमें ग्रह नक्षत्र वेधनेके यन्त्र भी बनवाये. इन महाराजाका देहान्त विक्रमी १८०० आश्विन शुक्क १४ [हि० ११५६ ता० १३ शऋबान = ई० १७४३ ता० २२ सेप्टेम्बर] को खून बिगड़जानेकी बीमारीसे बहुत तक्लीफ़के साथ हुआ. ये राजा बहुत बुद्धिमान, इल्मको तरक्क़ी देनेवाले, विद्वानोंके परीक्षक, राजनीतिके पूरे पक्के और अपनी रियासतको तरक्क़ी देनेवाले हुए; इनकी अक्लमन्दी व होश्यारीका सुबूत जयपुरका शहर मौजूद है, जो उन्होंने अपनी तज्वीज़से आबाद किया. "भूगोल हस्तामलक" में बाबू शिवप्रसादने एक इटॉलियन इन्जिनिअरकी सलाहसे यह शहर आबाद कियाजाना लिखा है; अगर ऐसा भी किया, तो भी उनकी बुद्धिमानीमें कमी नहीं आसक्ती, क्योंकि यूरोपियन लोग जो उस समय हिन्दुस्तानमें थे, उनमेंसे किसीने ऐसा नामवरीका काम नहीं किया.

इसके सिवा जयपुरकी इतनी बड़ी रियासत, जो अब मौजूद है, उसको उन्हीं की बुद्धिमानीका फल कहना चाहिये; क्योंकि राजा भारमल्लसे पहिले तो कुछ बड़ा इलाक़ह उनके क़ब्ज़हमें नहीं था, राजा भगवानदाससे विष्णुसिंह तक ये लोग बादशाही मिहर्बानी और नवाज़िशसे बड़े अमीर होकर दूरके मुल्कोंमें जागीरें तथा सूबहदारियां पाते रहे, जो बदलती रहीं; परन्तु मौरूसी मुल्कमें बड़े हिस्सेपर महाराजाधिराज बनना इन्हींका काम था. राजाओंके चार अंग- साम, दाम, दंड और भेद,

सब इनमें मौजूद थे, जिनकी राजनीतिके लिये राजाओंको बहुत ज़रूरत है. बूंदीके मिश्रण सूर्यमल्लने अपने ग्रन्थ वंशभास्करमें बुधसिंह चरित्रके पृष्ठ १०० में इनकी दस बातें अनुचित लिखी हैं, जिसकी नक्ल नीचे लिखी जाती हैः-

जो निज धरम रच्यो कूरम हिय। क्यों तब कर्म अधर्म इते किय॥
हन्यो प्रथम सिवसिंह स्वीय सुत। जोहु तास जननी निज तिय जुत॥
पुनि जननी निज स्वर्ग पठाई। भट बर विजयसिंह बलि भाई॥
पुनि भानेज सत्य जो होतो। अरु असत्य सिसु होतउसो तो॥
पुनि संग्राम रामपुर स्वामी। हन्यों दगा रचि होय हरामी॥
सत्त अष्ठ सत्रह १७८७ मित संबत। तेरह लक्ख १३००००० साह रुप्पय तत॥
लै अरु कितव मिल्यो मर हट्ठन। सो मुर्‌यो न अबलग अधर्म सन॥
साह तास बिस्वास हि रक्खैं। यह तउ मन्त्र दक्खिनिन अक्खैं॥

अर्थ- जो कछवाहेके दिलमें राजपूतोंका धर्म माना गया, तो इतने बुरे काम क्यों किये:- पहिले अपने बेटे शिवसिंहको मारा, अपनी राणी शिवसिंहकी माको मारा, अपनी माताको मारा, और अपने छोटे भाई विजयसिंहको मारा, अपने भान्जे राव राजा बुद्धसिंहके बेटेको मारा, रामपुराके राव संग्रामसिंह चन्द्रावतको दग़ासे मारा, और संवत् १७८७ में तेरह लाख रुपये बादशाहसे लेकर मरहटोंसे मिल गया, बादशाह उसपर एतिबार रखता था, और वह पोशीदह सलाह मरहटोंसे करता था.

३१- महाराजा ईश्वरीसिंह.

इनका जन्म विक्रमी १७७८ फाल्गुन् शुक्ल ८ [हि० ११३४ ता० ७ जमादियुल अव्वल = ई० १७२२ ता० २२ फ़ेब्रुअरी] रविवारको हुआ था. जब महाराजा सवाई जयसिंहका देहान्त हुआ, तब इनको गद्दी मिली; परन्तु अपने छोटे भाई माधवसिंहका ख़ौफ़ था, कि वह ज़रूर राज्यका दावा करेगा, इस वास्ते ये दिल्ली पहुंचे, और बादशाहसे अपने बापका ख़िताब, मन्सब, और जयपुरकी गद्दीका फ़र्मान हासिल किया. पीछेसे माधवसिंहके मददगार मरहटों और महाराणाकी फ़ौजें ढूंढाड़में पहुंची; यह सुनकर ईश्वरीसिंह दिल्लीसे एकदम जयपुर पहुंचे, और अपने सर्दारोंके शामिल होकर लड़ाईपर आये, जहां मरहटोंको लालच देकर कामयाब होगये. यह हाल पहिले लिखा गया है- (देखो पृष्ठ १२३२). इसी तरह इनकी दूसरी लड़ाइयां भी, जो मेवाड़ और मरहटोंके साथ हुई थीं, महाराणाके ज़िक्रमें लिख दीगई.

इस वास्ते दोबारह लिखना बे फ़ाइदह होगा; महाराणा जगत्सिंहका बयान पढ़नेसे पाठक लोगोंको इनका कुल हाल मालूम होजायगा.

विक्रमी १८०४ [हि० ११६० = ई० १७४७] में, जब अह्मदशाह अब्दाली हिन्दुस्तानपर चढ़ आया, तब मुहम्मदशाहने अपने शाहज़ादहके साथ महाराजा ईश्वरीसिंहको भी मुक़ाबलहके लिये मए बड़ी जमइयतके भेजा था. फ़ार्सी तवारीख़ वाले इस लड़ाईका हाल इस तरह लिखते हैं, कि "दुर्रानी शाहसे मुक़ाबलेके वक़्त राजा मए अपने राजपूतोंके ज़ाफ़रानी (केसरिया) पोशाक पहिने तय्यार था, जिसको राजपूत लोग लड़ाईके वक़्त पहनकर पीछे हर्गिज़ नहीं हटते; लेकिन् वह मुक़ाबलह होते ही भाग गया."

इस भागनेका सबब भी यही था, कि राजाको उस वक़्त ख़बर लगी, कि माधवसिंहकी हिमायती फ़ौजें जयपुरके मुल्कमें आपहुंची हैं, इस वास्ते उनको लाचार लड़ाई छोड़कर आना पड़ा; आख़िरकार यह महाराजा विक्रमी १८०७ पौष कृष्ण १२ [हि० ११६४ ता० २६ मुहर्रम = ई० १७५० ता० २५ डिसेम्बर] को ज़हर खाकर मरे (१). इनके मरनेका हाल भी ऊपर लिखा गया है- (देखो पृष्ठ १२४०). यह महाराजा बड़े बहादुर और फ़य्याज़ थे; लेकिन् लोगोंके बहकानेसे बेजा काम भी कर बैठते; आख़िर ऐश व इश्रतमें ज़ियादह पड़गये, इसीके तुफ़ैल उनकी जान भी गई, और वे अपनी बदनामीका निशान "ईशर लाट" नाम मीनार बाक़ी छोड़गये. महाराजा सवाई जयसिंहने तो इनकी मज़्बूतीका सामान बहुत कुछ किया था, लेकिन् परमात्मा को यह मन्ज़ूर था, कि माधवसिंह भी जयपुरका महाराजा कहलावे.

३२- महाराजा माधवसिंह -१.

इनका जन्म विक्रमी १७८४ पौष कृष्ण १२ [हि० ११४० ता० २६ रबीउस्सानी = ई० १७२७ ता० ९ डिसेम्बर] को हुआ, और जयपुरकी गद्दीपर विक्रमी १८०७ पौष शुक्ल १४ [हि० ११६४ ता० १३ सफ़र = ई० १७५१ ता० १० जैन्युअरी] को बैठे. जब महाराजा ईश्वरीसिंहका इन्तिक़ाल हुआ, तब यह उदयपुर में थे, इनके वकील कायस्थ कान्हने ख़बर भेजी, जो मलहार राव हुल्करकी फ़ौजमें था. यह हाल हम महाराणाके ज़िक्रमें ऊपर लिख आये हैं- (देखो पृष्ठ १२४०).

महाराजाने जब हुल्कर व सेंधिया वग़ैरह मरहटोंको रुख़्सत करके अपना और अपनी रअय्यतका पीछा छुड़ाया, तब उनको अपनी जानकी फ़िक्र पड़ी; जो लोग महाराजा ईश्वरीसिंहसे बदलकर इनके ख़ैरख़्वाह बने थे, उनका एतिबार जाता रहा, कि ये

(१) वंशभास्करमें पौष कृष्ण ९ लिखा है.

लोग जैसे उनसे बदले, उसी तरह मुझसे भी किसी वक़ बेईमानी करें, तो तअ़ज्जुब नहीं; इस वास्ते पहिले तो अपने खाने पीने और पहननेके कामोंपर अपने एतिबारी आदमी मुक़र्रर किये, जो उदयपुरसे इनके साथ आये थे; और उन्हीं लोगोंकी औलाद जयपुरकी रियासतमें ख़ानगी कारख़ानोंपर आज तक मुक़र्रर है; इनमें ज़ियादह पल्लीवाल ब्राह्मण हैं, जो उदयपुरके राज्यमें बड़ा प्रतिष्ठित ख़ानदान इन ब्राह्मणोंका है.

इन महाराजाने राज्यका प्रबन्ध अच्छी तरह किया; वे विक्रमी १८१० [हि० ११६६ = ई० १७५३] में दिल्लीको गये, वहांसे फ़र्मान व ख़िल्अ़त वग़ैरह हासिल करके जयपुर आये, और बाज़े कामोंके लिये अपने दीवान हरगोविन्द नाटाणीको दिल्ली छोड़ आये थे; जब वह दीवान दिल्लीसे फिरा, तो रास्तेमें मरहटोंने आ घेरा, जिसके साथ बूंदीका माधाणी हाड़ा भगवन्तसिंह था; लेकिन् दीवान मरहटोंको शिकस्त देकर जयपुर चला आया.

कुछ अ़रसहके बाद मलहार राव हुल्कर जयपुरके इलाक़हपर चढ़ आया, क्योंकि उसको रामपुरा और पर्गनह टोंक महाराजाने देनेका पूरा इक़ार करलिया था, परन्तु वे उसके क़ब्ज़हमें नहीं आये. विक्रमी १८१५ वैशाख [हि० ११७१ रमज़ान = ई० १७५८ मई] में हुल्करकी चढ़ाईसे ख़ौफ़ खाकर महाराजाने रामपुरा व टोंक वग़ैरह चारों पर्गने मए ११००००० रुपयेके देकर इस बलाको टाला. इसी सालके पौष शुक्ल पक्ष [हि० ११७२ जमादियुलअव्वल = ई० १७५९ जैन्युअरी] में रणथम्भोरका क़िला बादशाही आदमियोंसे जयपुरके क़ब्ज़हमें आया. यह क़िला विक्रमी १६२५ [हि० ९७६ = ई० १५६८] में मेवाड़के मातहत क़िलेदार बूंदीके राव सुरजण हाड़ासे बादशाह अक्बरने छीन लिया, तबसे मुग़ल बादशाहोंके क़ब्ज़हमें रहा; शाहजहां बादशाहने राजा विठ्ठलदास गौड़को जागीरमें दिया था, जिसका हाल बादशाहनामहमें लिखा है; जब उसकी औलादमें कोई लाइक़ आदमी न रहा, तब बादशाह आ़लमगीरने इस क़िलेको फिर ख़ालिसहमें रक्खा. महाराजा सवाई जयसिंहने इस क़िलेको अपने क़ब्ज़ेमें लानेके लिये बहुतसी कोशिशें कीं, लेकिन् उनकी मुराद हासिल न हुई. मुहम्मदशाह जब महाराजा ईश्वरीसिंहको अहमदशाह दुर्रानीकी लड़ाईपर भेजने लगे, तब राजाने इस क़िलेके मिलनेकी दर्ख़्वास्त की, जिसको ख़ानदान आ़लमगीरी व मिरातिआफ़्ताब नुमामें इस तरह लिखा है:-

"जब कि अहमदशाह दुर्रानीने पंजाबका इलाक़ह दबालिया, तब मुहम्मदशाह बादशाहने मुक़ाबलहके लिये शाहज़ादह अहमदशाह, ज़ुल्फ़िक़ारजंग और राजा ईश्वरीसिंहको रवानह किया. राजाकी ख़्वाहिश थी, कि अगर क़िला रणथम्भोर हुज़ूरसे इनायत हो, तो लड़ाईमें बहुत अच्छी ख़िझत अदा कीजावे; लेकिन् नव्वाब क़मरुद्दीनख़ां

वज़ीर और सफ़्दर जंगने यह बात मन्जूर न की, और राजाके वकीलको सख़्तीसे जवाब दिया, कि यह हर्गिज़ नहीं होसक्ता; राजा लाचारीसे साथ चलागया. लड़ाईके मौक़ेपर नव्वाब क़मरुद्दीनख़ां, नव्वाब सफ़्दर जंग, नव्वाब ज़ुल्फ़िक़ार जंग और राजा ईश्वरीसिंहने ईरानियोंसे मुक़ाबलह किया; राजा अपने राजपूतों समेत, जो केसरिया लिबास पहने हुए थे, राजपूतोंकी रस्मके ख़िलाफ़ अव्वल हमलहमें अपने वतनकी तरफ़ भाग गया. इस वक्त सादुल्लाहख़ां और राजा बख़्तसिंह (राठौड़) शामिल नहीं थे."

इस तरहकी ख़्वाहिशोंके होनेपर भी जो क़िला राजा माधवसिंहके बुज़ुर्गोंको नहीं मिला, वह मरहटोंके दबावसे सहजमें इनके क़ब्ज़हमें आगया. जब पेश्वाके मुलाज़िमोंने इस क़िलेको लेना चाहा, तीन साल तक मुक़ाबलह रक्खा; परन्तु शाही मुलाज़िमोंने उनको दख़्ल न दिया; आख़िर फ़ौजकी कमी और नाताक़तीके सबब राजा माधवसिंहको क़िला सुपुर्द करनेके इरादेसे खंडारके क़िलेदार पचेवरके ठाकुर अनूपसिंह खंगारोतको बुलाकर क़िला सुपुर्द करदिया, और वे लोग दिल्ली चलेगये; महाराजाकी फ़ौजने मरहटोंको वहांसे हटा दिया, और ख़ुद महाराजा रणथम्भोर पहुंचे, क़िलेका सामान दुरुस्त करके उसके क़रीब जयपुरके तर्ज़पर एक शहर अपने नामपर आबाद किया, जो माधवपुर मश्हूर है. यह सुनकर पेश्वाने नाराज़गीसे गंगाधर तांतियाको जयपुर वालोंसे क़िला रणथम्भोर छीन लेनेके लिये विक्रमी १८१६ मार्गशीर्ष [हि० ११७३ रबीउस्सानी = ई० १७५९ नोवेम्बर] में भेजा; कंकोड़ गांवके पास महाराजाकी फ़ौजसे मुक़ाबलह हुआ. इस लड़ाईमें ठाकुर जोधसिंह नाथावत चोमूंका और बगरूका ठाकुर गुलाबसिंह चतुरभुजोत, दोनों अच्छी तरह लड़कर मारेगये, और गंगाधर तांतिया ज़ख़्मी होकर भागा; दोनों तरफ़के पांच सौ आदमी काम आये.

दोबारह मल्हार राव हुल्कर ढूंढाड़पर चढ़ा, जिसने पहिले उणियाराके राव सर्दारसिंहको आ दबाया; उसने कुछ भेट देकर नर्मीसे अपना पीछा छुड़ाया. फिर बरवाड़ासे कछवाहोंको निकाल दिया, और राठोड़ जगत्सिंहको बिठाया, जिससे पहिले कछवाहोंने यह ठिकाना छीन लिया था. हुल्करको इस जगह यह ख़बर मिली, कि अहमदशाह अब्दाली हिन्दुस्तानकी तरफ़ आता है, इससे वह जयपुरकी लड़ाई छोड़कर दिल्लीकी तरफ़ चला; रास्तेमें चाटसू वग़ैरह कई क़स्बे लूट लिये; महाराजाने सब्र किया; लेकिन् दक्षिणियोंके जाने बाद उणियाराके रावको जा दबाया, इस वजहसे कि उसने हुल्करसे मिलावट करली थी. मरहटे दूसरी तरफ़ फंस रहे थे, इसलिये राजपूतानहकी तरफ़ ज़ियादह ज़ोर नहीं डाल सके; परन्तु एक दूसरा फ़साद खड़ा हुआ, जिसका हाल इस तरहपर है:-

भरतपुरके महाराजा जवाहिरसिंहके छोटे भाई नाहरसिंहने वहांका राज तक्सीम

ठाकुर दलेलसिंहने कहा, कि जब तक एक भी कछवाहा जीता है, तब तक यह बात हर्गिज़ न होसकेगी. इसी तरह दीवान हरसहाय और बख़्शी गुरसहायने भी जवाब दिया. तब यह विचार हुआ, कि सावर गांवके पास लड़ाई कीजावे, जिसपर ठाकुर दलेलसिंहने जवाब दिया, कि वहां राठौड़ शरीक होजावेंगे, इस वास्ते आगे पहुंचने पर मुक़ाबलह किया जावे; पांच हज़ार फ़ौज उदयपुरकी और तीन हज़ार बूंदीकी तो जयपुर व आंबेरकी हिफ़ाज़तके लिये महाराजाने अपने पास रक्खी, और साठ हज़ारके क़रीब फ़ौज लड़ाईके लिये तय्यार करके रवानह की, जिसमें दीवान हरसहाय व बख़्शी गुरसहाय और ठाकुर दलेलसिंह वग़ैरह मुसाहिब थे. तंवरोंकी जागीरके गांव मांवडाके पास राजपूतोंने जवाहिरसिंहको जा घेरा, और दोनों तरफ़से बड़ी सख़्त लड़ाई हुई. इस लड़ाईमें शिमरू फ़रंगी जवाहिरसिंहके तोपख़ानहके अफ़्सरने बहुत गोले बरसाये; लेकिन् गोश्तकी दीवारका टूटना मुश्किल होगया; शैख़ावत राजसिंह और भोपालसिंह, जो महाराजा माधवसिंहसे रंजीदह थे, किनारा करगये; परन्तु दूसरे कछवाहोंने बड़ी बहादुरीके साथ लड़ाई की; जाटोंने भी कमी न रक्खी, परन्तु आख़िरकार जवाहिरसिंह भागकर शिमरूकी मददसे भरतपुर पहुंचा.

जयपुरके सर्दारोंमेंसे दीवान हरसहाय खत्री, बख़्शी गुरसहाय खत्री, धूलाका ठाकुर दलेलसिंह, दलेलसिंहका छोटा बेटा लक्ष्मणसिंह, सांवलदास शैख़ावत, गुमानसिंह, सीकर राव शिवसिंहका छोटा बेटा बुद्धसिंह, धानूताका ठाकुर शैख़ावत शिवदास, शैख़ावत रघुनाथसिंह, ईंटावाका नाहरसिंह नाथावत वग़ैरह, हज़ारों आदमी काम आये; और दूसरी तरफ़के बहुतसे लोग इसी तरह मारे गये.

जवाहिरसिंहका डेरा, अस्बाब व तोपख़ानह जयपुरकी फ़ौजने लूट लिया. महाराजा माधवसिंह, जो बीमारीकी हालतमें थे, यह ख़बर सुनकर बहुत खुश हुए; और बूंदीके कुंवर अजीतसिंहको व मेवाड़की फ़ौजको कुछ दिनों मिह्मान रखकर मुहब्बतके साथ रुख़्सत किया; लेकिन् महाराजाकी बीमारी दिन बदिन बढ़ती जाती थी, यहांतक कि वे विक्रमी १८२४ चैत्र कृष्ण २ [हि० ११८१ ता० १६ शव्वाल = ई० १७६८ ता० ४ मार्च] को इस दुन्याको छोड़ गये.

जोधपुरकी तवारीख़में फाल्गुन् शुक्ल १५ और जयपुरकी ख्यातमें कहीं कहीं चैत्र कृष्ण ३ भी लिखी है; परन्तु वंशभास्करमें विक्रमी १८२५ चैत्र शुक्ल १५ [हि० ११८१ ता० १४ ज़िल्क़ाद = ई० १७६८ ता० २ एप्रिल] लिखी है, जिससे एक महीनेका फ़र्क़ मालूम होता है. हमारे विचारसे मिश्रण सूर्यमल्लने फाल्गुन् शुक्ल १५ के एवज़ भ्रमसे चैत्र शुक्ल १५ लिखदिया होगा, और कर्नेल् टॉड व डॉक्टर स्टूटनने अपनी किताबोंमें लिखा है, कि जाटोंकी लड़ाईके चार दिन बाद महाराजा माधवसिंहका देहान्त होगया. यह बात ग़लत मालूम

होती है, क्योंकि महाराजा जवाहिरसिंह कार्तिक शुक्ल १५ को पुष्कर स्नानके लिये गये थे, और इस लड़ाईका होना वंशभास्कर वग़ैरह किताबोंसे हेमन्त ऋतु (सर्द मौसम) में लिखा है, और महाराजा माधवसिंहका देहान्त फाल्गुन् शुक्ल १५ के लगभग हुआ, जिससे लड़ाई पौषमें और देहान्त उसके दो महीने बाद होना पाया जाता है.

यह महाराजा पुष्ट शरीर, हंसमुख, मंझोला क़द, गेहुवां रंग, और मिलनसार थे. वह पोलिटिकल् याने राजनीतिके विषयमें अपने पितासे कम न थे. उनका देहान्त होनेके पांच महीने बाद भरतपुरके महाराजा जवाहिरसिंह भी मरगये, जिससे दोनों तरफ़की दुश्मनी ठंडी हुई. महाराजाके दो कुंवर बड़े पृथ्वीसिंह और छोटे प्रतापसिंह थे.

३३- महाराजा पृथ्वीसिंह.

इनका जन्म विक्रमी १८१९ माघ कृष्ण १४ [हि० १७७६ ता० २८ जमादियुस्सानी = ई० १७६३ ता० ३ जैन्युअरी] को और राज्याभिषेक विक्रमी १८२४ फाल्गुन् शुक्ल १५ अथवा चैत्र कृष्ण ३ को हुआ. महाराजा सवाई जयसिंहने उदयपुरकी हिमायतको नर्म करनेके मत्लबसे अपने बड़े पुत्र ईश्वरीसिंहकी एक शादी तो महाराणा जगत्सिंहकी कुमारी सौभाग्यकुंवरके साथ और दूसरी सलूंबरके रावत् केसरीसिंहकी कन्यासे की थी, जो कृष्णावतोंका सरगिरोह था; और इसी विचारसे सांगावतोंके सरगिरोह देवगढ़के रावत् जशवन्तसिंहकी बेटीके साथ माधवसिंहकी शादी हुई, जिसके पेटसे दो महाराजकुमार पैदा हुए; उनमेंसे बड़ा पृथ्वीसिंह पांच वर्षकी उम्र वाला जयपुरकी गद्दीपर बैठा. इस राजाके नाबालिग़ होनेके सबब ज़नानी ड्योढ़ीका हुक्म तेज़ रहनेसे राज्यमें बद इन्तिज़ामी बढ़ने लगी.

विक्रमी १८२७ [हि० ११८४ = ई० १७७०] में इनका विवाह बीकानेरके महाराजा गजसिंहकी पोतीके साथ हुआ; लिखा है, कि इस विवाहमें दोनों तरफ़से त्याग और सरबराहमें लाखों रुपया ख़र्च हुआ. इसके सिवा और कोई बात इन महाराजाकी लिखने लाइक़ नहीं है. विक्रमी १८३५ (१) वैशाख कृष्ण ३ [हि० ११९२ ता० १७ रबीउलअव्वल = ई० १७७८ ता० १५ एप्रिल] को इनका देहान्त होगया.

३४- महाराजा प्रतापसिंह.

इनका जन्म विक्रमी १८२१ पौष कृष्ण २ [हि० ११७८ ता० १६ जमादियुस्सानी

(१) जयपुरकी तवारीख़में यह संवत् लिखा है, परन्तु चैत्रादि महीनेसे विक्रमी १८३६ लगगया होगा; क्योंकि जयपुरमें श्रावणादिक प्रचलित है.

=ई० १७६४ ता० ९ डिसेम्बर] को और राज्याभिषेक विक्रमी १८३५ वैशाख कृष्ण ४ [हि० ११९२ ता० १८ रबीउ़लअव्वल = ई० १७७८ ता० १६ एप्रिल] को हुआ. ख्यात वगैरह पोथियोंमें इन महाराजाका ठीक ठीक हाल नहीं मिलनेके सबब चन्द अंग्रेज़ी किताबोंसे खुलासह करके नीचे लिखाजाता है :-

(जेम्स ग्रँट डफ़्की तवारीख़ जिल्द ३, एष्ठ १५.)

"ईसवी १७८५ [वि० १८४२ = हि० ११९९] में सेंधियाने कई एक मुसल्मान सर्दारोंकी जागीरें छीन लीं, जिससे कि वे नाराज़ होगये. मुहम्मदबेग हमदानीकी जागीर तो नहीं छीनी थी, लेकिन् उसके दिलमें धोखा था. ईसवी १७८६ [वि० १८४३ = हि० १२००] में बादशाहके नामसे सेंधियाने राजपूतोंपर ख़िराजका दावा क़ाइम किया, और अपनी फ़ौजके साथ जयपुरके पास जाकर साठ लाख रुपया पहिली क़िस्तका मुक़र्रर किया, जिसमेंसे कुछ तो वुसूल करलिया, और बाक़ीके वास्ते कुछ मीआद मुक़र्रर करली. जब कि वह मीआद पूरी होगई, सेंधिया ने रायाजी पटैलको बाक़ी तह्सील करनेके लिये भेजा; लेकिन् राजपूत लोग साम्हना करनेके लिये तय्यार हुए; और उनको यह भी भरोसा था; कि मुहम्मदबेग और दूसरे मुसल्मान सर्दार, जो सेंधियासे नाराज़ थे, मदद देवेंगे; इसलिये उन्होंने रुपया देनेसे इन्कार किया. रायाजी पटैलकी फ़ौजपर हमलह हुआ, और उनको भगा दिया. जो लोग कि दिल्लीमें सेंधियाके बर्ख़िलाफ़ थे, वे इस बग़ावतसे बहुत मज्बूत हुए; बादशाह भी उनकी पक्षपर हुआ, और कहा, कि मरहटे सर्दार बड़ा उपद्रव मचा रहे हैं; लेकिन् सेंधिया इस बातसे कुछ भी न डरा; उसका ख़ज़ानह भी ख़र्च होगया था, फ़ौजकी तन्ख़्वाह चढ़गई थी, तो भी उसने राजपूतोंसे लड़ने का पक्का इरादह करलिया; और आपा खंडेरावकी फ़ौज व डीबाइनीकी दो पल्टनें अपने साथ करलीं; इनके अलावह फ़ौजके दो गिरोह दिल्लीके उत्तर तरफ़ भेजने पड़े, जिनके अफ़्सर हैबतराव फालके, अंबाजी इंगलिया मुक़र्रर कियेगये, कि जाकर सिक्ख लोगोंके हमलहको हटावें."

"ईसवी १७८७ [वि० १८४४ = हि० १२०१] में जयपुर पहुंचनेपर सेंधियाने सुलहकी शर्तें करनेकी कोशिश की, लेकिन् जयपुर वालोंने उनपर कुछ ध्यान न दिया. जोधपुरका राजा और दूसरे भी कई एक राजपूत सर्दार जयपुरके राजा प्रतापसिंहके साथ हो लिये, उनकी फ़ौज बहुत बड़ी थी. सेंधियाकी फ़ौजका बड़ा हिस्सह मरहटोंकी फ़ौजसे जुदे तौरका था, और राजपूतोंने साम्हना रोक देनेके सबब उनको बड़ी मुश्किलमें डाला; मरहटा और मुग़ल दोनों बड़ी तक्लीफ़के सबब

नाराज़ हुए, मुहम्मद बेग हम्दानी और उसके भतीजे इस्माईलबेगने यह मौक़ा सेंधियाको छोड़कर राजपूतोंसे मिलजानेका मुनासिब जाना; सेंधियाने ख़याल किया, कि अगर देर होगी, तो बादशाहकी कुल फ़ौजमें नाराज़गी फैल जायगी, उनको जल्द लड़ाईमें शामिल किया. बड़ी लड़ाई हुई, जिसमें मुहम्मदबेग तोपके गोलेसे मारा गया, उसकी फ़ौज भागनेके क़रीब थी, जब कि इस्माईलबेगने उनको दुरुस्तीके साथ रखकर मरहटा लोगोंको हटा दिया. सेंधिया दोबारह लड़ाई करनेके वास्ते तय्यारी कर रहा था, लेकिन् लड़ाई होजानेके तीन दिन बाद बादशाहकी बिल्कुल पैदल पल्टन, जो क़वाइद सीखी हुई थी, अस्सी तोपोंके साथ इस्माईलबेगकी मददके वास्ते आगई." इसके बाद जॉर्ज टॉमस (मश्हूर जहाज़ फ़रंगी) की इन महाराजासे लड़ाई हुई, जिसका हाल उक्त साहिबके ईसवी १८०५ [वि० १८६२ = हि० १२२०] के छपे हुए सफ़र नामहके प्रष्ठ १५१ में इस तरह लिखा हैः-

ईसवी १७९९ [वि० १८५६ = हि० १२१४] जयपुरपर चढ़ाई.

"इस वक़्के क़रीब लखवाने, जो कि नर्मदाके उत्तरी तरफ़ सेंधियाकी फ़ौजका कमान्डर-इन-चीफ़ था, वामन रावको हुक्म लिखा, कि जयपुरपर चढ़ाई करे. इस बारेमें, जो ख़त लिखा, उसमें पहिले ज़िलोंसे, जो रुपया वुसूल किया गया था, उसकी तादाद लिखकर उसने वामन रावको दी. इस मौक़ेपर भी उतना ही तह्सील करनेके वास्ते लिखा, और यह भी कह दिया, कि रुपयेमें दस आने तो फ़ौजके लोगोंको तक्सीम करदिये जावें; और बाक़ी छः आने उसके ख़ज़ानेमें भेज दिये जावें."

"(प्रष्ठ १५२) यह हुक्म पहुंचनेपर वामन रावने टॉमसके नाम इस चढ़ाईमें शामिल होनेके वास्ते ख़त लिखा, लेकिन् उसने पहिले तो इन्कार किया, जो कि दिलसे कुछ दिनोंके लिये जयपुरमें जाना चाहता था. उसको मालूम था, कि ऐसी चढ़ाईमें फ़ौजका ख़र्च चलानेके वास्ते पूरा ख़ज़ानह चाहिये, और उस वक़् उसका हाथ तंग था. उसको यह भी मालूम था, कि जयपुरका राजा लड़ाईके मैदानमें बहुत बड़ा रिसालह ला सक्ता है, जिससे कि रसद मिलनेमें दिक़्क़त वाक़े होगी, और इसके बग़ैर फ़त्ह मिलनेमें शक है. उसने वामनरावको लिखा, कि अगर कामयाबी हासिल भी हुई, तो जयपुरका राजा उनको उतना रुपया नहीं देगा, बल्कि बाला बाला लखवाके साथ कार्रवाई करेगा, जिससे कि उनको मिह्नतका फल न मिलेगा; लेकिन् इन सब बातोंसे वामन रावने अपना इरादह नहीं छोड़ा."

"(प्रष्ठ १५३) उस ज़िलेके सर्दारने अपना वकील टॉमसके पास भेजा, और

उसके हम्राह यह कहलाया, कि मदद दोगे, तो कुछ रुपया दिया जायेगा, जिसकी कि, टॉमसको बड़ी हाजत थी. उसकी फ़ौजमें उस वक्त चार चार सौ आदमियोंकी तीन पल्टनें, १४ तोपें, ९० सवार, ३०० रुहेले और दो सौ हरियानेके लोग थे, जिनके साथ वह कानूंड मक़ाममें वामनरावसे जा मिला. वामनरावके पास एक पल्टन पैदल, चार तोपें, ९०० सवार और छः सौ सिपाही भी थे. इस फ़ौजके साथ उन्होंने जयपुरकी तरफ़ कूच किया. देशमें दाख़िल होनेपर राजपूतोंकी फ़ौज, जो ख़िराज तह्सील करलेनेके वास्ते रक्खी गई थी, भाग गई; तब ज़िलेके हाकिमोंने टॉमसके कैम्पमें अपने वकील भेजे, जिन्होंने लखवाका मुक़र्रर किया हुआ दो सालका ख़िराज देनेका इक़ार किया."

"(पृष्ठ १५४) यह बात मंजूर कीगई, और फ़ौजने आगे बढ़कर और भी कई हाकिमोंसे वैसाही इक़ार करा लिया. तक़रीबन् एक महीने तक बे रोक टोक दोनों फ़ौजें बढ़ती गईं; लेकिन् इसी दर्मियानमें जयपुरके राजाने अपनी फ़ौज एकट्ठी करली थी; वह चढ़ाई करने वालोंको सज़ा देनेका इरादह करके अपने इलाक़ोंके बचावके वास्ते चला. उसकी फ़ौजमें चालीस हज़ार आदमी थे, जिनको लेकर राजा, टॉमस और वामनरावके बख़िलाफ़ चला, जिनको अभी तक कोई ऐसा मक़ाम नहीं मिला था, जहांसे कि सामान मिल सके; और उनको मालूम हुआ, कि इस बातमें बड़ी ग़लती हुई. वामनरावने देखा, कि ऐसी बड़ी फ़ौजका साम्हना करना ग़ैर मुम्किन् है, और टॉमससे कहा, कि अब अपने ही ऊपर भरोसा रक्खो; क्योंकि दुश्मनकी फ़ौजका शुमार और उनकी दिलेरी देखकर उनसे साम्हना करके फ़त्हयाब होनेकी उम्मेद नहीं है. इस विचारसे टॉमसको सलाह दी, कि पीछे हट चलें; तब (पृष्ठ १५५) टॉमसने वामन रावको जतलाया, कि पहिले तुमने बे समझे जल्दी करदी, और इस मुश्किल मक़ाम तक पहुंचाया, लेकिन् एक बार तो साम्हना ज़रूर करना चाहिये; क्योंकि सिपाह लड़नेको तय्यार है; अगर इस मौक़ेपर बग़ैर कुछ कोशिश किये लौट चलें, तो उसके लिये और उसके बाप दादोंके लिये बे इज़्ज़ती होगी, जो कभी दुश्मनके साम्हनेसे नहीं भागे थे; और यह भी कहा, कि अगर इस वक्त पर तुमने मुंह मोड़ा, तो सेंधिया या उसका और कोई सर्दार तुमको नौकर न रक्खेगा."

"इन बातोंसे वामन रावका इरादह लड़नेका होगया. (पृष्ठ १५६) इस इरादहसे फ़त्हपुरकी तरफ़ चले, जहांपर फ़ौजके वास्ते खानेका सामान मिलने की उम्मेद थी; लेकिन् वहांके बाशिन्दे उनके आनेकी ख़बर सुनकर फ़ौजको तक्लीफ़ देनेके वास्ते आस पासके कुओंको बन्द करने लगे थे; और जब टॉमस

पहुंचा, उस वक्त सिर्फ़ एकही कुआ खुला मिला. इस कुएकी बाबत टॉमस और शहरके चार सौ आदमियोंमें, जो उसके बन्द करनेके वास्ते आये थे, झगड़ा हुआ; टॉमसने फ़ौरन् अपने रिसालेको बढ़ाया, पहिले ख़ूब लड़ाई हुई, लेकिन् दुश्मनके दो सर्दार मारे गये, और बाक़ी भाग गये. इस तौरसे कुआ बचगया. उस दिन टॉमसकी फ़ौजने बड़ी मिह्नत की थी, क्योंकि पच्चीस मील तक गहरे रेतमें सफ़र करचुकी थी, जो कहीं कहीं घुटने तक गहरा था; इस लिये टॉमसने फ़ौजको आराम देनेके वास्ते डेरा डालदिया."

"(एष्ठ १५७) मुग़ल लोगोंके साथ एक तातार क़ाइमख़ां हिन्दुस्तानको चला आया था, जब कि उन्होंने पहिली चढ़ाई की, और उस मौक़ेपर अच्छी नौकरी देनेके सबब हरियाना और झूंझनूंकी हुकूमत पाई. कुछ दिनों बाद दिल्लीके मुग़ल बाद्शाहोंने ज़ुल्म करके उसके घरानेके लोगोंको निकाल दिया, और वे लोग जयपुरके इलाक़हमें जाकर ठहरे. उनके रहनेके लिये महाराजा जयपुरने फ़त्हपुर दिया. (एष्ठ १५८) उसी ज़मानहसे क़ाइमख़ांकी औलाद अब तक क़ाइमख़ानीके नामसे मश्हूर है (१). फ़त्हपुरके शहरमें लोग बहुत थे, इसलिये टॉमसने ख़ूंरेज़ी बचाने के वास्ते चाहा, कि बाशिन्दे कुछ रुपया देदेवें, लेकिन् वामनरावने इतना ज़ियादह मांगा, कि वे देनेको राज़ी न हुए. उस मरहटेने दस लाख रुपये मांगे, लेकिन् शहर के लोग सिर्फ़ एक लाख देनेको राज़ी थे; क्योंकि उनको शायद यह उम्मेद थी, कि जयपुरके राजासे मदद मिलेगी, जो जल्दीके साथ उस तरफ़ आता था. (एष्ठ १५९) इतनेमें रात पड़गई, और रुपयेके बारेमें कुछ फ़ैसलह न हुआ; लेकिन् चन्द लोग, जिनको टॉमसने इस मत्लबसे शहरमें भेजा था, कि जब तक बाशिन्दोंके ताबे होजानेकी शर्त न होजावे, तब तक शहरकी हिफ़ाज़त करें, उन्होंने बाशिन्दोंको लूटना शुरू करदिया. इस बातसे अफ़्सरने और शर्तें बन्द करके उसको छापा मार कर लेलिया. यह काम ख़त्म नहीं होचुका था, कि राजाके पहुंचनेकी ख़बर टॉमसको मिली, और उसने अपने कैम्पको मज्बूत करना मुनासिब समझकर बड़े बड़े कांटेके दरख़्त कटवाकर अपने कैम्पके साम्हने और दोनों बाजू पर लगवादिये. पीछे की तरफ़ फ़त्हपुरका शहर था. (एष्ठ १६०) ज़ियादह मज्बूतीके वास्ते दरख़्तों की डालियें एक दूसरेमें पैवस्त करदी गईं, और रस्सियोंसे बांध दीगईं, ताकि रिसाला रुकजावे. इसके अलावह डालियोंके दर्मियान बहुतसी रेत डालदी गई, जो कि

(१) क़ाइमख़ानियोंकी तवारीख़, जो हमारे पास फ़ार्सी ज़बानमें क़लमी मौजूद है, उसमें राजपूत ख़ानदानसे फ़ीरोज़ शाह तुग़्लक़के वक़्तमें इस ख़ानदानका मुसल्मान होना लिखा है.

दुश्मनकी तरफ़ थी, खाई नहीं खोदी जासक्ती थी, क्योंकि रेत ऐसी थी, कि खोदने पर फ़ौरन् बन्द होजाती थी; लेकिन् जो तज्वीज़ ऊपर कही गई, उससे टॉमसको बहुत फ़ाइदह पहुंचा, क्योंकि दुश्मनके रिसालेका हमलह रोकनेके अलावह कैम्पकी भी हिफ़ाज़त हुई. उसने आस पासके कुओंके बचावके वास्ते बन्दोबस्त किया, जिनको कि उसने खुदवाकर दुरुस्त करवालिया था. उसने शहरको लेकर अच्छी तरहसे मोर्चा बन्द किया, कैम्पमें बहुतसा सामान मंगवाया, और इतनी तय्यारी हो ही रही थी, कि दुश्मनकी फ़ौजके आगेका हिस्सह (हरावल) नज़र आया."

"(पृष्ठ १६१) आते ही उन्होंने टॉमससे चार कोसकी दूरीपर अपना कैम्प जमाया, और थोड़े दिनों बाद रिसाले और पैदलका एक गिरोह आस पासके कुओंको साफ़ करनेके वास्ते भेजा. दो दिन तक टॉमसने उनको नहीं रोका, लेकिन् तीसरे दिन सुब्हके वक्त वह दो पल्टन पैदल, आठ तोपें और अपने ही रिसालेके साथ उनके तोपख़ानहपर हमलह करनेके इरादहसे चला, और जो सिपाह पीछे रह-गई, उसको हुक्म दिया, कि हरावलपर हमलह करके तित्तर बित्तर करदेवें. कूच करनेके वक्त बामनरावके नाम एक चिट्ठी लिखकर रखगया, कि अपने बचे हुए रिसालेके साथ पीछे आवे, और जो पैदल पल्टन उसके साथ थी, उससे कैम्पकी हिफ़ाज़तका बन्दोबस्त करदेवे. (पृष्ठ १६२) रातके वक्त वह रवानह हुआ था, इसलिये ज़ियादह दूर न चल सका, क्योंकि एक गाड़ी उलट गई थी, जो सुब्हके पहिले सीधी नहीं होसकी, और जब कैम्पके पास पहुंचा, तो दुश्मनको लड़नेके लिये तय्यार पाया. पहिली तज्वीज़ तो उस वक्त नहीं हो सक्ती थी, लेकिन् वह बढ़ता ही गया, और सात हज़ार आदमियोंका गिरोह, जो उसके साम्हने आया, उसपर बड़ी दिलेरीके साथ हमलह किया. दुश्मनोंने अच्छा मुक़ाबलह नहीं किया, और बहुत नुक़्सानके साथ अपने बड़े गिरोहमें जाकर शामिल होगये. जो कुए साफ़ किये गये थे, वे भर दिये गये; और टॉमस घोड़ों और दूसरे चौपायोंको, जो खेतमें छूट गये थे, एकट्ठा करके अपनी फ़ौजके साथ कैम्पको वापस चला गया. रास्तेमें मरहटा लोगोंके रिसालहसे मुलाक़ात हुई, जिन्होंने इस बातसे नाराज़ी ज़ाहिर की, कि ऐसे बड़े मौक़ेपर उनकी सलाह नहीं लीगई; लेकिन् बामनरावने उन लोगोंसे साफ़ साफ़ कह दिया, कि उन्होंने तय्यार होनेमें देर करदी. यही सबब था, कि उनकी उम्मेद पूरी नहीं हुई."

"(पृष्ठ १६३) उस वक्त टॉमसके अफ़्सरोंको मरहटा सर्दारने ख़िल्अ़त दिये, और दुश्मनी रोकनेके लिये मरहटा रिसालेके सर्दारोंको भी ख़िल्अ़त मिले, जो कि रज़ामन्दीके साथ नहीं थे. दुश्मनने एक बड़ी भारी लड़ाईके वास्ते तय्यारी की,

दूसरे दिन सुबहको टॉमसने ख़बर पाई, कि दुश्मनके कैम्पमें बड़ी हल चल मच रही है, और थोड़ी ही देरमें उनके पहुंचनेकी ख़बर आगई. उसको मालूम था, कि मरहटा लोगोंपर भरोसा नहीं रक्खा जा सक्ता, इसलिये अपनी पैदल पल्टनका एक हिस्सह और चार तोपें तीन सेरके गोले वाली कैम्प और फ़ौजकी चंदावल हिफ़ाज़तके लिये छोड़ दीं; बाक़ी दो पल्टनें पैदल, दो सौ रुहेले, दस तोपें और रिसालह लेकर लड़ाईके वास्ते तय्यार हुआ. (पृष्ठ १६४) मरहटा लोग दुश्मनकी बड़ी फ़ौज देखकर ना उम्मेद होगये, टॉमसको इस बड़ी लड़ाईमें बग़ैर मदद लड़ना पड़ा, कुछ देरके बाद उसे बड़ी खुशी हुई, कि दुश्मनने अपनी फ़ौज उसी तरह रक्खी, जैसी टॉमस चाहता था. दाहिनी तरफ़का हिस्सह, जिसमें कि बिल्कुल राजपूतोंका रिसालह था, उसके कैम्पपर हमलह करनेके वास्ते मुक़र्रर किया गया; उनको फ़तहकी इतनी पूरी उम्मेद थी, कि ऊपर बयान किये हुए दरख़्तोंकी आड़को देखकर उन्होंने ख़याल किया, कि यह थोड़ेसे झाड़ हम लोगोंको नहीं रोक सक्ते. बाईं तरफ़ चार हज़ार रुहेले, (पृष्ठ १६५) तीन हज़ार गुसाईं, छः हज़ार पैदल, जो कि क़वाइद नहीं सीखे हुए थे, अपने अपने ज़िलोंके अफ़्सरके हमाह एक बारगी बड़ी तेज़ीके साथ ज़ोरसे चिल्लाते हुए शहर लेनेके वास्ते चले. तीसरा गिरोह याने ख़ास गिरोहमें दस पल्टन पैदल, बाईस तोपें और राजाके सिलहपोश (बॉडी गार्ड) थे, जिसमें सोलह सौ आदमी तोड़ेदार बन्दूक़ और तलवार लिये हुए थे, और जिनका अफ़्सर राजा रोड़जी मईदोज़ था. गोकि यह फ़ौज इतनी भारी थी, तो भी टॉमसकी फ़ौजका ऐसा मौक़ा था, कि उससे बहुत फ़ाइदे निकले." (पृष्ठ १६६)

"दुश्मनका रिसालह आगे बढ़ा, और मरहटा लोगोंने, जो कि पीछे थे, मदद चाही; टॉमसने चार कम्पनी और दो तोपें भेजदीं, जो कैम्पकी रक्षाके वास्ते रह गई थीं; वह तीन तोपें और पांच कम्पनी पैदल लेकर दुश्मनके रिसालेका हमलह रोकनेके वास्ते चला. उसके ख़ास गिरोहका अफ़्सर जॉन मॉरिस (अंग्रेज़) था. टॉमस एक ऊंचे रेतके टीलेपर था, इस तरहपर दुश्मन दो टुकड़ोंके बीचमें पड़ गये, न उसपर हमलह कर सके, न कैम्पपर, और हटने लगे; लेकिन् यह देखकर, कि टॉमसके पास रिसालह बहुत कम है, अगर्चि सवार उसके पीछे थे, अचानक उनपर हमलह किया, जिससे कि अफ़्सर और कई दिलेर आदमी फ़ौरन् मारे गये; और जब तक दो कम्पनी पैदल सिपाहियोंकी न पहुंचीं, जिन्होंने फ़ायर करनेके बाद संगीनोंसे हमलह किया, दुश्मन नहीं हटे. अगर उनकी फ़ौजके दूसरे हिस्से भी दिलेरी करते, तो फ़तह उन्हींकी होती." (पृष्ठ १६७)

"जब तक उनका रिसालह पीछे नहीं हटा, तब तक शहर लेनेके वास्ते, जो

गिरोह भेजागया था, दोबारह नहीं बढ़ा; क्योंकि पहिले एक दफ़ा बहुत नुक्सान के साथ पीछे हटाया गया था. शहरके भीतर टॉमसने हरयानेके पैदल सिपाही और सौ रुहेले रखदिये थे, जिन्होंने मज्बूत और ऊंचे मकानोंको मोर्चे बन्द करलिया था, और सिवाय तोपोंके हरएक हमलहसे बच सक्ते थे. यह बात दुश्मनोंको मालूम होगई थी, और उन्होंने छः तोपें शहरकी तरफ़ भेजीं. टॉमसने उनके रिसालेको खेतसे हटते हुए देखकर शहरवालोंकी मददके वास्ते दुश्मनपर फ़ौरन् हमलह किया, जिन को तोपें लेकर भागजाना पड़ा; उनकी बिल्कुल फ़ौज तित्तर बित्तर होगई. उनका यह पक्का इरादह था, कि टॉमसकी फ़ौजके ख़ास गिरोहपर हमलह करें, लेकिन् उनके अफ़्सरने सब सिपाहियोंको राज़ी नहीं पाया. टॉमसने उनको ठहरे हुए देखकर अपनी तोपोंसे ज़ंजीरदार गोले चलवाये, और दुश्मन बहुत नुक्सानके साथ पीछे हटे. (पृष्ठ १६८) टॉमसने उन पल्टनोंको पीछा करनेका हुक्म दिया, जिनको कि पहिले हमलहमें बहुत कम मिह्नत पड़ी थी; लेकिन् तोपख़ानहके बैल एक टीलेके पीछे रहगये थे, वह जल्दी नहीं आसके. इस वक्त मरहटा लोगोंका रिसालह बढ़ आया, और थोड़ी देरमें टॉमसको एक तोपके लिये बैल मिलगये. उसको एक पैदल पल्टनके साथ लेकर वह दुश्मनकी तरफ़ चला; और मरहटा सवार भी अपनी पहिली बेइज़्ज़ती दूर करनेके वास्ते उसके साथ होगये. दुश्मन हर एक तरफ़ भाग रहे थे, टॉमसने दो तोपें लेलेनेका इरादह किया, जिनसे बारह सेरका गोला चल सक्ता था, और जो उसीके पास पड़ी थीं. (पृष्ठ १६९) फ़ौरन् राजपूत सवारोंका एक बड़ा गिरोह हाथमें तलवार लियेहुए तोपोंको बचानेके वास्ते चलाआया, तब मरहटे लोग कम हिम्मतीसे भाग गये. टॉमसने यह देखकर, कि दुश्मन बढ़ रहा है, अपनी फ़ौजको दुरुस्त किया; लेकिन् मरहटा सवार उसके बाईं तरफ़के गिरोहके बीच होकर निकल गये थे, और राजपूत लोग उनका पीछा करते हुए उसके आदमियोंको क़त्ल करने लगे. "

"इन सिपाहियोंने ख़ूब साम्हना किया, और कई एकने मरते मरते भी दुश्मनके घोड़ोंकी लगाम पकड़ली. मक़ाम बहुत मुश्किल था, सिर्फ़ एक तोप और डेढ़ सौ आदमियोंके साथ वह दिलेरीसे खड़ा रहा. जब दुश्मन चालीस गज़के फ़ासिलेपर आगया, तब तोप और बन्दूक़ोंके फ़ायर ऐसी तेज़ीसे शुरू किये, कि दुश्मनके बहुतसे आदमी फ़ौरन् गिरगये, और दुश्मन आख़िरमें तित्तर बित्तर होगये. (पृष्ठ १७०) मरहटा सवारोंने कैम्पकी रक्षाके वास्ते जल्दी की, लेकिन् टॉमसके हुक्मसे वे नहीं आने पाये, और राजपूतोंके छोटे गिरोहने, जो कि पीछे पीछे चले आये थे, अक्सरको बेरहमीके साथ क़त्ल किया. दुश्मनके पैदल सिपाही, रिसालेका

हमलह देखकर फिर लड़नेके वास्ते तय्यार मालूम होते थे. उनको ऐसा करनेका मौक़ा देनेके लिये टॉमस अपने बचे हुए सिपाहियोंको एकट्ठा करके हमलेका मुन्तज़िर रहा. दिन ख़त्म होनेपर आया, और दुश्मनने पीछे हटना मुनासिब समझा; टॉमस ने बारह सेरके गोले वाली तोपोंको तलाश किया, लेकिन् नहीं मिलीं; तब वह अपनी फ़ौजके साथ कैम्पको वापस गया. (पृष्ठ १७१) इस लड़ाईमें टॉमसके तीन सौ आदमियोंका नुक्सान हुआ, जिसमें घायल भी शामिल हैं; मॉरिस भी मारा गया. दुश्मनके दो हज़ारसे ज़ियादह आदमियोंका नुक्सान हुआ, इसके अलावह घोड़े और बहुतसा अस्बाब खेतमें छूटगया."

"(पृष्ठ १७२) दूसरे दिन सुबहको टॉमसने दुश्मनके अफ्सरसे कहा, कि मुर्दोंको दफ्न करनेके वास्ते, जिन शख़्सोंको मुनासिब समझें, भेजदेवें; और घायलोंको लेजानेमें भी हमारी तरफ़से कुछ रोक नहीं है. यह बात कुबूल हुई, और सुलहके वास्ते भी अर्ज़ कीगई. बामनरावने उससे लड़ाईके हरजानहके बदले बहुतसा रुपया मांगा, लेकिन् उस अफ्सरने यह कहकर इन्कार किया, कि जयपुरके राजाने मुझको वगैर हुक्म इतना ख़र्च करनेका इख़्तियार नहीं दिया है. (पृष्ठ १७३) यह जवाब मिलनेपर टॉमसने समझा, कि दुश्मन सिर्फ़ मौक़ा देखरहा है, और बामनरावसे कहा, कि दुश्मनको चलने दो. उसने लड़ाईकी बनिस्बत मुआमलह याने इक़ारनामह बिह्तर ख़याल किया, और इसलिये टॉमसके एतिराज़पर ध्यान न दिया. सुलह नहीं हुई, और दुश्मनने अपनी फ़ौजको एकट्ठा करके अपना पहिला मक़ाम लड़नेके वास्ते मुक़र्रर किया. इतने ही में सेंधियाके पाससे इस मत्लबके काग़ज़ पहुंचे, कि जयपुरकी फ़ौजके साथ दुश्मनी बन्द करदी जावे. इसी मत्लबके ख़त बामनराव के नाम पेरन साहिबके पाससे आये, जो कि थोड़े दिनोंसे जेनरल डिबॉइनकी जगह सेंधियाकी फ़ौजका कमांडर इन्चीफ़ होगया था. दुश्मन अब अपनी ही रज़ामन्दीसे ५०००० रुपया देनेको तय्यार हुआ, लेकिन् बामनरावने बे सोचे विचारे इन्कार कर दिया. इसी अरसेमें बहुतसी फ़ौज जयपुरके कैम्पमें पहुंच गई, और दोनों तरफ़से दूनी तेज़ीके साथ दुश्मनी शुरू हुई."

"(पृष्ठ १७४) टॉमसकी फ़ौजको दूरसे चारा लानेके सबब बड़ी तक्लीफ़ हुई, क्योंकि कैम्पसे बीस मील जाना पड़ता था, और रास्तेमें दुश्मनकी फ़ौजके छोटे छोटे गिरोह उनको दिक़ करते थे; और उनकी तक्लीफ़ बढ़ानेके लिये जयपुरकी फ़ौजको पांच हज़ार आदमियोंके साथ बीकानेरके राजाने मदद पहुंचाई. टॉमसके कैम्पमें नौ मरहटे थे, वे सब इसी मत्लबके थे, कि बेचारे किसानोंको लूटें, और बर्बाद करें. ऐसे मौक़ेपर पहुंचने, और दिन दिन चारा घटनेसे टॉमस और बामनरावने एक जंगी

कॉन्सिल की, जिसमें दूसरे अफ़्सर भी शामिल थे. सबकी यह राय हुई, कि अपने मुल्कको वापस चले जावें. इसी इरादेके मुताबिक़ दूसरे दिन सुब्ह होनेके पहिले ही फ़ौज रवानह होने लगी. इतनेमें दुश्मनकी तमाम फ़ौज हमलहके लिये आगई, जब तक अन्धेरा रहा, तब तक बड़ी ख़राबी रही; लेकिन् दिन निकलनेपर टॉमसने अपने आदमियोंको क़वाइदके साथ जमा करके दुश्मनको बड़े नुक्सानके साथ हटा दिया; फिर भी वे उसके पीछे लगे रहे, और तोपख़ानहके फ़ायर व अग्निबाणसे उसे तंग करते रहे. उसकी कूचकी तेज़ीके सबबसे दुश्मनकी भारी तोपें पीछे रहगई, सिर्फ़ तोड़ेदार बन्दूक़ और बाणवाले आदमी पीछा करनेके वास्ते रहगये. गर्मी ख़ूब पड़ती थी, सिपाहियोंको पानी बग़ैर बड़ी तक्लीफ़ थी, लेकिन् दुश्मनको भी ऐसी ही तक्लीफ़ होनेके सबब उनकी बन्दिशें पूरी न हो सकीं. लड़ाई सख़्त हो रही थी, थकावट भी बहुत थी. आख़िर बहुत धावा करने बाद टॉमस शामके वक़्त एक गांवमें पहुंचा, जहांपर दो कुए अच्छे पानीके मिले. सिपाह पानीके वास्ते इतनी बे चैन थी, कि आदमी एक दूसरेपर पड़ने लगे, और दो कुएमें गिरगये; एक तो फ़ौरन् बेदम होगया, और दूसरा बड़ी मुश्किलके साथ निकाला गया. इस बातको रोकनेके लिये कुएपर गार्ड रखदिया गया, और रफ़्तह रफ़्तह सबको थोड़ा थोड़ा पानी मिलनेसे तसल्ली हुई."

"(एष्ठ १७६) दुश्मन अभीतक पीछे पीछे चले आये, और दो कोसके फ़ासिलेपर डेरा जमाया. टॉमसने दूसरे दिन फिर हमलह करनेका इरादह किया, उसको यह मालूम होगया, कि सिपाहियोंकी हिम्मत कुछ कम होगई है, उनका दिल बढ़ानेके लिये ख़ुद पैदल उनके साथ होलिया, और दिनभर रहा. दुश्मन कई दफ़ा हमलह करनेका इरादह करते हुए नज़र आये, इसलिये टॉमसने तोपख़ानहके अफ़्सरको हुक्म देदिया, कि पीछेकी तरफ़ बराबर फ़ायर करता रहे. इससे उनकी हिम्मत कुछ कम हुई, और टॉमसकी फ़ौजको आगे बढ़नेका मौक़ा मिला. दूसरे दिन भी वैसी ही तक्लीफ़के साथ, जैसी कि पहिले दिनके सफ़रमें हुई थी, टॉमस एक बड़े क़स्बेके पास पहुंचा, जिसके पास पांच कुओंसे पानीकी इफ़्रात पाई. (एष्ठ १७७) यहांपर दुश्मनने पीछा छोड़ा, और टॉमसने अपनी फ़ौजकी हालतपर ख़याल करनेका मौक़ा पाया. बीमार और घायल लोग हिफ़ाज़तकी जगहमें पहुंचाये गये; और उन्हींके साथ वे लोग भी, जो कि दुश्मनकी तरफ़से पहिली दफ़ा सुलहकी शर्त करनेके वक़्त ज़मानतके तौरसे आये थे, भेजे गये. टॉमसने दुश्मनके मुल्कपर फिर दुश्मनी शुरू की; जब कि उसके आदमियोंने अच्छी तरह आराम लेलिया, जुर्मानह वग़ैरह कई तरहसे अपना ख़र्च चलाने और सिपाहियोंकी पिछली तन्ख़्वाह

चुका देनेके वास्ते काफ़ी रुपया एकट्ठा करलिया. इस वक़्पर जयपुरके राजाने जान लिया, कि इस लूट मारसे दुश्मनको बड़ा नुक्सान पहुंचेगा, और इसलिये वामनरावके पास एक वकील अपना मुल्क ख़ाली करालेनेकी शर्तें लेकर भेजा, जो मन्जूर कीगईं, और कुछ रुपया दिया गया. इस तरहसे दुश्मनी ख़त्म हुई."

इस लड़ाईमें जो कि बीकानेरके महाराजाने जयपुरकी मददके लिये फ़ौज भेजी थी, इससे टॉमसने दूसरे वर्ष बीकानेरसे बदला लिया. महाराजा प्रतापसिंहका देहान्त विक्रमी १८६० श्रावण शुक्ल १३ [हि० १२१८ ता० १२ रबीउस्सानी = ई० १८०३ ता० १ ऑगस्ट] को हुआ. इनकी प्रकृति मिलनसार थी, वह हंसमुख, इल्मके बड़े क़द्रदान थे, अनेक ग्रन्थ इन्होंने नये बनवाये, जिनमेंसे वैद्यकका अमृतसागर नाम ग्रन्थ, चरक सुश्रुत, वाघ भट्ट, भाव प्रकाश, आत्रेय आदिका खुलासह लेकर बनवाया, जो इस समय भी भरतखंडमें बहुत प्रचलित है. इसी तरह शिक्षा राज्यनीति, गान विद्याकी पुस्तकें बनवाई थीं; अब तक बहुतसे विद्वान लोग उनको प्रीतिके साथ याद करते हैं; परन्तु उनकी उदारता और बहादुरी ऐश व इश्रतमें छिपगई थी.

३५- महाराजा जगत्सिंह.

इनका जन्म विक्रमी १८४२ चैत्र कृष्ण ११ [हि० १२०० ता० २५ जमादियुल अव्वल = ई० १७८६ ता० २५ मार्च] को और राज्याभिषेक विक्रमी १८६० श्रावण शुक्ल १४ [हि० १२१८ ता० १३ रबीउस्सानी = ई० १८०३ ता० २ ऑगस्ट] को हुआ. यह राजा अय्याशी और बुरी आदतोंसे बदनाम होगये थे, इस वास्ते हम अपनी तरफ़से क़लम उठानेमें किनारह करके ज्वालासहायकी किताब वक़ाये राजपूतानहका बयान नीचे लिखेदेते हैं:-

जिल्द १, पृष्ठ ६४६.

"वह अपने ख़ानदान और ज़मानेमें सबसे ज़ियादह अय्याश और बदचलन रईस हुआ है. अगर उसके वक़्का हाल बिल्कुल लिखनेके लाइक़ होता, तो उसकी तारीख़की एक अलग जिल्द होती; मगर वह अह्वाल ऐसे ख़राब हैं, कि उनके लिखने में अपना वक़् ज़ाया करना, और पढ़ने वालोंके दिलोंमें इस किताबके पढ़नेसे नफ़रत पैदा करना है. मुख़्तसर यह है, कि उसके अह्दमें दूसरी रियासतोंकी चढ़ाई, शहरों का मुहासरा, मुल्ककी ख़राबी, रअय्यतकी तबाही, बराबर जारी रही. रसकपूर नामी

एक अदना कस्बीने वह फ़रोग़ (मर्तबह) पाया, कि उसके मुक़ाबलहमें उम्दह ख़ानदानकी जोधी, जैसी, राठौड़, व भटियाणी राणियां गर्द होगईं. उसपर यहां तक इनायतें हुईं, कि उसको राज्यके आधे मुल्ककी राणी बनादिया, और राज्यका कुल सामान, बल्कि महाराजा सवाई जयसिंहका कुतुबख़ानह तक आधा उसको बांटदिया; जयमन्दिरका ख़ज़ानह, जिसकी हिफ़ाज़तमें काली खोहके सीने दिलोजानसे लगे रहते थे, मुफ़्त फ़ुज़ूल ख़र्चीमें ज़ाया करदिया; तिजारतमें ख़लल पड़ा, खेती बाड़ी जल्दी मौक़ूफ़ होगई; एक रोज़ रोड़ाराम दर्ज़ी मुख़्तार हुआ, दूसरे रोज़ कोई बनिया हुआ, तीसरे रोज़ कोई ब्राह्मण मुक़र्रर हुआ, और हर एक बारी बारीसे नाहरगढ़के जेलख़ाने में भेजाजाता था; रसकपूरके नामसे सिक्कह जारी हुआ; वह राजाके साथ हाथीपर सवार होकर निकलती, सर्दारोंको हुक्म था, कि मिस्ल राणियोंके उसका अदब और इज़्ज़त करें. अगर्चि मिश्र शिवनारायण, जो मुसाहिब था, उसको बाईजी याने बेटी व बहिन कहकर बोलता था; मगर चांदसिंह सर्दार दूनीने हर जल्सहमें, जिसमें कि वह कस्बी मौजूद होती, शरीक होनेसे इन्कार किया. इस इल्लतमें उसपर दो लाख रुपया, जो उसकी चार सालकी आमदनी थी, जुर्मानह हुआ. सर्दारान रियासत, राजा और उसकी हुकूमतसे ऐसे तंग थे, कि उन्होंने एक दफ़ा उसको गद्दीसे उतारनेकी कोशिश की, अगर रसकपूरको नाहर गढ़में क़ैद न करदिया जाता, तो यक़ीन है, कि इस तज्वीज़पर ज़रूर अ़मल करते. आख़िरकार ईसवी १८१८ ता० २१ डिसेम्बर [वि० १८७५ पौष कृष्ण ९ = हि० १२३४ ता० २३ सफ़र] को महाराजा जगत्सिंहका देहान्त होगया."
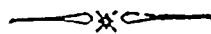
मात्कम साहिबकी किताब सेन्ट्रल इन्डिया,

जिल्द पहिली, पृष्ठ १९६ से.

"जब जशवन्तराव पंजाबसे वापस आया, तब एक महीने तक जयपुरके मुल्कमें ठहरा. उसकी फ़ौजने खेतोंको बर्बाद किया, और उसने राजा और प्रधानको डराकर अठारह लाख रुपया वुसूल करलिया."

महाराजा जगत्सिंहकी सगाई महाराणा भीमसिंहकी राजकुमारी बाई कृष्णकुमारीके साथ हुई थी, जिससे उस राजकन्याका देह नष्ट किया गया. यह हाल महाराणा अमरसिंह दूसरेके प्रकरणमें मारवाड़की तवारीख़में लिखा गया है- (देखो पृष्ठ ८६२). बाक़ी यह माजरा महाराणा भीमसिंहके हालमें भी लिखा जायेगा. यहां मुख़्तसर दर्ज करते हैं.

माल्कम साहिबकी तवारीख़ जिल्द १, पृष्ठ २६७ से.

"अमीरख़ांकी तवारीख़ जश्वन्तरावके हिन्दुस्तानसे वापस आजानेके पहिले उसीके साथ मिली हुई है, लेकिन् पीछे वह अलग होगया, और उस वक्त वह जयपुरके राजा जगत्सिंहका नौकर होगया; क्योंकि जोधपुरके राजाके साथ उदयपुरके राणाकी बेटीकी बाबत, जो लड़ाई होने वाली थी, उसके लिये उसकी मदद चाही. कृष्णकुमारीकी सगाई जोधपुरके राजा भीमसिंहके साथ हुई थी, जिसका देहान्त होगया. उसके मरनेपर मानसिंह, जो दूरका रिश्तह रखता था, गद्दीका मालिक हुआ; लेकिन् दो वर्ष पीछे भीमसिंहके सर्दार सवाईसिंहने उस राजाके एक हक़ीक़ी या ख़याली लड़केकी मददके वास्ते एक मज़्बूत गिरोह एकट्ठा करलिया; और अपनी मुराद पूरी करनेके वास्ते एक वसीलह यह निकाला, कि जोधपुर और जयपुरके राजाओंमें बड़ी दुश्मनी पैदा करे. यह जानकर कि मानसिंह उदयपुरकी राजकुमारीसे शादी करनेकी उम्मेद करता है, सवाईसिंहने जयपुरके राजा जगत्सिंहको, जो बड़ा ऐय्याश था, उससे शादी करनेको उभारा; और जगत्सिंह उस राजकुमारीकी ख़ूबसूरतीका बयान सुनकर इस फ़िक्रमें पड़ा. उदयपुरके राणाकी बेटी बिवाहनेके लिये कार्रवाई शुरू कीगई, और शादीका वक्त मुक़र्रर होगया, लेकिन् सवाईसिंहने इस बातको रोकनेके लिये कोशिश की, तब जोधपुरके राजाकी तबीअ़त बढ़ी, कि अपने पहिले दावेको मज़्बूत करे, और अपने मुख़ालिफ़की ख़्वाहिश पूरी न होने देवे."

"राजपूत क़ौमके जितने राजा थे, सबके दिलमें दुश्मनी हद दरजेको पैदा हुई, और सब तरफ़से मददकी चाह होने लगी. अंग्रेज़ोंकी मुदाख़लत भी चाही गई, लेकिन् सर्कार अंग्रेज़ी राज़ी न हुई. 'सेंधियाने यह मौक़ा राजपूतोंकी नाइत्तिफ़ाक़ीका देखकर बापूजी सेंधिया और सिरजीराव घाटकियाको सहारा दिया, कि अपने लुटेरे गिरोहको गुज़र करनेके वास्ते कोशिश करें; और हुल्करने उनको अमीरख़ां और उसके पठानोंका शिकार बनाया, जिसका नतीजह यह हुआ, कि दोनों राज्योंकी पूरी बर्बादी हुई, जयपुरका कमसे कम एक करोड़ बीस लाख रुपया लड़ाईमें ख़र्च हुआ, आख़िरमें वे इज़्ज़ती उठाकर शिकस्त पाई."

"सवाईसिंहने मानसिंहको इस तरह फंसा हुआ देखकर धौंकलसिंहके लिये फिर कोशिश की, जो भीमसिंहका लड़का समझागया था. उस राजाकी सुस्ती देखकर उसने उसको छोड़दिया, और हर एक सर्दारसे कहा, कि उसको छोड़ देवे. मानसिंह, जो लड़नेके लिये मैदानमें गया था, लाचार होकर थोड़ेसे आदमियोंके साथ भागा; और उसके कैम्पको जगत्सिंह और उसके मददगारोंने लूट लिया. मानसिंहको

मुसीबतें यहीं ख़त्म नहीं हुई, जोधपुर तक उसका पीछा कियागया, उसके तमाम मुल्कपर दुश्मनका धावा होगया. धौंकलसिंह राजा बनाया गया, हर एक राठौड़ सर्दारने उसको अपना मालिक माना; झगड़ा ख़त्म हुआ, लेकिन् मानसिंहकी ओर जो थोड़ेसे सिपाही उसके साथ रहे थे, उनकी हिम्मत पस्त नहीं हुई थी. उसने पहिले ही अपने दुश्मनोंको अलग करनेका उद्योग किया था, और बहुत दिनों तक घेरा रहनेके सबब, जो कठिनाई पड़ी, उससे उसकी कोशिशोंको मदद पहुंची. अमीरख़ांने उसकी शर्तें कुबूल कीं, और तन्ख्वाहके न मिलनेके बहानेपर घेरा डालने वाली फ़ौजसे अलग होकर जोधपुर व जयपुरके इलाक़ोंको ख़ूब लूटने लगा. जयपुरकी रियासतके हर एक सर्दारकी ज़मीन उसकी लूट मारसे बर्बाद हुई, और उनकी नाराज़गीसे लाचार होकर जगत्सिंहको उस पठानके सज़ा देनेके लिये फ़ौज का एक गिरोह भेजना पड़ा; वह पहिले टौंककी तरफ़ भाग गया, लेकिन् फ़ौज और तोपोंकी मदद पाकर उसने जयपुरकी फ़ौजपर फिर हमलह किया, और शिकस्त दी."

"इस कामयाबीके बाद, जो बहुत अच्छी हुई, अमीरख़ांके जयपुरमें आनेकी उम्मेद थी, जिसके बाशिन्दे बड़ी हलचलमें पड़गये थे; लेकिन् इस मौक़ेपर यही साबित होगया, कि वह सिर्फ़ लुटेरोंका सर्दार है; वह राजधानीके क़रीब लूट खसोट करके चलागया. जयपुरकी फ़ौजकी शिकस्तका हाल सुनकर घेरा डालने वाली फ़ौजमें इतना डर और ख़राबी फैलगई, कि जगत्सिंहने अपनी राजधानीकी तरफ़ जानेका इरादह किया, और सेंधियाने जो मददगार भेजे थे, उनको बहुतसा रुपया देकर कहा, कि उसको वहां तक हिफ़ाज़तसे पहुंचादेवें. (पृष्ठ २७१) पहिली लड़ाईमें जो तोपें और अस्बाब लूटकर लियागया था, आगे भेजदिया; और थोड़ेसे राठौड़ सर्दार, जो मानसिंहके साथ रहगये थे, उनपर शुब्ह होगया था, इसलिये वह मज्बूर होकर जोधपुरसे चले गये थे. इस वक़्पर उन्होंने अपने राजाकी ख़ैरख्वाहीका सुबूत दिखलाना चाहा, और जो फ़ौज कि उनके मुल्कसे अस्बाब लूटकर लेजाती थी, उसपर हमलह करके उसको शिकस्त दी. चालीस तोपें और बहुतसा अस्बाब वापस लेलिया; और अमीरख़ांसे मेल करके उसके साथ जोधपुरको चलेगये." इन महाराजाका हाल हमने तवारीख़ोंसे चुनकर लिखा है, अपनी तरफ़से बिल्कुल क़लम नहीं उठाया. इनके देहान्तसे थोड़े ही अरसह पहिले गवर्मेंट अंग्रेज़ीसे रियासत जयपुरका अह्दनामह हुआ. आख़िरकार विक्रमी १८७५ पौष कृष्ण ९ [हि० १२३४ ता० २३ सफ़र = ई० १८१८ ता० २१ डिसेम्बर] को इन महाराजाका देहान्त होगया.

३६- महाराजा जयसिंह तीसरे.

इनका जन्म विक्रमी १८७६ वैशाख शुक्ल १ [हि० १२३४ ता० ३० जमादियुस्सानी = ई० १८१९ ता० २५ एप्रिल] को हुआ, और जन्म दिनको ही राज्याभिषेक मानना चाहिये; क्योंकि जब महाराजा जगत्सिंहका देहान्त होगया, और कोई औलाद न रही, तब दत्तक रखनेकी फ़िक्र हुई; कुल रियासतके सर्दारान व अहलकाराननें एक मत होकर नर्वरके ख़ारिज रईस मोहनसिंहको गद्दीपर बिठा दिया. इस कामके करनेमें मोहन नाज़िर और डिग्गीका ठाकुर मेघसिंह खंगारोत मुखिया थे; लेकिन् उसी अरसेमें मुखिया लोगोंकी अदावतके कारण विरोध बढ़ गया, एक बड़े गिरोहने एकट्ठा होकर मोहनसिंहकी गद्दी नशीनीसे इन्कार किया, और कहा, कि भलाय, ईसरदा व बरवाड़ा वग़ैरह हक़दारोंकी मौजूदगीमें नर्वरवालोंको गद्दी नहीं मिल सक्ती. इसी अरसेमें मश्हूर हुआ, कि महाराजा जगत्सिंहकी राणी भटियाणीको गर्भ है, इस बातकी तहक़ीक़ात अच्छी तरह होने बाद ऊपर लिखी हुई तारीख़को महाराजा तीसरे जयसिंह पैदा हुए, और मोहनसिंह माज़ूल किया गया.

महाराजा तीसरे जयसिंहके अहदमें कोई बात लिखनेके लाइक़ नहीं है, ज़नानी ड्योढ़ीके हुक्मसे मुसाहिब व अहलकार काम करते थे; एक रूपां बडारण, जो महाराजा जगत्सिंहकी लौंडियोंमेंसे थी, ज़नानह हुक्म उसीके ज़रीएसे जारी होता था. यह बडारण आला दरजेकी मुसाहिब गिनीगई, जिसके कई काग़ज़ात हमारे पास मौजूद हैं, जिनकी नक़्लें महाराणा भीमसिंहके हालमें लिखी जावेंगी. विक्रमी १८८५ [हि० १२४३ = ई० १८२८] में जमुहाय माताके दर्शन करनेको महाराजा बाहर लाये गये, और तमाम रिआयाको उनके देखनेसे खुशी हुई. विक्रमी १८८८ माघ कृष्ण १३ [हि० १२४७ ता० २७ शअ्बान = ई० १८३२ ता० ३१ जैन्युअरी] को लॉर्ड वेन्टिककी मुलाक़ातको यह महाराजा अजमेर आये. यह ज़िक्र तफ्सीलवार महाराणा जवानसिंहके हालमें लिखा जायेगा. इन महाराजाका इन्तिक़ाल विक्रमी १८९१ माघ शुक्ल ८ [हि० १२५० ता० ७ शव्वाल = ई० १८३५ ता० ६ फ़ेब्रुअरी] को हुआ, जिसकी निस्बत खयाल कियाजाता है, कि झूंथाराम प्रधान नमक हरामके ज़हर देनेसे हुआ.

३७- महाराजा रामसिंह २.

इनका जन्म विक्रमी १८९० द्वितीय भाद्रपद शुक्ल १४ [हि० १२४९ ता० १३ जमादियुल अव्वल = ई० १८३३ ता० २८ सेप्टेम्बर] को और राज्याभिषेक विक्रमी १८९१ माघ शुक्ल ८ [हि० १२५० ता० ७ शव्वाल = ई० १८३५ ता० ६ फ़ेब्रुअरी]

को हुआ. उस वक्त इनकी उम्र एक वर्ष चार महीने और चोवीस दिनकी थी. इस वक्त सिंघी झूंथाराम रियासतका कारोबार चलाने लगा, और रूपां बडारण, जो पेश्तर माजी भटियाणीकी जान थी, अब माजी चन्द्रावतकी ज़बान बनगई. दो पुश्त तक पर्दा नशीन महाराणियोंकी मुख़्तारी और अह्लकार व मुसाहिबोंकी खुद ग़रज़ीसे रियासतमें कई दफ़ा फ़साद व खूंरेज़ियां होगई, परन्तु ब्रिटिश गवर्मेण्ट की हुकूमतके अम्न व आमानसे रियासतपर कोई बड़ा ज़वाल नहीं आया, ताहम क़र्ज़दारीकी तरक्क़ी व बे इन्साफ़ीका बाज़ार गर्म था. इस रियासतमें सर्दारोंकी निस्वत अह्लकार लोग ग़ालिब रहे हैं, क्योंकि मुग़लियह बादशाहतके ज़मानहमें यहांके राजा हमेशह काबुल, बंगाला, दक्षिण वग़ैरह दूरके देशोंमें नोकरीपर रहते थे, और राजधानी का कारोबार सब मुसाहिबोंके इख्तियारमें था. इसके बाद महाराजा सवाई जयसिंहने मुसल्मानी बादशाहतकी तनज़्ज़ुलीके वक्त अपनी अमलदारीको बढ़ाया, और शेखावत, नरूका व राजावत वग़ैरह बड़े बड़े जागीरदारोंको अपने मातह्त करलिया, जो पहिले खुद्मुख़्तार और पीछे मुग़ल बादशाहोंके जुदे मन्सबदार नोकर कहलाते थे. महाराजा सवाई जयसिंहने, जो बड़े पोलिटिकल हालातके जानने वाले थे, इनको नाताक़त करके अपने अह्लकारोंके मातह्त करलिया. उनके बाद रामचन्द दीवान, व केशवदास खत्री, हरगोविन्द नाटाणी, हरसहाय व गुरसहाय खत्री वग़ैरह बड़े ज़बर्दस्त अह्लकार हुए, जिनकी ताक़तने जागीरदारोंको कभी सिर न उठाने दिया. इसी सबबसे नाबालिग़ीकी हालतमें भी अह्लकारोंने रियासतके कारोबारको अच्छी तरह चलाया, लेकिन् आपसकी ना-इत्तिफ़ाक़ियोंसे इस रियासतका अन्दरूनी हाल बहुत ख़राब था.

जब इन महाराजके पिता जयसिंह ३ का देहान्त हुआ, तो उनकी दग्धक्रिया करके शहरमें वापस आनेपर सिंघी झूंथारामके बर्ख़िलाफ़ शहरके लोगोंने बग़ावत की; लेकिन् झूंथारामने फ़ौजकी ताक़तसे उसको दबाकर अपना रोब जमा लिया. इल्ज़ाम यह लगाया था, कि झूंथाराम और रूपां बडारणने महाराजाको मार डाला. कुछ अरसे बाद वह क़ैद किया गया, और उसी हालतमें विक्रमी १८९५ [हि० १२५४ = ई० १८३८] में चनारगढमें मरगया. रूपां बडारण भी उसी वक्त क़ैद होकर बाहर भेजी गई थी. इस मुक़द्दमेकी तह्क़ीक़ातके लिये गवर्नर जेनरलके एजेण्ट कर्नेल आल्विज़ और उनके असिस्टंट मिस्टर ब्लेक आये थे. जब रूपां बडारणसे हाल दर्याफ़्त करके पीछे फिरे, तो मह्लोंके चोकमें बदमआशोंने शोर करदिया, कि यह महाराजाको मारने आये थे. कर्नेल आल्विज़ ज़ख्मी होकर बमुश्किल रेज़िडेन्सीमें पहुंचे, और असिस्टंट ब्लैक रास्तहमें मारेगये. इस कुसूरमें दीवान अमरचन्दको फांसी दीगई.
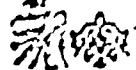
एजेएट साहिबकी सलाहसे सामोदका रावल वैरीशाल कुल कामका मुख्तार बना, जो विक्रमी १८९५ ज्येष्ठ शुक्ल ४ [हि० १२५४ ता० ३ रबीउ़लअव्वल = ई० १८३८ ता० २७ मई] को बीमार होकर मरगया. तब उसका जानशीन रावल शिवसिंह और चौमूंका ठाकुर लक्ष्मणसिंह हुआ, और एक पंचायत भी इन्तिज़ामके लिये मुक़र्रर हुई, जिसमें डिग्गीका ठाकुर मेघसिंह और दूणीका राव जीवनसिंह थे; परन्तु इनसे भी काम दुरुस्त न चलसका; फिर रावल शिवसिंह और लक्ष्मणसिंहका इख्तियार बढ़ गया. किसीको महाराजाका देखना मुयस्सर नहीं था, वे ज़नानहमें रहते थे.

विक्रमी १८९६ [हि० १२५५ = ई० १८३९] में मेजर थॉर्सबी साहिब जयपुरमें पोलिटिकल एजेएट मुक़र्रर हुए. उन्होंने फ़ौज वग़ैरहके फ़ुज़ूल ख़र्च तख़्फ़ीफ़ करके इन्तिज़ामके लिये दीवानी और फ़ौज्दारीकी अ़दालतें क़ाइम कीं. उन्होंने राजकी ज़ेरबारी और कम आमदनीपर ख़याल करके, जो उस वक़्में तीस लाख सालानह तक रह गई थी, अंग्रेज़ी सर्कारमें ख़िराज कम होनेकी रिपोर्ट की; इसपर विक्रमी १८९७ वैशाख कृष्ण ३० [हि० १२५६ ता० २९ सफ़र = ई० १८४० ता० १ मई] से बाक़ी ख़िराजका उन्तालीस लाख रुपया मुआ़फ़ होकर आगेके लिये आठ लाखके एवज़ चार लाख रुपया सालानह सर्कारी ख़िराज क़ाइम रक्खा गया. इसके बाद सांभरका क़ब्ज़ह राजको सौंपकर शैख़ावाटी ब्रिगेडका ख़र्च, जो लूट मार दूर करनेके लिये एक फ़ौज क़ाइम हुई थी, सर्कारने अपने ज़िम्मह लिया. माजी व ठाकुर मेघसिंहने अपने इख्तियार कम होनेसे रंजीदगीके सबब बग़ावत कराई, लेकिन् हिन्डौन की बाग़ी पल्टन हथियार छीने जाने बाद मौक़ूफ़ कीगई. चन्द रोज़ बाद माजी व मेघसिंहने कालकका क़िला, जो कि जयपुरसे बीस मील पश्चिमी तरफ़ है, दबालिया. मेजर थॉर्सबी साहिबने राजकी फ़ौजसे और मेजर फ़ॉस्टर साहिबने शैख़ावाटी ब्रिगेडसे क़िलेका मुहासरह किया, जिसमें तीन सौ आदमी क़त्ल और ज़ख़्मी हुए. आख़िर क़िले वालोंने तंग होकर फ़र्मांबर्दारी इख्तियार की. फिर फ़सादियोंकी हर एक बग़ावत फ़ौजी ताक़तसे दबादी गई.

विक्रमी १८९७ आषाढ़ शुक्ल २ [हि० १२५६ ता० १ जमादियुलअव्वल = ई० १८४० ता० १ जुलाई] को चन्द मुसाहिबोंने महाराजाको देखकर पहिली नज़्र पेश की, लेकिन् रियासती आम आदमियोंको महाराजाके देखनेकी उम्मेद बनी रही. विक्रमी १८९९ चैत्र शुक्ल १५ [हि० १२५८ ता० १४ रबीउ़लअव्वल = ई० १८४२ ता० २७ मार्च] को महाराजासे सदर्लैंएड साहिबकी ख़ानगी मुलाक़ात हुई, जिसमें चन्द मुसाहिब और सर्दार भी शामिल थे. ब्रिटिश अफ़्सर चाहते थे, कि महाराजा बाहर निकलें. लेकिन् माजी और बडारणें उनको अपने क़ाबूसे निकालना ना पसन्द करती थीं, और मुसाहिब भी इसीमें अपना

फ़ाइदह जानते थे. रावल शिवसिंह व लक्ष्मणसिंहसे माजी व बडारणोंकी अदावत बढ़ती जाती थी, यहां तक कि इसी संवत्के फाल्गुन् शुक्ल ११ [हि० १२५९ ता० १० सफ़र = ई० १८४३ ता० १० फ़ेब्रुअरी] को कई सो विलायतियोंने मुसाहिबोंपर हमलह करना चाहा, फ़ौजी ताक़तसे सत्तरह आदमियोंको मारकर बाक़ीको निकाल दिया, और कुछ गिरिफ़्तार भी होगये. इस बग़ावतमें माजी, बडारणों, सर्दारों व अहलकारोंकी साज़िश सुबूतको पहुंची, मगर झगड़ा बढ़जानेके ख़ौफ़से एजेण्ट साहिबने दो चार छोटे मुखिया आदमियोंको सज़ा देकर मुक़द्दमह ख़त्म किया.

विक्रमी १८९९ माघ [हि० १२५९ मुहर्रम = ई० १८४३ जेन्युअरी] से मेजर लडलो साहिबने मेजर थॉर्सबी साहिबके एवज़ जयपुरका काम संभाला. उनके साम्हने बहुतसी नाक़िस रस्में, सती होना, लौंडी गुलाम बेचना और बहुतसा त्याग देना, जिससे कि राजपूत लड़कियोंको अक्सर मारडालते (१) थे, जुर्म क़रार पाकर मौक़ूफ़ कीगई. रावल शिवसिंह और उसके भाई लक्ष्मणसिंहने सख़्त कार्रवाईसे सब अहलकारोंको नाराज़ किया, क्योंकि वह राजका रुपया ख़राब करके अपने रिश्तह-दारोंको बहुतसी जागीर देने लगे थे. इसलिये एजेण्ट साहिबने लक्ष्मणसिंहको मौक़ूफ़ करके उसकी जागीरपर जानेका हुक्म दिया. मेजर लडलो साहिबने राजकी आमदनीको तरक़्क़ी देकर बहुतसे मुफ़ीद काम जारी किये. शहरके क़रीब सड़क, बाग़, शिफ़ाख़ानह और मद्रसह वग़ैरह तय्यार कराया.

ब्रिटिश गवर्मेण्टकी कोशिशसे महाराजाको ज़नानहसे बाहर निकालकर विक्रमी १९०० वैशाख शुक्ल १३ [हि० १२५९ ता० १२ रबीउस्सानी = ई० १८४३ ता० ११ एप्रिल] को जमुहाय माताके दर्शन करवाये गये, और आम लोगोंने महाराजके दर्शन करके ईश्वरका धन्यवाद किया. महाराजा जब कुछ होश्यार हुए, तब उन्होंने पोशीदह तौरसे हिन्दुस्तानके कई हिस्सोंकी सैर की, और अपनी रियासतके कामोंपर तवज्जुह की.

विक्रमी १९०२ [हि० १२६१ = ई० १८४५] में पंडित शिवदीन, जो आगरा कॉलेज का तालिबइल्म था, महाराजा साहिबका उस्ताद मुक़र्रर हुआ; उसने अपने कामको दुरुस्तीके साथ अंजाम दिया. विक्रमी १९०४ [हि० १२६३ = ई० १८४७] में मेजर लडलो साहिब दर्जे नेकनामीके साथ जयपुरसे गये, और उनकी जगह कप्तान रिकार्ड्स मुक़र्रर हुए. इन्हीं दिनोंमें कर्नेल सदर्लेण्ड साहिब एजेण्ट गवर्नर जेनरल राजपूतानहके चले जानेसे

---

(१) यह तर्जमह दूसरी तवारीख़ोंसे किया गया है. त्यागका देना फ़ुज़ूल ख़र्च लिखते, तो ठीक था. लड़कीका बाप त्याग नहीं देता. त्याग लड़केका बाप देता है. लड़की मारनेकी बुनियाद सगाईके वक़्त टीका लेना है, जो लड़कीके बापकी तरफ़से दिया जाता है.

भी अफ्सोस हुआ, जिन्होंने राज जयपुरकी बिहतरीके लिये बहुत तवज्जुह सर्फ़ की थी.

विक्रमी १९०८ [हि० १२६७ = ई० १८५१] में कर्नेल लो साहिब एजेएट गवर्नर जेनरलने पंचायतकी निगरानी उठाकर महाराजा साहिबको मुल्की इख्तियार मिलजानेकी रिपोर्ट की, जिसपर लिहाज़ होकर विक्रमी १९११ [हि० १२७० = ई० १८५४] में महाराजाको सर्कारकी तरफ़से इख्तियारात हासिल होगये, लेकिन् रावल वज़ीरके ज़बर्दस्त क़ाबूसे महाराजा दबेहुए थे. जब कर्नेल सर हेनरी लॉरेन्स, के. सी. बी. एजेएट गवर्नर जेनरल राजपूतानहसे सब हाल बयान किया, तो साहिबने निहायत मिहर्बानी और तसल्लीसे नेक सलाहके साथ कार्रवाइयां बतलाईं. महाराजा साहिबने फ़ौरन् रावलको मौकूफ़ करके ठाकुर लक्ष्मणसिंहको वज़ीर, शिवदीनको हाकिम माल, और एक दूसरे शख़्सको फ़ौज बख़्शी मुक़र्रर किया.

रावल शिवसिंहसे मुसाहबत पंडित शिवदीनको मिली, जो महाराजाका उस्ताद था. महाराजाने अपनी रियासतका इन्तिज़ाम इस ख़ैरख़्वाह पंडितके ज़रीएसे बहुत ही उम्दह किया.

विक्रमी १९२० माघ [हि० १२८० रमज़ान = ई० १८६४ फ़ेब्रुअरी] में महाराजा साहिबने जोधपुर जाकर अपनी दो शादियां कीं; और इसी सालमें अंग्रेज़ी सर्कारसे उनको अव्वल दरजेका तमग़ाय सितारए हिन्द इनायत हुआ. अफ्सोस है, कि चन्द रोज़ बाद महाराजाका लाइक़ मुसाहिब पंडित शिवदीन मरगया. इसके बाद महाराजा साहिबने एक कॉन्सिल मुक़र्रर की, जिसमें अव्वल मुसाहिब बख़्शी फ़ैज़अलीख़ां रक्खे गये. बख़्शीकी कारगुज़ारीसे महाराजा साहिबकी रज़ामन्दीके सिवा हर एक पोलिटिकल अफ्सर भी खुश रहा, जिसके सबब एजेन्सीकी कोई रिपोर्ट उसकी तारीफ़से ख़ाली नहीं होती थी. विक्रमी १९२७ [हि० १२८७ = ई० १८७०] में बख़्शी फ़ैज़अलीख़ांको अंग्रेज़ी सर्कारसे नव्वाब मुम्ताजुद्दौलह ख़िताब और तीसरे दरजेका तमग़ाय सितारए हिन्द अता हुआ.

विक्रमी १९२७ आश्विन [हि० १२८७ रजब = ई० १८७० ऑक्टोबर] में लॉर्ड मेओ साहिब (१) वाइसरॉय हिन्द, दौरेके तौर अजमेरको जाते हुए अव्वल बार जयपुरमें दाख़िल हुए, जिनकी ख़ातिरदारी और मिहमानी महाराजा साहिबने उम्दह तौरपर की. दूसरे साल लॉर्ड मेओ साहिबके जज़ीरे ऐण्डमानमें एक क़ैदीके हाथसे मारे जानेके सबब महाराजा साहिबको सख़्त रंज पहुंचा, जिसका शोक बहुत दिनों तक उन्होंने

(१) इनकी यादगारके लिये मेओ हॉस्पिटल और उक्त लॉर्ड साहिबकी क़दे आदम मूर्ति महाराजाने जयपुरमें बनवाई.

किया. थोड़े दिनों बाद महाराजा साहिब खुद बीमार होगये, और उनकी बीनाई (दृष्टि) में फ़र्क़ आगया. इसलिये उन्होंने शिमले जाकर मश्हूर डॉक्टर मेक्नामारासे आंखका इलाज कराया. विक्रमी १९३० [हि० १२९० = ई० १८७३] में नव्वाब फ़ैज़-अलीखांने बीस सालकी नेकनाम नौकरीके बाद राज जयपुरकी विज़ारतसे इस्तिअ्फ़ा दिया. अंग्रेज़ी सर्कारने निहायत क़द्रदानीसे उसको राज कोटेका पोलिटिकल सुपरिन्टेन्डेएट मुक़र्रर किया, और दूसरे दरजेका तमग़ाय सितारए हिन्द याने के० सी० एस० आइ० इनायत हुआ. महाराजा साहिबने नव्वाबके चलेजाने बाद ठाकुर फ़त्हसिंह राठौड़को मुसा-हबतका उह्दह दिया, जिसका काम उसने निहायत मुस्तइदी और दुरुस्तीसे अंजाम दिया.

विक्रमी १९३२ मार्गशीर्ष [हि० १२९२ ज़िल्क़ाद = ई० १८७५ डिसेम्बर] में लॉर्ड नॉर्थब्रुक साहिब गवर्नर जेनरल मुल्क हिन्द, और विक्रमी १९३२ माघ [हि० १२९३ मुहर्रम = ई० १८७६ फ़ेब्रुअरी] में शाहज़ादह साहिब वेल्स वलीअ़ह्द इंग्लिस्तान व हिन्दुस्तान सैरके तौर जयपुरमें तश्रीफ़ लाये. दोनों मौक़ोंपर महाराजा साहिबने निहायत ख़ातिर और मिहमांदारीसे सर्कारी ख़ैरख़्वाहीका सुबूत दिया. इस खुशीकी यादगारमें महाराजा साहिबने मेओ हॉस्पिटल और मेओ साहिबकी बिरंजी (पीतलकी) तस्वीरके सिवा, जो पहिलेसे तय्यार होरहे थे, शाहज़ादह साहिबके नामपर एक मकान 'ऑल्बर्ट हॉल' बनाना तज्वीज़ किया; और उसकी बुनयादका पत्थर शाहज़ादह साहिबने अपने हाथसे रक्खा. इन दोनोंका हाल मए सफ़ाई व सड़कों वग़ैरहके नीचे लिखा जाता हैः-

महकमह पब्लिक वर्क्स (तामीरात).

इस महकमहकी इब्तिदा यानी आरंभ विक्रमी १९१७ [हि० १२७६ = ई० १८६०] में हुई. उस वक़ यह महकमह कर्नेल प्राइस साहिबके मातह्त किया गया था. विक्रमी १९२४ [हि० १२८४ = ई० १८६७] में लेफ़्टिनेन्ट कर्नेल एस० एस० जेकब साहिब उस जगहपर नियत हुए, जो इस राज्यके एग्ज़िक्युटिव एन्जिनिअर हैं. विक्रमी १९३७ भाद्रपद [हि० १२९७ शव्वाल = ई० १८८० सेप्टेम्बर] तक इस महकमेका ख़र्च रास्ता, तालाब, मकानात, वग़ैरह बनानेमें ४९००००० लाख रुपया हुआ.

रास्ते-ख़ास अजमेर और आगराकी बड़ी सड़कें बनाई गईं.

तालाब वग़ैरह- विक्रमी १९४२ [हि० १३०२ = ई० १८८५] तक छोटे बड़े १०० के क़रीब बनाये गये हैं, और उनसे बत्तीस हज़ार एकड़ ज़मीन सींची जाती है. बड़ी झीलें- टोरी, कालक, मोरा, खुर, बचरा हैं, जिनका क्षेत्रफल क्रमसे ६$\frac{1}{2}$, २$\frac{1}{2}$, २, १$\frac{3}{4}$, १$\frac{3}{4}$ वर्ग मील है.

शहरमें आहनी नलोंके द्वारा पानी पहुंचानेका काम विक्रमी १९२५ [हि० १२८५ = ई० १८६८] में शुरू होकर विक्रमी १९३३ [हि० १२९३ = ई० १८७६] में ख़त्म हुआ. इसका ख़र्च ६५८१७० रुपया हुआ, और वार्षिक ख़र्च ४७००० रुपया होता है.

गैसकी रौशनीका कारख़ानह विक्रमी १९३५ [हि० १२९५ = ई० १८७८] में शुरू हुआ, और विक्रमी १९३८ [हि० १२९८ = ई० १८८१] में ख़त्म हुआ. इसका ख़र्च ३१७८२२ रुपया हुआ, जिसके वार्षिक ख़र्चके ३६८६६ रुपये होते हैं.

रामनिवास बाग़- इसका क्षेत्र फल ७६ एकड़ है. इसका काम विक्रमी १९२६ [हि० १२८६ = ई० १८६९] में शुरू हुआ, और अब तक जारी है. इस बाग़का ख़र्च ८१०७१५ रुपये होचुका है.

ऊपर लिखा हुआ हाल जैकब साहिबने विक्रमी १९४६ चैत्र शुक्ल ५ [हि० १३०६ ता० ४ शअ्बान = ई० १८८९ ता० ५ एप्रिल] को जयपुरसे लिखकर भेजा था, उससे और डॉक्टर स्ट्रैटन साहिबकी बनाई हुई "जयपुर आंबेर फ़ैमिली" नाम किताबसे लिया गया है.

दवाख़ानह- जयपुरके राज्यमें मेओ हॉस्पिटलके सिवा नीचे लिखी २४ जगहपर दवाख़ाने हैं:-

१ महल.	२ पुरानी बस्ती.	३ मोती कटरा.	४ क़ैदख़ानह.
५ पागलख़ानह.	६ सांगानेर.	७ हिंडौन.	८ सवाई माधवपुर.
९ झूंभणूं.	१० दौसा.	११ गंगापुर.	१२ चाटसू.
१३ सांभर.	१४ मालपुरा.	१५ लालसोट.	१६ महुवा.
१७ श्री माधवपुर.	१८ बांदी कुई.	१९ खेतड़ी.	२० कोटपुतली.
२१ चीरवा.	२२ सीकर.	२३ उनियारा.	२४ चौमू.

विक्रमी १९४५ [हि० १३०५ = ई० १८८८] की दवाख़ानोंकी रिपोर्ट, जो सर्जन मेजर हॅन्ड्ली साहिबने हमारे पास भेजी है, उससे मालूम होता है, कि इस वर्षमें दवाख़ानोंका कुल ख़र्च ३४५४०-७-३ हुआ; और १५४९२८ मरीज़ोंका इ़लाज किया गया. मेओ हॉस्पिटल, जो जयपुरमें सबसे बड़ा दवाख़ानह है, उसकी नींव विक्रमी १९२७ कार्तिक कृष्ण ४ [हि० १२८७ ता० १८ रजब = ई० १८७० ता० १४ ऑक्टोबर] को रक्खी गई थी; और विक्रमी १९३५ श्रावण [हि० १२९५ शअ्बान = ई० १८७८ ऑगस्ट] में काम ख़त्म हुआ. इसमें कुल ख़र्च रु० १८४८८३-११-६ हुआ.

ऑल्बर्ट हॉल.

इसकी नींव विक्रमी १९३२ माघ शुक्ल ३ [हि० १२९३ ता० २ मुहर्रम = ई० १८७६ ता० १६ फ़ेब्रुअरी] को मलिकए मुअज़्ज़महके पाटवी बेटे प्रिन्स ऑफ़ वेल्सके हाथसे रखवाई गई थी, और महाराजा रामसिंह दूसरेने उनकी मुलाक़ातकी यादगारके लिये इसका नाम 'ऑल्बर्ट हॉल' रक्खा. यह मकान रामनिवास बाग़में वाके है. कर्नेल जेकब साहिबने बहुत उम्दह क़तापर इसको जयपुरके कारीगरोंके हाथसे बनवाया है. यह बड़ा विशाल, सुशोभित, और देशी कारीगरी और इस देशकी पुरानी इमारतोंका नमूना है. इसके नीचले भागमें दो बड़े हॉल हैं, जिनमेंसे एक, जो मीटिंग, व्याख्यान वग़ैरहके लिये अवामके काममें आसके, खाली रक्खा गया है. इनके सिवा नीचे और ऊपर कई बड़े बड़े कमरे व गैलेरी वग़ैरह संग्रह रखनेके लाइक़ बनाये गये हैं. स्तंभ व फ़र्श वग़ैरहमें तरह तरहके रंगके पत्थर काममें लाये गये हैं, फ़र्शपर दिह्लीके जेलख़ानेमें तय्यार कीहुई चटाइयें और जयपुरके क़ैदख़ानेमें बनाई हुई दरियां बिछाई गई हैं. कठहरे वग़ैरह भी देशी पत्थर और लकड़ीके उम्दह बनाये गये हैं. गैसकी रौशनीके वास्ते बड़े बड़े ख़ूबसूरत फ़ानूस ख़ास इस म्युज़िअमके वास्ते तय्यार करवाकर मंगवाये गये हैं. दीवारके ऊपर उम्दह बड़े अक्षरोंमें देशी और अंग्रेज़ी ज़बानोंमें कई नसीहतें लिखी हैं. इनके सिवा हिन्दुस्तान, यूनान, रोम वग़ैरह देशोंके पुराने ज़मानेके चित्रोंकी अस्लके मुताबिक़ बड़ी नक़्लें उम्दह चितारोंके हाथसे बनवाई गई हैं. बादशाह अक्बरने महाभारतका फ़ार्सीमें जो तर्जमह करवाया था, (जिसको रज़्मनामह कहते हैं), उसकी अस्ल प्रतिमें कई विषयोंके चित्र उस वक़्तके प्रख्यात, लाल, बसवान, मशाकिन और मुकुन्द, चितारोंके हाथके बनाये हुए हैं, जिनमेंसे छः चित्रोंको क़दमें बढ़ाके अस्लके मुताबिक़ बड़े ख़र्चसे यहां तय्यार करवाया गया है. पहिले चित्रमें युधिष्ठिरका द्यूत खेलना है, २ दमयन्ती का स्वयंवर, ३ हनुमानका लंका जलाना, और राक्षसोंका भागना, ४ चंद्रहास और विखियाका लग्न, ५ राजा मोरध्वजका यज्ञ, ६ अनुसालका श्वेत अश्वको लेजाना. ऐसे ही मिश्र, रोम वग़ैरहके चित्रोंमें भी प्राचीन वक़्तके धर्म सम्बन्धी और दूसरे चित्र हैं. हॉलकी दोनों बारियोंके शीशोंपर सूर्य और चन्द्रकी मूर्तियां बनाई हैं. आज तक इस मकानका ख़र्च ४८१७३८-१-२ होचुका है, और अभी इसका काम जारी है.

विक्रमी १९३८ भाद्रपद शुक्ल ३ [हि दे किया गया; लेकिन क़ाइम ... = ई० १८८१ ता० २६ ऑगस्ट] को एक दूसरे मकानमें कर्नेल ई० १८६७] तक कॉलेजमें कुछ तरक़्क़ी न खोला था, और विक्रमी १९४३ भाद्रपद क़ी कलकत्तेसे बुलाकर कॉलेजमें नियत = ई० १८८६ ता० ११ सेप्टेम्बर] तक वह रज़ामीसे कॉलेजने बहुत रौनक़ पाई, और

होनेपर वहांका संग्रह यहां लाया गया, और विक्रमी १९४३ माघ कृष्ण १२ [हि० १३०४ ता० २६ रबीउस्सानी = ई० १८८७ ता० २१ फ़ेब्रुअरी] को सर एडवर्ड ब्राडफ़ोर्ड साहिब, उस वक्तके एजेण्ट गवर्नर जेनरलने इस मकानको खोलनेकी रस्म अदा की.

इस म्युज़िअममें कई तरहके सादे और नक़ाशीके तांबा पीतलके बर्तन, जयपुर, बनारस, मुरादाबाद, लखनऊ, हैदराबाद वगैरह शहरोंमें बने हुए एकट्ठे किये हैं; और वे अपने अपने दरजहके मुवाफ़िक़ जगहपर रक्खे गये हैं. लंका, ब्रह्मा, कच्छ और दिहलीके बने हुए रूपेके बर्तन और दूसरी चीज़ें भी बहुत हैं. पुराने ज़मानेके लड़नेके हथियार और लड़नेके वक्त पहिननेके बक्तर वगैरह भी एकट्ठे किये हैं. पुराने ज़मानेके बर्तन और पुराने वक्तसे लेकर मुग़ल बादशाहोंके वक्त तकके सोना चांदी और तांबाके सिक्के, जो आज तक मिले हैं, उनका संग्रह क़ाबिल देखनेके है. पुराने वक्तसे आज तकके ग़रीबसे लेकर राजा तकके पहिननेके सोना, चांदी और पीतल के ज़ेवर भी ख़ूब एकट्ठे किये गये हैं.

पुराने ज़मानेसे आज तक हिन्दुस्तानकी जुदी जुदी बादशाहतोंके वक्तमें हिन्दुस्तानके विभाग किस तरह किये गये थे, और उस वक्तके देशोंके नाम वगैरह क्या थे, उसके अलग अलग नक्शे इस म्युज़िअमके ऑनररी सेक्रेटरी सर्जन मेजर हेन्डली साहिबने बड़े परिश्रमसे तय्यार करके यहां रक्खे हैं.

जयपुरकी बनाई हुई पत्थरकी मूर्तियां और जयपुर, दिहली, सिंध, पिशावर, जापान, चीन, जालंधर, मुल्तान, लंका, वगैरहके बनाये हुए मिट्टी (चीनी) के बर्तन का संग्रह बहुत बड़ा है. इन बर्तनोंके ऊपर कई तरहके चित्र बनाये गये हैं, किसी किसीपर महाभारत, रामायण वगैरहकी कथाओंमें लिखे हुए पुरुषोंके चित्र, किसी पर राशियोंके चित्र वगैरह धर्म और विद्या सम्बन्धी चित्र हैं. ब्रह्माकी बनाई हुई पत्थरकी चीज़ें और आगरेका पच्ची कारीका काम और हिन्दुस्तानकी कई जगहकी बनी हुई लकड़ी और हाथी दांतकी नक़ाशीकी चीज़ें, लाहौर और शिमलाकी नुमाइशगाहोंमें जो चीज़ें आईं उनके फ़ोटोग्राफ़, जयपुर राजके बड़े बड़े मकानातके फ़ोटोग्राफ़, राजपूतानह और सेन्ट्रल इन्डियाके प्रख्यात मक़ामातके फ़ोटोग्राफ़, कई दूसरे राजाओंके फ़ोटोग्राफ़ वगैरहका संग्रह भी बहुत बड़ा है. महाराजा सवाई जयसिंहके बनाये हुए ज्योतिषके यन्त्र साम्राट्, ऋषिवलय, गोलयन्त्र, दिगंशयन्त्र, अयनयन्त्र, यन्त्रराज, नाड़ीवलय वगैरह पुराने और उपयोगी [illegible] जमा किये हैं. महाराजाने अपने खानगी [illegible] गालीचा वगैरहके तरह तरहके नमूने [illegible] जयपुर राज्यमें संग्रह करके रक्खे हैं, उनकी [illegible] शहरोंके बने हुए ज़र और कलाबत्तूके

प्रीतकृष्ण ४ [हि० ता० १४ ऑक्टोबर] को रक्खी गई थी; और शअ़बान = ई० १८७८ ऑगस्ट] में

१८४८८३-११-६ हुआ.

नमूने, रेशमी कपड़ोंके नमूने, कई तरहकी छींटोंके नमूने भी बहुत एकट्ठे किये गये हैं. पूना, कश्मीर, लखनऊ वगैरह शहरोंके बने हुए मिट्टीके खिलौने, मूर्तियां तथा कई क़िस्मकी मिट्टी, कई क़िस्मके पत्थर, धूल और पत्थरमें मिली हुई धातुएं, कई तरहके चटानके नमूने और शंख वगैरहका संग्रह भी बहुत उम्दह है. जयपुर राज्यमें जितनी ज़ातके लोग बसते हैं, उनके सिर और पघड़ियां मिट्टीकी बनाई हुई, और दुन्यामें जितने बड़े बड़े हीरे हैं, उनके बराबर उसी रंगके काचके बनाये हुए हीरे, सूक्ष्म दर्शक यन्त्र, जादूका फ़ानूस, फ़ोटोग्राफ़, रसायन शास्त्र, पदार्थ विज्ञान शास्त्रके उपयोगी यन्त्र, डॉक्टरी विद्याके उपयोगी कृत्रिम शरीर विभाग, कई क़िस्मके नाज, दवा वगैरहका संग्रह भी बहुत है.

मरे हुए पक्षी और जानवरों को रखने के लिये अब जगह नहीं है, इसवास्ते सिर्फ़ राजपूतानह के पक्षी और जानवरों का संग्रह किया जायेगा.

कुद्रती तवारीख़ पढ़ने वालों के वास्ते बहुत उम्दह संग्रह होरहा है.

केरो शहर (क़ाहिरह) के गवर्नर ब्रुक्स बे साहिबने मिश्र देशकी कई पुरानी चीज़ें यहां भेजी हैं, जिनमें एक औरतकी लाश क़रीब ३००० वर्षकी पुरानी, जिसको ममीई कहते हैं, और ज़मीनमेंसे निकली हुई पुराने ज़मानेकी धातुकी मूर्तियां हैं, जिनमें हनुमान वगैरह हिन्दुओंके कई देवताओ की शक्लें हैं. इस म्यूज़िअम में कमसे कम १४००० चीज़ें रक्खी गई हैं, और कईएक यहां रखनेके लिये तय्यार हैं; वे भी रखनेका पुरुतह बन्दोबस्त होनेपर रक्खी जायेंगी. सिवाय ऊपर लिखे मकान खर्चके, आज तक रु० ९६३८४- ३- ४ सामान ख़रीदनेमें ख़र्च होचुके हैं.

यह हाल हमने विक्रमी १९४५ फाल्गुन शुक्ल १४ [हि० १३०६ ता० १३ रजब = ई० १८८९ ता० १६ मार्च] को राव बहादुर ठाकुर गोविन्दसिंहके साथ वहां जाकर खुद देखने बाद, और इस म्यूज़िअमकी तीसरी रिपोर्ट, जो सर्जनमेजर हेन्डली साहिबने हमारे पास भेजी, उससे लिखा है.

अगर्चि राज्य जयपुरके सरिश्तह तालीमका किसी क़द्र बयान जुग्राफ़ियेमें होचुका है, लेकिन् वह तफ्सीलवार और काफ़ी न समझा जाकर यहांपर मुफ़स्सल दर्ज किया जाता हैः-

ख़ास राजधानी शहर जयपुरमें सबसे बड़ा मद्रसह 'महाराजा कॉलेज' नामसे मश्हूर है, जिसकी बुन्याद महाराजा रामसिंह २ के अह्द विक्रमी १९०२ [हि० १२६१ = ई० १८४५] में डाली गई; और इसकी तालीम व तर्बियतका इन्तिज़ाम पंडित शिवदीन, मुन्शी कृष्णस्वरूप व पंडित वंशीधरके सुपुर्द किया गया; लेकिन् क़ाइम होनेके ज़मानहसे विक्रमी १९२४ [हि० १२८४ = ई० १८६७] तक कॉलेजमें कुछ तरक़ी न होनेके सबब महाराजाने तीन बंगाली कलकत्तेसे बुलाकर कॉलेजमें नियत किये, जिनकी मिह्नत और खुश इन्तिज़ामीसे कॉलेजने बहुत रौनक़ पाई, और

तालिबइल्मोंकी तादाद भी रोज़ बरोज़ बढ़ती गई. अब यह कॉलेज राजपूतानह में सबसे बढ़कर है; इसमें अंग्रेज़ी, संस्कृत, अरबी, फ़ार्सी, उर्दू, और हिन्दीकी तालीम दी जानेके सिवा फ़न् इन्जिनिएरी और सर्वेइंग याने पैमाइश और लेवलिंग याने ज़मीनकी ऊंचाई नीचाईका हाल दर्याफ़्त करना भी सिखाया जाता है. हर साल कई तालिबइल्म एन्ट्रेन्स और फ़र्स्ट आर्ट्सका इम्तिहान देनेके लिये कल्कत्तह युनिवर्सिटीको जाते हैं, और अक्सर कामयाब होते हैं. चांद पौलका स्कूल इस कॉलेजकी एक शाख़ है, जिसमें फ़ार्सी व हिन्दी पढ़ाई जाती है. शहरमें एक संस्कृत कॉलेज भी है, जो विक्रमी १९०२ [हि० १२६१ = .ई० १८४५] में जारी हुआ; उसमें संस्कृत ज़बानकी तालीम बहुत अच्छी होती है, और वहांसे मुस्तइद पंडित तय्यार होकर निकलते हैं.

ठाकुरोंका मद्रसह शुरूमें पंडित शिवदीनके ज़मानेमें इस ग़रज़से क़ाइम किया गया था, कि राज्यके सर्दार व जागीरदारोंके लड़के तहसील इल्म करके लियाक़त हासिल करें. और राज्यकी उम्दह खिदमतोंके लाइक़ हों; लेकिन् तजिबहसे यह पाया गया, कि राजपूत लोगोंका शौक़ इल्मकी तरफ़ नहीं है, बल्कि वे क़दीम दस्तूरोंकी पाबन्दीके ख़यालातसे इल्म व हुनर सीखना अपनी हतकका बाइस समझते हैं; उन का एतिक़ाद यह है, कि पढ़ना लिखना ब्राह्मण और बनियोंका काम है, अमीर लोग इस क़िस्मका काम अपने मातहत अहल्कारोंसे लेसक्ते हैं, तो फिर उनको पढ़ने लिखनेमें कोशिश करना बेफ़ाइदह है; और इसी वजूहसे मद्रसेकी तरक़्क़ी नहीं हुई. अगर्चि मद्रसेको क़ाइम हुए कई साल होचुके थे, लेकिन् विक्रमी १९२४ [हि० १२८४ = .ई० १८६७] में देखागया, तो स्कूलमें अहल्कारोंके ८ लड़के और राजपूतोंके सिर्फ़ पांच ही थे; तब दूसरे साल महाराजाने इस अब्तरीको देख कर, जो किसी क़द्र राजपूतोंकी बेपर्वाई और किसी क़द्र अगले उस्तादोंकी ग़फ़लत और बदइन्तिज़ामीसे थी, नया बन्दोबस्त करके, सर्दारोंको अपने लड़कोंके मद्रसे में भेजनेकी ताकीद की; और बाबू संसारचन्द्रसेनको इस मद्रसेका हेड मास्टर बनाया; उस वक़्से दिन ब दिन लड़कोंकी तादाद व .इल्ममें तरक़्क़ी होने लगी. विक्रमी १९३१ - ३२ [हि० १२९१ - ९२ = .ई० १८७४ - ७५] में तालिब .इल्मोंकी तादाद ९६ थी.

ज़नानह मद्रसह भी एक मुद्दतसे मुक़र्रर था, लेकिन् उसकी हालत भी अब्तरी पर थी, विक्रमी १९२४ [हि० १२८४ = .ई० १८६७] तक सिर्फ़ २५ लड़कियां हिन्दीकी इब्तिदाई किताबें पढ़ती थीं. इस हालतको देखकर इसी सालमें महाराजाने मिस्ट्रेस ऑकल्टनको कलकत्तेसे बुलाकर हेड मिस्ट्रेस मुक़र्रर किया, जिसने लड़कियोंको तालीम देनेमें बहुत कुछ कोशिश की, और ज़रदोज़ी व सोज़नीका काम भी सिखलाया.

इस कामकी आमदनीमें, लड़कियोंकी तादाद बढ़जानेके सबब, पांच लड़कियां तनख़्वाहपर पढ़ानेके लिये मुक़र्रर कीगई. विक्रमी १९३० [हि० १२९० = .ई० १८७३] से इस मद्रसेकी हेड मिस्ट्रेस, मिस्ट्रेस ज़्वायसी है, जिनके इन्तिज़ामसे स्कूल की पहिलेके मुवाफ़िक़ही रौनक़ और तरक़्क़ी है. विक्रमी १९३१-३२ [हि० १२९१-९२ = .ई० १८७४-७५] में इस मद्रसेकी चन्द शाखें और मुक़र्रर हुईं; एक ट्रेनिंग स्कूल, कि जिसमें लड़कियां इल्म हासिल करके पाठक मुक़र्रर हुआ करें, दूसरा अपर स्कूल, कि उसमें दौलतमन्द लोगोंकी लड़कियां पढ़ा करें. इसी तरह शहरमें १० शाखें मुक़र्रर होकर लड़कियोंकी तादाद विक्रमी १९३२ [हि० १२९२ = .ई० १८७५] में एक दम ५६४ को पहुंच गई, जो विक्रमी १९३१ [हि० १२९१ = .ई० १८७४] में सिर्फ़ १६७ थी. उस स्कूलमें सिवाय हिन्दीके फ़ार्सी और उर्दू भी चन्द जमाअ़तोंको पढ़ाई जाती है.

कारीगरीका मद्रसह बनानेकी सलाह महाराजाको विक्रमी १९२१ [हि० १२८० = .ई० १८६४] में बमक़ाम कलकत्ता सर चार्ल्स ट्रेविलिअन साहिबने दी थी, और बाद उसके डॉक्टर हंटर साहिब मुतअ़ल्लिक़ मद्रसे कारीगरीने, जो लॉर्ड नेपियर साहिबके साथ हिन्दुस्तानके मुख़्तलिफ़ हिस्सोंकी कारीगरी और कारख़ानोंका हाल दर्याफ़्त करनेके लिये आये थे, डॉक्टर वैलिन्टाइनकी ख़्वाहिशके मुवाफ़िक़ जयपुरमें जाकर वहांका पत्थर, धातु वग़ैरह चीज़ें मुतअ़ल्लिक़ सनअ़त, कि जिनकी तरक़्क़ी कारीगरीके ज़रीएसे बहुत कुछ होसक्ती है, देखकर, महाराजाको दस्तकारीके कामोंकी तरक़्क़ीके लिये मुतवज्जिह किया, जिसपर उन्होंने विक्रमी १९२४ ज्येष्ठ [हि० १२८४ सफ़र = .ई० १८६७ जून] में कारीगरीका मद्रसह मुक़र्रर किया. कुछ अ़र्से बाद डॉक्टर डिफ़ेबिकने, जो देवलीकी छावनीमें थे, इत्तिफ़ाक़न् जयपुरमें आकर महाराजासे इस कारख़ानेके इन्तिज़ाम की दर्ख़्वास्त की. जो मन्ज़ूर होकर उक्त साहिब सुपरिन्टेन्डेण्ट मुक़र्रर हुए. उसी अ़र्सेमें वह किसी ज़रूरतके सबब छः महीनेकी रुख़्सत लेकर गये, और फिर विक्रमी १९२६ [हि० १२८६ = .ई० १८६९] में वापस आकर काम शुरू किया. कारख़ानेमें उस वक़्त कोई लाइक़ उस्ताद नहीं था, इसलिये शुरूमें लड़कोंको नक़्शह खेंचनेका काम सिखाना शुरू किया. बाद उसके दो कारीगर एक लुहार दूसरा कुम्हार मद्रासमे, दो लकड़ीका काम करने वाले सहारनपुरसे, और ज़रदोज़ीका काम सिखाने वाले बनारससे बुलाये गये; संग तराशीका काम जयपुरमें बहुत उम्दह होता है, इसलिये इस कामके उस्ताद शहरमेंसे नौकर रक्खे गये. इन सब कामोंकी तालीम और सिवा उनके क़लमी तस्वीर खेंचनेका काम, फ़ोटोग्राफ़, कांसी पीतलके बर्तन बनाना, और हर क़िस्मका सादा व खुदाईका काम सिखलाना शुरू किया

गया. हरएक काम सीखने वालेको दो माह तक इम्तिहानन् काम करने बाद काम की उन्नत और पहिली जमाअ़त वालोंको एक रुपया माहवार, और इसी तरह चौथी जमाअ़तमें दाख़िल होनेपर ४ रुपये माहवार वज़ीफ़ा देना मुक़र्रर किया गया; लेकिन् यह अ़मल लड़कोंको कारीगरी सीखनेका शौक़ दिलानेके लिये थोड़े ही अ़रसे तक रहा. इस मद्रसेमें एक कुतुबख़ानह था, जिसमें सिवा संस्कृत किताबोंके, जो पहिलेसे थीं, महाराजाने हर एक इ़ल्म, फ़न, और ज़बानकी ६००० जिल्दें इंग्लिस्तानसे मंगवाकर शौक़ीन लोगोंके पढ़नेके लिये रखवाई थीं, और हफ्तेमें दो बार इ़ल्म तिब्बी (वैद्यक) और तबीई़ (पदार्थ विद्या) पर डॉक्टर वैलिन्टाइन साहिब और जर्रेसक़ील (शिल्प शास्त्र) पर कप्तान जेकब साहिब लेक्चर (व्याख्यान) दिया करते थे, जिसे सुननेके वास्ते शहरके शरीफ़ लोग और मद्रसेके होश्यार तालिब इ़ल्म और ख़ुद महाराजा तश्रीफ़ लाते थे.

विक्रमी १९२६ [हि० १२८६ = ई० १८६९] में मदरासके उस्तादोंकी जगह कई दूसरे उस्ताद दिल्ली, लखनऊ और कानपुरसे बुलाये गये, इस सबबसे कि मदरासके उस्ताद यहांकी बोलीसे वाक़िफ़ नहीं थे, इसलिये लड़कोंको उनका बयान समझमें नहीं आता था. अगर्चि इस कामके शुरू करनेमें कई तरहकी मुश्किलें पेश आईं, मगर डॉक्टर डिफ़ेबिक साहिबने अपनी कोशिश और पैरवीसे कारख़ानेको जारी रखकर थोड़े ही अ़रसेमें बहुत रौनक़ दी; इन डॉक्टर साहिबको सिर्फ़ यही काम सुपुर्द नहीं था, बल्कि उस ज़मानेकी बनी हुई तमाम मुफ़ीद तामीरातकी तज्वीज़ और नक़्शोंमें उनकी सलाह लीगई थी. स्कूलमें लुहार व खातीका काम, संगतराशी, ख़र्राद, जवाहिर ख़राशी, मिट्टीके बर्तन बनाना, जिल्दसाज़ी, केमिस्टरी, लिथोग्राफ़, टाइपोग्राफ़, मुलम्मा साज़ी, फ़ोटोग्राफ़ और ज़रदोज़ी वग़ैरहका काम सिखाया जाता है; और हर फ़नके शागिर्द अपना अपना काम बड़ी सफ़ाईके साथ करते हैं. शागिर्दोंकी तादाद सिवा मुसव्विरोंके विक्रमी १९२८ [हि० १२८८ = ई० १८७१] में ६४ थी, जो डॉक्टर डिफ़ेबिक साहिब सुपरिन्टेन्डेन्ट मद्रसे कारीगरीने विक्रमी १९२७-२८ [हि० १२८७-८८ = ई० १८७०-७१] की रिपोर्टमें दर्जकी है; और विक्रमी १९३१ [हि० १२९१ = ई० १८७४ में १०४ तक पहुंची. विक्रमी १९२८ कार्तिक शुक्ल ४ [हि० १२८८ ता० ३ रमज़ान = ई० १८७१ ता० १६ नोवेम्बर] के रेज़ोल्युशन गवर्मेण्ट सीग़े माल नम्बरी ४९१० के मुवाफ़िक़ डॉक्टर डिफ़ेबिक साहिबका इस मद्रससे विक्रमी १९२९ आश्विन कृष्ण ३० [हि० १२८९ ता० २९ रजब = ई० १८७२ ता० १ ऑक्टोबर] को अ़लह्दह होना ज़रूरी ख़याल किया गया. इसी सालके जूनमें महाराजाने मिस्टर स्कोरजी साहिब हेड-मास्टर मद्रसे अकोलाको बुलाया, जो ऑक्टोबरकी ३ तारीख़को जयपुरमें आया; और दो साल

रहकर पूनाको चलागया. अब यह मद्रसह ऐसे लाइक़ शख़्सके बिदून संभाल तनज़्ज़ुलीकी हालतमें है. शुरू ज़मानेमें जैसी तरक़्क़ी शागिर्दोंने की, और कलकत्तेकी नुमाइशगाहमें इन्ऋाम हासिल किये, ये सब हालात डॉक्टर डिफ़ेबिककी सन् १८७०-७१ व १८७१-७२ की रिपोर्टोंको देखनेसे अच्छी तरह मालूम होसक्ते हैं, जो यहांपर ब सबब तवालतके दर्ज नहीं कीगई- (देखो वक़ाये राजपूतानह पहिली जिल्द- एष्ठ ८४२ से ५१ तक).

विक्रमी १९१८ [हि० १२७८ = ई० १८६१] में जयपुरमें मेडिकल स्कूल मुक़र्रर हुआ था, जो उस वक़्तसे डॉक्टर बर साहिब एजेन्सी सर्जन के इह्तिमाममें रहा. इस मद्रसेको तोड़ देनेकी बाबत विक्रमी १९२३ [हि० १२८३ = ई० १८६६] से बहस होरही थी; डॉक्टर बर साहिबकी रिपोर्ट पर गवर्मेएट हिन्दुस्तानसे इस बारेमें महाराजाकी राय तलब हुई. उनमें अव्वल बात यह है, कि डॉक्टर साहिबने फ़ी तालिबइल्म ५००, रुपया सालानह ख़र्च लिखा था, जिसपर कर्नेल ईडन साहिबकी तज्वीज़ हुई थी, कि अगर महाराजा चन्द लड़कोंको चाहें, तो कलकत्तेके मेडिकल स्कूलमें भेजा करें, ताकि ख़र्च भी बहुत कम लगे, और फ़ाइदह ज़ियादह हो; इस बातको महाराजाने मन्ज़ूर किया; लेकिन् डॉक्टर एवर्ट साहिब प्रिन्सिपल मेडिकल स्कूलने इस तज्वीज़को नापसन्द किया. आख़िरको विक्रमी १९२५ [हि० १२८५ = ई० १८६८] में गवर्मेएटके मन्शाके मुवाफ़िक़ मेडिकल स्कूल तोड़ा जाकर तालिबइल्मोंको आगरेके मेडिकल स्कूलमें भेजा जाना क़रार पाया. और डॉक्टर फ़्लिपर साहिब प्रिन्सिपलके पास विद्यार्थी भेजे गये.

सिवाय ऊपर लिखे मद्रसोंके, जो ख़ास राजधानी शहर जयपुरमें हैं, महाराजाने विक्रमी १९२४ [हि० १२८४ = ई० १८६७] में देहाती स्कूल क़स्बों व गावोंमें मुक़र्रर किये, और विक्रमी १९२५ [हि० १२८५ = ई० १८६८] में ठाकुर गोविन्दसिंह चौमूं वालेने, जो ख़ुद निहायत लाइक़ है, चौमूंमें मद्रसह क़ाइम किया. विक्रमी १९२४ [हि० १२८४ = ई० १८६७] से विक्रमी १९३२ [हि० १२९२ = ई० १८७५] तक क़स्बों व गावोंमें ४१२ मद्रसे व मक्तब क़ाइम किये गये, जिनमेंसे ३३ तो ख़ास राज्यके ख़र्चसे जारी हैं, और बाक़ी ३७९ को राज्यसे किसी क़द्र मदद दी जाती है. इन कुल मद्रसोंके विद्यार्थियोंकी संख्या विक्रमी १९३२ [हि० १२९२ = ई० १८७५] में ७९०५ थी. ख़ास शहरके मद्रसों और ज़िलोंके छोटे बड़े स्कूलोंके नक़्शे राजपूतानह गज़ेटियरसे यहां दर्ज किये जाते हैं.

सन् १८७४-७५ में कॉलेजों और पाठशालाओंकी आमद व ख़र्च वग़ैरहका नक़्शह

पाठशाला	मकाम.	कब जारी हुआ	सालके आख़ीर में तालिब इल्मोंकी तादाद				औसत रोज़ानह हाज़िरी	सालके आख़ीरमें हरएक ज़बान पढ़नेवाले तालिब इल्मोंकी तादाद							आमदनी	ख़र्च		मीज़ान	हर एक तालिब इल्मकी तालीम में सालानह औसत ख़र्च.
			हिन्दू	मुसलमान	क्रिश्चियन.	कुल		अंग्रेज़ी	फ़ार्सी	उर्दू	बंगाली	अरबी	संस्कृत	हिन्दी		मामूली	ग़ैर मामूली		
महाराजा कॉलेज	जयपुर	१८४४	६८४	१३७	४	८२५	५९७	६०२	३३७	२९७	०	६	५	१८४	२३८१२।≠)॥	२२३०५॥≠)॥	१५०६॥)	२३८१२।≠)॥	२८॥)॥२
संस्कृत कॉलेज	ऐजन	१८४५	२०८	०	०	२०८	१७८	०	०	०	०	०	१५४	५४	७४६०॥≠)	७६८८)	४२॥≠)	७४६०॥≠)	३५॥≠)०
चांदपोल ब्रैंच स्कूल	,,	१८४९	६०	१०	०	७०	५६	०	५०	०	०	०	२०	०	२८८॥)	२८८॥)	०	२८८॥)	४॥/)२
राजपूत स्कूल	,,	१८४२	५२	४	०	५६	३५	४८	३९	५	०	०	१	१२	५०६८॥।≠)	१८१२)	३२५७॥।≠)	५०६९॥।≠)	९०॥)॥
ज़नानह स्कूल	,,																		
दस्तकारीका स्कूल	शहर	१८६७	६५	३	०	६८	६०	०	०	०	०	०	०	६८					
मध्य	,,	१८७५	१७८	२३	०	२०१	१९३	०	०	३७	७	०	०	२०१					
हथरोल ब्रैंच	हथरोल	१८७४	३०	२	०	२५	२५	०	०	०	०	०	०	२५					
गंगा पोल	गंगापोल	,,	१००	१५	०	१००	९८	०	०	१५	०	०	०	१००					
घाट दर्वाज़ा	घाटदर्वाज़ा	१८७५	६५	९	०	७२	६९	०	०	०	०	०	०	७२					
चांदपोल ब्रैंच	चांदपोल	१८७४	४०	५	०	४५	४१	०	०	०	०	०	०	४५		३२०३)	१३२१॥≠)॥	४५२५॥≠)॥	८)४
	शहर	१८७५	२३	०	०	२३	२३	२३	०	२३	२३	०	०	२३					
ऊपरका दरजा ※	,,	१८७४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०					
साप्ताहिक अंग्रेज़ी दरजा॰	,,	,,	०	०	०	६०	०	०	०	०	०	०	०	०					
औरतोंके कामका दरजा	,,	,,	८	०	०	८	७	०	०	०	०	०	०	८					

※ अब बन्द होगया.
* अच्छी शिक्षा दीजाती है.

जयपुरके ज़िलोंकी छोटी पाठशालाओंका नक्शह.

ज़िला व पर्गनह.	फ़ार्सी पाठशालाओंकी तादाद.	हिन्दी पाठशालाओंकी तादाद.	कुल.	तालिब इल्मोंकी कुल तादाद.	कैफ़ियत.
हिंडौन.	१	१	२	९४	
सवाई माधवपुर.	१	१	२	६३	
चाटसू.	१	१	२	५७	
पर्गनह नवाई.	१	०	१	३७	
मलारना.	०	१	१	२३	
मालपुरा.	०	१	१	२५	
धौला.	१	०	१	२९	
वस्वा.	१	०	१	३५	
वैराट.	१	०	१	३२	
प्रयागपुरा.	१	०	१	२९	
तोरावाटी (रामगढ़).	१	१	२	५२	
सांभर.	१	०	१	३०	
श्री माधवपुर.	०	१	१	१८	
कोट वानावड़.	१	०	१	२८	
टोडा रायसिंह.	०	१	१	२९	
क़स्बह सांगानेर.	१	१	२	४३	
क़स्बह आंबेर.	०	१	१	३५	
शैखावाटी.	०	०	०	०	
उदयपुर.	१	०	१	३०	
झूंझणू.	१	०	१	७३	
ठिकानेके गांव.	८	१	९	८२	
मीज़ान.	२२	११	३३	८४४	

जयपुरके मक्तब और पाठशाला, जिनकी मदद किसीक़द्र राज्यकी तरफ़से होती है.

मकान.	तादाद मक्तब.	तादाद पाठशाला.	मीज़ान.	तादाद तालिबइल्म.	कैफ़ियत.
सवाई जयपुर	४४	९१	१३५	१३०४	
ज़िला जयपुर	२	३९	४१	७०२	
ज़िला हिंडौन	०	७	७	११२	
सवाई माधवपुर	१	८	९	२०५	
चाटसू	०	८	८	११७	
मलारना	३	१३	१६	२९९	
दौसा	१	२३	२४	४१९	
बस्वा	१	१५	१६	३०५	
तोरावाटी	२	२९	३१	११३७	
पर्गनह सांभर	०	३	३	८२	
ज़िला गंगापुर	२	१५	१७	३०९	
ज़िला लालसोट	०	६	६	२७३	
टोडा भीम	१	६	७	१२९	
ज़िला शेखावाटी	७	३१	३८	१०७०	
मालपुरा	०	८	८	२७३	
फागी	१	४	५	१३८	
बैराठ	०	५	५	७०	
कोटक़ासिम	१	२	३	४१	
मीज़ान	६६	३१३	३७९	७०६१	

विक्रमी १९१४ [हि० १२७३ = ई० १८५७] के ग़द्रमें ब्रिटिश गवर्मेंटने खैरख्वाहीके एवज़ कोटपूतलीका पर्गनह महाराजाको दिया. महाराजाने शहर जयपुरको बहुत ही आरास्तह किया, सड़कोंकी दुरुस्ती, पानीके नल, गैसकी रौशनी, रामनिवास बाग़की तय्यारी, सरिश्तह तालीमके लिये मद्रसोंकी बुनयाद और लाइब्रेरीकी तरक़्क़ी की. इन कामोंसे शहरको ऐसी रौनक़ दी, कि मानो महाराजा सवाई जयसिंहने दोबारह जन्म लेकर अपनी बाक़ी रही हुई मुरादको पूरा किया. मैंने तीन चार दफ़ा इन महाराजाके पास जानेका मौक़ा पाया, बात चीत करनेमें उनको बड़ा बुद्धिमान और तजरिबहकार देखा; अल्बत्तह पिछले दिनोंमें बद हज़्मीकी

शिकायत वग़ैरह बीमारियोंसे सुस्त होगये थे; लेकिन् पहिले रियासतका इन्तिज़ाम बहुत अच्छा करदिया था, जिससे कोई ख़लल नहीं आया. मैंने उनका रोब हर एक आदमी पर ऐसा देखा, कि मानो महाराजा उसके पास खड़े हैं. जयपुरकी रियासतके चालाक आदमियोंपर ऐसा रोब जमालेना आसान काम नहीं था. कुल काम व इन्तिज़ाम रियासतका एक कॉन्सिलके ज़रीएसे करते थे, जिसकी बुन्याद उन्हींके वक़्में पड़ी थी.

विक्रमी १९२६ [हि० १२८६ = ई० १८६९] से नव्वाब गवर्नर जेनरलकी कॉन्सिलमें महाराजा व तौर मेम्बरके मुक़र्रर हुए, और कई बार कलकत्ते व शिमले जाकर इज्लासमें शामिल हुए. विक्रमी १९३२ [हि० १२९२ = ई० १८७५] में, जब बड़ौदेके गायकवाड़पर सर्कारी रेज़िडेन्टको ज़हर दिलवानेका मुक़द्दमह क़ाइम हुआ, और एक कमिशन तह‌ ... भी उसमें शरीक रक्खे गये. पंडित शिव ... और फिर ठाकुर फ़त्हसिंहको महाराजाने ... ाक़त उक्त पंडित से ज़ियादह सादित ... का सालानह हर-जानह देने बाद एक ... हुआ. आख़िर-कार विक्रमी १९३७ ... ५ = ई० १८८० ता० १७ सेप्टेम्बर] ... मरनेका अफ़्सोस ब्रिटिश गवर्मेएट और ... . उनके कोई सन्तान न रहनेसे ठा ... र बिठाया गया, और उनका नाम दूसरे ... ोपर विद्यमान हैं.

यह विक्रमी १९ ... ेपर बैठे. शुरूमें कॉन्सिलकी निगरानी ए ... : विक्रमी १९४२ [हि० १३०३ = ई० ... अंग्रेज़ीकी तरफ़से मिले. इन महाराजाको ... ८] में कर्नेल सी० के० एम० वाल्टर साहिब ... त, सर्कार अंग्रेज़ीसे अव्वल दरजहका तमग़ा ... आइ० इनायत हुआ.

विषय-सूची

पृष्ठ संख्या
दो शब्द १—२
भूमिका क—ञ
१ विषय-प्रवेश १—१८
इस्लामका रहस्यवाद—सूफियोंका उदार दृष्टिकोण—रहस्यवाद-का अर्थ—रहस्यवाद, एक जीवन दर्शन—विभिन्न धर्मोंके रहस्यवादियोंका मत एक ही दृष्टिकोण—रहस्यवादीके लिए आत्मा परमात्माका सम्बन्ध—रहस्यवादीका चरम लक्ष्य—इस्लाममें रहस्यवाद और सूफी साधक।
२ इस्लाम धर्म और सन्यास १९—४२
इस्लाम धर्ममें सन्यासका स्वरूप, मुहम्मद साहब और हीरा पहाड़—प्रारम्भिक कालमें इस्लामके अनुयायी और सन्यास—सन्यास तथा कुरान और हदीस—सन्यासकी प्रवृत्तिके मूलमें अल्लाह और नरकका भय—संसारके प्रति उदासीनता—तौबा (प्रायश्चित्त)—आहार और निराहार—पोशाक—ऊनी चोगे का व्यवहार—गिरजा—प्रार्थना—सांसारिक वस्तुओंका त्याग और दीनता।
अरब देशोंकी तत्कालीन राजनीतिक और सामाजिक अवस्था ४३—९८
अरब और ईरान—अरबोंकी प्रकृति एवं रहन सहन—अरबोंके जीवनमें ऊँटका स्थान—इस्लाम पूर्व अरबोंके विश्वास—इस्लामका उदय—हज़रत मुहम्मद—मक्का मदीना—प्रारम्भिक चार खलीफा—खलीफा युगके तीन भाग—मुआविया—उमैय्या वंश—अब्बासी खलीफोंका युग—हारूँ अल रशीद—बरमक—मामून—तुर्कोंका प्रभुत्व—मुतवक्किल—अरबोंका साम्राज्य।

आज कल मुसाहबतका काम बंगाली बाबू कान्तिचन्द्र अंजाम देता है, जिसको सर्कारी तरफ़से ज़ाती तौरपर 'राव बहादुर' का ख़िताब मिला है. इलाक़े और सद्र की कुल कचहरियोंका अपील कॉन्सिलमें होता है.

रियासत जयपुरके ख़ास जागीरदार और ठाकुर.

रियासत जयपुरके मुख्य जागीरी ठिकानोंमें खेतड़ी, सीकर, मनोहरगढ़, मंडावा, नवलगढ़, सूरजगढ़, खंडेला वग़ैरह शेख़ावत, और उणियारा, लदाना वग़ैरह नरूका, और दूणी वग़ैरह गोगावत; चौमूं, सामोद, वग़ैरह नाथावत; डिग्गी, पचेवर, दूदू वग़ैरह खंगारोत; अचरोल वग़ैरह बलभद्रोत; बगरू वग़ैरह चतुर्भुजोत; झलाय, ईसरदा, बरवाड़ा वग़ैरह राजावत; और नायला, काणोता, गीजगढ़ वग़ैरह चांपावत इत्यादि बहुतसे ठिकानेदार हैं, जिनका हाल किसी मौक़ेपर मुफ़स्सल लिखाजायेगा.

जयपुरके ख़ास उमराव और ठाकुर बारह कोटड़ी (गोत्री) कहलाते हैं; और यह नाम जयपुरके राजा पृथ्वीराजने अपने बारह बेटोंमेंसे हर एकको जागीर देकर क़ाइम किया था; दूसरे गोत्रियोंको भी, जो उससे पहिले राजाओंके हाथसे मुक़र्रर कियेगये थे, इनमें शामिल समझते हैं. बारह गोत्रियोंमेंसे तीन तो निर्वंश होगये, बाक़ीके नाम नीचे लिखे जाते हैं:-

जयपुरके बड़े जागीरदारोंका नक़्शह. (१)

नम्बर.	कोटड़ी (गोत्र).	नाम ठिकाना.	ख़ास ठिकाने की जमा.	भाई बेटोंके ठिकाने.	कुल घरानेकी जमा.	कैफ़ियत.
१	पूर्णमलोत	निमेरा	१०००० रु०	१	१०००० रु०	पृथ्वीराज नियत १२ कोटड़ी.
२	भीमपोता	(निर्वंश)	०	०	०	
३	नाथावत	चौमूं	७०००० रु०	१०	२२०००० रु०	
४	पचायणोत	समरा	१७७०० रु०	३	२४७०० रु०	
५	सुल्तानोत	सूरत	२२००० रु०	०	०	
६	खंगारोत	डिग्गी	५०००० रु०	२२	६००००० रु०	
७	राजावत	चन्दलाय	२०००० रु०	१६	१९८१३७ रु०	
८	प्रतापजी	(निर्वंश)	०	०	०	
९	बलभद्रोत	अचरोल	२८८५० रु०	२	१३०००० रु०	
१०	शिवदासजी	(निर्वंश)	०	०	०	
११	कल्याणोत	कलवाड़ा	२५००० रु०	१९	२४५००० रु०	
१२	चतुर्भुजोत	बगरू	४०००० रु०	६	१००००० रु०	

(१) यह नक़्शह हमारी दानिस्तमें जैसा चाहिये, नहीं मिलसका, इससे लाचार राजपूतानह गज़ेटियरके मुताबिक़ छाप दिया गया है.

गोगावत	दूनी	७०००० रु०	१३	१६७९०० रु०	
खुमबानी	बांसखो	२१००० रु०	२	२३७८७ रु०	
खूमावत	महार	२७५३८ रु०	६	४०७३८ रु०	
शिवब्रह्मपोता	नीन्दड़	१०००० रु०	३	४९५०० रु०	
बनवीरपोता	बालखोह	१९००० रु०	३	२६५७५ रु०	
नरूका	उणियारा	२००००० रु०	६	३००००० रु०	
बांकावत	लवान	१५००० रु०	४	३४६०० रु०	
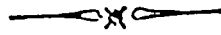
खेतड़ी- शैख़ावत राजा अजीतसिंहका ठिकाना है, जिसमें चार पर्गने खेतड़ी, बीबई, सिंघाणा और झूंझणू हैं. ठिकानेकी आमदनी ३५०००० रुपये सालानह मेंसे ८०००० रुपये रियासत जयपुरको ख़िराजके दिये जाते हैं. सिवाय इसके सर्कार अंग्रेज़ीकी तरफ़से पर्गनह कोटपुतली, जिसकी सालानह आमदनी क़रीब १००००० एक लाख रुपयेके है, इस राजाकी जागीरमें है, जो राजा अभयसिंहको लॉर्ड लेकने मरहटोंकी लड़ाईमें चम्बलके किनारे सेंधियाकी फ़ौजके मुक़ाबलेमें कर्नेल मॉन्सनको मदद देनेके एवज़ बख़्शा था.

सीकर- एक बड़ा ठिकाना शैख़ावत राव राजा माधवसिंहका है, जिसकी सालानह आमदनी ४००००० रुपयेकी है, इसमेंसे ४०००० रुपया रियासत जयपुरको सालानह ख़िराजका दिया जाता है.

पाटन- एक छोटा ख़िराज गुज़ार ठिकाना जयपुरके उत्तर कोट पुतली और खेतड़ीके बीच पहाड़ी ज़िले तोरावाटीमें दिल्लीके प्राचीन तंवर राजाओंके ख़ानदानमें है, जो मुसल्मानोंकी अमल्दारीके बाद पाटनमें आजमा, और तोरावाटी सूबहके इर्द गिर्द कई बार हल चल पड़नेपर भी साबित क़दमीसे क़ाइम रहा.

उणियारा-रियासत जयपुरके बड़े जागीरदारोंमेंसे नरूका फ़िर्केके सर्दार गुमानसिंहका ठिकाना रियासतके दक्षिण और ज़रखेज़ हिस्सेमें वाके है, जिसकी सालानह आमदनी तक़्रीबन् १७५००० रुपया है; इसमेंसे ४५००० रुपया राज्य जयपुरको दियाजाता है. मौजूद राव राजाकी कम उम्रीके सबब यह ठिकाना कुछ अरसहसे राज्य जयपुरकी निगरानीमें है.

शैख़ावाटी ज़िलेके बड़े ठिकाने बस्वा, नवलगढ़ और सूरजगढ़ हैं. इन ठिकानोंकी आमदनीका हाल अच्छी तरह मालूम नहीं है, लेकिन् अन्दाज़ेसे मालूम हुआ, कि बस्वाकी आमदनी ७०००० रुपये सालानहसे कम नहीं; और बाक़ी हर एककी ५०००० रुपया है, जिसमेंसे पांचवां हिस्सह रियासत जयपुरको ख़िराजका

दियाजाता है. राज्य जयपुरके बाक़ी कुल छोटे मातहत ठिकाने सिवाय दो एकके खुश और आसूदा हैं, इन्तिज़ाम दुरुस्त और रअ़य्यत खुश हाल है.

एचिसन साहिबकी किताब जिल्द ३, अह्दनामह नम्बर २४.

अह्दनामह जयपुर (या जयनगर) के राजाके साथ, जो सन् १८०३ ई॰ में क़रार पाया.

दोस्ती और एकताका अह्दनामह ऑनरेबूल अंग्रेज़ी ईस्ट इन्डिया कंपनी और महाराजा धिराज राज राजेन्द्र सवाई जगत्सिंह बहादुरके दर्मियान, हिज़ एक्से-लेन्सी जेनरल जिरार्ड लेक, हिन्दुस्तानकी अंग्रेज़ी फ़ौजोंके सिपाह सालारकी मारिफ़त, हिज़ एक्सेलेन्सी मोस्ट नोबूल रिचर्ड मारक्विस ऑफ़ वेलेस्ली, नाइट ऑफ़ दी मोस्ट इलस्ट्रिअस ऑर्डर ऑफ़ सेन्ट पेटेरिक, वन ऑफ़ हिज़ ब्रिटॅनिक मैजिस्टीज़ मोस्ट ऑनरेबूल प्रीवी कॉन्सिल, गवर्नर जेनरल इन् कॉन्सिलके दिये हुए इख़्तियारातसे, जो उनको हिन्दुस्तानके तमाम अंग्रेज़ी इलाक़ों और हिन्दुस्तानकी तमाम मौजूदह अंग्रेज़ी फ़ौजोंकी बाबत हासिल हैं, ऑनरेबूल अंग्रेज़ी ईस्ट इन्डिया कंपनीकी तरफ़से, और महाराजा धिराज राज राजेन्द्र सवाई जगत्सिंह बहादुरके, उनकी ज़ात ख़ास, उनके वारिसों और जानशीनोंकी तरफ़से क़रार पाया.

शर्त पहली- हमेशहकेलिये मज्बूत दोस्ती और एकता ऑनरेबूल अंग्रेज़ी कंपनी और महाराजाधिराज जगत्सिंह बहादुर और उनके वारिसों व जानशीनोंके दर्मियान क़ाइम हुई.

शर्त दूसरी- चूं कि, दोनों सर्कारोंके दर्मियान दोस्ती क़रार पाई, इसलिये दोस्त और दुश्मन एक सर्कारके, दोस्त और दुश्मन दोनोंके समझे जावेंगे; और इस शर्तकी पाबन्दीका दोनोंको हमेशह लिहाज़ रहेगा.

शर्त तीसरी- ऑनरेबूल कंपनी किसी तरहका दख़्ल मुल्की इन्तिज़ाममें, जो अब महाराजा धिराजके क़ब्ज़हमें है, नहीं देगी; और उससे ख़िराज तलब न करेगी.

शर्त चौथी- उस हालतमें, कि ऑनरेबूल कंपनीका कोई दुश्मन हमलहका इरादह उस मुल्कपर करे, जो हिन्दुस्तानमें कंपनीके क़ब्ज़हमें है, या थोड़े अ़र्सहसे उनके क़ब्ज़हमें आया है, महाराजाधिराज अपनी कुल फ़ौज कंपनीकी फ़ौजकी मददको भेज देंगे; और आप भी पूरी कोशिश दुश्मनके निकाल देनेमें करके दोस्ती और मुहब्बतमें कोई कमी न रक्खेंगे.

शर्त पांचवीं- जो कि इस अ़ह्दनामहकी दूसरी शर्तके मुवाफ़िक़ ऑनरेबूल कंपनी ग़ैर दुश्मनके मुक़ाबिल मुल्की हिफ़ाज़तकी ज़िम्मेदार होती है, इसलिये महाराजा धिराज इस तह्रीरके ज़रीएसे वादह करते हैं, कि अगर कोई तक्रार उनके और किसी

दूसरी रियासतके दर्मियान पैदा होगी, तो महाराजाधिराज उसकी हक़ीक़त अंग्रेज़ी सर्कारमें बयान करेंगे, ताकि सर्कार उसका वाजिबी फ़ैसलह करनेकी कोशिश करे; और अगर दूसरे फ़रीक़की ज़िद और ज़बर्दस्तीसे वाजिबी फ़ैसलह तै न पावे, तो महाराजा धिराज सर्कार कंपनीसे मददकी दर्ख्वास्त करेंगे. अगर मुआमलह ऊपरके बयानके मुवाफ़िक़ होगा, तो मदद दीजावेगी; और महाराजा धिराज वादह करते हैं, कि जो कुछ ख़र्च इस मददका होगा, उस दस्तूरके बमूजिब, जो और रियासतोंके साथ क़रार पाये हैं, वह अदा करेंगे.

शर्त छठी- महाराजा धिराज इस तह्रीरके ज़रीएसे वादह करते हैं, कि चाहे वह अपनी फ़ौजके पूरे हाकिम हैं, लेकिन् लड़ाईके वक़्त या लड़ाईका जब ख़याल हो, वह अंग्रेज़ी फ़ौजके कमानियरकी सलाहके मुवाफ़िक़, जिसके वह साथ होंगे, कार्रवाई करेंगे.

शर्त सातवीं- महाराजा धिराज किसी अंग्रेज़ी या फ़रांसीसी रिआया या यूरपके और किसी बाशिंदहको अपनी नौकरीमें या अपने पास सर्कार कंपनीकी रज़ामन्दीके बग़ैर नहीं रक्खेंगे.

ऊपरका अह्दनामह, जिसमें सात शर्तें दर्ज हैं, दस्तूरके मुवाफ़िक़ मक़ाम सहिन्द सूबह अक्बराबादमें तारीख़ १२ डिसेम्बर सन् १८०३ ई० मुताबिक़ २६ शअ्बान सन् १२१८ हिज्री और १४ माह पौष संवत् १८६० को हिज़ एक्सेलेन्सी जेनरल जिरार्ड लेक और महाराजा धिराज राज राजेन्द्र सवाई जगत्सिंह बहादुरके मुहर और दस्तख़त होकर मंज़ूर हुआ.

जब एक अह्दनामह, जिसमें ऊपरकी सात शर्तें दर्ज होंगी, हिज़ एक्सेलेन्सी मोस्ट नोब्ल गवर्नर जेनरल इन कॉन्सिलके मुहर और दस्तख़तके साथ महाराजा धिराजको दिया जायगा, तो हिज़ एक्सेलेन्सी जेनरल लेककी मुहर और दस्तख़तका यह अह्दनामह वापस होगा.

* * * * *
* कंपनीकी *
* मुहर. *
* * * * *

(दस्तख़त) वेलेज़्ली.

इस अह्दनामहको गवर्नर जेनरल इन कॉन्सिलने ता० १५ जैन्युअरी, सन् १८०४ ई० को तस्दीक़ किया.

(दस्तख़त) जे० एच० बारलो.
(दस्तख़त) जी० अडनी.

अह्दनामह नम्बर २५.

अह्दनामह ऑनरेबल अंग्रेज़ी ईस्ट इन्डिया कम्पनी और महाराज सवाई जगत्सिंह वहादुर राजा जयपुरके दर्मियान, सर चार्ल्स थिऑफ़िलस मेटकाफ़की मारिफ़त ऑनरेबल कम्पनीकी तरफ़से, जिसको हिज़ एक्सेलेन्सी मोस्ट नोबल मार्किस ऑफ़ हेस्टिंग्ज़, के० जी० गवर्नर जेनरल वगैरहकी तरफ़से इख्तियार मिले थे, और ठाकुर रावल वैरीसाल नाथावतकी मारिफ़त, जिसको राज राजेन्द्र श्री महाराजाधिराज सवाई जगत्सिंहकी तरफ़से इख्तियार मिले थे, तै पाया.

शर्त पहली- हमेशह दोस्ती, एकता और खैरख्वाही ऑनरेबल कम्पनी और महाराजा जगत्सिंह और उनके वारिस व जानशीनोंके दर्मियान क़ाइम रहेगी; और दोस्त व दुश्मन एक सर्कारके दोस्त और दुश्मन दूसरी सर्कारके समझे जायेंगे.

शर्त दूसरी- अंग्रेज़ी सर्कार वादह करती है, कि वह मुल्क जयपुरकी हिफ़ाज़त करेगी, और उसके दुश्मनोंको खारिज करेगी.

शर्त तीसरी- महाराजा सवाई जगत्सिंह और उनके वारिस व जानशीन अंग्रेज़ी सर्कारकी फ़र्माबर्दारी करके उसकी बुज़ुर्गीका इक़ार करेंगे, और किसी दूसरे राजा या सर्दारसे सरोकार न रक्खेंगे.

शर्त चौथी- महाराजा और उनके वारिस व जानशीन किसी राजा या सर्दारके साथ अंग्रेज़ी सर्कारकी इत्तिला और मंजूरी बगैर मेल न रक्खेंगे, लेकिन् उनकी दोस्तानह लिखापढ़ी उनके दोस्तों और रिश्तहदारोंके साथ जारी रहेगी.

शर्त पांचवीं- महाराजा उनके वारिस व जानशीन किसीपर ज़ियादती नहीं करेंगे, अगर इत्तिफ़ाक़से किसीके साथ कुछ तक़ार होगी, तो वह सर्पंची और फ़ैसलहके लिये अंग्रेज़ी सर्कारके सुपुर्द होगी.

शर्त छठी- हमेशहके वास्ते रियासत जयपुरसे अंग्रेज़ी सर्कारको दिहलीके खज़ानहकी मारिफ़त नीचे लिखे हुए मुवाफ़िक़ खिराज दिया जायेगाः-

अव्वल सालमें इस अह्दनामहके लिखेजानेकी तारीखसे, मुल्की लूट मार और खराबीके सबब, जो मुद्दतसे जयपुरमें रही, खिराज मुआफ़.

दूसरे साल चार लाख रुपया सिक्कह दिहली.

तीसरे साल पांच लाख.

चौथे साल छः लाख.

पांचवें साल सात लाख.

छठे साल आठ लाख.

इसके बाद आठ लाख रुपया सालानह सिक्कह दिहली रहेगा, जब तक कि हासिल याने रियासतकी आमदनी चालीस लाख रुपयेसे ज़ियादह न होजावे.

और जब राजकी आमदनी चालीस लाख रुपये सालानहसे ज़ियादह हो जावेगी, तो पांच आना फ़ी रुपया ज़ियादतीका, जो चालीस लाखसे होगी, सिवा आठ लाख रुपये मामूलीके दिया जावेगा.

शर्त सातवीं- रियासत जयपुर अपनी हैसियतके मुवाफ़िक़ तलब किये जानेपर अंग्रेज़ी सर्कारको फ़ौजसे भी मदद देगी.

शर्त आठवीं- महाराजा और उनके वारिस व जानशीन क़दीम दस्तूरके मुवाफ़िक़ अपने मुल्क और मातहतोंके पूरे हाकिम रहेंगे, और ब्रिटिश दीवानी व फ़ौज्दारी वग़ैरहकी हुकूमत इस राजमें दाख़िल न होगी.

शर्त नवीं- जिस सूरतमें कि महाराजा अपनी दिली दोस्ती अंग्रेज़ी सर्कारकी निस्बत ज़ाहिर करेंगे, तो उनके आराम और फ़ाइदहका लिहाज़ और ख़याल रहेगा.

शर्त दसवीं- यह अह्दनामह, जिसमें दस शर्तें हैं, मिस्टर चार्ल्स थिऑफ़िलस मेटकाफ़ और ठाकुर रावल वैरीसाल नाथावतके मुहर और दस्तख़तसे ख़त्म हुआ; और इसकी तस्दीक़ हिज़ एक्सेलेन्सी मोस्ट नोबल गवर्नर जेनरल और राज राजेन्द्र श्री महाराजा धिराज सवाई जगत्सिंह बहादुरकी तरफ़से होकर आजकी तारीख़से एक महीनेके अन्दर आपसमें एक दूसरेको दिया जायेगा.

मक़ाम दिहली, ता० २ एप्रिल, सन् १८१८ ई०.

गवर्नर जेनरल की छोटी मुहर.	(दस्तख़त) सी० टी० मेटकाफ़.	मुहर.
	(दस्तख़त) ठाकुर रावल वैरीसाल नाथावत.	मुहर.
	(दस्तख़त) हेस्टिंग्ज़.	

इस अह्दनामहको हिज़ एक्सेलेन्सी गवर्नर जेनरल बहादुरने कैम्प तुलसीपुर में ता० १५ एप्रिल सन् १८१८ ई० को तस्दीक़ किया.

(दस्तख़त) जे० ऐडम,
सेक्रेटरी, गवर्नर जेनरल.

नम्बर २६.

हिन्दी अर्ज़ीका तर्जमह तमाम ठाकुरों और नौकरोंकी तरफ़से बाई भटियाणी जी साहिबाके नाम, जो ई० १८१९ ता० १२ मई को लिखी गई, और जिसकी नक़्ल

राय ज्वालानाथ और दीवान अमीरचन्दकी मारिफ़त जेनरल साहिबके पास भेजी गई थी, उसका मज्मून यह है:-

बाई साहिबा की ख़िझतमें तमाम ठाकुरों और मुतसद्दियोंकी तरफ़से यह अर्ज़ है, कि जबतक महाराजा श्री सवाई जयसिंहजी होश्यार न होंगे, हममेंसे कोई ख़ालिसह की ज़मीन अपने वास्ते न लेगा, और हम सब हमेशह नमक हलालीके साथ राजका काम अंजाम देते रहेंगे.

(दस्तख़त) रावल वैरीसाल.
(द०) किसनसिंह.
(द०) क़ाइमसिंह, बलभद्रोत.
(द०) उदयसिंह, खंगारोत.
(द०) राव चतुर्भुज.
(द०) वैरीसाल, खंगारोत.
(द०) सरूपसिंह, वीरपोता.
(द०) भारतसिंह, चांपावत.
(द०) सलासिंह, पंचावत.
(द०) कृपाराम, वक़ायेनवीस.
(द०) कृपाराम.
(द०) मंगलसिंह, खुमाली.
(द०) सवाईसिंह, कल्याणोत.
(द०) दीवान अमरचन्द.
(द०) कुंभावत महारवाला.
(द०) राय अमृतराम, पल्लीवाल.
(द०) बालमसिंह, राणावत.
(द०) बाघसिंह, चतुर्भुजोत.
(द०) बहादुरसिंह, राजावत.
(द०) लक्ष्मणसिंह, झूंझूणूंवाला.
(द०) राजा अभयसिंह, खेतड़ी.
(द०) मानसिंह, खंगारोत.
(द०) बख़्शी श्रीनारायण.
(द०) अमानसिंह, बंचावत.
(द०) शार्दूलसिंह, नरूका.
(द०) लछमण.
(द०) जीतराम, साह.
(द०) बांसखोह वाला.
(द०) राय ज्वालानाथ.
(द०) रावत् सरूपसिंह.
(द०) दीवान नवनिद्धराम.
(द०) साहजी मन्नालाल.
(द०) लालराम धायभाई.
(द०) अर्थराम बुज.

(दस्तख़त) रावल वैरीसाल.

हिन्दी अर्ज़ीका तर्जमह तमाम मुतसद्दियोंकी तरफ़से बाई साहिबाके नाम. ई० १८१९ ता० १२ मई.

बाई साहिबाकी ख़िझतमें तमाम मुतसद्दियोंकी तरफ़से अर्ज़ यह है, कि जब तक महाराजा श्री सवाई जयसिंहजी होश्यार होंगे, जो काम हमारे सुपुर्द दर्बारसे हुआ है, और जो हुक्म हमारे नाम सादिर होगा, उसकी तामीलमें हम नीचे लिखी हुई शर्तोंके पाबन्द रहेंगे:-

अव्वल- हम अपने ज़िम्मह्के कामको ईमान्दारीसे अंजाम देंगे, और किसीसे रिश्वत न लेंगे.

दूसरे- हम हर फ़स्लमें मुरुतारकी मारिफ़त सर्कारमें हिसाव दाख़िल करेंगे.

तीसरे- हम उसके सिवा, जिसने कि उदूल हुक्मी की होगी, और किसीसे दंड वुसूल न करेंगे.

चौथे- हम सर्कारी कामकी वावत आपसमें किसी तरह्की ज़ाहिरी और गुप्त तक़ार न रक्खेंगे.

(दस्तख़त) राय ज्वालानाथ.
(द०) दीवान अमरचन्द.
(द०) कृपाराम.
(द०) लक्ष्मण.
(द०) वौहरा जयनारायण.
(द०) सरूपचन्द, दारोग़ा.
(द०) रावल वैरीसाल.
(द०) दीवान नवनिद्धराम.
(द०) घासीराम.
(द०) वख़्शी श्रीनारायण.
(द०) जीवणराम.
(द०) ज्ञानचन्द.
(द०) मुन्शी श्रीलाल.
(द०) मुन्शी देवचन्द.
(द०) शिवजीलाल.
(द०) जीतराम साह.
(द०) वदनचन्द.
(द०) राय अमृतराम.
(द०) कृपा चरवुरा.
(द०) चतुर्भुज.
(द०) सुवागी मन्नालाल.
(द०) अर्हतराम.
(द०) संपतराम.
(द०) रामलाल धायभाई.
(द०) देवराम दारोग़ा.

अह्दनामह नम्बर २७.

जो अह्दनामह सन् १८१८ ई० में ब्रिटिश गवर्मेएट और जयपुर राज्यके दर्मियान तै हुआ, उसका ततिम्मह.

चूंकि वह क़ौल व क़रार जो उस अह्दनामहकी छठी शर्तमें मुन्दरज हैं, जो ब्रिटिश गवर्मेएट और जयपुर राज्यके दर्मियान ता० २ एप्रिल सन् १८१८ ई० को क़रार पाया, और ता० १५ एप्रिल सन् १८१८ ई० को तस्दीक़ किया गया, मुज़िर है, इस लिहाज़से ज़ैलकी शर्तोंपर इत्तिफ़ाक़ किया जाता हैः-

शर्त पहिली- उक्त अह्दनामहकी छठी शर्त इस अह्दनामहके रूसे मन्सूख़ की गई है.

शर्त दूसरी- महाराजा जयपुर खुद आप व अपने वारिसों और जानशीनोंके वास्ते ब्रिटिश गवर्मेंटको हमेशह सालियानह खिराज चार लाख सर्कारी रुपया देना कुबूल करते हैं.

शर्त तीसरी- यह अह्दनामह उस पहिले ज़िक्र किये हुए अह्दनामहका, जो सन् १८१८ .ई० में हुआ, ततिम्मह समझा जावेगा.

यह अह्दनामह कप्तान एडवर्ड रिडले कोलवर्न ब्रेडफ़र्ड, क़ाइम मक़ाम पोलिटिकल एजेण्ट जयपुरने अज़ तरफ़ ब्रिटिश गवर्मेण्ट, और मुम्ताजुद्दौलह नव्वाब मुहम्मद फ़ैज़अलीखां बहादुर, सी० एस० आइ० ने, अज़ तरफ़ राज्य जयपुर, उन कामिल इख्तियारातके रूसे, जो इस कामके लिये उनको दियेगये थे, ऑगस्ट महीनेकी ता० ३१, सन् १८७१ .ई० को मक़ाम शिमलेपर तै किया.

[मुहर.] (दस्तख़त) .ई० आर० सी० ब्रेडफ़र्ड, कप्तान, क़ाइम मक़ाम पोलिटिकल एजेण्ट, जयपुर.

[मुहर.] (दस्तख़त) नव्वाब मुहम्मद फ़ैज़अलीखां बहादुर.
(फ़ार्सी हुरूफ़में)

[मुहर.] (दस्तख़त) सवाई रामसिंह.

[मुहर.] (दस्तख़त) मेओ.

श्री मान् वाइसरॉय और गवर्नर जेनरल, हिन्दने ता० ४ सेप्टेम्बर सन् १८७१ .ई० को शिमले मक़ामपर तस्दीक़ किया.

(दस्तख़त) सी० यू० एचिसन्,
सेक्रेटरी गवर्मेण्ट हिन्द.

अह्दनामह नम्बर २८.

अह्दनामह बाबत लेन देन मुज्रिमोंके दर्मियान ब्रिटिश गवर्मेण्ट और श्री मान् सवाई रामसिंह महाराजा जयपुर, जी० सी० एस० आइ०, व उनके वारिसों और जानशीनोंके, एक तरफ़से मेजर विलिअम एच० बेनन, पोलिटिकल एजेण्ट, जयपुरने व इजाज़त लेफ्टिनेण्ट कर्नेल विलिअम फ्रेड्रिक एडन, एजेण्ट गवर्नर जेनरल राजपूतानहके उन कुल इख्तियारोंके मुवाफ़िक़, जो कि उनको राइट ऑनरेबल सर जॉन लेयर्ड मेअर लॉरेन्स, बैरोनेट, जी० सी० बी०, और जी० सी० एस० आइ०,

वाइसरॉय और गवर्नर जेनरल हिन्दने दिये थे, और दूसरी तरफ़से नव्वाब मुहम्मद फ़ैज़अ़लीख़ां बहादुरने उक्त महाराजा रामसिंहके दिये हुए इख़्तियारोंसे किया.

शर्त पहिली- कोई आदमी अंग्रेज़ी या दूसरे राज्यका बाशिन्दह अगर अंग्रेज़ी इलाक़हमें संगीन जुर्म करके जयपुरकी राज्य सीमामें आश्रय लेना चाहे, तो जयपुर की सर्कार उसको गिरिफ़्तार करेगी; और दस्तूरके मुवाफ़िक़ उसके मांगे जानेपर सर्कार अंग्रेज़ीको सुपुर्द करदेगी.

शर्त दूसरी- कोई आदमी जयपुरके राज्यका बाशिन्दह वहांकी राज्य सीमामें कोई संगीन जुर्म करके अंग्रेज़ी राज्यमें जाकर आश्रय लेवे, तो सर्कार अंग्रेज़ी वह मुज्रिम गिरिफ़्तार करके जयपुरके राज्यको क़ाइदहके मुवाफ़िक़ तलब होनेपर सुपुर्द करदेवेगी.

शर्त तीसरी- कोई आदमी, जो जयपुरके राज्यकी रअ़य्यत न हो, और जयपुरकी राज्य सीमामें कोई संगीन जुर्म करके फिर अंग्रेज़ी सीमामें आश्रय लेवे, तो सर्कार अंग्रेज़ी उसको गिरिफ़्तार करेगी; और उसके मुक़द्दमहकी तह्क़ीक़ात सर्कार अंग्रेज़ीकी बतलाई हुई अ़दालतमें कीजायेगी; अक्सर क़ाइदह यह है, कि ऐसे मुक़द्दमोंका फ़ैसलह उस पोलिटिकल अफ़्सरके इज्लासमें होगा, कि जिसके तह्तमें वारिदात होनेके वक़्पर जयपुरकी पोलिटिकल निगरानी रहे.

शर्त चौथी- किसी हालतमें कोई सर्कार किसी आदमीको, जो संगीन मुज्रिम ठहरा हो, देदेनेके लिये पाबन्द नहीं है, जब तक कि दस्तूरके मुवाफ़िक़ खुद वह सर्कार या उसके हुक्मसे कोई अफ़्सर उस आदमीको न मांगे, जिसके इलाक़हमें कि जुर्म हुआ हो; और जुर्मकी ऐसी गवाहीपर, जैसा कि उस इलाक़हके क़ानूनके मुवाफ़िक़ सहीह समझी जावे, जिसमें कि मुज्रिम उस वक़्त हो, उसकी गिरिफ़्तारी दुरुस्त ठहरेगी, और वह मुज्रिम क़रार दिया जायेगा, गोया कि जुर्म वहींपर हुआ है.

शर्त पांचवीं- नीचे लिखे हुए जुर्म संगीन जुर्म समझे जावेंगेः-

१- खून. २- खून करनेकी कोशिश. ३- वह्शियानह क़त्ल. ४- ठगी. ५- ज़हर देना. ६- ज़िनाबिल्जब्र (ज़बर्दस्ती व्यभिचार). ७- ज़ियादह ज़ख़्मी करना. ८- लड़का बाला चुरा लेजाना. ९- औरतोंका बेचना. १०- डकैती. ११- लूट. १२- सेंध (नक़्ब) लगाना. १३- चौपाया चुराना. १४- मकान जलादेना. १५- जालसाज़ी करना. १६- झूठा सिक्कह चलाना. १७- ख़्यानते मुज्रिमानह. १८- माल अस्बाब चुरा लेना. १९- ऊपर लिखे हुए जुर्मोंमें मदद देना, या वर्ग़लाना.

शर्त छठी- ऊपर लिखी हुई शर्तोंके मुताबिक़ मुज्रिमोंको गिरिफ़्तार करने, रोक रखने, या सुपुर्द करनेमें, जो ख़र्च लगे, वह दर्ख़्वास्त करनेवाली सर्कारको देना पड़ेगा.

शर्त सातवीं-ऊपर लिखा हुआ अ़हूदनामह उस वक़् तक बर्क़रार रहेगा, जब तक कि अ़हूदनामह करनेवाली दोनों सर्कारोंमेंसे कोई एक दूसरेको उसके रद्द करनेकी इच्छाकी इत्तिला न दे.

शर्त आठवीं-इस अ़हूदनामहकी शर्तोंका असर किसी दूसरे अ़हूदनामहपर, जो दोनों सर्कारोंके बीच पहिलेसे है, कुछ न होगा, सिवा ऐसे अ़हूदनामहके, जो कि इस अ़हूदनामहकी शर्तोंके बख़िलाफ़ हो.

(दस्तख़त (डब्ल्यू० एच० बेनन, पोलिटिकल एजेण्ट.

दस्तख़त, मुहर व अदला बदली ता० १३ जुलाई सन् १८६८ ई० को जयपुरके महलमें की गई.

(दस्तख़त) सवाई रामसिंह.

(दस्तख़त) जॉन लॉरेन्स.

वाइसरॉय ऐन्ड गवर्नर जेनरल, हिन्द.

इस अ़हूदनामहकी तस्दीक़ श्रीमान् वाइसरॉय और गवर्नर जेनरल हिन्दने मक़ाम शिमलेपर ता० ७ ऑगस्ट सन् १८६८ ई० को की.

(दस्तख़त) डब्ल्यू० एस० सेटन्कार, सेक्रेटरी, सर्कार हिन्द.

अ़हूदनामह नम्बर २९.

अज़ तरफ़ श्री मान् महाराजा जयपुर,

ब नाम पोलिटिकल एजेण्ट जयपुर, ता० ५ फ़ेब्रुअरी, सन् १८६८ ई०

जो बातचीत मैंने आपसे रेलवेकी बाबत की थी, दोबारह विचार करनेसे उन शर्तोंको, जिनको मैंने पहिले पेश किया था, अब वापस करनेको मैंने दिलमें ठहराया है; और जो शर्तें गवर्मेण्ट हिन्दने साबिक़में नम्बर ७२१ ता० २४ मार्च सन् १८६५ ई० में ठहराई थीं, उनपर मैं अपनी रज़ामन्दी ज़ाहिर करता हूं.

अपने इस विचारकी बाबत आपको ज़ाहिर करनेमें सिर्फ़ मुझे यही कहना है, कि मुझे पूरा भरोसा है, कि जब मुझे सर्कारी दस्तन्दाज़ीकी ज़ुरूरत हो, तो सर्कार हर तरह मेरे हुकूक़की हिफ़ाज़त करेगी, और झगड़ा पेश आनेपर फ़ैसलह सिर्फ़ इन्साफ़ और क़ानूनके ही उसूलपर ही न करेगी, बल्कि मुल्कके हालात और दस्तूर और रवाज और रअ़य्यतके ख़यालातपर भी लिहाज़ रक्खेगी.

अह्दनामह नम्बर ३०.

अह्दनामह दर्मियान सर्कार अंग्रेज़ी और श्रीमान् सवाई रामसिंह, जी॰ सी॰ एस॰ आइ॰ महाराजा जयपुर व उनके वारिसों और जानशीनोंके, जो एक तरफ़ मेजर विलिअम एच॰ वेनन, पोलिटिकल एजेएट, राज्य जयपुरने व हुक्म लेफ़्टिनेएट कर्नेल रिचर्ड हॉर्ट कीटिंग, सी॰ एस॰ आइ॰ और वी॰ सी॰, एजेएट गवर्नर जेनरल, राजपूतानहके, जिनको पूरा इख्तियार श्रीमान् राइट ऑनरेब्ल रिचर्ड- साउथ वेल बुर्के अर्ल ऑफ़ मेओ, वाइकाउन्ट मेओ, ऑफ़ मोनी क्रोवर, बेरन नास ऑफ़ नास, के॰ पी॰, जी॰ एम॰ एस आइ॰, पी॰ सी॰ वग़ैरह, वाइसरॉय और गवर्नर जेनरल हिन्दने दिया था; और दूसरी तरफ़ नव्वाब मुहम्मद फ़ैज़अलीख़ां बहादुरने, जिसको उक्त महाराजा रामसिंहसे पूरा इख्तियार मिला था, ते किया.

शर्त पहिली - नीचे लिखे हुए अह्दनामहकी शर्तोंके मुताबिक़ जयपुरकी सर्कार सांभर झीलके किनारेकी ज़मीनकी हद्दोंके भीतर (जैसा कि चौथी शर्तमें लिखा है,) नमक बनाने और बेचने और इस हद्दके पैदावार नमकपर मह्सूल लगानेके इख्तियारका पट्टा सर्कार अंग्रेज़ीको करदेगी.

शर्त दूसरी - यह पट्टा उस वक्त तक क़ाइम रहेगा, जब तक कि सर्कार अंग्रेज़ी इसको छोड़नेकी ख्वाहिश न करे, इस शर्तपर कि सर्कार अंग्रेज़ी जयपुरकी सर्कारको उस तारीख़से दो वर्ष पहिले इस बन्दोबस्तके ख़त्म करनेका इरादह ज़ाहिर करे, जिसपर पट्टा ख़त्म होना चाहे.

शर्त तीसरी - इस वास्ते कि अंग्रेज़ी सर्कार सांभर झीलपर नमक बनाने और बेचनेका काम करसके, सर्कार जयपुर, सर्कार अंग्रेज़ी और उसके इस कामके लिये मुक़र्रर किये हुए तमाम अफ्सरोंको इख्तियार देगी, कि वह शुब्हेकी हालतमें नीचे लिखी हुई हद्दके भीतरवाले मकान और दूसरी जगह, जो खुली या बन्द हो, उसके भीतर जावें; और तलाशी लेवें; और अगर उस हद्दके भीतर जो कोई एक या कई शख्स ख़िलाफ़ उन क़ाइदोंके जो उस हद्दके भीतर नमक बनाने, बेचने, हटाने वग़ैरह लाइसेन्सके बनाने व बे ज़ाबितह लानेकी मनाईके बाबत सर्कार अंग्रेज़ी मुक़र्रर करे, पाये जावें, उनको गिरिफ्तार करें; और जुर्मानह, क़ैद, मालकी ज़ब्ती करें; या और किसी तरहकी सज़ा देवें.

शर्त चौथी - झीलके किनारेकी ज़मीन, जिसमें सांभरका क़स्बह और बारह दूसरे खेड़े हैं, और जिस कुल जमीनपर अब जयपुर और जोधपुर दोनोंका शामिलाती क़ब्ज़ह है, उसका निशान किया जायेगा; और निशानकी लाइनके भीतरकी बिल्कुल ज़मीन तथा झीलका या उसके सूखे तलेका हिस्सह, जो ऊपर कही हुई दोनों रियासतोंके मातहत है, वही हद्द समझी जायेगी, जिसके भीतर सर्कार अंग्रेज़ी और उसके अफ्सरोंको तीसरी शर्तके दर्ज किये हुए इख्तियार होंगे.

शर्त पांचवीं - कही हुई हद्दोंके भीतर और इस अह्दनामहकी तीसरी शर्तके मुताबिक़ क़ाइदोंकी कार्रवाई करानेके लिये, और नमकके बनाने, बेचने, हटाने, वग़ैर इजाज़तके लानेसे रोकनेके लिये, जहांतक ज़ुरूरत हो, सर्कार अंग्रेज़ी या उसकी तरफ़से इस्तियार पायेहुए अफ्सरोंको इस्तियार होगा, कि इमारतों या दूसरे मतलबोंके लिये ज़मीन लेलेवें; और सड़क, आड़, झाड़ी, व मकान बनावें; और इमारतें या दूसरा सामान हटादेवें. ऊपर लिखे हुए इसी मत्लबके लिये जयपुर सर्कारकी ख़िराज देनेवाली ज़मीनपर सर्कार अंग्रेज़ीका दख़्ल करलिया जावे, तो वह सर्कार जयपुरको उस ख़िराजके बराबर सालानह किराया दिया करेगी. जब कभी किसी शख़्सकी जायदादको सर्कार अंग्रेज़ी या उसके अफ्सर किसी तरह इस शर्तके मुताबिक़ नुक्सान पहुंचावेंगे, तो जयपुरकी सर्कारको एक महीना पेश्तरसे इत्तिला दीजायेगी; और सर्कार अंग्रेज़ी उस नुक्सानका बदला मुनासिब तौरसे चुका देवेगी. जब किसी हालतमें सर्कार अंग्रेज़ी या उसके अफ्सर, और मालिक जायदादके दर्मियान नुक्सानकी तादादके बारेमें बह्स होगी, तो तादाद पंचायतसे ठहराई जायेगी. ऊपर लिखी हुई हद्दोंके भीतर इमारतोंके बनानेसे सर्कार अंग्रेज़ीका कोई मालिकानह हक़ ज़मीनपर न होगा, जोकि पट्टेकी मीआद ख़त्म होनेपर सर्कार जयपुरके क़ब्ज़ेमें वापस चली जावेगी. मए उन इमारतों और सामानके, जो कि सर्कार अंग्रेज़ी वहांपर छोड़ देवे, किसी मन्दिर या मज़्हबी पूजाके मकानमें दख़्ल नहीं दिया जायेगा.

शर्त छठी - जयपुर सर्कारकी मंज़ूरीसे सर्कार अंग्रेज़ी एक कचहरी क़ाइम करेगी, जिसका इस्तियार एक लाइक़ अफ्सरको रहेगा, जो ऊपर बयान कीहुई हद्दोंके भीतर अक्सर इज्लास करेगा, इस ग़रज़से कि उन मुक़द्दमोंकी रूबकारी कीजावे, जो कि शर्त तीसरीमें लिखे हुए क़ाइदोंके बख़िलाफ़ कार्रवाईके सबब दाइर होवें; और तमाम मुज्रिमोंको सज़ा दीजावे; और सर्कार अंग्रेज़ीको इस्तियार रहे, कि जिन मुज्रिमोंको जेलख़ानहकी सज़ा होवे, उनको चाहे उक्त हद्दोंके भीतर या अपने ही इलाक़हमें, जहां मुनासिब हो, क़ैद करें.

शर्त सातवीं - पट्टेके शुरू होनेकी तारीख़से ऊपर लिखी हुई हद्दोंमें बने हुए उस नमककी क़ीमत, जो इस शर्तके लिखे हुए दूसरे फ़िक़्रेके सिवाय बेचा जायेगा, सर्कार अंग्रेज़ी वक़्त बवक़्तपर मुक़र्रर करती रहेगी. जयपुरकी रियासत हक़्दार होगी, कि उसको सालानह रियासतके ख़र्चके लिये अंग्रेज़ी सर्कारसे नमक बननेके मक़ामपर ही नमककी कोई मिक्दार (प्रमाण), जो जयपुरकी सर्कार मांगे, ब शर्ते कि वह मिक़्दार (१७२०००) मन अंग्रेज़ीसे ज़ियादह न हो, फ़ी मन ॥/) आने अंग्रेज़ीके हिसाबसे मिलती रहे.

जयपुरकी सर्कारको इख्तियार होगा, कि इस नमकको चाहे जिस निर्ख़से बेचे.

शर्त आठवीं- नमकके उस ज़ख़ीरेमेंसे, जो रियासत जयपुर और जोधपुर दोनोंकी मिल्कियतमें पट्टेके शुरूके वक्त लिखी हुई हद्दोंके अन्दर मौजूद है, जयपुरकी रियासतका हिस्सह, जो ऊपर लिखे ज़ख़ीरेका आधा है, रियासत मज़्कूर नीचे लिखी शर्तोंपर अंग्रेज़ी सर्कारको देदेगी :-

दस्तूरके मुवाफ़िक़ पांच लाख दस हज़ार अंग्रेज़ी मन नमकमेंसे जयपुरकी रियासत अपना हिस्सह सर्कार अंग्रेज़ीको मुफ़्त देगी. ज़ख़ीरेमें जो हिस्सह जयपुर का बाक़ी रहेगा, उसकी क़ीमत अंग्रेज़ी मनपर साढ़े छः आने फ़ी मन अंग्रेज़ीके हिसाबसे गिनीजायेगी; और यह क़ीमत जयपुरकी रियासतको दीजावेगी; मगर यह देना उस वक्त शुरू होगा, जब कि अंग्रेज़ी सर्कार किसी सालमें आठ लाख पच्चीस हज़ार अंग्रेज़ी मनसे ज़ियादह नमक बेचे, या निकाले; और उस वक्त भी उस ज़ियादतीके उस हिस्सेकी बाबत, जो जयपुरकी रियासतका होगा, और जब तक कि इस सालानह ज़ियादतीकी मिक़्दारोंसे पूरी मिक़्दार नमकके ज़ख़ीरेकी, जो पांच लाख दस हज़ार अंग्रेज़ी मनके अलावह दियागया है, पूरी होगी. उस वक्त तक अंग्रेज़ी सर्कार इस ज़ियादतीके बिकनेकी क़ीमतपर वह बीस रुपये सैकड़ा मह्सूलका, जो बारहवीं शर्तमें लिखागया है, नहीं देगी. ऊपर लिखे आठ लाख पच्चीस हज़ार मन नमकमें वह मिक़्दार शामिल होगी, जो सातवीं शर्तके दूसरे फ़िक़्रेके मुवाफ़िक़ जयपुरकी रियासतके ख़र्चके लिये रक्खी जायेगी.

शर्त नवीं- जयपुरकी सर्कारको इख्तियार न होगा, कि किसी नमकपर, जो पहिले कही हुई हद्दोंमें अंग्रेज़ी सर्कार बनावे, या बेचे, या जब कि जयपुरकी रियासतसे बाहर किसी दूसरी जगहको अंग्रेज़ी पर्वानेके ज़रीएसे जयपुर राज्यमें होकर गुज़रता हो, मह्सूल, लागत, राहदारी, या और किसी क़िस्मकी लगान खुद वुसूल करे, या किसी दूसरे शख़्सोंको वुसूल करनेकी इजाज़त दे; मगर उस नमकपर, जो सातवीं शर्तके मुताबिक़ दिया जावे, या ख़र्चके लिये जयपुरके राज्यमें बेचा जावे, उस रियासतको इख्तियार होगा, कि जो मह्सूल चाहे, वुसूल करे.

शर्त दसवीं- इस अह्दनामहमें कोई बात उस मालिकानह हक़की रोकनेवाली न होगी, जो जयपुर सर्कारको ऊपर लिखी हद्दोंमें सिवाय उन मुक़द्दमातके, जो नमकके बनाने, बेचने या हटाने और बे इजाज़त बनाने या मह्सूलकी चोरी रोकनेके कुल बातों दीवानी और फ़ौज्दारीमें हासिल है.

शर्त ग्यारहवीं- उन तमाम ख़र्चोंका बोझ, जो ऊपर लिखी हद्दोंमें नमक बनाने, बेचने, हटाने और बे इजाज़त बनाने या मह्सूलकी चोरी रोकनेसे मुतअल्लक़ हैं,

जयपुरकी रियासतसे उठा लिया जावेगा; और दिये हुए पट्टेके एवज़में अंग्रेज़ी सर्कार इक़्रार करती है, कि ऊपर लिखी हद्दोंमें बिके हुए नमकमें जयपुरकी रियासतके हिस्सेकी बाबत सवा लाख रुपया अंग्रेज़ी चलनका और उस मह्सूलके एवज़में, जो सर्कार जयपुर नमकपर लेती है, और जो इस अह्दनामहके मुवाफ़िक़ अंग्रेज़ी सर्कारको देदिया गया है, १५००००) रुपया सिक्कह अंग्रेज़ी सालियाना दो छः माहीकी क़िस्तमें जयपुरकी सर्कारको देती रहेगी; और कुल रुपया इस सालानह ख़िराजका यानी २७५०००) रुपया कल्दार अदा करनेमें ऊपर लिखी हुई हद्दमेंसे नमककी बिक्री हुई या निकास कीहुई अस्ल मिक़्दार पर कुछ लिहाज़ न होगा.

शर्त बारहवीं- अगर किसी सालमें कही हुई हद्दोंके भीतर आठ लाख पच्चीस हज़ार अंग्रेज़ी मनकी बनिस्बत ज़ियादह नमक सर्कार अंग्रेज़ी बेचे, या उस हद्दके बाहर चालान करे, तो सर्कार अंग्रेज़ी जयपुरकी सर्कारको उस बढ़तीपर (आठवीं शर्तमें जो मिक़्दार लिखी है, उसके ख़र्च होजानेके पीछे) बीस रुपये सैकड़ेके हिसाबसे एक मह्सूल फ़ी मनके उस दामपर देगी, जो कि सातवीं शर्तके पहिले जुम्लेके मुताबिक़ बिकनेका निर्ख़ मुक़र्रर किया जावे.

जब कभी इस बारेमें सन्देह हो, कि किस सालमें कितने नमकपर मह्सूल लेना है, तो जो हिसाब सर्कार अंग्रेज़ीके बड़े अफ्सरकी तरफ़से पेश किया जावे, जो सांभरका मुख़्तार है, इस बातकी क़तई गवाही समझी जावेगी, कि दर अस्ल कितना नमक सर्कार अंग्रेज़ीने उस वक़में बेचा, या बाहर चालान किया है, जिसकी बाबत हिसाबमें हो; मगर जयपुर सर्कारको अपनी तसल्लीके वास्ते भी इस बातकी रोक न होगी, कि वह अपने अफ्सर बिक्रीका हिसाब रखनेको मुक़र्रर करे.

शर्त तेरहवीं- सर्कार अंग्रेज़ी वादह करती है, कि हर साल सात हज़ार मन अंग्रेज़ी तोलका नमक बग़ैर किसी क़िस्मकी लागतके जयपुर दर्बारके ख़र्चके वास्ते दिया करेगी; वह नमक उस जगहपर दिया जायेगा, जहां कि बनता है, और उस अफ्सरको दिया जावेगा, जिसको जयपुर सर्कारकी तरफ़से लेनेका इख़्तियार मिला हो.

शर्त चौदहवीं- सर्कार अंग्रेज़ीका कोई दावा किसी ज़मीनके या दूसरे ख़िराज पर नहीं होगा, जो नमकसे तअ़ल्लुक़ नहीं रखता, और सांभरके क़स्बे या दूसरे गांवों या ज़मीनोंसे दिया जाता है, जो कही हुई हद्दोंके भीतर शामिल है.

शर्त पन्द्रहवीं- अंग्रेज़ी सर्कार जयपुरके इलाक़हमें ऊपर लिखी हुई हद्दोंके बाहर नमक नहीं बेचेगी.

शर्त सोलहवीं- अगर कोई शख़्स, जिसको सर्कार अंग्रेज़ीने कही हुई हद्दोंके भीतर मुक़र्रर किया हो, कोई जुर्म करके भाग गया हो, या कोई शख़्स इस अह्दनामहकी

तीसरी शर्तके क़ाइदोंके बर्ख़िलाफ़ कोई काम करके भाग गया हो, तो जयपुरकी सर्कार जुर्मकी पुरूतह गवाही होनेपर हर एक तरह उसको गिरिफ्तार करने और कही हुई हद्दोंके भीतर अंग्रेज़ी हाकिमोंको सुपुर्द करनेकी कोशिश करेगी, जिस हालतमें कि वह शख़्स जयपुरके इलाक़हके किसी हिस्सहमें होकर गुज़रा हो, या कहीं आश्रय लिया हो.

शर्त सत्तरहवीं- इस अह्दनामहकी कोई शर्त अमलमें न आएगी, जब तक कि सर्कार अंग्रेज़ी दर हक़ीक़त कही हुई हद्दोंके भीतर नमक बनानेका काम अपने हाथमें न लेवे; ऐसे काम हाथमें लेनेकी तारीख़ सर्कार अंग्रेज़ी मुक़र्रर करेगी, इस शर्तसे कि वह तारीख़ नीचे लिखी हुई तारीख़ोंमेंसे कोई एक होगी:- ता० १ नोवेम्बर सन् १८६९ ता० १ मई, या १ नोवेम्बर सन् १८७० या ता० १ मई० सन् १८७१ अगर पहिली मई सन् १८७१ को या उसके पेश्तर चार्ज न लिया जावे, तो यह अह्दनामह मन्सूख़ हो जावेगा.

शर्त अठारहवीं- इस अह्दनामहकी कोई शर्त बग़ैर दोनों सर्कारोंकी पेश्तर रज़ामन्दी होनेके न बदली जावेगी, न मन्सूख़ कीजावेगी, और अगर कोई फ़रीक़ इन शर्तोंके मुताबिक़ न चले, या बे पर्वाई करे, तो दूसरा फ़रीक़ इस अह्दनामहकी पाबन्दीसे छूट जावेगा.

(दस्तख़त) डब्ल्यू० एच० बेनन, पोलिटिकल एजेण्ट.

(दस्तख़त) नव्वाब मुहम्मद फ़ैज़अलीख़ां बहादुर.

दस्तख़त, मुहर और अदला बदली ब मक़ाम शिमला ता० ७ ऑगस्ट सन् १८६९ ई० को हुई.

(दस्तख़त) सवाई रामसिंह.

(दस्तख़त) मेओ.

इस अह्दनामहकी तस्दीक़ श्रीमान् वाइसरॉय और गवर्नर जेनरल हिन्दने ब मक़ाम शिमला ता० ७ ऑगस्ट सन् १८६९ को की.

(दस्तख़त) डब्ल्यू० एस० सेटनूकार, सेक्रेटरी गवर्मेण्ट हिन्द.

ता० १८ मार्च सन् १८७० ई० को ऊपर लिखे अह्दनामहकी बुन्याद पर गवर्मेण्टने सांभर झील कोर्टके मुक़र्रर होनेका इश्तिहार दिया, इसी इश्तिहारके मुवाफ़िक़ असिस्टेंट कमिश्नर ब्रिटिश इनलैण्ड कस्टम्स डिपार्टमेण्टका जो सांभर झीलपर रहे, वह इस अदालतका जज मुक़र्रर हुआ. इस जजको दफ़ा २२ ज़ाबितह फ़ौज्दारी के मुवाफ़िक़ सबॉर्डिनेट मैजिस्ट्रेट फ़र्स्ट क्लासके इख़्तियारात नीचे लिखे हुए दोनों क़िस्मके मुक़द्दमातमें हैं:-

(ए) मुक़र्ररह हुदूदके अन्दर ज़ाबिते फ़ौज्दारीकी दफ़ा २१ में लिखे हुए जुर्मका इर्तिकाब सर्कार अंग्रेज़ीकी रिआ़यासे होना.

(बी) अ़ह्दनामोंकी तीसरी शर्तमें लिखे हुए क़ाइदोंके ख़िलाफ़का इर्तिकाब उसी हुदूदमें, चाहे किसीसे भी हो.

पहिली क़िस्मके मुक़द्दमातकी बाबत यह अ़दालत डिप्युटी कमिश्नर अजमेरके मातह्त रहेगी, जो वहांका अपील सुनेगा.

दूसरी क़िस्मके मुक़द्दमातकी बाबत शिकायत होनेपर एजेण्ट गवर्नर जेनरल राजपूतानह, बशर्ते मुनासिब मिस्ल मंगाकर सांभर झील कोर्टके फ़ैसलहकी मन्ज़ूरी, मन्सूख़ी या तर्मीम वग़ैरह करसकेंगे.

राज्य अलवरकी तारीख़.

रियासत अलवर राज्य जयपुरकी शाख़में है, इसलिये उसकी तारीख़ यहां दर्ज कीजाती हैः-

जुग्राफ़ियह (१).

रियासत अलवर राजपूतानहके पूर्वोत्तरी हिस्सेमें २७° ५′ और २८° १५′ उत्तर अक्षांश और ७६° १०′ और ७७° १५′ पूर्व देशान्तरके दर्मियान वाके है. इसका रक़्वह ३०२४ मील मुरब्बा, आबादी क़रीब ८००००० आदमी, सालानह आमदनी २९४१८८३ रुपया और ख़र्च २२४५१५४ रुपयेके क़रीब माना गया है. यह रियासत उत्तरमें अंग्रेज़ी ज़िले गुड़गांवा, बावल पर्गनए नाभा, और कोटक़ासिम पर्गनए रियासत जयपुरसे; पूर्वमें रियासत भरतपुर व गुड़गांवासे; दक्षिणमें जयपुर, और पश्चिममें जयपुर, कोटपुतली, रियासत नाभा व पटियालासे घिरी हुई है. राज्य अलवर और जयपुरकी दर्मियानी सर्हद सन् १८६९-७२ में कप्तान ऐबटने क़ाइम करके नक़्शहमें दर्ज की; सन् १८७४-७५ में लेफ़्टिनेण्ट मासीने पटियाला और अलवरकी सीमा नियत की, और रियासत नाभा और इस राज्यके, जो बाहमी सर्हदी तनाज़ा था, मिटा दिया. सन् १८५३-५४ ई० में कप्तान मॉरिसनने भरतपुर और अलवरकी सीमा मुक़र्रर की; और वह सर्हद जिसकी बाबत अलवर और सर्कार अंग्रेज़ीके दर्मियान बहस थी, राज्य अलवर और गुड़गांवाके बन्दोबस्तके अंग्रेज़ी हाकिमोंने तस्फ़ियह करके क़ाइम करदी.

क़ुद्रती सूरत- कुल राज्यमें उत्तरसे दक्षिणी तरफ़ बराबर पहाड़ियोंके सिल्सिले नज़र आते हैं. पूर्व और उत्तरकी तरफ़ कई एक छोटे पहाड़ी सिल्सिले हैं, जो कम ऊंचे, तंग, और अक्सर जुदा जुदा, दूर दूर एक एक या दो दो शामिल हैं. उत्तर पूर्वी सीमाकी पहाड़ियोंका सिल्सिलह बराबर चला गया है, जिनमें अक्सर पहाड़ियां कई मील चौड़ी हैं, तो भी उत्तर और पूर्वमें इस राज्यका अक्सर हिस्सह कुशादह है.

(१) यह जुग्राफ़ियह कप्तान सी० ई० येट (Captian C. E Yate.) के बनाये हुए राजपूतानह गज़ेटिअरकी तीसरी जिल्दसे खुलासह करके लिखा गया है.

ठीक दक्षिणी तरफ़, अलवरकी सीमापर, इस देशका दूसरा क़स्बह राजगढ़ है. इन दोनों मक़ामोंके बीचवाली ज़मीन अक्सर बराबर है, लेकिन् उनके बीचकी रेखाके पश्चिम और उत्तर पश्चिम खूबसूरत पहाड़ियोंका एक सिल्सिलह है, जिसके बहुतही नज़्दीक वाली पंक्तियां, उनकी दर्मियानी घाटियां ज़ियादह सकड़ी होनेकी वजूहसे बे डौल और मिली हुई मालूम होती हैं; लेकिन् दूरकी पंक्तियोंके बीच चौड़ी चौड़ी घाटियें हैं, और दक्षिण पश्चिम तरफ़की पहाड़ियां बहुत उपजाऊ हैं. राज्यकी उत्तरी व पश्चिमी ज़मीन बहुत हलकी है, लेकिन् पश्चिमी सीमाके कई मक़ामातके सिवा शेखा-वाटीकी तरह बालू रेतके टीले नहीं हैं. पूर्वकी तरफ़ वाली ज़मीनमें पानीकी आमद बहुत है, और इसीलिये वह उपजाऊ भी ज़ियादह है, मगर जहां पानी नहीं ठहरता उस हिस्सेकी ज़मीन बहुत हलकी है. दक्षिणकी ज़मीन अक्सर उम्दह है.

पहाड़ियोंके पासकी ज़मीनमें शिखर (चोटियां) कम हैं, अगर्चि कहीं कहीं नज़र आते हैं. एक ही सिल्सिलेकी ऊंचाई और नीचाई हर एक जगहपर क्रमसे है; लेकिन् अक्सर पहाड़ियोंमें सीधी खड़ी चटानें हैं, कि जिनके सबब पैदल आदमी भी पहाड़ीके पार नहीं जासक्ता. कहीं कहीं उनमें ऊंचे ऊंचे मैदान हैं, जिनपर घास कस्रतसे ऊगती है; पहाड़ी बलन्द मक़ामात (१) १९०० फ़ुटसे लेकर २४०० फ़ुट तक सत्ह समुद्रसे ऊंचे हैं. अक्सर पहाड़ियां देखनेमें खूब्सूरत और दिलचस्प मालूम होती हैं, जो घने जंगलोंसे ढकी हुई हैं, और पोशीदह जगहोंमेंसे पानीके चश्मे जारी रहते हैं.

---

(१) नाम शिखर.	कहां वाके है.	ऊंचाई फ़ुट.
भानगढ़ शिखर	भानगढ़से ३/४ मील उत्तरको	२१२८
कानक्कारी "	कानक्कारी गढ़से १ १/२ मील उत्तर पूर्व	२२१४
सिर्वास "	सिर्वाससे ——— दक्षिण पश्चिम	२१३१
अलवरका क़िला		१९६०
भूरासिन्ध	छावनीसे एक मील पश्चिम	१९२७
वन्द्रोल शिखर	जयपुरकी सीमाके समीप (जो ग़ाज़ीके थानह और वैराटके घाटेके ऊपर है) बन्द्रोलसे एक मील दक्षिण	२३०७
बहराइच "	जयपुर सीमापर बहराइचसे १/२ मील पश्चिम	२३९०
वीरपुर "	देवती और टहलाके घाटेके ऊपर	२०४८

नदियां व नाले- राज्य अलवरकी मश्हूर नदियां, साबी, रूपारेल, चूहरसिंध, लिंडवा, प्रतापगढ़, और अ़जबगढ़के नाले हैं, जिनमें सबसे बड़ी नदी साबी है, जो इस राज्यकी १६ मीलतक पश्चिमी कुद्रती सीमा बनाती और सोतासे मिलकर राज्यके उत्तरी पश्चिमी कोणको जुदा करदेती है; वह रियासत नाभाके मक़ाम बावलके एक हिस्सेको अलवरसे जुदा करती हुई राज्य जयपुरके पर्गनह कोट क़ासिममें दाख़िल होती है. इसमें कई छोटी छोटी नदियां मिलती हैं, और उत्तरी जयपुरका बहाव इसमें आता है; लेकिन् इसके करारे ऊंचे होने और पेटेमें रेत ज़ियादह होनेकी वजहसे खेती नहीं होसक्ती, और दूसरी नदियोंकी तरह खेतीके हक़में फ़ाइदहमन्द नहीं है; इसकी बाढ़से .इलाक़ए अंग्रेज़ीके रेवाड़ी देशको उत्तरकी तरफ़ बहुत नुक्सान पहुंचता है, क्योंकि वह अच्छी ज़मीनको काटकर बहा लेजाती है, और उसकी जगह रेता वग़ैरह छोड़जाती है, जो ज़िराअ़तके क़ाबिल नहीं होता. बर्सातके बाद यह नदी सूख जाती है; इसपर राजपूतानह स्टेट रेल्वेका एक पुल अलवरकी सीमाके बाहर बना हुआ है.

अलवर शहरके पश्चिम और दक्षिणकी पहाड़ियोंका पानी ख़ासकर रूपारेल और चूहरसिंधमें जाता है. ये दोनों नदियां पूर्व दिशाको बहती हैं, और इनसे खेतीको बहुत बड़ा फ़ाइदह पहुंचता है. रूपारेल, जो ज़ियादहतर बारा नामसे मश्हूर है, उसमें पानीका प्रवाह अक्सर रहता है; और चूहरसिंधमें सिर्फ़ बर्सातके बाद पाया जाता है. इस (चूहरसिंध) के सोतेके पास एक मश्हूर देवस्थान है; और रूपारेलकी एक शाखापर सीलीसेढ़की झील है.

उत्तरी पश्चिमी पहाड़ियोंके एक हिस्सेका पानी लिंडवा नदीमें जाता है. यह नदी १२ या १५ मील तक दक्षिणकी तरफ़ बहने बाद, जहां वह जुदा होती है, पूर्वको मुड़कर इ़लाक़ए अंग्रेज़ीमें दाख़िल होती है; खेतीको इसके पानीसे बहुत फ़ाइदह होता है, लेकिन् गर्मीके मौसममें इसका प्रवाह बन्द होजाता है.

टहला, अ़जबगढ़, और प्रतापगढ़ पर्गनोंसे राज्यके दक्षिणकी तरफ़ बड़े बड़े नाले जयपुरके इ़लाक़ेमें बहते हैं, जहां वे बाणगंगासे मिलजाते हैं. इनमेंसे प्रतापगढ़ और अ़जबगढ़के नाले अक्सर गर्मियोंमें भी बहते रहते हैं.

झीलें - पश्चिममें नरायणपुरका नाला उत्तर तरफ़ बहकर साबीमें जामिलता है, लेकिन् बर्सातके बाद सूखजाता है. इस राज्यमें सीली सेढ़ और देवती नामकी दो छोटी छोटी झीलें या ताल हैं.

.ईसवी १८४४ के लगभग महाराव राजा विनयसिंहने रूपारेल नदीकी एक सहायक धारापर ४० फुट ऊंचा और १००० फ़ुट लम्बा एक बन्द बन्धवा दिया था,

जिससे "सीली सेढ़" ताल बनगया. यह झील शहर अलवरसे ९ मील दक्षिण पश्चिमको है, जब यह भरती है, तो इसकी लम्बाई १ मील और चौड़ाई ४०० गज़के क़रीब होजाती है. इसके ऊपर एक चटानपर सुबिधेका एक महल बना है, पानीमें किश्तियां रहती हैं, मछलियां और घड़ियाल भी बहुत कस्रतसे पाई जाती हैं, इसके आसपासके मक़ामोंमें शिकारी जानवर ज़ियादह होने, शहरसे क़रीब वाके होने और सब्ज़ी वग़ैरहके सबब रौनक़ व सैरकी जगह होनेकी वज्हसे, बहुतसे सैर करने वाले मनुष्य आया जाया करते हैं. यहांसे बज़रीए एक नहरके शहर अलवरमें पानी जाता है, और उस नहरके सबब राजधानीकी सीमाकी बहुत कुछ रौनक़ है.

देवती झील अलवरसे ठीक दक्षिण तरफ़ जयपुरकी सीमाके पास है; इसकी पाल जयपुरके एक सर्दारने बंधवाई थी. यहांपर जंगली, और पानीमें रहनेवाले जानवरोंके जमा होनेकी वज्हसे यह झील मश्हूर है, और पानीमें रहनेवाले सांपोंके लिये भी, कि जिसके सबब वहांके महलमें कोई नहीं रहता. सीलीसेढ़से यह झील लम्बाई चौड़ाई और गहराईमें कम है; और अक्सर गर्मीके मौसममें सूख जाती है.

ऊपर लिखी हुई झीलोंके सिवा खेतोंको सींचनेकी ग़रज़से कई नालोंमें पाल बांधी हुई हैं, लेकिन् उनमें पानी बहुत कम मुद्दत तक रहता है. चन्द तालाब भी हैं, जिनमें सालभर तक पानी रहता है. .

आबो हवा और सर्दी गर्मी- आबो हवा इस इलाक़ेकी उम्दह और पानी भी तन्दुरुस्तीके हक़में फ़ाइदह बख़्शनेवाला पाया गया है. सन् १८७१ से सन् १८७६ ई० तक की बारिशका हिसाब करनेसे मालूम हुआ, कि इस राज्यमें हर साल २४ या २५ इंचके क़रीब पानी बरसता है.

सर्दी और गर्मीका कोई सहीह अन्दाज़ह नहीं रक्खा जाता. अक्सर राज्यके उत्तरी हिस्सेमें, जहांकी ज़मीन हलकी और मुल्की हिस्सह कुशादह मैदान है, गर्मीके दिनोंमें पहाड़ी मक़ामोंकी निस्बत गर्मी कम याने औसत दरजेकी रहती है; और पूर्व तथा पश्चिममें ज़मीनके सख़्त और पहाड़ी होनेकी वज्हसे गर्मी बहुत तेज़ पड़ती है. बर्सातके मौसममें पहाड़ियोंके ऊंचे मक़ामोंमें सर्दी रहती है, और बनिस्बत मैदानके उन जगहोंमें जाकर रहना अच्छा मालूम होता है. ऊपरी गढ़, जो शहर अलवरसे १००० फ़ीट ऊंचा है, इस मौसमके लिये बहुत ही उम्दह तन्दुरुस्तीकी जगह है.

पत्थर व धातु वग़ैरह- पहाड़ी हिस्सेकी कुल पहाड़ियां क्वार्ट्ज़की हैं, जिनमें सिफ़ेद पत्थर तथा अब्रक़ वग़ैरहकी धारियां नज़र आती हैं. दक्षिणकी तरफ़ कुछ ट्रैप और नीस चटान भी पाया जाता है, पश्चिमोत्तरमें काला स्लेट; दक्षिण

पश्चिममें अच्छे सिफ़ेद संग मर्मर और बाज़ जगह सिफ़ेद बिल्लोरके मुवाफ़िक़, और मोतिया या गुलाबी रंगका पत्थर भी मिलता है, जो मकानातके बनानेमें काम आता है. अलवर शहरके पूर्वोत्तर २० माइल फ़ासिलेपर खानोंमेंसे मेटा मॉर्फ़िक् (रूपान्तर कृत) स्लेटके रंगके रेतीले पत्थरकी पट्टियां निकलती हैं, शहरके दक्षिण पूर्व बीस मीलके भीतर वैसी ही पट्टियां निकलती हैं; और अच्छा सिफ़ेद चौकोर रेतीला पत्थर भी दक्षिण पूर्वमें पाया जाता है, जो मकानातकी तामीरमें बहुत काम आता है. छत पाटनेका पत्थर राजगढ़, रेवाड़ी और मांडणके नज़्दीक बहुत निकाला जाता है; राजगढ़में २० फ़ुट लम्बी और २ फ़ुट तक चौड़ी पट्टी निकलती है; और अजबगढ़की स्लेटका रेलवे स्टेशनकी तामीरमें बहुत काम हुआ है. चूना बनानेका मोटा सिफ़ेद पत्थर इस इलाक़ेमें पाया जाता है. संग मूसा (काला पत्थर) शहरसे पूर्व १६ मीलके फ़ासिलेपर और आस पासकी जगहोंमें निकलता है. अब्रक़, लाल मिट्टी, एक क़िस्मका ख़राब नमक, शोरा, और पोटाश (खार, जवाखार, या सज्जी) भी मिलते हैं; लोहेकी कच्ची धातुके ढेरके ढेर पाये जाते हैं; और पहिले लोहा बहुत निकाला जाता था; तांबा और किसी क़द्र सीसा भी पाया गया है.

जंगल वग़ैरह- राज्यके कई हिस्सोंमें दरख़्तोंकी हिफ़ाज़त रक्खी जाती है, पहाड़ियोंपर दरख़्त बहुत कस्रतसे हैं, और दूसरे मक़ामोंमें मैदानोंमें मिलते हैं, ख़ास शहरके आसपास जोती जानेवाली और ऊसर ज़मीनपर जाबजा बबूलके बड़े बड़े दरख़्त लगे हुए हैं, लेकिन् कोई बड़ा गुंजान जंगल नहीं है.

पहाड़ी ज़मीन तथा पहाड़ियोंके ढालों और ऊंची ज़मीनपर सालर व ढाकके छोटे बड़े पेड़ अक्सर पाये जाते हैं, पहाड़ियोंके आधारपर और सकड़ी घाटियोंमें ढाक ज़ियादह जमा हुआ है. एक जगह तालके दरख़्तोंका बड़ा खूबसूरत जंगल है, और जाबजा ताल व खजूरके दरख़्त बे शुमार खड़े हैं. दक्षिण और पश्चिमी पहाड़ियोंपर क़ीमती मज़्बूत बांस बहुत होता है, और कहीं कहीं बड़के दरख़्त भी नज़र आते हैं. पहाड़ियों और घाटियोंमें खैर, खैरी, कधू, हरसिंगार, करवाला या अमलतास, गुर्जन, आटन या जरखैर, कीकर, कुंभेर, आंवला, डोलिया हड़, बहेड़ा, तेंदू, सेमल, गजरेंड, गूलर, गंगेरन, जामुन, कदंब, बेर, पापरी, गूगल, झालकंटीला, जिंगर, कुम्हेर, अडूसा वग़ैरह कई क़िस्मके छोटे बड़े दरख़्त पायेजाते हैं. खेजड़ा, खैर, नीम, कीकर, पीपल, फ़िरास, सीसम, रोहिड़ा, पीलू, आम, इमली, सेंजना, और बड़ भी बहुत होते हैं; और कई क़िस्मकी घास होती है, कि जो सिवाय मवेशियोंकी खुराकके मकानोंकी छान, टोकरियां व पंखे वग़ैरह चीज़ें बनानेमें काम आती है.

शेर, तेंदुए और बघेरे बहुत हैं; और क़रीब क़रीब तमाम जंगलोंमें बल्कि शहरके आसपास तथा बग़ीचोंमें भी फिरते रहते हैं. सांभर, हिरन और नीलगायोंके झुंड खुले मैदानोंमें फिराकरते हैं, और कहीं कहीं सूअर भी मिलते हैं, लेकिन् पहिलेकी बनिस्बत बहुत कम हैं. ख़र्गोश, भेड़िया, चर्ख़, चिकार, धीम, ख़र्गोश, सेह याने कलगारी, गीदड़ लोमड़ी, फेंकरी, बीजू, मुश्कबिलाई, साल (चींटी खानेवाला जानवर), सियहगोश, नेवला, घोड़ागोह, गडरबिलार और लंगूर वग़ैरह कई जानवर जंगलों व पहाड़ोंमें पाये जाते हैं. उड़नेवाले जानवर याने परिन्दे भी कई प्रकारके देखे गये हैं, मसलन तीतर, बटेर, काला तीतर, जंगली मुर्ग़, मोर बाज़, शिकरा, मोरायली, तुरमची, सिफ़ेद मोर, बटबल कुलंग, जो ज़मीनपर नहीं दिखाई देता, टिटहरी, हरयल, बया, लंकलाठ या बंदानी, जो सोते हुए नाहरके मुंहमेंसे गोश्तके टुकड़े निकाल लेती है, और सिवा इनके कई जानवर तालाव वग़ैरहमें तैरने वाले तथा उनके किनारोंपर रहने वाले भी पाये जाते हैं, जिनकी खुराक मछली वग़ैरह पानीके छोटे जानवर हैं.

पैदावार- राज्य अलवरकी ख़ास पैदावार यह है:- गेहूं, जव, चना, जवार, बाजरा, मोठ, मूंग, उड़द, चौला, मक्का, गवार, चावल, तिल, सरसों, राई, ज़ीरा, कासनी, अफ़ीम, तम्बाकू, ईख, रुई वग़ैरह. लेकिन् मक्का और अफ़ीम मालवा व मेवाड़की तरह कस्रतसे नहीं बोई जाती, किसी किसी जगह गांवोंमें पैदा होती है, और अफ़ीम डोड़ियोंमेंसे कम निकाली जाती है, क्योंकि इस इलाक़ेमें बनिस्बत अफ़ीमके पोस्त पीनेका रवाज ज़ियादह है; ईख भी कम पैदा होता है. गाजर, मूली, बथुवा, करेला, बैंगन, तुरोई, कचरा, सेम, कोला, आल, घिया वग़ैरह तर्कारियां इलाक़हमें अच्छी और ज़ियादह मिलती हैं; अरुई, रतालू, व आलू वग़ैरह तर्कारियां और कई क़िस्मके फल ख़ास राजधानी अलवरके बाग़ीचोंमें पैदा होते हैं.

राज्य प्रबन्ध- महाराव राजा शिवदानसिंहके इन्तिक़ाल करनेपर मौजूद जानशीन महाराजाके नाबालिग़ होनेके सबब राज्य प्रबन्धके लिये एक सभा या कमिटी मुक़र्रर कीगई; उस वक्त याने ई० १८७६ में पंडित रूपनारायण, ठाकुर मंगलसिंह गढ़ीवाला, ठाकुर बल्देवसिंह श्री चन्द्रपुराका, और राव गोपालसिंह पाई वाला इस कमिटीके मेम्बर क़रार पाकर विद्यमान महाराजाकी नाबालिग़ीके ज़मानह तक उम्दगीके साथ राज्यका काम करते रहे. जबसे उक्त महाराजाने राज्यका काम अपने हाथमें लिया, तबसे वह सभा महाराजाकी राय व हुक्मके अनुसार काम अंजाम देती है.

अपीलकी कचहरी- इस कचहरीपर ५०० रुपये माहवारका एक अफ़्सर है, जो फ़ौज्दारी, दीवानी और नुजूल (इमारत) की कचहरियोंकी अपील सुनता है. मुक़द्दमात फ़ौज्दारीमें, जिनपर कि दो साल क़ैदकी सज़ा हो, और १००० एक हज़ार रुपये तकके दीवानी मुक़द्दमोंमें उसीकी रायपर अमल दरामद होता है. उसको फ़ौज्दारके इख़्तियारातसे बाहर वाले मुक़द्दमोंकी कार्रवाईका इख़्तियार है.

माल गुज़ारीका महकमह- माल सद्रका हाकिम डिप्युटी कॅलेक्टर कहलाता है, जो ज़मीनकी मालगुज़ारीके मुतअ़ल्लिक़ तमाम कामोंका इख़्तियार रखता है, और इस कामका नाज़िर है. वह ज़मीनकी मालगुज़ारीके मुक़द्दमोंकी समाअ़त करता है, और ज़मीदारोंके बख़िलाफ़ महाजनोंके मुक़द्दमोंको भी सुनता है, जिन्होंने मालगुज़ारी के वास्ते ज़मींदारोंको बतौर क़र्ज़के रुपया दिया हो. एक असिस्टेंट डिप्युटी कॅले-क्टर उसकी मददके लिये मुक़र्रर है.

फ़ौज्दारी- महकमह फ़ौज्दारीका हाकिम जुदा है; उसको इख़्तियार है, कि इस क़िस्मके मुक़द्दमोंमें मुज्रिमोंको एक सालकी क़ैद और तीन सौ ३०० रुपया जुर्मानह या इसके बदलेमें एक साल ज़ियादह क़ैदकी सज़ा दे. अक्सर ऐसे मुक़द्दमातमें, कि जिनमें वह ६ महीनेका जेलख़ानह या ३० रुपया जुर्मानहकी सज़ा देवे, उसीकी राय बहाल रहती है; और अ़दालत अपील ऐसे मुक़द्दमोंकी बाबत समाअ़त नहीं करती. फ़ौज्दार तह्सीलदारोंकी अपील सुनता है, जो एक माह क़ैद और २० रुपये तक जुर्मानह करसक्ते हैं.

महकमह दीवानी- दीवानीका हाकिम कुल मुक़द्दमात दीवानीको सुननेका इख़्तियार रखता है. हाकिमकी तन्ख़्वाह ३०० रुपया माहवार मुक़र्रर है. अपील सिर्फ़ ५० रुपयेसे ज़ियादह मालियतके मुक़द्दमोंमें होसक्ती है. तह्सीलदारको १०० रुपया मालियतके दावेकी समाअ़त करनेका इख़्तियार है, जिसके फ़ैसलोंकी अपील महकमह दीवानीमें होती है.

नुज़ूल (मकानात वगै़रह) का महकमह- यह महकमह अलवर शहरके अन्दर और आसपासके सर्कारी मकानोंकी मरम्मतका बन्दोबस्त करता है, और राजगढ़के मकानोंकी भी, निगरानी रखता है, जो अलवरके वर्तमान राजाओंका क़दीम स्थान था. इस महकमेके सुपुर्द ख़ालिसहके मकानोंकी निगरानी करना, और कोई शख़्स अपना मकान किसीको बेचे, तो उसकी तह्क़ीक़ात करना, बिक्रावकी रजिस्टरी करना और इस क़िस्मका सर्कारी मह्सूल वुसूल करना वगै़रह मकानातके ख़रीद फ़रोख़्तसे तअ़ल्लुक़ रखनेवाले काम हैं. सिवाय अलवर व राजगढ़के दूसरे मक़ामोंका काम महकमह मालगुज़ारीके ताबे है. महकमह नुज़ूलके हाकिमकी अपील, अपीलकी कचहरीमें होती है. राज्यके महलातकी

रखनेका भी है. वे सिपाही जिनको कि ज़मीन मिली है, एक क़िस्मके छोटे जागीरदार हैं, जो घोड़े व सवारके एवज़ तह्सील व गढ़ोंमें पैदल सिपाहीकी नौकरी देते हैं. ये लोग सर्दार कहलाते हैं.

जेलख़ानह– एजेन्सी सर्जनके इस्तियारमें है, जिसके मातह्त एक सुपरिन्टेन्डेन्ट है. यह मकान महाराव राजा विनयसिंहने एक सरायके साम्हने उम्दह मौक़े और तर्ज़पर बनवाया है, जो क़ैदियोंके लिये सिहत बख़्श है. यहांपर दरी, ग़ालीचे व नवार वगैरह चीज़ें अच्छी तय्यार होती हैं. इसके पास एक पागलख़ानह भी है, जहांपर पागलोंका इलाज होता है, और वे लोग यहींपर रक्खे जाते हैं. क़ाइदह जेलख़ानेका उम्दह है; जेलगार्डमें एक सूबेदार, ६ हवाल्दार, ११९ सिपाही, ३ भिश्ती, १ जमादार, ५ नायक हवाल्दार, १ मुहर्रिर और १ ख़लासी रहता है; काम करने वाले क़ैदियोंकी रोज़ानह ख़ुराक सेर नाज और दाल या तर्कारी है. जेलका सालानह ख़र्च ९११० रुपयेके क़रीब पड़ता है.

टकशाल– यहांके टकशालमें कभी कभी देशी रुपये बनते हैं, जो हाली कहलाते हैं; लेकिन् इनका चलन अब ज़ियादह नहीं है, कल्दार रुपयेका चलन बहुत ही बढ़गया है; और पैसा भी अंग्रेज़ी ही चलता है, पैसा और पाई दोनों राइज हैं, लेकिन् बनिस्वत पाइयोंके बनिये लोग कौड़ियां ज़ियादह पसन्द करते हैं. चन्द सालसे मौजूद महाराजा मंगलसिंहने कल्दारकी क़ीमतके बराबर और उसी शक्लका, कि जिसके एक तरफ़ फ़ार्सीमें उनका नाम है, जारी किया है; वह हर जगह कल्दारके भावसे चल सक्ता है. पुराने पैसे, जो यहां पहिले चलते थे, उनको सिवाय घास व लकड़ी बेचनेवालोंके कोई नहीं लेता.

मद्रसह– सरिश्तह तालीमका इन्तिज़ाम अब यहां बहुत उम्दह होगया है, अगर्चि विद्याका प्रचार तो पहिले हीसे था, और ख़ास शहर अल्वरका बड़ा मद्रसह विक्रमी १८९९ [हि० १२५८ = .ई० १८४२] में महाराव राजा विनयसिंहने क़ाइम किया था, लेकिन् महाराव राजा शिवदानसिंहने मालगुज़ारीपर १ रुपया सैकड़ा महसूल जारी करके बड़े बड़े गांवों और तह्सीलोंमें मद्रसे क़ाइम करदिये, जिनमें फ़ार्सी, उर्दू और हिन्दी पढ़ाई जाती है, और विक्रमी १९३० कार्तिक [हि० १२९० रमज़ान = ई० १८७३ नोवेम्बर] में राजधानीके बड़े मद्रसेको, जो पहिले महाराव राजा बख़्तावरसिंहकी छत्रीमें था, शहरके ख़ास दर्वाज़ेके बाहर कुशादह और उम्दह जगहपर अंग्रेज़ी क़ताका दुमन्ज़िला, मकान तय्यार होने बाद मुक़र्रर किया; यहां एक पाठशाला ठाकुर सर्दारों तथा बड़े अह्लकारोंकी औलादको तालीम देनेकी ग़रज़से विक्रमी १९२८ [हि० १२८८ = .ई० १८७१] में क़ाइम कीगई, जो

तामीरका काम एक होश्यार इन्जिनिअरके सुपुर्द है, जो ३०० रुपये माहवार पाता है.

ख़ज़ानह - इस कामपर एक मोतबर ख़ानदानी महाजन मुक़र्रर है, जो अपने मातह्तोंकी मौकूफ़ी बहालीका इख़्तियार रखता है. हिसाब हिन्दी व फ़ार्सी दोनोंमें होता है, और रोज़मर्रहकी आमद व ख़र्चके हिसाबका तख़्मीना हमेशह देखलिया जाता है. दाण याने साइरकी आमदनी ई॰ १८६८-६९ में १२००००० रुपया थी, लेकिन् ई॰ १८७७ में दाण मुआफ़ करदिया गया, अब सिर्फ़ बहुत कम चीज़ोंपर बाक़ी रहगया है.

म्युनिसिपॅलिटी-(शहर सफ़ाई वग़ैरह) शहरकी सफ़ाईके लिये चन्द सालसे अलवर, राजगढ़ व तिजारा वग़ैरह शहरोंमें म्युनिसिपल कमिटी मुक़र्रर कीगई है. इसके मेम्बर कुछ तो राज्यके नौकर और कुछ बे नौकर हैं. मकानोंके मह्सूलकी बनिस्बत, जो कि पहिले लगता था, दाण अच्छा समझा जाता है. यह कमिटी हर सालके शुरू होनेसे पहिले सालानह आमदनीका हिसाब देखती है, और हर सालके अख़ीरसे उन कामोंकी रिपोर्ट देखती है, जो कि सालभरमें होते हैं.

धर्मखाता व इन्आम- ब्राह्मणों तथा मन्दिरोंके लिये माहवारी बंधानके मुवाफ़िक़ रुपया मिलता है. इस राज्यमें इस क़िस्मके ३७६ मन्दिर हैं, इनमेंसे तीन राणियोंके बनवाये हुओंका ख़र्च ३००० रुपया सालानह, द्वारिकानाथ के मन्दिरका ख़र्च ३६०० रुपया, और जगन्नाथके मन्दिरके लिये ६०० रुपया सालानह दिया जाता है, जो ख़ास शहर अलवरमें हैं; और राजगढ़में गोविन्दजी के मन्दिरके सिवा, जिसके लिये २५०० रुपये मुक़र्रर हैं, बाक़ी मन्दिरोंके लिये थोड़ा थोड़ा मासिक ख़र्च मुक़र्रर है. मन्दिरोंका कुल सालानह ख़र्च ४०००० रुपयेके क़रीब समझा जाता है. ब्राह्मणोंके लिये २८००० और फ़क़ीरों वग़ैरहके लिये ७००० रुपया नियत था. हर एक अह्लकार व सर्कारी नौकरको विवाह और मौतके कामोंमें मदद देनेके लिये ५ रुपयेसे लेकर ३००० से ज़ियादह तक बतौर इन्आम मिलता है.

फ़ौज - पियादह पल्टन, रिसाला, तोपख़ानह व पुलिस वग़ैरह फ़ौजी आदमियों की तादाद छः हज़ारसे ज़ियादह मानी जाती है; मेजर पी॰ डब्ल्यू॰ पाउलेट ने अपने बनाये हुए अलवर गज़ेटिअरमें ६७९५ लिखी है. अगर्चि पहिले पुलिस जुदा न थी, और थानेदारोंकी तन्ख़्वाह भी बहुत कम थी, लेकिन् अब थानेदारोंके लिये ३० से ४१ रुपये तक माहवार मुक़र्रर होगया है, गढ़की पल्टनमेंसे अच्छे अच्छे जवान चुनकर तन्ख़्वाहकी तरक़्क़ीके साथ पुलिस क़ाइम कीगई है, और एक लाइक़ शख़्स सुपरिन्टेन्डेन्ट १०० रुपये माहवार तन्ख़्वाहपर मुक़र्रर कियागया है, जिसका काम पुलिसका इन्तिज़ाम करनेके सिवा, मीनों वग़ैरह लुटेरोंकी निगहबानी

रखनेका भी है. वे सिपाही जिनको कि ज़मीन मिली है, एक क़िस्मके छोटे जागीरदार हैं, जो घोड़े व सवारके एवज़ तह्सील व गढ़ोंमें पैदल सिपाहीकी नौकरी देते हैं. ये लोग सर्दार कहलाते हैं.

जेलख़ानह- एजेन्सी सर्जनके इस्तियारमें है, जिसके मातह्त एक सुपरिन्टेन्डेन्ट है. यह मकान महाराव राजा विनयसिंहने एक सरायके साम्हने उम्दह मौक़े और तर्ज़पर बनवाया है, जो क़ैदियोंके लिये सिहत बख़्श है. यहांपर दरी, ग़ालीचे व नवार वग़ैरह चीज़ें अच्छी तय्यार होती हैं. इसके पास एक पागलख़ानह भी है, जहांपर पागलोंका इलाज होता है, और वे लोग यहींपर रक्खे जाते हैं. क़ाइदह जेलख़ानेका उम्दह है; जेलगार्डमें एक सूबेदार, ६ हवाल्दार, ११९ सिपाही, ३ भिश्ती, १ जमादार, ५ नायक हवाल्दार, १ मुहर्रिर और १ ख़लासी रहता है; काम करने वाले क़ैदियोंकी रोज़ानह ख़ुराक सेर नाज और दाल या तर्कारी है. जेलका सालानह ख़र्च ९११४० रुपयेके क़रीब पड़ता है.

टकशाल- यहांके टकशालमें कभी कभी देशी रुपये बनते हैं, जो हाली कहलाते हैं; लेकिन् इनका चलन अब ज़ियादह नहीं है, कल्दार रुपयेका चलन बहुत ही बढ़गया है; और पैसा भी अंग्रेज़ी ही चलता है, पैसा और पाई दोनों राइज हैं, लेकिन् बनिस्वत पाइयोंके बनिये लोग कौड़ियां ज़ियादह पसन्द करते हैं. चन्द सालसे मौजूद महाराजा मंगलसिंहने कल्दारकी क़ीमतके बराबर और उसी शक्कका, कि जिसके एक तरफ़ फ़ार्सीमें उनका नाम है, जारी किया है; वह हर जगह कल्दारके भावसे चल सक्ता है. पुराने पैसे, जो यहां पहिले चलते थे, उनको सिवाय घास व लकड़ी बेचनेवालोंके कोई नहीं लेता.

मद्रसह- सरिश्तह तालीमका इन्तिज़ाम अब यहां बहुत उम्दह होगया है, अगर्चि विद्याका प्रचार तो पहिले हीसे था, और ख़ास शहर अल्वरका बड़ा मद्रसह विक्रमी १८९९ [हि० १२५८ = ई० १८४२] में महाराव राजा विनयसिंहने क़ाइम किया था, लेकिन् महाराव राजा शिवदानसिंहने मालगुज़ारीपर १ रुपया सैकड़ा मह्सूल जारी करके बड़े बड़े गांवों और तह्सीलोंमें मद्रसे क़ाइम करदिये, जिनमें फ़ार्सी, उर्दू और हिन्दी पढ़ाई जाती है, और विक्रमी १९३० कार्तिक [हि० १२९० रमज़ान = ई० १८७३ नोवेम्बर] में राजधानीके बड़े मद्रसेको, जो पहिले महाराव राजा बख़्तावरसिंहकी छत्रीमें था, शहरके ख़ास दर्वाज़ेके बाहर कुशादह और उम्दह जगहपर अंग्रेज़ी क़ताका दुमन्ज़िला,मकान तय्यार होने बाद मुक़र्रर किया; यहां एक पाठशाला ठाकुर सर्दारों तथा बड़े अह्लकारोंकी औलादको तालीम देनेकी ग़रज़से विक्रमी १९२८ [हि० १२८८ = ई० १८७१] में क़ाइम कीगई, जो

अब तक मौजूद है. सिवाय इनके मिशन स्कूल और कई छोटे छोटे हिन्दी व फ़ार्सी के मक्तब हैं; एक लड़कियोंकी पाठशाला भी है. यहांपर सरिश्तह तालीमका एक महक्मह है, जिसका अफ्सर और उसका मातहत इन्स्पेक्टर तह्सीलों व देहातमें, जहां जहां मद्रसे हैं, दौरा करते रहते हैं.

राज्यका पुस्तकालय देखनेके लाइक़ है, इसमें कई क़दीम संस्कृत पुस्तकें और कई अरबी व फ़ार्सीकी क़लमी किताबें मए तस्वीरोंके रक्खी हैं, और एक गुलिस्तां क़लमी अजीब तुहफ़ा है, जो पचास हज़ार रुपयेकी लागतसे तय्यार हुई, और शायद वैसी कहीं नहीं मिलसकी.

शिफ़ाख़ानह- ख़ास राजधानी अलवरमें एक बड़ा और कुशादह अंग्रेज़ी क़ताका शिफ़ाख़ानह बना हुआ है, जिसमें बीमारोंके रहनेके लिये उम्दह मकान और रहने वाले मरीज़ोंको खाना वग़ैरह राज्यसे मिलता है. सिवा इनके एक शिफ़ाख़ानह राजगढ़में और तिजारामें है, और अब हर एक तह्सीलके बड़े क़स्बोंमें बनते जाते हैं.

बाग़ीचे- रियासत अलवरमें ६५ से ज़ियादह बाग़ीचे हैं; जिनमेंसे दो तो ख़ास शहरके अन्दर, २७ सीमापर, १ कृष्णगढ़ पर्गनेमें, २ तिजारामें, २ बानसूरमें, १ गोविन्दगढ़में, ३ लक्ष्मणगढ़में, ६ थानह ग़ाज़ीमें, २० राजगढ़में, और सिवाय इनके कई एक और भी हैं.

क़ौम व फ़िर्क़े- रियासत अलवरमें जिस जिस क़ौमके लोग आबाद हैं, उनके नाम यहांपर लिखे जाते हैं- ब्राह्मण, राजपूतोंमें चहुवान, कछवाहा, राठौड़, तंवर, गौड़, यादव, शैख़ावत, नरूका (१), बड़गूजर, और बनिया, कायस्थ, गूजर, अहीर, माली, सुनार, खाती, लुहार, कहार, दर्ज़ी, पटवा, चितारा, तेली, तंबोली, भड़भूंजा, मनिहार, कुम्हार, नाई, बारी, ठठेरा, रैबारी, गडरिया, बावरी, मीना, चाकर, (गुलाम), डाकौत, भांड, ढाडी, ख़ानज़ादह (२) मुसल्मान, मेव (३), क़ाइमख़ानी,

---

(१) अलवरके राजा इसी ख़ानदानके हैं, और इनकी तथा कछवाहा ख़ानदानकी कुलदेवी जमुहाय महादेवी है, जिसका मन्दिर जयपुरके राज्यमें बाणगंगा नदीके नालेमें, राज्य अलवरके दक्षिणी पूर्वी कोणसे नज़्दीक ही है. यहींपर जयपुर राज्यके जमानेवाले दुलहराय तथा पीछेसे उसके बेटेने मीना और बड़गूजरोंकी लड़ाईमें देवीसे बड़ी मदद पाई थी.

(२) ये लोग खान जादव नाम राजपूतकी औलादमें हैं, जो मुसल्मान होगया था. मेवातमें क़दीमसे राज्य इन्हींका था, लेकिन् अब इन लोगोंके कोई जागीरी या मुआफ़ीका गांव नहीं है, केवल नौकरीसे गुज़र करते हैं.

(३) ये लोग नामके मुसल्मान हैं, वर्नह इनके गांवके देवता वही हैं, जो कि हिन्दू ज़मींदारों के; इनके यहां कई एक हिन्दुओंके त्यौहार, मसलन होली, दिवाली, दशहरा, व जन्माष्टमी वग़ैरह उसी ख़ुशीके साथ माने जाते हैं, जैसे मुहर्रम, शबबरात व ईद.

रंगरेज़, जुलाहा, कूंजड़ा, भिश्ती, क़साई, कमनीगर, धोबी, कोली, चमार, और कई मत वाले साधू तथा बहुतसे मुतफ़र्रक़ फ़िर्के आबाद हैं. ब्राह्मणोंमें सबसे ज़ियादह आदगौड़ इस इलाक़हमें बस्ते हैं.

ज़मीनका पट्टा व महसूल वगैरह- इस राज्यमें सिवाय थोड़ेसे हिस्सेके, जो जागीरदारों वगैरहके क़ब्जेमें है, खालिसेकी ज़मीन ज़ियादह है. राज्यमें ज़मीनका पट्टा दो तरहका है, एक बंटी हुई ज़मीन, जो बापोतीके हक़के मुवाफ़िक़ बांटी गई है, जिसको पश्चिमोत्तर देशमें पट्टीदारी कहते हैं; और दूसरी गैल याने वगैर बंटी हुई; यह दो तरहकी होती है, अव्वल यह कि, जिस शख्सका ज़मीनपर क़ब्ज़ह है, उसीको पूरा इख्तियार होगया है, वह भाइयों व हक़दारोंमें नहीं बंट सक्ती; उस ज़मीनका जवाबदिह वही शख्स होता है, जिसके क़ब्जेमें ज़मीन हो, चाहे वह उसे जोते बोवे या पड़ा रहनेदे; और जमाकी बांट अक्सर ज़मीनके लिहाज़से बीघोड़ीके हिसाबपर होती है. दूसरे गैल पट्टेमें गांवकी ज़मीन शामिलातमें रहती है, और किसानोंको किरायेपर दीजाती है. इसमें बापोतीके हक़के अनुसार सबको भाई बंट बराबर मिलता है, और हासिल भी बराबर देते हैं, नफ़ नुक्सानमें सब हिस्सेदार शामिल रहते हैं. यह भी एक क़िस्मका ज़मींदारी पट्टा है; ऐसे पट्टे इस राज्यमें अक्सर लोगोंको मिले हैं.

जहां जागीरदार हिस्सह लेता है, वह या तो आधा आधा, पांचवां तिहाई, या चौथाई होता है, और इससे ज़ियादह एक महसूल और है, लेकिन् कभी कभी तिहाई, और हमेशह चौथाई मुफ़ीद समझा जाता है. कुल पैदावारका तीसरा हिस्सह, और सिवा इसके फ़ी मन एक सेर अनाज ज़ियादह, गांवमें हर एक हलसे एक दिनका काम, हर एक लाव वालेसे एक बोझ हरा अनाज (बाल या भुट्टे) और हर एक शादीमें २) रुपये नक्द और कभी नौकरोंके लिये खाना, वगैर जोती हुई ज़मीनकी घास और जंगली पैदावार, और पड़त ज़मीनपर १।) सवा रुपया एकड़के हिसाबसे हासिल लेनेका इख्तियार जागीरदारको समझा जाता है. जागीरदारको इख्तियार है, कि चाहे वह हासिलका नक्द रुपया लेवे या अनाज लेवे. मालगुज़ारीका कोई एक मुक़र्रर निर्ख़ नहीं है, लेकिन् विक्रमी १९३३ [हि० १२९३ = ई० १८७६] में जब मालगुज़ारीका नया बन्दोबस्त हुआ, उस वक्त हासिलका निर्ख़ ज़मीन और जिन्स के लिहाज़से सींची जानेवाली ज़मीनपर १) रुपयेसे लेकर ९।=) तक, और वगैर सींचीजानेवालीपर ॥) आठ आनेसे ३॥) रुपये तक मुक़र्रर करदिया गया है. कुएं वाली रेतीली ज़मीन, जो ख़राब तरहसे सींची जाती है, और ख़ास उत्तरमें

ज़ियादह है, उसके लिये ५) रुपये फ़ी एकड़, और .न्दह तौरपर सींची जानेवाली दक्षिण पश्चिमकी ज़मीनके लिये २२) रुपये तक मह्सूल लिया जाता है. मह्सूल जो दिया जाता है, वह तअ़ज्जुबके लाइक़ है, याने राज्यके एक बीघेके लिये ११) रुपया; लेकिन् किसी किसी बाग़की ज़मीनको सालभरमें बारह मर्तबह पानी दिया जाता है, इसलिये सिर्फ़ पानीका हासिल ४५) रुपया फ़ी एकड़ देना पड़ता है, और अगर इसमें मालगुज़ारी जोड़ीजावे, तो पचास रुपये होजाते हैं. जिस ज़मीन पर बाढ़ आती है, उसका हासिल फ़ी एकड़ ९) रुपये लिया जाता है. यह निर्ख़ महकमह बन्दोबस्तके जारी होनेसे पेश्तर ही ठहराया गया था. नहरोंसे सींची जानेवाली ज़मीन इस राज्यमें ४१६० बीघेसे ज़ियादह है; विक्रमी १९३१-३२ [हि० १२९१-९२ = ई० १८७४-७५] में नहरोंकी जुदी आमदनी १७०४०) रुपये हुई थी.

जब गांवोंमें ठेका नहीं हुआ था, और कुल इन्तिज़ाम तह्सीलदार करते थे, तब रईसका मन्शा यह था, कि सिवाय २ और ३ रुपये सैकड़ाके, जो हक़ मुजराई कहलाता था, और गांवके सर्दारों या नम्बरदारोंको दिया जाता था, पूरा मह्सूल वुसूल होजावे. उस वक़ यह क़ाइदह था, कि हर एक फ़स्लकी मालगुज़ारी कई पीढ़ियोंसे हर एक हिस्सेके लिये राज्यकी तरफ़से बज़रीए क़ानूनगो लोगोंके मुक़र्रर होजाती थी. जब विक्रमी १९१९ [हि० १२७९ = ई० १८६२] में दस सालका बन्दोबस्त शुरू हुआ, तबसे राज्यभरमें लाओंकी तादाद १२६०४ से बढ़कर १६०७१ होगई है. विक्रमी १९२९ [हि० १२८९ = ई० १८७२] में बहुतसे ज़मीदारोंको सभाकी रायके मुवाफ़िक़ ८०००० रुपया पेशगी दिया गया, जिससे ३०० नये कुएं बनाये गये, और १०० से ज़ियादहकी मरम्मत कीगई. इस राज्यमें रहटके ज़रीएसे पानी नहीं निकाला जाता, कुओंपर चरसोंसे काम लेते हैं, जिसका ख़ास सबब यही है, कि कुएं गहरे ज़ियादह होनेसे रहट काम नहीं देसक्ता. यहांके कुओंका पानी सात तरहका होता है, मतवाला, मलमला, रुकछा, मीठा, खारा, तेलिया, और बजतेलिया, जिसमें तेल और सख़्त खार होता है. इनमेंसे पहिला पैदावारके हक़में सबसे बढ़कर और पिछले दो बिल्कुल ख़राब और बेकार होते हैं; ये पीने या खेतीको सींचने वग़ैरह किसी काममें नहीं आते. यहांके ज़मीदार लोग बनिस्बत अंग्रेज़ी इलाक़हके बिह्तर हालतमें हैं. तह्सीलोंमें गांवोंका हासिल बज़रीए पटवारी व अह्लकारोंके वुसूल होता है.

तह्सीलें - राज्य अलवरमें १२ तह्सीलें १- तिजारा, २- कृष्णगढ़, ३- मंडावर,

४-वहरोड़, ५-गोविन्दगढ़, ६-रामगढ़, ७-अलवर; ८-वान्सूर, ९-कठूंवर, १०- लक्ष्मणगढ़, ११-राजगढ़, और १२- थानहग़ाज़ी हैं, जिनका मुफ़स्सल बयान नीचे दर्ज किया जाता है :-

१-तह्सील तिजारा-यह तह्सील मेवातके बीचोंबीच अंग्रेज़ी इलाक़ह, जयपुर की तह्सील कोट क़ासिम और अलवरकी तह्सील कृष्णगढ़के नज़्दीक २५७ मील मुरब्बाके विस्तारमें वाक़े है. आबादी कुल तह्सीलकी क़रीब ५२००० आदमीके हैं. इस तह्सीलमें दो पर्गने-एक ख़ास तिजारा और दूसरा टपूकड़ा (१) है, जिनके मातहत १९९ गांव ख़ालिसेके और सब मिलाकर २०२ हैं. इस तह्सीलकी ज़मीनका ज़ियादह हिस्सह कम उपजाऊ है, सबसे उम्दह ज़मीन दक्षिणी पश्चिमी तरफ़को है. ख़ास फ़स्ल बाजरा और इससे दूसरे दरजेपर उड़द, मूंग, मोठ, वग़ैरहकी होती है. पड़त ज़मीन किसी काममें नहीं आती. तिजारामें सींची जाने वाली ज़मीन सैकड़े पीछे बारहवें हिस्सेसे भी कम पाई जाती है. पूर्वकी पहाड़ियोंका बहाव तह्सीलके मुख्य बांधको पानी पहुंचाता है, जो गढ़ और बलवन्तसिंहके महलके नीचे है. आबोहवा इस तह्सीलकी आदमी और जानवरके लिये सिहतबख़्श और पुष्ट है; पहाड़ियोंके आसपास तो पानी बहुत ही नीचे निकलता है, लेकिन् और जगहोंमें २० से ५० फ़ुट तक की गहराईपर पाया जाता है. शहर तिजारा अलवरसे ३० मील दूरीपर पूर्वोत्तरको वाक़े है; इसमें आबादी ७४०० आदमी और मालिक यहांके मेव, माली और ख़ानज़ादह हैं. शहरमें एक म्युनि-सिपल कमिटी, एक हॉस्पिटल, एक मद्रसह और बड़ा बाज़ार है. खेतीके सिवा यहांपर कपड़ा और काग़ज़ भी बनता है. यह शहर मेवातकी क़दीम राजधानी था, और मौजूदह ज़मानेमें भी एक मश्हूर मक़ाम गिनाजाता है. बहुधा हिन्दुओंके ज़बानी बयानसे मालूम होता है, कि तिजारा सरेहताके राजा सुशर्माजीतके बेटे तेजपालने बसाया था, और इसका पुराना नाम 'त्रीगर्तक' था. तेजपाल यादवका नाम पिछले वक़्तोंकी तिजाराकी जैन कथामें मिलता है. तिजारामें एक गढ़, कई पुरानी मस्जिदें और मश्हूर शख़्सोंकी क़ब्रें तथा पुरानी इमारतें पाई जाती हैं. इस तह्सीलमें कई गांव बहुत क़दीम ज़मानेके बसे हुए इस वक़ तक मौजूद हैं.

२- तह्सील किशनगढ़ (कृष्णगढ़) - यह तह्सील तिजाराके पास पश्चिमकी तरफ़ मेवातमें, उत्तरकी तरफ़ राज्य जयपुरकी तह्सील कोट क़ासिमसे मिली हुई क़रीब २१७ मील मुरब्बाके विस्तारमें वाक़े है. तह्सीलमें ९ पर्गने हैं, जिनमें

(१) पहिले यह ईंदोर और दक्षिणी तिजाराके नामसे प्रसिद्ध था.

१४४½ गांव ख़ालिसेके और १५½ गांव मुआफ़ीके हैं. ६१००० आदमियोंकी आबादी कुल तह्सीलमें मानी गई है. इस तह्सीलकी आधी ज़मीन अच्छी है. बाजरा, ज्वार, जव और रुई कस्रतसे पैदा होती है; कुओंका पानी किसी किसी जगह ८० फ़ुटसे भी ज़ियादह गहराईपर लेकिन् अक्सर १५ से ३५ फ़ुट तक मिलता है. कृष्णगढ़से एक मील पश्चिमकी तरफ़ वासकृपालनगर एक बड़ा व्यापारका क़स्बह है, और इससे दूसरे दरजेका राजपूतानह स्टेट रेलवेपर खैरथल स्टेशन है, जो बज़रीए एक पक्की सड़कके किशनगढ़से मिला है.

३– तह्सील मंडावर– यह तह्सील किशनगढ़के पश्चिम और उत्तरकी तरफ़ है; इसके पास बावल पर्गनए नाभा और शाहजहांपुर वग़ैरह कई गांव इलाके अंग्रेज़ीके वाके हैं. तह्सीलका कुछ हिस्सह राठमें और कुछ मेवातमें है. रक्बह तक़ीबन् २२९ मील मुरब्बा और आबादी ५४००० आदमी है. तह्सीलके मुतअ़ल्लक़ ६ पर्गनोंमें १२७ गांव ख़ालिसेके और १७ गांव जागीरदारोंके हैं. बाजरा, चना, जव और ज्वार यहां ज़ियादह पैदा होती है. पानी कुओंमें २० से ४० फ़ुटकी गहराईपर निकल आता है, लेकिन् कहीं कही ८० फ़ुटपर पाया जाता है. इस तह्सीलकी ज़मीन मुख्य चहुवान ठाकुरोंके क़ब्ज़हमें रही है. क़स्बह मंडावर, जो अलवरसे २२ मील उत्तरको है, क़रीब क़रीब पहाड़ियोंसे घिरा हुआ है, जो दक्षिणकी चटानी ज़मीनकी एक शाख़ है; और १७५७ फ़ुटकी ऊंचाई तक चली गई है. इस क़स्बेमें रावकी हवेलीके सिवा मस्जिद और क़ब्रें मश्हूर हैं; क़स्बेके पास ही एक पुराना बड़ा तालाब है. मंडावरमें एक थाना और तह्सील राज्यकी तरफ़से नियत है. घरोंकी तादाद ४८२ और आदमियोंकी आबादी २३३७ है.

४– तह्सील बहरोड़– राज्यके पश्चिमोत्तरी भागमें है. इसकी सीमाके चारों तरफ़ फिरनेसे यह मालूम होगा, कि राज्यके ठीक बाहर मुल्की बन्दोबस्तमें सात बार फेर फार है; दक्षिण पश्चिममें कोटपुतलीका कुछ थोड़ा हिस्सह साबी और सोताके बीचमें, और बाद उसके पटियाला और फिर नाभाकी रियासत है; उत्तरी तरफ़ गुड़गांवा, पूर्वोत्तरमें बावल पर्गनए नाभा, उससे आगे अलवरका एक कोना, और बाद उसके शाहजहांपुर और गुड़गांवाके दूसरे गांव और सबसे पीछे अलवरका इलाक़ह मिलता है. यह तह्सील राठमें है, जिसका रक्बह २६४ मील मुरब्बा और आबादी तक़ीबन् ६०००० आदमी गिनीजाती है. इस तह्सीलमें तीन पर्गने हैं, जिनके मुतअ़ल्लक़ १३१ गांव ख़ालिसहके और २० मुआफ़ीके हैं. ज़मीन तह्सीलमें किसी जगह उपजाऊ और कहीं बहुत कम उपजाऊ है; बाजरा, ज्वार, मोठ, चना,

जव और गेहूं बनिस्बत दूसरे अनाजके अच्छा निपजता है. कुओंमें पानी २० से ५० फुट तककी गहराईपर अक्सर निकलआता है, लेकिन् कई जगह १३० फुट पर पायाजाता है. क़स्बह बहरोड़ अलवरसे ३४ मील पश्चिमोत्तर, और नारनौलसे १२ मील दक्षिण पूर्व तरफ़ है, जिसमें १०३० के क़रीब घर, ५३६८ आदमियोंकी आबादी, एक कच्चा मिट्टीका गढ़, जो हालमें बिल्कुल बेमरम्मत पड़ा है, तह्सील, थानह, और एक मद्रसह भी है. मद्रसेमें फ़ार्सी और हिन्दी पढ़ाई जाती है; हालमें एक हॉस्पिटल भी मुक़र्रर किया गया है. क़स्बेमें एक उम्दह छोटा बाज़ार और कई बड़े बड़े संगीन मकान हैं; अगर्चि यह क़स्वह इस वक्त भी ठीक आबाद है, लेकिन् विक्रमी १८६० [हि० १२१८ = ई० १८०३] में मरहटोंके हाथसे तबाह होने बाद अपनी क़दीम अस्ली हालतको नहीं पहुंच सका.

५- तह्सील गोविन्दगढ़- सिर्फ़ एक पर्गनह है, जिसके मुतअ़ल्लक़ ५३ गांव खालिसेके, और ३ मुआफ़ीके हैं, मेवातमें वाक़े है. इसका रक्बह क़रीब ५२ मील मुरब्बा और आबादी २६००० आदमियोंकी है. तह्सीलकी ज़मीन अक्सर अच्छी है, रुई, बाजरा और ज्वार बहुत निपजती है; पानी सिर्फ़ १० से लेकर २५ फुट तक कुआं खोदनेसे निकल आता है, और तह्सीलोंकी तरह यहां गहराई बिल्कुल नहीं पाई जाती. क़स्वह गोविन्दगढ़में एक तह्सील, एक थानह, और एक पाठशाला, और बाशिन्दोंकी तादाद ४२९० है. यह क़स्वह अलवरसे २५ मील पूर्वको बस्ता है.

६- तह्सील रामगढ़- यह तह्सील राज्यके मध्यमें तह्सील गोविन्दगढ़ और ज़ियादहतर रियासत भरतपुरसे मिली हुई मेवातमें वाक़े है, जिसका रक्बह १४६ मील मुरब्बा और आबादी ५१००० आदमीकी है. रामगढ़की ज़मीन पैदावारीके लिहाज़से उम्दह समझी जाती है; बाजरा, ज्वार, और जव यहांकी मुख्य पैदावार है. तह्सील के मुतअ़ल्लक़ एक पर्गनह और १०५ गांव हैं. डेढ़ सौ वर्ष पहिले इस क़स्बेमें आबादी बिल्कुल नहीं थी; लेकिन् इस अ़रसेमें भोज नामका एक मुखिया चमार मए कई एक दूसरे चमारोंके पहिले पहिल वहां आकर रहा; और कुछ अ़रसे तक अपने भाइयोंकी सहायताके लिये बेगारमें काम करनेके सबब आसपासके बड़े गांवोंमें इसका नाम भोजपुर मश्हूर होगया; और चमारोंने अपना बहुतसा रुपया लगाकर रहनेके लिये पक्के मकानात बना लिये. विक्रमी १८०२-३ [हि० ११५८-५९ = ई० १७४५-४६] में पद्मसिंह नरूकाने इसको अपने क़ब्ज़ेमें लिया, और उसमें एक गढ़ बनवाकर उसका नाम रामगढ़ रक्खा; इस क़स्बेमें एक तालाब है.

७ - तह्सील अलवर- यह तह्सील रामगढ़के पश्चिम और नज़्दीक ही मेवातमें

है. राज्यमें सिर्फ़ यही तह्सील है, जो किसी ग़ैर इलाक़ेसे नहीं मिली है. इसका रक्बह ४९६ मील मुरब्बा और आबादी १५२००० आदमी है. तह्सीलके मुतअल्लिक़ ३ पर्गने और १४० गांव खालिसेके हैं. पानी ज़मीनकी सत्हसे २० या ३५ फ़ुटकी गहराई पर निकल आता है, और कई जगह ६० फ़ुटपर निकलता है, जो सबसे ज़ियादह गहराई मानी जाती है. ज़मीन इस तह्सीलकी सेराव है, राजधानीका नाम अलवर रक्खे जानेके दो सबब हैं- अव्वल तो यह कि पहिले यह अलपुर याने मज़्बूत शहर कहलाता था, और दूसरे, यह कि इसका नाम अरवल लफ़्ज़के हुरूफ़ बदलनेसे बना है, जो उस पहाड़ी सिल्सिलेका नाम है, जिससे अलवरकी पहाड़ियां मिली हुई हैं. शहर उसी पहाड़ी सिल्सिलेके दामनमें वसा है, और चोटीपर एक गढ़ मए महलके १००० फ़ुट ऊंचा वना हुआ है. लोगोंके ज़बानी बयानसे पाया जाता है, कि यह गढ़ और प्राचीन शहर, जिसके निशानात गढ़के नीचे पहाड़ियोंमें दिखाई देते हैं, इस राज्यके क़दीम मालिक निकुंप राजपूतोंने बनवाया था. शहर अलवरके गिर्द पांच दर्वाज़ों सहित शहर पनाह और खाई बनी हुई है, और उसके अन्दर बाज़ारकी सड़कों व गलियोंमें पत्थर जड़े हुए हैं. रावराजा विनयसिंहका बनवाया हुआ महल, और साम्हनेकी तरफ़ वस्तावरसिंहका जलाशय और छत्री, मद्रसह, वाज़ार, हॉस्पिटल वाज़ारमें जगन्नाथजीका मन्दिर उम्दह व देखनेके लायक़ मकानात हैं; परन्तु सवसे वढ़कर कारीगरी व खूबसूरतीमें बख़्तावरसिंहकी छत्री क़ाबिल तारीफ़के है. एक गुम्बज़दार मकानमें, जो बाज़ारकी चारों सड़कोंके बीचमें त्रिपोलिया नामसे प्रसिद्ध है, फ़ीरोज़शाहके भाई तरंग सुल्तानकी प्राचीन क़ब्र है. सिवा इसके कई पुरानी मस्जिदें हैं, जिनपर लेख खुदे हुए हैं. सबसे बड़ी मस्जिद महलके दर्वाज़ेके पास है, जिसके वननेका साल विक्रमी १६१९ [हि० ९६९ = ई० १५६२] लिखा है, उसमें अव राज्यका भंडार है; अलावह इनके कई क़ब्रें नामी आदमियोंकी और मस्जिदें वग़ैरह पुरानी इमारतें मश्हूर हैं; मोती डूंगरीका बाग़ और रेल्वे स्टेशनके पास थोड़ी दूरपर महल बड़ी रौनक़ और सैरका मक़ाम है.

८- तह्सील बान्सूर- राज्यके मध्यमें अलवरकी तह्सीलके पास कुछ तो राठमें और कुछ वाल्में ३३० मील मुरब्बा रक़्बेके विस्तारसे पश्चिमी तरफ़ कोटपुतली तथा जयपुरके इलाक़हसे मिलीहुई वाक़े है. आबादी कुल तह्सीलकी ६७००० आदमी, आठ पर्गने, और १३६ गांव हैं. ज़मीन इस तह्सीलमें सब तरहकी है, कहीं सबसे उम्दह और कहीं बिल्कुल ख़राब; पानीकी औसत गहराई २० से ३०

फ़ुट तक और कहीं कहीं ७० फ़ुट भी पाईजाती है. क़स्बह बान्सूर शहर अलवर से २० मील पश्चिमोत्तरमें है, सड़कके रास्ते ३० मीलसे भी ज़ियादह पड़ता है; क़स्बेमें ६२० घर और २९३० आदमीकी आबादी है. शहरके साम्हने चटानी पहाड़ीपर एक गढ़ बना हुआ है, और वहीं तह्सीलके लिये एक मकान बनाया गया है.

९- तह्सील कठूंबर- यह तह्सील राज्यकी दक्षिणी तह्सीलोंमेंसे सबसे अव्वल, कुछ तो नरूखंडमें और कुछ कटेरमें वाक़े है, जिसके तीन तरफ़ भरतपुरकी ज़मीन है. इसका रक़्बह १२२ मील मुरब्बा और आबादी ३९००० आदमी हैं. तह्सील में तीन पर्गनोंके मुतअ़ल्लिक़ ८१ गावोंमेंसे ६७ ख़ालिसेके और १४ मुआफ़ीके हैं. ज़मीनका $\frac{२}{३}$ हिस्सह तो ख़राब और बाक़ी अच्छा है. बाजरा, मोठ, ज्वार, रुई और जव यहांकी धरतीमें अच्छे निपजते हैं. कठूंबरके बाज़ बाज़ कुओंमें पानी ७० और ८० फ़ुटके दर्मियान गहराईपर मिलता है, लेकिन् आम जगहोंमें ३० फ़ुटके लग भग निकल आता है. क़स्बह कठूंबर अलवरसे ३८ मील दक्षिण पूर्वमें ८२८ घर और ३१४९ मनुष्योंकी वस्तीका पुराना क़स्बह है.

१०- तह्सील लक्ष्मण गढ़- लक्ष्मणगढ़की तह्सील कठूंबरके पास नरूखंडमें जयपुर और भरतपुरके राज्यसे मिली हुई है; रक़्बह इसका २२१ मील मुरब्बा और बाशिन्दोंकी तादाद ७०००० है. तह्सीलमें सिर्फ़ एक पर्गनह और १०८ गांव हैं; जहां बाढ़ आती है, वह ज़मीन ज़ियादह हल्की है; बाजरा, मोठ, ज्वार, जव, रुई और चना यहांकी ख़ास पैदावार है. कुओंकी गहराई ख़ासकर १५ से ३५ फ़ुट तक, परन्तु तह्सीलमें ७० फ़ुटकी गहराई मिलती है. लक्ष्मणगढ़का क़दीम नाम टवर था. प्रतापसिंहने स्वरूपसिंहसे यह मक़ाम पाकर गढ़को बढ़ाया, और उसका नाम लक्ष्मण गढ़ रक्खा.

११- तह्सील राजगढ़- दक्षिणी तह्सील राजगढ़का किसी क़द्र हिस्सह नरूखंडमें है, लेकिन् इसका पश्चिमी हिस्सह बड़गूजर और राजावत देश था. रियासत जयपुर इसकी दक्षिणी सीमाके किनारेपर है. इसका रक़्बह ३७३ मील मुरब्बा और आबादी ९८००० आदमीके क़रीब मानी गई है. तह्सीलमें ७ पर्गने, १०८ गांव ख़ालिसेके और ९९ गांव मुआफ़ीके हैं. यहांकी क़रीब क़रीब तमाम ज़मीन उपजाऊ है; जव, मोठ, बाजरा, रुई, ज्वार मुख्य पैदावार है. राजगढ़के आसपासकी पहाड़ियोंका पानी, जो भागुला बन्दमें रोका जाता है, उससे बहुतसी ज़मीन् तथा आसपासके गांवोंको भी फ़ायदह पहुंचता है.

कुओंमें पानी १० फ़ुटसे लेकर ३५ फ़ुटतक तो हर जगह मिलता, और कहीं कहीं ७५ फ़ुटकी गहराईपर निकलता है. राजगढ़में बहुतसे उम्दह मकानात हैं; ख़ास गढ़ और उसके महल, एक मन्दिर और कनफटे जोगियोंका मठ वगैरह ज़ियादह मश्हूर हैं. लक्ष्मणगढ़ और राजगढ़, दोनों तहसीलें नरूका राजपूतोंके रहनेकी ख़ास जगह कही जाती हैं. पर्गने टहलामें पहाड़ीपर नीलकण्ठ का एक प्रसिद्ध प्राचीन स्थान है. किसी ज़मानेमें इन पहाड़ियोंकी ऊंची ज़मीनपर एक बड़ा शहर मन्दिरों और मूर्तियोंसे सुशोभित था. क़स्बह राजगढ़का पुराना नाम राजोड़गढ़ था, जो टॉड साहिबके लेखके मुवाफ़िक़ क़दीम ज़मानेमें बड़गूजर राजाओंकी प्राचीन राजधानी समझी जाती थी. इन मकानमें चटानको काटकर बनाई हुई, आदमीकी मूर्ति और एक बड़ा गुम्बजदार मन्दिर देखनेके लाइक़ अजायबातमेंसे है.

१२- तहसील थानहगाज़ी- यह तहसील राजगढ़के पास दक्षिण और पश्चिममें रियासत जयपुरसे जामिली है; रक्बह इसका ७८७ मील मुरब्बा और आबादी ५५००० आदमी है. तहसीलके पांच पर्गनोंमें १७१ गांव ख़ालिसहके और ७३ मुआफ़ीके हैं; ज़मीन यहांकी बहुत उम्दह है. मक्की, जव और मोठ कस्रतसे निपजते हैं. कुओंमें पानी ३० फ़ुटसे नीचे गहराईपर निकल आता है, और अजबगढ़में १५ फ़ुटसे भी कम गहराईपर. बलदेवगढ़, प्रतापगढ़ और अजबगढ़में आबादी अच्छी है, और क़स्बोंमें एक एक गढ़ बना हुआ है.

मेले और देवस्थान- शहर अलवरमें गनगौर और श्रावणी तीजके प्रसिद्ध उत्सव, मार्च और ऑगस्टमें होते हैं. आषाढ़में जगन्नाथका उत्सव, साहिबजी (देवता) का मेला, जिनका स्थान शहरके पास फ़िरोज़पुरकी सड़कपर है, होता है. पर्गने देहरामें शहरसे ८ मील पश्चिमोत्तरको फ़ेब्रुअरी महीनेमें चूहड़ सिध (१) का मेला शिवरात्रिके दिन होता है. बान्सूरमें हर साल मार्च और एप्रिलमें बिलाली मानाका मेला लगता है. राजगढ़में रथयात्राका मेला आषाढ़में; वैशाखमें अलवरसे ८ मील दूर सीली सेढ़ नामकी भीलपर शीतला देवीका मेला; कुंडलका, थानह गाज़ीमें वैशाख और भाद्रपदमें भर्तृहरिका मेला; बसावली, (बासोली) किशनगढ़में भाद्रपद महीनेमें साहिबजीका

---

(१) यह मेला एक मेव महापुरुषके नामपर होता है, जिसकी पैदाइश एक मेव और नाई क़ौमकी औरतसे औरंगज़ेबके वक्तमें होना बयान कीजाती है. वह धनेता गांवमें पैदा हुआ, और महसूल वुसूल करने वालोंके डरसे घर छोड़कर खेतोंकी रखवाली और मवेशीकी चराईपर अपना गुज़र करता था. इत्तिफ़ाक़से उसको शाह मदार नामी एक मुसल्मान वली कहीं मिल गये, जिससे वह अजीब अजीब काम करने लगा. आख़िरको उसने वर्तमान थानको जगह अपने रहनेका मकान क़रार दिया.

मेला; पालपुर, किशनगढ़में माघ, वैशाख और ज्येष्ठमें हरसाल तीन मर्तबह शीतला देवीका मेला; दहमी, बहरोड़में चैत्र व आश्विनमें देवीका मेला; माचेड़ी, राजगढ़में चैत्रमें देवीका मेला; बरवाडूंगरी, बलदेवगढ़, थानह गाज़ीमें वैशाखमें नारायणीका मेला; और शेरपुर, रामगढ़में आश्विन, आषाढ़ व माघमें लालदासका मेला होता है. ऊपर लिखे हुए मेलोंमेंसे बिलाली और चूहरसिंधके मेले सबसे बड़े हैं. लोगोंके ज़बानी बयानसे मालूम हुआ कि, पिछले दो मेलोंमें अस्सी हज़ार आदमियोंके क़रीब यात्री जमा होते हैं.

सड़कें और रास्ते- रेलकी सड़क, विक्रमी १९३२ भाद्रपद शुक्ल १२ [हि० १२९२ ता० ११ शअ्बान = ई० १८७५ ता० १४ सेप्टेम्बर] को दिल्लीसे अलवर तक राजपूतानह स्टेट रेलवेकी सड़क खुली, और इसी सालके मृगशिर शुक्ल ६ [हि० ता० ५ ज़िल्क़ाद = ई० ता० ६ डिसेम्बर] को वह दिल्लीसे बांदीकुई होकर गुज़री. यह सड़क उत्तरसे दक्षिणको अलवर राज्यमें होकर इलाक़ेके दो हिस्से करती हुई गई है. अजेरका, खैरथल, अलवर, मालाखेड़ा और राजगढ़ वग़ैरह इस राज्यमें कई रेलवेके स्टेशन हैं; दो बड़े बड़े पुल सड़कपर बने हैं, जिनमें एक तो अलवरसे ४ मील उत्तरमें और दूसरा किसी क़द्र ज़ियादह दक्षिणकी तरफ़ है. कप्तान इम्पी पोलिटिकल एजेण्टकी कोशिश व मेजर स्ट्रॅटन और बॉयर्स साहिब एग्ज़िक्युटिव एन्जिनिअरके प्रबन्धसे यह रेलवे तय्यार हुई. सिवा इस लाइनके राज्यमें बड़े बड़े २६ रास्ते तथा सड़कें गाड़ी, घोड़ा व पैदलके जाने आनेके लिये हैं, जिनमेंसे कई एकको कप्तान इम्पी और सभाकी रायके मुवाफ़िक़ तय्यार किया गया है. विक्रमी १९२७ [हि० १२८७ = ई० १८७०] में मुल्की इन्तिज़ामके लिये एक सभा मुक़र्रर होने बाद सड़कोंपर बहुत ध्यान दिया गया. मेजर केडलने रेलके स्टेशनोंको जानेवाली सड़कोंका प्रबन्ध किया; और नीचे लिखी हुई सड़कें तय्यार कीं:- १- अलवरसे भरतपुरकी सर्हद तक; २- अलवरसे गुड़गांवा ज़िलेको; ३- अलवरसे कृष्णगढ़तक; ४- खैरथलसे तिजाराको; ५- तिजारासे फ़ीरोज़पुरकी तरफ़; ६- लक्ष्मणगढ़से मालाखेड़ाको; ७- मौजपुरसे राजगढ़ तक; ८- खैरथलसे हरसोरा, बहरोड़, और बान्सूरको; और ९- मालाखेड़ासे गाज़ीके थानह तक. ये ९ सड़कें ऊपर बयान किये हुए रास्तोंके सिवा हैं.

व्यापार और दस्तकारी- इस राज्यमेंसे व्यापारके लिये नाज, रुई, चीनी, गुड़, चावल, नमक, घी, कपड़ा और कई फुटकर चीज़ें बाहर जाती हैं; और यही चीज़ें बाहरसे यहां बिकनेके लिये आती हैं. इनका सर्कारमें महसूल लिया जाता है. लोहा और तांबा पहिले इस राज्यमें बहुत निकाला जाता था, जिसमें

बहुतसे लोगोंका निर्वाह होता था, लेकिन् अब यह काम बन्द होगया है.

अलवरके पेचे, चीरेकी रंगत, उन्नाबी, सब्ज़ काही, वगैरह हर तरहके रंग तारीफ़के लायक़ हैं, और मछली मक़ामका बना हुआ तोड़ेदार व चापदार यमका मश्हूर है; तिजारेमें काग़ज़ बहुत बनाया जाता है, और एक तरहका घटिया काच भी एक क़िस्मकी मिट्टीसे बनता है. कारीगर यहांके होश्यार और चतुर हैं.

अलवरका इतिहास.

जयपुरके बाद हम नरूके राजपूतोंका इतिहास लिखते हैं, जो उनकी शाखोंमेंसे एक खानदान पिछले ज़मानेमें इस देशपर क़ाबिज़ हुआ. रियासतकी तरफ़से हमको कोई तवारीख़ नहीं मिली, इसलिये यह हाल मेजर पी॰ डब्ल्यू॰ पाउलेट्के गज़ेटिअर व वक़ाये राजपूतानह अथवा पोलिटिकल एजेन्टोंकी रिपोर्टोंसे खुलासह करके लिखा गया है.

ढूंढाड़के १२ वें राजा उदयकरणका हाल जयपुरकी तवारीख़में लिखा गया है, पाउलेट् साहिबने उनकी गादी नशीनीका संवत् विक्रमी १४२४ [हि॰ ७६८ = ई॰ १३६७] लिखा है, और जयपुरकी तवारीख़से विक्रमी १४२३ माघ कृष्ण २ [हि॰ ७६८ ता॰ १६ रबीउस्सानी = ई॰ १३६६ ता॰ २० डिसेम्बर] मालूम हुआ; लेकिन् ये दोनों संवत् क़ाबिल एतिबार न समझकर इस विषयमें हमने अपनी राय जयपुरकी तवारीख़में ज़ाहिर की है- देखो पृष्ठ १२७२).

मेजर पाउलेट् लिखते हैं, कि उदयकरणका बड़ा पुत्र बरसिंह था, जिसने अपने बापको एक बातकी ज़ुरूरतपर दूसरी शादी करवाकर उस रानीसे, जो बेटा (नृसिंह) पैदा हुआ, उसके लिये राजगद्दी छोड़ी, और आप चौरासी गांव समेत मौजाबाद वगैरहकी जागीर लेकर छोटे भाईका ताबेदार बना. १- बरसिंहके

२- महराज और उसका नरू हुआ, जिसका वंश कछवाहोंमें नरूका मश्हूर है. ३- नरूके पांच पुत्र थे, १- लाल, जिसके लालावत नरूका अलवरके राव राजा वगैरह; २- दासा, जिसके दासावत नरूका उणियारा, लावा, लदूणा वगैरह; ३- तेजसिंह, जिसके तेजावत नरूका जयपुर तथा अलवरमें हादीहेड़ा वगैरह; ४- जैतसिंह, जिसके जैतावत नरूका, गोविन्दगढ़ वगैरह; ५- छीतर, जिसके छीतरोत नरूका अलवरके इलाके नैतला, केकड़ी वगैरहपर क़ाबिज़ हैं.

नरूका बड़ा पुत्र लालसिंह कम हिम्मतीके कारण छोटा बनकर बारह गांवों सहित झाकका जागीरदार बना, और उससे छोटा दासा, जो बड़ा बहादुर था, अपने बापकी जगहपर क़ाइम रहा. ४- लालसिंह, कछवाहा वंशके सर्दार राजा भारमल्लका खैरख्वाह रहा, इस वास्ते राजाने उसको रावका ख़िताब और निशान दिया. लालसिंहका बेटा उदयसिंह राजा भारमल्लकी हरावल फ़ौजका अफ्सर गिना जाता था. इसके एक पुत्र लाड़खां (१) हुआ.

५- लाड़खां आंबेरके महाराजा मानसिंहके बड़े सर्दारोंमें गिनाजाता था, और उसका बेटा फ़त्हसिंह था. ६- फ़त्हसिंहके १- राव कल्याणसिंह, २- कर्णसिंह, जिसकी सन्तान अलवरमें राजगढ़के ग्राम बहालीपर क़ाबिज़ है; ३- अक्षयसिंह, जिसकी नस्ल वाले राजगढ़के ग्राम नारायणपुरके मालिक हैं. ४- रणछोड़दासकी औलाद वाले जयपुर इलाक़हके टीकेल ग्रामपर क़ाबिज़ हैं.

७- कल्याणसिंह, पहिला पुरुष था, जो, अलवरके इलाक़हमें जमाव करने वाला हुआ; लेकिन् दासावत नरूके अलवरके देश नरूखण्डमें पहिलेसे आबाद थे; उनको आंबेरके महाराजा जयसिंह अव्वलने माचेड़ी गांव जागीरमें दिया, जो नरूखण्डकी सीमापर है; उसकी नौकरी कामामें बोली गई, जो अब भरतपुरके राज्यमें है. कल्याणसिंहके छः पुत्र थे, जिनमेंसे पांचकी सन्तान बाक़ी है. १- आनन्दसिंह माचेड़ीपर, २- श्यामसिंह पारामें, ३- जोधसिंह पाईमें, ४- अमरसिंह खोरामें, ५- ईश्वरीसिंह पलवामें क़ाबिज़ रहा. इन पांचोंके पास कुल चौरासी घोड़ोंकी (२) जागीर थी.

८- आनन्दसिंहके दो बेटे थे, बड़ा ज़ोरावरसिंह, जो माचेड़ीका पाटवी सर्दार बना, और दूसरा ज़ालिमसिंह, जिसको बीजवाड़ मिला. इस समय अलवरके क़रीबी

---

(१) लाड़खांका ख़िताब बादशाह अक्बरका दिया हुआ था.

(२) एक घोड़ेकी जागीरमें ४०० बीघाके अनुमान ज़मीन समझी जाती है.

हक़दारोंमें बीजवाड़ वाले अव्वल नम्बर हैं. वक़ाये राजपूतानहमें पाउलेट् साहिबके लेखके ख़िलाफ़ और सिवाय इस तरहपर लिखा हैः-

"कि कल्याणसिंह विक्रमी १७२८ आश्विन कृष्ण २ [हि० १०८२ ता० १६ जमादियुलअव्वल = ई० १६७१ ता २० सेप्टेम्बर] को माचेड़ीमें आया, और उसका बेटा ९- राव उग्रसिंह (१) था, जिसके १०- तेजसिंह, उनके ११- ज़ोरावरसिंह, उनके १२- मुहव्वतसिंह, उनके १३- प्रतापसिंह, जिनका जन्म विक्रमी १७९७ ज्येष्ठ कृष्ण ३ [हि० ११५३ ता० १७ सफ़र = ई० १७४० ता० १३ मई] को हुआ था.

१- राव राजा प्रतापसिंह.

इनकी जागीरमें ढाई गांव, माचेड़ी, राजगढ़ और आधा रामपुर, राज्य जयपुरकी तरफ़से थे; लेकिन् इस शरूसने बड़ी तरक़्क़ी करके एक रियासत बनाली. पहिले इन्होंने अपने मालिक जयपुरके महाराजा माधवसिंहकी नौकरीमें नाम पाया. जब कि क़िला रणथम्भोर बादशाही मुलाज़िमोंने मरहटोंसे तंग आकर जयपुरके सुपुर्द करदिया, उस समय बहादुरी और हिक्मत अमलीमें प्रतापसिंह अव्वल नम्बर रहे, लेकिन् इनकी तरक़्क़ीसे दूसरे लोगोंके दिलोंपर खौफ़ छा जानेके सबब उन लोगोंने विक्रमी १८२२ [हि० ११७९ = ई० १७६५] में ज्योतिषी वगैरह लोगोंसे महाराजा माधवसिंहको कहलाया, कि प्रतापसिंहकी आंखोंमें राज्य चिन्ह दिखाई देता है. इस बातसे महाराजा नाराज़ रहने लगे, और प्रतापसिंहको जानका ख़तरा हुआ; बल्कि एक दफ़ा शिकारमें महाराजाकी तरफ़से उनपर बन्दूक़ भी चली, जिसकी गोली उनके बदनसे रगड़ती हुई निकल गई. इस डरसे वे अपनी जागीर माचेड़ीको चले गये, और वहांसे भरतपुरके राजा सूरजमल्ल जाटके पास पहुंचकर उसके नौकर बनगये. फिर सूरजमल्लके बेटे जवाहिरसिंहने पुष्करकी तरफ़ कूच किया, तो उसका इरादह जयपुरके बर्ख़िलाफ़ जानकर प्रतापसिंह अलहदह होगये.

जिस वक़्त मौज़े डेहरासे प्रतापसिंह रवानह होनेवाले थे, उस वक़्त एक लौंडीको बर्तन मांझनेके वक़्त मिट्टी खोदते हुए अशरफ़ी व बहुतसा रुपया वगैरह धन गड़ा

(१) शायद पाउलेट् साहिबने उग्रसिंहका आनन्दसिंह लिखदिया है, अथवा ज्वालासहायने आनन्दसिंहको उग्रसिंह लिखदिया.

हुआ मिला, जिसको राव राजाने ऊंटोंपर लदवाकर जयपुरकी तरफ़ कूच किया. वहां पहुंचकर महाराजा माधवसिंहसे जवाहिरसिंहके पुष्कर स्नानको आने और अपने ख़ैरख़्वाहीकी नज़रसे हाज़िर होजानेकी अ़र्ज़ की. इसपर महाराजा बहुत खुश हुए, और शाबाशी दी. लौटते समय जवाहिरसिंहसे जयपुरकी फ़ौजका मांवडा मक़ामपर विक्रमी १८२३ [हि० ११८० = ई० १७६६] में मुक़ाबलह हुआ, तब प्रतापसिंहने जवाहिरसिंहपर हमलह किया. इस बातसे उसकी जयपुरसे दुश्मनी जाती रही, बल्कि महाराजा माधवसिंहने राव राजाका ख़िताब और माचेड़ीके सिवाय राजगढ़में क़िला बनानेकी इजाज़त दी. इसके बाद प्रतापसिंहने खुद मुख़्तार होनेकी कार्रवाई की, और विक्रमी १८२७ [हि० ११८४ = ई० १७७०] में टहला और राजपुरमें गढ़ बनवाये. विक्रमी १८२८ [हि० ११८५ = ई० १७७१] में राजगढ़का क़िला पूरा करके क़स्बह आबाद किया, और देवती झीलमें जलमहल बनवाकर पालके नीचे बाग़ लगाया. विक्रमी १८२९ [हि० ११८६ = ई० १७७२] में मालाखेड़ाका क़िला तय्यार करवाया. विक्रमी १८३० [हि० ११८७ = ई० १७७३] में बलदेवगढ़, और इन्हीं दिनोंमें सेंथल, मेंड, बैराट, आंबेला, भाभरा, तालाधौला, डब्बी, हरदेवगढ़, सिकराय और बावड़ीखेड़ा गांव भी राव राजाके क़ब्ज़हमें आगये थे, मगर कुछ अ़रसह बाद राज जयपुरके शामिल होगये.

विक्रमी १८३१ [हि० ११८८ = ई० १७७४] में नव्वाब मिर्ज़ा नजफ़ख़ांके साथ रहकर भरतपुरकी फ़ौजसे आगरा ख़ाली कराया. इस ख़ैरख़्वाहीके एवज़ उक्त नव्वाबकी सिफ़ारिशसे बादशाह शाहआ़लमने प्रतापसिंहको राव राजाका ख़िताब, पांच हज़ारी मन्सब, माचेड़ीकी जागीर व माही मरातिब दिया, और माचेड़ी हमेशहके लिये राज्य जयपुरसे अ़लहदह होगई. विक्रमी १८३२ [हि० ११८९ = ई० १७७५] में प्रतापगढ़का क़िला बनवाया.

इसी समयके लग भग काकवाड़ी, ग़ाज़ीका थानह, और अजबगढ़के क़िले बने, जो अलवरसे नैर्ऋत्य कोणमें वाक़े हैं; और कुछ अ़रसह बाद उसने सीकरके रावसे मेल करके उस तरफ़ अपना राज्य बढ़ाया. फिर उसने विक्रमी १८३२ मार्गशीर्ष शुक्ल ३ [हि० ११८९ ता० २ शव्वाल = ई० १७७५ ता० २५ नोवेम्बर] को अलवरका क़िला भरतपुर वालोंसे लेलिया. इसी सालसे प्रतापसिंहको उनके भाइयोंने भी अपना मालिक माना, और ज़ियादहतर उस वक़्तसे, जब कि उसने लक्ष्मणगढ़ (पहिले टॉडगढ़) के मालिक स्वरूपसिंहको दग़ासे पकड़कर मरवाडाला, नरूखंडमें उसका रोब खूब जम गया.

विक्रमी १८३६ [हि॰ ११९३ = ई॰ १७७९] के लगभग उसने नजफ़ख़ां, बादशाही मुलाज़िमके पंजेसे निकलकर लक्ष्मणगढ़का आसरा लिया. विक्रमी १८३९ [हि॰ ११९६ = ई॰ १७८२] में रावल नाथावत व दौलतराम हलदियाकी सलाहसे, जो पहिले राव प्रतापसिंहका नौकर था, और नाराज़ होकर जयपुर चलागया था, राजगढ़पर जयपुरके महाराजा सवाई प्रतापसिंहने चढ़ाई की; और बस्वामें पहुंचकर ठहरे. महारावराजा प्रतापसिंह पांच सौ सवार लेकर रातके वक्त महाराजाके लश्करमें पहुंचे, ख़ौफ़ या गफ़्लतके सबब लश्कर वालोंमेंसे किसीने उनको नहीं रोका. उन्होंने जातेही अव्वल महाराजाके खेमेके दर्वाज़ेपर जो एक पखालका भैंसा खड़ा था, उसे मारा; वहांसे नाथावत ठाकुरोंके डेरेपर जाकर कई आदमी क़त्ल किये, और राजगढ़की तरफ़ लौटे. लौटते वक्त जयपुरके लश्करवालोंने उनका पीछा किया; रास्तेमें बड़ी भारी लड़ाई हुई, दोनों तरफ़के सैकड़ों आदमी मारेगये. राव राजाकी तरफ़ वालोंमेंसे सावन्तसिंह नरवान, जिसकी शक्ल कुछ कुछ महाराव राजाकी सूरतसे मिलती हुई थी, मर्दानगीके साथ लड़कर काम आया; जयपुरके लोग उसकी लाशको महाराव राजाकी लाश ख़याल करके महाराजा प्रतापसिंहके रूबरू लेगये, जिसको देखकर महाराजा बहुत ख़ुश हुए, और उस लाशको ताज़ीमके साथ दाग़ दिलवाया; लेकिन् जब मालूम हुआ, कि महाराव राजा ज़िन्दह हैं, महाराजाको बड़ी शर्मिन्दगी पैदा हुई, और राजगढ़पर फ़ौज कशी करनेका हुक्म दिया, मगर ख़ुशालीराम बोहराने, जो पहिले महाराव राजा प्रतापसिंहके पास नौकर था, और इस वक्त भी उनका दिलसे ख़ैरख़्वाह था, महाराजाको लड़ाई करनेसे रोका. आपसमें सुलह होकर फ़ौज जयपुरको वापस गई, मगर इस अर्सहमें जयपुर वालोंने पिरागपुरा व पावटा वग़ैरह गांवोंपर क़ब्ज़ह करलिया, और ख़ुशालीराम बोहरापर सख़्ती की. तब महाराव राजाने जयपुरके सर्दारोंसे मिलावट करके यह तज्वीज़ की, कि महाराजा प्रतापसिंहको गद्दीसे ख़ारिज करके उनकी जगह दूसरा रईस मुक़र्रर करदिया जावे. इस ग़रज़से वह महाराजा सेंधियाकी फ़ौजको जयपुरपर लेगये, और कृष्णगढ़ डूंगरी मक़ामपर डेरा किया. महाराजा जयपुरने पोशीदह तौरपर सुलह करनेकी महाराव राजासे दर्ख़्वास्त की, जिसे महाराव राजाने चन्द शर्तोंपर मंज़ूर किया, और महाराजा सेंधियाकी फ़ौजको रवानह करने बाद जिस शख़्सको जयपुरकी गद्दीपर बिठाना तज्वीज़ किया था, उसे महाराजा सेंधियासे इलाक़ह मान्ट और महाबनकी सनद दिलाकर अपनी रियासतको वापस आये.

महाराव राजा प्रतापसिंहके मुसाहिब होश्दारख़ां, नबीबख़्शख़ां, और इलाही-

वख्शखां शैख़ोंने बहुत बड़े बड़े काम अंजाम दिये. एक पुरानी तवारीख़में लिखा है, कि उक्त महाराव राजाने हमेशह ज़बर्दस्त और ताक़तवर फ़रीक़के शामिल रहकर अपनी कुव्वत और मर्तबेको हर तरह क़ाइम रक्खा. विक्रमी १८४७ पौष कृष्ण ५ [हि० १२०५ ता० १९ रबीउस्सानी = ई० १७९० ता० २६ डिसेम्बर] को १५ (१) वर्ष राज्य करने बाद राव राजा प्रतापसिंहका इन्तिक़ाल होगया. यह महाराव राजा बड़े बहादुर सिपाही थे. उनके कोई लड़का न था, परन्तु अपने जीवनमें उन्होंने थानहकी कोटड़ीसे बख्तावरसिंहको वलीअह्द बनालिया था. प्रतापसिंहके मरनेके समय छः या सात लाख रुपया सालानह आमदनीके नीचे लिखे हुए ज़िले उनके क़ब्ज़हमें थेः-

अलवर, मालाखेड़ा, राजगढ़, राजपुर, लक्ष्मणगढ़, गोविन्दगढ़, पीपलखेड़ा, रामगढ़, वहादुरपुर, डेहरा, जींदोली, हरसोरा, बहरोड़, बड़ौद, बान्सूर, रामपुर, हाजीपुर, हमीरपुर, नरायणपुर, गढ़ी मामूर, गाज़ीका थानह, प्रतापगढ़, अजबगढ़, वलदेवगढ़, टहला, खूंटेता, ततारपुर, सेंथल, गुढ़ा, दुब्बी, सिकरा, बावड़ी खेड़ा.

२- महाराव राजा बख्तावरसिंह.

यह विक्रमी १८४७ [हि० १२०५ = ई० १७९०] में १५ वर्ष उम्रके होकर गद्दीपर बैठे. प्रतापसिंहके पुराने दीवान रामसेवकने मरहटोंको राजगढ़ पर बुलाया, और माजी गौड़जीसे नाइत्तिफ़ाक़ी करादी; इस कुसूरपर महाराव राजाने उस कामदारको धोखेसे अलवरमें बुलाकर राजगढ़में क़ैद रखनेके बाद मरवा डाला, और मरहटोंकी फ़ौज वापस चली गई. जब विक्रमी १८५० [हि० १२०७ = ई० १७९३] में बख्तावरसिंह मारवाड़में कुचामनके ठाकुरकी बेटीसे शादी करनेको गये, और लौटकर जयपुर आये, तो महाराजाने उसको नज़र क़ैद रक्खा, उससे सेंथल, गुढ़ा, दुब्बी, सिकरा, और बावड़ी खेड़ा लेकर छोड़ दिया; और उसने बावल, कांटी, फ़ीरोज़पुर और कोटपुतलीपर क़ब्ज़ह करलिया. विक्रमी १८५६ [हि० १२१४ = ई० १८००] में खानज़ादह ज़ुल्फ़िक़ारखांको घसावलीसे निकालकर उसके पास गोविन्दगढ़ आबाद किया. और मरहटोंके ग़द्रके वक़ अपने वकील अहमदबख्शखांको भेजकर गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीकी सहायता ली, जब कि लॉर्ड लेकने लसवाड़ीको विक्रमी १८६० [हि० १२१८ = ई० १८०३] में फ़तह किया. उसको अलवरसे फ़ौज और सलाहकी अच्छी मदद मिली, इस ख़िद्मतके एवज़ राठका ज़िला सर्कार अंग्रेज़ीसे बख्तावरसिंहको इन्आममें मिला, और

(१) इसका राजा होना उस दिनसे माना गया है, जबसे बादशाह शाह आलमने राव राजाका खिताब दिया.

अहमदबख़्शको फ़ीरोज़पुरका ज़िला बख़्शा गया. अलवरके राव राजाने अपने वकीलको इस इन्आममें लुहारुकी जागीर दी, जो उनकी औलादके क़ब्ज़ेमें है; और इसी तरह लॉर्ड लेकने बएवज़ उम्दह ख़िद्मतोंके पर्गनह फ़ीरोज़पुर दिया था, जो एक मुद्दत तक उसके क़ब्ज़हमें रहा; परन्तु उसके बेटे नव्वाब शम्सुद्दीनख़ांकी मस्नदनशीनीके ज़मानेमें, मिस्टर विलिअम फ़्रेज़र साहिब कमिश्नर व रेज़िडेएट दिल्लीको क़त्ल करनेका जुर्म साबित होनेपर नव्वाबको फांसी दीगई, और पर्गनह फ़ीरोज़पुर सर्कारमें ज़ब्त होकर ज़िले गुड़गांवामें शामिल किया गया. अब ये दोनों जागीरें अलवरसे जुदी हैं. फिर सर्कारने बख़्तावरसिंहको हरियानाके ज़िलों दादरी व बधवाना वग़ैरहके एवज़ कठूंवर, सूखर, तिजारा और टपूकड़ा देदिया.

बख़्तावरसिंहने विक्रमी १८६९ [हि० १२२७ = ई० १८१२] में दुब्बी और सकराका ज़िला जयपुरसे छीनलिया, लेकिन् अह्दनामहके बर्ख़िलाफ़ जानकर गवर्मेएटने पीछा दिलानेको कहा, तब बख़्तावरसिंहने इन्कार किया, इसपर जेनरल मार्शलकी सिपहसालारीमें उसपर सर्कारी फ़ौज भेजी गई. महाराव राजाने तीन लाख रुपया फ़ौज ख़र्च देकर हुक्मकी तामील की. इस फ़ौज ख़र्चके एवज़में उन्होंने अपनी रिआयापर नया महसूल जारी करके छः लाख रुपया वुसूल किया था. आख़िरमें राव राजाको मज़्हबी जुनून व तअस्सुब होगया था, जिससे उन्होंने मुसल्मान फ़क़ीरोंके नाक कान कटवाकर एक टोकरेमें भरे, और फ़ीरोज़पुरमें नव्वाब अहमदबख़्शके पास भेज दिये. क़ब्रोंको खुदवाकर मुसल्मानोंकी हड्डियां अपने इलाक़हसे बाहर फिकवा दीं, और मस्जिदोंको गिरवाकर उनकी जगह मन्दिर बनवाये. यह बात सुनकर दिल्लीके मुसल्मानोंको बड़ा जोश पैदा हुआ, तब रेज़िडेएटने उनको समझाया, और राव राजाको ऐसा ज़ुल्म करनेसे रोका (१).

विक्रमी १८७१ माघ शुक्ल २ [हि० १२३० ता० १ रबीउ़लअव्वल = ई० १८१५ ता० ११ फ़ेब्रुअरी] को रावराजा बख़्तावरसिंह ऊपर लिखी हुई बीमारीकी हालतमेंही

---

(१) इस बारेमें एक ऐसा क़िस्सह मश्हूर है, कि रावराजा बख़्तावरसिंहने एक मुसल्मान करामाती फ़क़ीरको अपने शहरसे निकलवा दिया, उसकी बद दुआसे रावराजा पेटमें दर्द होनेके सबब मरनेके क़रीब होगये, तब उन्होंने कहा, कि हमारे कोई देवता ऐसे नहीं हैं, जो मुसल्मानोंकी बद-दुआको रद्द करें, उस समय उनके बारहट चारणने कहा, कि करणी देवीका ध्यान कीजिये, जिनके साम्हने मुसल्मान औलियाओंकी करामातकी कुछ हक़ीक़त नहीं है. इसी तरह किया गया, जिससे फ़ौरन् दर्द जाता रहा. तब रावराजाने ऊपर लिखी हुई सख़्तियां मुसल्मानोंपर कीं, और अलवरमें करणी माताका मन्दिर बनवाया.

इन्तिक़ाल करगये, और मूसी रंडी उनके साथ सती हुई. उनके कोई असील औलाद न थी, इस लिये गद्दी नशीनीके बारेमें बड़ी बह्स हुई; और सर्कार अंग्रेज़ीमें यह सवाल पेश हुआ, कि लॉर्ड लेकका बख़्शा हुआ नया इलाक़ह वापस लेलिया जावे या नहीं. आख़िरको बख़्शा हुआ मुल्क वापस लेना मुनासिब न समझाजाकर बदस्तूर बहाल रक्खा गया.

३-महाराव राजा विनयसिंह (बनेसिंह).

बख़्तावरसिंहके दो औलाद, एक लड़की चांदबाई, जिसकी शादी ततारपुरके ठाकुर कान्हसिंहके साथ हुई थी, और एक लड़का बलवन्तसिंह, मूसी ख़वाससे थे. महाराव राजाने अपने भाईके लड़के विनयसिंह थानावालेको सात सालकी उम्रसे अपने पास रक्खा था. अगर्चि क़ाइदेके मुवाफ़िक़ वह गोद नहीं लिया गया, लेकिन् सर्दार लोग उनको गोद लिया हुआ ही समझते थे, और शायद रावराजाके दिलमें भी ऐसा ही था, चुनांचि जब मस्नदनशीनीकी बाबत बह्स हुई, कि गद्दीपर कौन बिठाया जावे, तो हमक़ौम ठाकुरों व राव हरनारायण हल्दिया व दीवान नौनिद्धरामने बलवन्तसिंहको गद्दी बिठाना नाजाइज़ समझकर विनयसिंहको राजा बनाना चाहा; लेकिन् मुसलमान व चेले तथा शालिगराम, नव्वाब अह्मदबख़्शख़ांकी तरफ़ रहकर राजपूतोंसे मुत्तफ़िक़ न हुए; और बलवन्तसिंहकी तरफ़दारी करने लगे, कि बलवन्तसिंह, जिसकी उम्र छः वर्षकी थी, बख़्तावरसिंहकी पासवानका बेटा होनेके सबब विनयसिंहका हिस्सहदार है. आख़िरकार बांकावत अक्षयसिंह व रामू चेला वग़ैरहने, जिन्होंने विनयसिंहके बारेमें इस वक्त बहुत कोशिश की थी, विक्रमी १८७१ माघ शुक्ल ३ [हि० १२३० ता० २ रबीउ़लअव्वल = ई० १८१५ ता० १२ फ़ेब्रुअरी] को विनयसिंहको गद्दीपर बिठा दिया, तक़ार दूर होनेकी ग़रज़से विनयसिंहकी गद्दीपर बाईं तरफ़ बलवन्तसिंह भी बिठाया गया, और यह क़रार पाया, कि दोनों राम व लक्ष्मणकी तरह माने जावें. जब रामू ख़वास, ठाकुर अक्षयसिंह व दीवान शालिगरामने दिल्ली पहुंचकर मेट्कॉफ़ साहिब रेज़िडेण्टसे मस्नद-नशीनीके दो खिल्अ़त बराबर मिलनेकी दर्ख्वास्त की, तो रेज़िडेण्टने एक गद्दीपर दो रईस क़ाइम होना ख़िलाफ़ दस्तूर व फ़सादकी बुन्याद समझकर इन लोगोंको समझाया, और कहा, कि विनयसिंह महाराव राजा क़रार दिया जाकर गद्दीपर बिठाया जावे, और बलवन्तसिंह कुल कामका मुख़्तार होकर इन्तिज़ाम रियासतका करे; लेकिन् इन लोगों ने बयान किया, कि विनयसिंह व बलवन्तसिंह दोनों मुत्तफ़िक़ राय रहकर राज करेंगे, और इनके आपसमें कभी तक़ार न होगी. इस तरहकी बहुतसी बातें कहनेपर उक्त

साहिबने सद्रको दर्ख्वास्त करके दो ख़िल्अ़त बराबरीके मंगवा दिये, और नव्वाब अह्मदबख़्शख़ां, रामू ख़वास व ठाकुर अक्षयसिंहकी दर्ख्वास्तपर गवर्मेएटकी मन्ज़ूरी से बन्दोबस्त रियासतके वास्ते नव्वाब अह्मदबख़्श वकील व ख़िदमत सर्कार अंग्रेज़ी, ठाकुर अक्षयसिंह मुसाहिब राज, दीवान नोनिद्धराम व शालिगराम फ़ौजबख़्शी, दीवान बालमुकुन्द रियासतका प्रधान, और ठाकुर शम्भूसिंह तंवर अलवरका क़िलेदार मुक़र्रर किया गया. विक्रमी १८७३ माघ शुक्ल १३ [हि० १२३२ ता० १२ रबीउ़ल अव्वल = .ई० १८१७ ता० ३० जैन्युअरी] को नव्वाब अह्मदबख़्शख़ांने पर्गनह तिजारा व टपूकड़ाका ठेका लिया.

विक्रमी १८८१ [हि० १२३९ = ई० १८२४] तक तो अह्लकारोंने हर तरह ख़राबीकी हालतमें राज्यका काम चलाया; लेकिन् जब दोनों राजा होश्यार हुए, और जवानीके जोशने हर एकके दिलोंमें अपनी ही खुद मुख़्तारी व हुकूमत रखनेका इरादह पैदा किया, तो आपसमें ज़ियादह रंजिश ज़ाहिर होने लगी; और शुरू रंजिशकी बुन्याद यह हुई, कि जेनरल अक्टरलोनी साहिब रेज़िडेएटने एक जोड़ी पिस्तौल और एक पेशक़ब्ज़ बतौर तुह्फ़ेके अलवर भेजे थे, जिनमेंसे रावराजा विनयसिंहने पिस्तौल और पेशक़ब्ज़ लेलिये, और बलवन्तसिंहको सिर्फ़ पिस्तौल ही मिला. आख़िरकार रियासती लोगोंमें दो फ़िर्क़े होगये; नव्वाब अह्मदबख़्श वग़ैरह, जो शुरूसे बलवन्तसिंहकी मदद करते थे, उसके तरफ़दार बनगये; और मल्ला, खुशाल व जहाज़ चेले तथा नन्दराम दीवान, रावराजा विनयसिंहका पक्ष करने लगे; इन लोगोंने साज़िशके साथ एक मेवको कुछ नक्द व गांव इन्आ़म देनेका लालच देकर नव्वाब अह्मदबख़्शख़ांको मारडालनेके लिये उभारा, जिसने आठ माह तक दाव घातमें लगे रहने बाद विक्रमी १८८० वैशाख कृष्ण ६ [हि० १२३८ ता० २० शअ़्बान = .ई० १८२३ ता० २ एप्रिल] को दिल्लीमें मौक़ा पाकर रातके वक्त खेमेके अन्दर नींदकी हालत में नव्वाबको तलवारसे ज़ख़्मी किया, जब कि वह दिल्लीमें रेज़िडेएटका मिहमान था; लेकिन् नव्वाबको कुछ अ़र्सेबाद आराम होगया, और इस बातका भेद खुल गया, कि अलवरके लोगोंकी साज़िशसे यह वारिदात हुई. बलवन्तसिंहने मेवको गिरिफ्तार करलिया, मल्ला व खुशाल, जहाज़ और नन्दराम दीवान क़ैद किये गये.

रामू ख़वास और अह्मद बख़्शने दिल्ली जाकर सर डेविड अक्टरलोनीके पास अपना अपना पक्ष निवाहनेकी कोशिश की, लेकिन् रामूने मुन्शी करमअह्मदकी मारिफ़त अपना रुसूख़ (पक्ष) जेनरल अक्टरलोनीके पास ज़ियादह बढ़ा लिया, जेनरल साहिब भी उसकी बातपर तवज्जुह करने लगे. इसने रफ़्तह रफ़्तह मुक़द्दमेकी सूरत निकाली, और बलवन्तसिंह

के तरफ़दारों याने रियासतमें फ़साद पैदा करनेवाले चन्द लोगोंको तंबीह करनेकी इजाज़त उक्त जेनरलसे लेकर राव राजा विनयसिंहके तरफ़दारोंको अलवर लिख भेजा, कि सिवाय बलवन्तसिंहके कुल मुफ़्सिदोंको मारडालो. यह ख़त पहुंचनेपर विक्रमी १८८० श्रावण शुक्ल १० [हि० १२३८ ता० ९ ज़िल्हिज = ई० १८२३ ता० १८ जुलाई] को राजपूतोंने जमा होकर शहरके दर्वाज़ोंका बन्दोबस्त करने बाद महलपर हमलह किया, राव राजा विनयसिंहको अक्षयसिंहकी हवेलीमें लेआये; आधी रातसे पहर दिन चढ़े तक लड़ाई रही, जिसमें बलवन्तसिंहकी तरफ़के दस आदमी मारे गये, बाक़ी लोगों ने हथियार छोड़कर राव राजाकी इताअ़त क़ुबूल की. पहर दिन चढ़े बलवन्तसिंह गिरिफ़्तार होकर एक हवेलीमें शहरके अन्दर नज़रबन्द किये गये; और दो वर्ष क़ैद रहे. बलवन्तसिंहके साथी ठाकुर बलीजी, कप्तान फ़ास्ट व टामी साहिब भी क़ैद हुए, और बांकावत अक्षयसिंहकी मददसे राव राजाने फ़त्ह पाई.

जेनरल अक्टरलोनी व नव्वाब अह्मदबख़्शकी रिपोर्टें इस लड़ाईकी बाबत पहुंचनेपर गवर्मेंएटसे उनके जवाबमें यह हुक्म हुआ कि, नव्वाबकी सलाहके मुवा-फ़िक़ अमल किया जाकर राज़ीनामह लियाजावे; लेकिन् उन दिनों कलकत्तेकी तरफ़ किसी फ़सादके सबब सर्कारी फ़ौज भेजी जाती थी, इस वजहसे अलवरके मुआमलेमें कार्रवाई न होसकी. जेनरल अक्टरलोनीने पहिले यह चाहा था, कि बलवन्तसिंहको पन्द्रह हज़ार रुपया सालानह वज़ीफ़ह अलवरकी तरफ़से करादिया जावे, परन्तु विनयसिंहने इसको नामन्ज़ूर किया. कुछ अ़र्से बाद जेनरल साहिब जयपुरको गये, नव्वाब व रामू भी साथ थे; रामूने रास्तेमें रुख़्सत लेकर अलवरको आते हुए मल्ला, ख़ुशाल, जहाज़, व नन्दरामकी रिहाईकी ख़बर सुनी, और घबराया; लेकिन् अलवर पहुंचकर उनको बदस्तूर क़ैद करदिया. जेनरल साहिबने अलवर आते हुए राहमें मुज्रिमोंको रिहा करदेना सुनकर बहुत नाराज़गी ज़ाहिर की, रामू व ठाकुर अक्षयसिंह पेश्वाईके लिये गये, लेकिन् जेनरलने रामूपर ख़फ़ा होकर अलवर जाना मौक़ूफ़ रक्खा, और रामूसे कहा, कि या तो मुज्रिमों और उन्हें रिहा करने वालोंको हमारे सुपुर्द करो, और आधा मुल्क व माल बलवन्तसिंहको देदो, या लड़ाईपर मुस्तइद हो; परन्तु राव राजाने इस बातको टालदिया. फिर दोबारह फ़ीरोज़पुरसे जेनरलने सख़्त ताकीद लिखी, उसकी भी तामील न हुई. तब गवर्मेंएटकी मन्ज़ूरीसे भरतपुरकी लड़ाई ख़त्म होनेकेबाद लॉर्ड कम्बरमेअरकी मातह्तीमें एक अंग्रेज़ी फ़ौज अलवरकी तरफ़ रवानह हुई. उस वक़्त विनयसिंह ने बलवन्तसिंहको माल अस्बाब सहित रेज़िडेएटके पास भेज दिया, और उनको दो लाख आमदनीकी जागीर व दो लाख सालानह नक्द देना क़रार पाया. बलवन्तसिंह तिजारामें

इस्फ़न्दयारबेगकी नसीहतोंसे नाराज़ होकर उसकी जगह अपने भाई फ़ज़्लुल्लाहखांको बुला लिया, और रियासती कारोबार उसकी निगरानीमें करके आप रावराजाके पास हाज़िर रहने लगा. थोड़े दिनों पीछे तीसरा भाई इनआमुल्लाहखां राज्यकी सिपहसालारीपर मुक़र्रर हुआ. अगर्चि ये तीनों भाई मुल्की व माली कामोंमें होश्यार व चालाक थे, लेकिन् लालची व बदचलन ज़ियादह थे. ग़रज़ कि इन लोगोंने कई लाइक़ आदमियों व चन्द सर्कारी अहल्कारों, गुलामअलीखां, सलीमुद्दीन, मीरमहदीअली, सुल्तानसिंह, बहादुरसिंह व गोविन्दसिंहके इत्तिफ़ाक़से रियासतका इन्तिज़ाम अच्छा किया, और बहुतसा रुपया भी पैदा किया. आख़िरको मिर्ज़ा इस्फ़न्दयारबेगने, जो अम्मूजानके साथ ज़ाहिरा दोस्ती और दिलसे दुश्मनी रखता था, विक्रमी १९०८ [हि० १२६७ = ई० १८५१] में बहरोड़के तहसीलदार कायस्थ रामलाल व सीताराम की मारिफ़त अम्मूजानके गबन व रिश्वत लेनेकी बाबत राव राजाको अच्छी तरह पूरा हाल रोशन कराकर, तीनों भाइयोंको मए उनके वसीलहदारोंके क़ैद करादिया, जिन्होंने सात लाख रुपया दण्ड देकर रिहाई पाई. दीवानका उह्दह इस्फ़न्दयार बेगको मिला; दो सालतक उसने काम दियानतदारीसे किया; लेकिन् अपने मातह्तों पर ज़ियादह बेएतिबारी रखनेके सबब उससे काम न चलसका; तब राव राजाने मिर्ज़ा इस्फ़न्दयारबेगको तो दीवान हुज़ूरी रक्खा, और अम्मूजान व दीवान बालमुकुन्द को आधे आधे इलाक़हके सरिश्तह मालका काम सुपुर्द किया. इसी ज़मानेमें मम्मन नामी एक चाबुक सवार राव राजाके ज़ियादह मुंह लगगया, और सौदागरों व रिआयाको ज़ुल्मसे बहुत तक्लीफ़ पहुंचाने लगा; सिवा इसके मिर्ज़ा इस्फ़न्दयारबेगसे भी दुश्मनी रखता था.

विक्रमी १९१३ [हि० १२७२ = ई० १८५६] तक इस तरह रियासतका काम चलता रहा, पिछले पांच सालमें राव राजाको फ़ालिजकी बीमारीने राजके काम काज संभालनेसे लाचार करदिया. इन दिनों मिर्ज़ा व दीवान बालमुकुन्द अकेले काम करते थे, और अम्मूजानके साथ एक बड़ा गिरोह था, उसने महाराव राजाकी बीमारीमें रफ़्तह रफ़्तह अपने इख़्तियार बढ़ाकर आख़िरको कुल मुख़्तारी हासिल की.

यह राव राजा अगर्चि ख़ुद आलिम नहीं थे, लेकिन् आलिमोंकी बड़ी क़द्र करनेवाले थे, इनके वक़्में हरएक फ़न व पेशेके उम्दह कारीगर नौकर रक्खे गये. उन्होंने शहर अलवरको बड़ी रौनक़ दी; और कई मकान भी उम्दह बनवाये. विक्रमी १९१४ [हि० १२७३ = ई० १८५७] के ग़द्रमें उन्होंने अपनी सख़्त

बीमारीकी हालतमें आठ सौ पैदल और चार सौ सवार मए चार तोपके आगरेकी घिरी हुई सर्कारी पल्टनोंको मदद देनेके लिये अलवरसे रवानह किये, जो भरतपुर और आगरेके बीचवाली सड़कपर अचनेरा गांवमें मुक़ीम थे; नीमच और नसीराबादकी बाग़ी पल्टनें उनपर एक दम आगिरीं, उस समय पचपन आदमी अलवरके मारे गये, जिन में दस बड़े नामी सर्दार थे. इस शिकस्तका हाल रावराजाने नहीं सुना, क्यों कि वे मरनेकी हालतमें होरहे थे. आख़िरकार विक्रमी १९१४ श्रावण कृष्ण ९ [हि॰ १२७३ ता॰ २३ ज़िल्क़ाद = ई॰ १८५७ ता॰ १९ जुलाई] को बयालीस वर्ष राज्य करने बाद फ़ालिजकी बीमारीसे उक्त महाराव राजाका इन्तिक़ाल होगया. इनकी बीमारी की हालतमें मिर्ज़ा इख़्तियारबेगके बहकानेसे सेवा चेला वग़ैरह चन्द शख़्सोंने सम्मन चाबुकसवार, गणेश चेला व बलदेव मुसाहिबपर महाराव राजाको मारनेकी ग़रज़से जादू करानेकी झूटी तुहमत लगाकर तीनोंको बेगुनाह क़त्ल करादिया; और सेवाने कई मुसल्मानोंके मुंहमें सूअरकी हड्डियां दिलाकर तक्लीफ़ पहुंचाई, जिसकी सज़ा उसने अचनेरेमें बड़ी बेइज़्ज़तीसे मारेजाकर पाई, और अख़ीरमें मिर्ज़ाने भी अपनी बदीका फल पाया, याने कुछ मुद्दत बाद मुल्कसे निकाला गया.

२– महाराव राजा शिवदानसिंह.

यह महाराव राजा, जिनका जन्म विक्रमी १९०२ भाद्रपद शुक्ल १४ [हि॰ १२६१ ता॰ १३ रमज़ान = ई॰ १८४५ ता॰ १६ सेप्टेम्बर] को शाहपुरावाली राणीसे हुआ था, अपने पिताके इन्तिक़ाल करनेपर विक्रमी १९१४ श्रावण कृष्ण ९ [हि॰ १२७३ ता॰ २३ ज़िल्क़ाद = ई॰ १८५७ ता॰ १९ जुलाई] को गद्दीपर बिठाये गये. इस समय मुसल्मान अह्लकारोंका बहुत असर बढ़ गया. मुन्शी अम्मूजान, जो राव राजा विनयसिंहके बड़े लाइक़ अह्लकारोंमें गिना जाता था, और जिसने शाहपुरावाली राणीके साथ विनयसिंहकी मौजूदगीमें ही बहिनका रिश्तह पैदा करलिया था, और सिवाय इसके दिल्ली फ़त्ह होने बाद उसने दिल्लीके भागे हुए कई बाग़ियोंको गिरिफ़्तार व सज़ायाब कराके सर्कार अंग्रेज़ीको भी अपनी ख़ैरख़्वाहीका यक़ीन दिलादिया था. इस वक्त महाराव राजाकी नाबालिग़ीके ज़मानेमें आम ग़द्रके सबब सर्कार अंग्रेज़ीकी तरफ़से रियासती प्रबन्धके वास्ते महक्मह एजेन्सी क़ाइम न होनेसे क़ाबू पाकर और ही षड्यन्त्र करने लगा, याने अपना मत्लब बनानेके लिये राव राजाके पास अपने रिश्तहदार वग़ैरह मुसल्मानोंको भर्ती किया, जिनकी सुहबतसे वह नशे व अय्याशी वग़ैरह वाहियात बातोंमें लगकर अपने राजपूतोंसे नफ़रत और

मुसल्मानी रवाजको पसन्द करने लगे. यहांतक सुना गया है, कि अम्मूजान के ख़ानदानसे एक लड़कीका निकाह राव राजाके साथ करके उनको मुसल्मान बना लेनेकी सलाह ठहरी. जब रईसको इस तरहपर फांसकर अम्मूजान वगैरहने रियासतको लूटना शुरू किया, तो मिर्ज़ा इस्फ़न्दयारबेगने, जो पुरानी दुश्मनीके सबब अम्मूजानकी घातमें लगा हुआ था, यह हाल राजपूतोंपर अच्छी तरह रौशन करके फ़सादपर आमादह किया; और सर्कार अंग्रेज़ीसे किसी तरहकी बाज़पुर्स न होनेकी उन्हें तसल्ली करदी. इस बातके सुननेसे राजपूतोंको, जिनका सरगिरोह ठाकुर लखधीरसिंह बीजवाड़ वाला था, बड़ा जोश आया; और विक्रमी १९१५ श्रावण [हि० १२७५ मुहर्रम = ई० १८५८ ऑगस्ट] में एक बगावत पैदा होगई, जिसमें अम्मूजानने तो बड़ी मुश्किलसे भागकर जान बचाई, और उसका भतीजा मुहम्मद नसीर और एक ख़िद्मतगार मारा गया. ठाकुर लखधीरसिंहने साहिब एजेण्ट गवर्नर जेनरल और कप्तान निक्सन साहिब पोलिटिकल एजेण्ट भरतपुरको इत्तिला दी. कप्तान निक्सनने भरतपुरसे अलवरमें पहुंचकर राजपूतोंका क्रोध ठंडा किया; और ठाकुर लखधीरसिंह की मातह्तीमें रियासती कारोबारके इन्तिज़ामके लिये सर्दारोंकी एक पंचायत सर्कारी मन्ज़ूरीसे मुक़र्रर करके राज्यमें एजेन्सी क़ाइम कियेजानेकी ग़रज़से सद्रको रिपोर्ट की, जिसपर विक्रमी १९१५ कार्तिक [हि० १२७५ रबीउस्सानी = ई० १८५८ नोवेम्बर] में कप्तान इम्पी अलवरके पोलिटिकल एजेण्ट मुक़र्रर हुए.

उस वक्त रियासतका ढंग बिगड़ा हुआ था, इस लिये कप्तान इम्पीने बहुत होश्यारी व साबित क़दमीके साथ कारोबारका बन्दोबस्त किया, जिसमें उनको कई तरहकी दिक़्क़तें उठानी पड़ीं. उनमें ज़ियादह तर रईसकी मुदाख़लत और विरुद्धता थी. विक्रमी १९१६ [हि० १२७५ = ई० १८५९] में महाराव राजाने ख़ुद मुख़्तार व आज़ाद होनेके मन्शा पर कई बदमआशोंकी मददसे महकमह एजेन्सी व पंचायतको ज़बर्दस्ती बर्ख़ास्त करके लखधीरसिंहको मारडालना चाहा, और चन्द फ़ौजी अफ़्सरोंसे मिलावट की. यह ख़बर पाकर इम्पी साहिबने उस गिरोहको गिरिफ़्तार करलिया, और इस कार्रवाईके शुब्हेमें अम्मूजान, फ़ज़्लुल्लाहख़ां व इन्आमुल्लाहख़ां, तीनोंको अलवरसे निकालकर मेरठ, बनारस व दिल्ली, अलह्दह अलह्दह मक़ामातपर रहनेका हुक्म दिया गया. इसी अर्सेमें इस्फ़न्दयारबेग भी ३००) माहवार पेन्शन् मुक़र्रर की जाकर अलवर से निकालदिया गया; और कप्तान इम्पी साहिबने अह्लकारोंका रिश्वत लेना, रियासतकी ज़ेरबारी और रिआयाकी तक्लीफ़ातके सबबों व ख़राबियों वगैरहका पूरा इन्तिज़ाम करके मिस्टर टॉमस हद्रलीकी मददसे तीन सालका सर्सरी बन्दोबस्त किया,

जिसमें औसत १२२९२२० रुपया सालानह आमदनी हुई. रिआया इस इन्तिज़ामसे ख़ुश हुई, और अक्सर वीरान गांव नये सिरसे आबाद हुए. आगेके दह सालह बन्दोबस्तके लिये रिआयाने महसूलका बढ़ाया जाना ख़ुशीसे मन्ज़ूर किया. इस बन्दोबस्तमें विक्रमी १९१९ [हि० १२७८ = ई० १८६२] से विक्रमी १९२९ [हि० १२८९ = ई० १८७२] तक औसत जमा १५१९८५० रुपये मुक़र्रर हुई. सिवाय इसके उक्त कप्तानने अपने इन्तिज़ाममें कचहरियोंके वास्ते एक बड़ा मकान महलके चौकमें बनाया, रिआयाके आरामके वास्ते 'इम्पी ताल' नामका एक तालाब खोदकर इहातेके पास तय्यार कराया, जिसमें सीलीसेढ़की नहरसे पानी आता है. अलवर व तिजाराके दर्मियानी सड़क बनवाई, और महाराव राजाकी शादी रईस झालरापाटनके यहां बड़ी धूम धामसे की. जब कप्तान निक्सनकी क़ाइम कीहुई अगली पंचायतसे प्रबन्धकी दुरुस्ती अच्छी तरह न हुई, तब थोड़े दिनों तक इम्पी साहिबने ख़ुद रियासतका काम किया; फिर पांच ठाकुरोंकी एक कौन्सिल मुक़र्रर की. उसमें भी बिगाड़ नज़र आया, तब विक्रमी १९१७ [हि० १२७७ = ई० १८६०] में दूसरी कौन्सिल क़ाइम कीगई, जिसका मुख़्तार ठाकुर लखधीरसिंहको और मेम्बर ठाकुर नन्दसिंह व पण्डित रूपनारायणको बनाया. इस कौन्सिलने महाराव राजाको इख़्तियारात मिलनेके वक़ तक अच्छा काम किया.

विक्रमी १९२० भाद्रपद शुक्ल २ [हि० १२८० ता० १ रबीउस्सानी = ई० १८६३ ता० १४ सेप्टेम्बर] में राव राजाको इख़्तियार मिलगया, और कुछ अरसह बाद एजेएटीका इख़्तियार उठगया. महाराव राजाने रियासतके इख़्तियारात मिलते ही अन्जुमनके बर्ख़िलाफ़ बग़ावत करनेकी नाराज़गीके सबब लखधीरसिंहको बीजवाड़ जानेका हुक्म दिया, और गांव बांगरोली, जो विक्रमी १९१५ [हि० १२७५ = ई० १८५८] में मुवाफ़िक़ ख़्वाहिश परलोकवासी महाराव राजा विनयसिंहके इन्तिज़ाम एजेन्सीके ज़मानेमें लखधीरसिंहको दिया गया था, छीन लिया. इसपर गवर्मेंटने महाराव राजाको बहुत कुछ हिदायत की, कि सर्कार अंग्रेज़ी ठाकुरकी उम्दह कारगुज़ारीसे बहुत ख़ुश है, अगर इसके अ़लावह उसके साथ और कुछ ज़ियादती होगी, तो सर्कार बहुत नाराज़ होगी.

विक्रमी १९२१ [हि० १२८१ = ई० १८६४] में, जब कि महकमह एजेन्सी बदस्तूर था, महाराव राजाने कलकत्तेमें नव्वाब गवर्नर जेनरलके पास जाकर अपनी होश्यारी व लियाक़त ज़ाहिर की; लेकिन् नव्वाब साहिबको उनकी तरफ़से नेक चलनी का भरोसा न था, तौभी इह्तियातके तौरपर कहा, कि अगर अलवरमें कोई फ़साद पैदा होगा, तो उसका बन्दोबस्त करनेके लिये सर्कार मदद न देगी. इसी अरसेमें

विक्रमी १९२१ ज्येष्ठ कृष्ण १२ [हि० १२८० ता० २६ ज़िलहिज = .ई० १८६४ ता० १ जून] को मियांजान चाबुक सवार, जिससे महाराव राजा नाराज़ थे, राजगढ़में मारा गया; और उसके क़त्लका शुब्ह महाराव राजाकी निस्बत हुआ; लेकिन् गवाही वग़ैरहसे पूरा सुबूत न पहुंचा. उस ज़मानेमें कप्तान हमिल्टन रियासतके एजेण्ट थे, उनकी रिपोर्टोंमें इख़्तिलाफ़ और मुक़द्दमेकी तह्क़ीक़ातमें सुस्ती पाये जानेके सबब और महाराव राजाको पूरे इख़्तियारात मिलनेके लाइक़ होश्यार और बालिग़ समझकर गवर्मेंटने एजेन्सीको तोड़दिया, और कप्तानको फ़ौजमें भेजदिया. कुछ अरसे तक तो महाराव राजाने रियासतका काम होश्यारी व अक्लमन्दीके साथ किया; लेकिन् इन्हीं दिनोंमें ख़ारिज किये हुए अह्लकारोंको, कि जो बनारसमें थे, अलवरसे ख़त किताबत न रखनेकी शर्तपर सर्कारसे दिल्लीमें रहनेकी इजाज़त मिलगई. महाराव राजाने उन लोगोंको दिल्ली आते ही रियासतका सारा काम सुपुर्द करके चार हज़ार रुपयेके क़रीब माहवारी तन्ख़्वाह उनके पास भेजना शुरू कर दिया, इम्पी साहिबके ज़मानेके ख़ैरख़्वाह अह्लकार मौकूफ़ किये जाकर दिल्लीके सिफ़ारिशी मुसल्मान नौकर रक्खे गये, रिश्वतका बाज़ार फिर गर्म हुआ, और तमाम काम दिल्लीमें रहने वाले प्रधानोंकी मारिफ़त होने लगा, जिसका नतीजा यह निकला, कि रियासतमें पहिलेकी तरह फिर ख़राबी पैदा होगई.

इसी अरसेमें उक्त महाराव राजाने जयपुरके महाराजासे नाइत्तिफ़ाक़ी पैदा की, और अपने मातह्त जागीरदारोंके साथ कई तरहके झगड़े उठाये; ठाकुर लखधीरसिंह पुष्कर स्नानके बहानेसे जयपुर चलागया. विक्रमी १९२२ [हि० १२८२ = ई० १८६५] में जब महाराव राजा अपनी ननसाल मक़ाम शाहपुराको जाते थे, तो रास्तेमें जयपुरके पास कर्नेल ईडन, एजेण्ट गवर्नर जेनरल राजपूतानह, व मेजर बेनन पोलिटिकल एजेण्ट जयपुरसे काणोता मक़ामपर मुलाक़ात हुई; दोनों साहिबोंने महाराव राजा को बहुत कुछ समझाया, और ठाकुर लखधीरसिंहको वापस अपने साथ अलवर लेजानेको कहा, लेकिन् उन्होंने नहीं माना; इसपर ईडन साहिब व बेनन साहिबको बड़ा रंज हुआ. ठाकुर लखधीरसिंहने दोनों साहिबों व महाराजा जयपुरको अपना मिह्र्बान व तरफ़दार समझकर जयपुरके राज्यमेंसे लुटेरोंको एकट्ठा किया, और विक्रमी १९२३ [हि० १२८३ = ई० १८६६] में राव राजाके बर्ख़िलाफ़ रियासत अलवरमें लूट मार मचाई. इस समय लखधीरसिंहके ख़ानगी मददगार जयपुरके महाराजा रामसिंह थे; लेकिन् लखधीरसिंहको अलवरकी फ़ौजसे शिकस्त खाकर भागना पड़ा.

इस लड़ाईमें, जो घाटे बांदरोल व गोलाके बासपर हुई, लखधीरसिंहके साथके बहुतसे ग़ारतगर मारे गये, और उनमेंसे सतीदान मेड़तिया बड़ी बहादुरीके साथ लड़ा; राज्यकी फ़ौजके जादव राजपूतोंने ख़ूब मर्दानगी ज़ाहिर की. राव राजाने

बसबब पनाह देने लखधीरसिंहके जयपुर वालोंपर अपने नुक्सानका दावा किया, और जयपुरकी तरफ़से उससे भी ज़ियादह नुक्सानकी नालिश पेश हुई, लेकिन् वाक़िआतकी अस्लियत बख़ूबी दर्याफ़्त न होनेके कारण मुक़द्दमह डिस्मिस होगया. अंग्रेज़ी गवर्मेण्ट लखधीरसिंहकी सर्कशीसे बहुत नाराज़ हुई, और महाराव राजाको उसकी पेन्शन व जागीर बदस्तूर बहाल रखनेकी हिदायत करके लखधीरसिंहको रियासत जयपुर व अलवर दोनोंसे बाहर रहनेका हुक्म दियागया, जिसपर वह अजमेरमें रहने लगा; मगर महाराव राजाने थोड़े दिनों बाद मौज़ा बीजवाड़को तबाह करके वहांकी ज़मीनपर खेती वगै़रह होना बन्द करदिया. इस तरहके झगड़े बखेड़ोंके हमेशह रहनेसे नव्वाब वाइसरॉय गवर्नर जेनरलने उक्त महाराव राजाको एक अ़र्से तक गद्दीनशीनी व रियासतके पूरे इख़्तियारातका ख़िल्अ़त नहीं भेजा, लेकिन् जब विक्रमी १९२४ [हि० १२८४ = ई० १८६७] में एजेण्ट गवर्नर जेनरल राजपूतानहने उनकी नेक चलनी वगै़रहकी बाबत रिपोर्ट की, तो १०००० रुपयेका ख़िल्अ़त सर्कारसे बख़्शा गया.

विक्रमी १९२६ [हि० १२८६ = ई० १८६९] तक इस रियासतका संबन्ध एजेन्ट गवर्नर जेनरल राजपूतानहके साथ रहा, और उसके बाद इसी सालके मई महीनेमें महकमह एजेन्सी पूर्वी राजपूतानह मुक़र्रर होकर भरतपुर, धौलपुर व क़रौलीके सिवा अलवर भी उसके मुतअ़ल्लिक़ हुआ, और कप्तान वाल्टर साहिबके रुख़्सत जानेपर कप्तान जेम्स ब्लेअर साहिब क़ाइम मक़ाम पोलिटिकल एजेण्ट मुक़र्रर हुए. इसी ज़मानेमें नीमराना व राज अलवरका बाहमी झगड़ा, जो मुद्दतसे चलाआता था, फ़ैसल होकर नीमरानावाले रईससे तीन हज़ार रुपया सालानह ख़िराज, सर्कार अंग्रेज़ीकी मारिफ़त अलवरको दिया जाना क़रार पाया; और कप्तान एबट साहिबके इह्तिमामसे नीमरानेके इलाक़ेकी हदबस्त तै पाकर जयपुर व अलवरकी शामिलातके गांव दोनों राज्योंकी रज़ामन्दीसे तक्सीम हुए.

महाराव राजाने फ़ुज़ूल ख़र्ची और क्रूरतासे बड़ी बदनामी पैदा की, याने कुल आमदनीके सिवा बीस लाख रुपया, जो इम्पी साहिबने ख़ज़ानेमें छोड़ा था, फ़ुज़ूल ख़र्चीमें उड़ाकर बहुतसा क़र्ज़ करलिया; विक्रमी १९२५ [हि० १२८५ = ई० १८६८] में बहुतसे राजपूतोंकी जागीरें और मज़्हबी व ख़ैराती सीग़ेकी ज़मीन वगै़रह छीन ली. इस तरहकी बेजा बातोंसे तमाम लोग रंजीदह होगये, पंडित रूपनारायण गिर्दावर राज इस्तिअ़्फ़ा देकर चला गया, और दिल्लीके दीवानोंकी सिफ़ारिशसे मुन्शी रुकलाल गिर्दावर, अ़ब्दुर्रहीम हाकिम अ़दालत, और शम्शाद अ़ली डिप्युटी कलेक्टर बनाया गया.

महाराणी झालीसे कुंवर पैदा हुआ, तो उसकी खुशीमें महाराव राजाने जश्न करके

नाच व राग रंग और दावतमें लाखों रुपया खर्च किया; और विक्रमी १९२६-२७ [हि० १२८६-८७ = ई० १८६९-७०] में राव राजाकी दर्ख्वास्तपर शाहज़ादह ड्यूक ऑफ़ एडिम्बरा अलवरमें तश्रीफ़ लाये, जिनकी ज़ियाफ़त बड़ी धूम धामसे नाच व रौशनी वग़ैरहके साथ की गई. महाराव राजाने कई क़िस्मकी चीज़ें और एक उम्दह तलवार शाहज़ादहको नज़ की, दूसरे रोज़ सुब्हको शाहज़ादह साहिब वापस तश्रीफ़ लेगये. विक्रमी १९२६ माघ [हि० १२८६ ज़िल्क़ाद = ई० १८७० फ़ेब्रुअरी] में महाराव राजाने राजपूतोंका ख़ास चौकीका रिसालह, जिसकी तन्ख्वाह जागीरके मुवाफ़िक़ समझी जाती थी, मौक़ूफ़ कर दिया; और राजपूतोंकी जगह बहुतसे नये मुसल्मान भरती करलिये. ठाकुर मंगलसिंह गढ़ीवाला और दूसरे ठाकुर, जिनकी जागीरें ख़ालिसह हुई थीं, अव्वलसे ही नाराज़ थे, इस वक्त बारगीरोंकी मौक़ूफ़ीसे ज़ियादह जोशमें आकर एक मत होगये; और खेड़लीके ठाकुर जवाहिरसिंह व दूसरे सर्दारोंसे, जो जागीरें ज़ब्त होजानेका अन्देशह दिलोंमें रखते थे, मिलावट करके फ़साद करनेको तय्यार हुए. यह हाल सुनकर कप्तान जेम्स ब्लेअर साहिब पोलिटिकल एजेंट पूर्वी राजपूतानह, अलवरमें तश्रीफ़ लाये, और राजगढ़ मक़ामपर महाराव राजा व सर्दारोंके आपसमें सफ़ाई करादेनेमें पूरी कोशिश की; मगर उसका नतीजा उक्त साहिबके मन्शाके मुवाफ़िक़ न निकला; वह वापस चले गये, और करौलीमें पहुंचनेपर चन्द रोज़ बाद विक्रमी १९२६ फाल्गुन [हि० १२८६ ज़िलहिज = ई० १८७० मार्च] में उनका इन्तिक़ाल होगया.

जेम्स ब्लेअरकी जगह विक्रमी १९२७ [हि० १२८७ = ई० १८७०] में कप्तान केडल सर्कार अंग्रेज़ीकी तरफ़से महाराव राजा व सर्दारोंके सुलह करादेनेके वास्ते पोलिटिकल एजेंट नियत हुए. इन्होंने भी सुलहके बारेमें बहुत कुछ कोशिश की, मगर कारगर न हुई. रियासतमें हर तरहकी बुराइयां फैल रही थीं, राज्यका कोई प्रबन्ध कर्ता और राव राजाको नेक सलाह देने वाला नहीं था; अब्दुर्रहीम, इब्राहीम सौदागर और शम्शाद अली, जो उनके मुसाहिब थे, अपनी बेजा मुदाख़लतके डरसे भाग गये. सर्दार लोगोंने इस वक्त मौक़ा पाकर महाराव राजाको गद्दीसे ख़ारिज करके उनकी जगह कुंवर शिवप्रतापसिंहको क़ाइम करना चाहा, लेकिन् थोड़े ही दिनों बाद कुंवरका इन्तिक़ाल होगया, और इसी अर्सेमें महाराणी झाली भी इस दुन्यासे कूच करगई; इन दोनों हादिसोंसे महाराव राजाके दिलको बड़ा सदमह पहुंचा, और इन्हीं दिनोंमें केडल साहिबके नाम एजेन्सी मुक़र्रर किये जानेका हुक्म गवर्मेएटसे आगया. राज्यके प्रबन्धके वास्ते रियासती सर्दारोंकी कौन्सिल नियत कीगई, जिसके प्रेसिडेएट पोलिटिकल एजेएट हुए, और कौन्सिलके मेम्बरोंमें ठाकुर लखधीरसिंह बीजवाड़का, ठाकुर महतावसिंह खोड़ाका, ठाकुर हरदेवसिंह थानाका, ठाकुर

मंगलसिंह गढ़ीका, चार नरूका राजपूत, और पांचवां पण्डित रूपनारायण कान्यकुब्ज ब्राह्मण था. राव राजाका इख़्तियार घटाया जाकर एक मेम्बरके मुवाफ़िक़ करदिया गया. महाराव राजाको तीन हज़ार रुपया माहवारी मिलना क़रार पाया, और उनके ख़िद्मतगारोंका भी प्रबन्ध करदिया गया. जिन सर्दारों वग़ैरहकी जागीरें बे इन्साफ़ीसे छीनी गई थीं, वे वापस देदी गईं; और नये सिपाहियोंको मौक़ूफ़ करके पुराने हक़दारोंको भरती करलिया. विक्रमी १९२८ ज्येष्ठ [हि० १२८८ रबीउ़लअव्वल = ई० १८७१ मई] में महाराव राजाका ढंग बहुत बिगड़ गया, कि सुलह चाहनेवालोंको फ़साद पैदा होनेका ख़ौफ़ हुआ, जेलख़ानहमें बखेड़ा मचा, और कई तरहकी ख़राबियां पैदा हुईं. उसी ज़मानेमें साबित हुआ, कि साहिब पोलिटिकल एजेण्ट व ठाकुर लखधीरसिंहको मारनेकी साज़िश हुई है, मोती मीना व कई दूसरे मीने, जो इस जुर्मके करनेपर आमादह हुए थे, गिरिफ़्तार किये गये; और महाराव राजाको गवर्मेण्टसे सख़्त हिदायत हुई. जिन ठाकुर वग़ैरह जागीरदारोंने फ़सादके ज़मानेसे ख़ुद मुख़्तार बनकर राजकी जमा देना बन्द करदिया था, उनमेंसे कई लोगोंको क़ैद व जुर्मानहकी सज़ा देकर पोलिटिकल एजेण्टने ताबिअ़ बना लिया; और रियासतकी क़र्ज़दारी व ज़ेरबारीको दूर करनेके लिये गवर्मेण्टसे दस लाख रुपया बतौर क़र्ज़ लिया, जिसकी क़िस्त अव्वल विक्रमी १९२८-२९ [हि० १२८८-८९ = ई० १८७१-७२] में एक लाखकी और आयन्दह वर्षोंके लिये तीन लाख रुपये सालानहकी मुक़र्रर कीगई. इस क़र्ज़ेके मिलनेसे मुलाज़िमोंकी चढ़ीहुई तन्ख़्वाह और क़र्ज़दारोंका रुपया दिया जाकर हर महकमह पारिश्तेका प्रबन्ध कियागया, और मुफ़्सिद लोग मौक़ूफ़ किये गये.

विक्रमी १९२९ [हि० १२८९ = ई० १८७२] में ज़मीनके हासिलका प्रबन्ध किया गया. महाराव राजाने रियासतके इन्तिज़ाममें हाथ न डाला, और मेम्बरान कमिटीने अच्छी तरह काम किया. विक्रमी १९३०-३१ [हि० १२९०-९१ = ई० १८७३-७४] में रिआयाने बग़ैर उज़्र मालगुज़ारीमें साढ़े सात रुपया फ़ी सैकड़ाका इज़ाफ़ह ख़ुशीके साथ मन्ज़ूर किया.

आख़िरकार विक्रमी १९३१ आश्विन कृष्ण ऽऽ [हि० १२९१ ता० २९ शअ़्बान = ई० १८७४ ता० ११ ऑक्टोबर] को उन्तीस वर्षकी उ़म्र पाकर दिमाग़ी बीमारीसे महाराव राजाका इन्तिक़ाल होगया. उनके कोई औलाद न रहनेके सबब गोदके बारेमें बहुत झगड़ा होने लगा, तब सर्कार अंग्रेज़ीने दो आदमियोंमेंसे एकको चुननेकी इजाज़त दी; एक बीज़वाड़का ठाकुर लखधीरसिंह और दूसरा थानाके ठाकुरका बेटा

मंगलसिंह था, जिनमेंसे रियासती सर्दारोंकी कस्रत रायपर मंगलसिंहको गद्दीपर बिठाना तज्वीज़ हुआ.

५- महाराजा मंगलसिंह.

यह विक्रमी १९३१ मार्गशीर्ष शुक्ल ५ [हि० १२९१ ता० ४ ज़िल्क़ाद = ई० १८७४ ता० १४ डिसेम्बर] को गद्दीपर बिठाये गये, इस बातसे ठाकुर लखधीरसिंह और दूसरे कई जागीरदार नाराज़ रहे, और राव राजाको नज़्र नहीं दी. तब विक्रमी १९३१ फाल्गुन् कृष्ण ४ [हि० १२९२ ता० १८ मुहर्रम = ई० १८७५ ता० २५ फेब्रुअरी] को उनकी जागीरोंपर राज्यका प्रबन्ध किया जाकर किसी क़द्र ज़ब्ती हुई, और लखधीरसिंहको अजमेरमें रहनेका हुक्म मिला. दूसरे सर्कश ठाकुर भी उसके साथ ख़िलाफ़ हुक्म अजमेरको गये, लेकिन् वहां रहने न पाये.

विक्रमी १९३१ फाल्गुन् कृष्ण ८ [हि० १२९२ ता० २२ मुहर्रम = ई० १८७५ अख़ीर फेब्रुअरी] को पंडित मनफूल सितारए हिन्द (सी० एस० आइ०) महाराव राजाका अतालीक़ (गार्डिअन) मुक़र्रर कियागया. इसी सालके फाल्गुन् [हि० १२९२ सफ़र = ई० १८७५ मार्च] में महाराव राजा नव्वाब गवर्नर जेनरलके हुक्मके मुवाफ़िक़ दिल्लीके दर्बारमें गये, जहांपर गवर्नर जेनरल व लेफ़्टिनेन्ट गवर्नर पंजाब तथा पटियाला व नाभाके राजाओंसे मुलाक़ात हुई. इस अ़र्सेमें कचहरियों वग़ैरहमें बहुत कुछ तरक़्क़ी हुई, अपीलका महकमह अ़लहदह क़ाइम हुआ, कि जिसमें फ़ौज्दारी, दीवानी व मालकी अपील सुनीजाती है; लेकिन् संगीन जुर्म वाले मुक़द्दमोंकी तज्वीज़ पंचायतसे होती है, और अख़ीर मन्ज़ूरी महाराजा व पोलिटिकल एजेन्टकी इजाज़तसे दीजाती है. इन्हीं दिनोंमें सर्कार अंग्रेज़ीके क़र्ज़हका दस लाख रुपया अस्ल और सूद, जो महाराव राजा शिवदानसिंहके वक़्का बाक़ी था, अदा कियागया. विक्रमी १९३२ भाद्रपद [हि० १२९२ शअ़्बान = ई० १८७५ सेप्टेम्बर] में जयपुर मक़ामपर ठाकुर लखधीरसिंहका इन्तिक़ाल होगया; और उसकी जगह उसके वारिस रिश्तहदार माधवसिंहके गद्दी बैठनेपर गवर्मेण्टकी मन्ज़ूरीसे लखधीरसिंहकी जागीर, जो ज़ब्त होगई थी, उसको बहाल करदी गई. विक्रमी १९३२ कार्तिक कृष्ण ६ [हि० १२९२ ता० २१ रमज़ान = ई० १८७५ ता० २२ ऑक्टोबर] को महाराव राजा अजमेरके मेओ कॉलेज में सबसे पहिले दाख़िल हुए. दाख़िल होनेसे थोड़े ही हफ़्तों बाद नव्वाब वाइसरॉय अजमेरमें आये, उन दिनों पढ़ने लिखनेमें ज़ियादह तवज्जुह नहीं रही, उसके बाद एक महीने तक पढ़नेमें कोशिश करके दिल्लीमें फ़ौजकी क़वाइद देखनेके लिये इजाज़त

लेकर चलेगये, और वहांसे आगरे पहुंचकर शाहज़ादह प्रिन्स ऑफ़ वेल्सकी पेश्वाईमें शामिल हुए, जहां शाहज़ादे साहिबसे मुलाक़ात और बात चीत हुई. विक्रमी १९३२ [हि० १२९२ = ई० १८७५] में दिल्लीसे अलवर तक रेल्वे लाइन खोली गई, और विक्रमी १९३३ [हि० १२९३ = ई० १८७६] में बांदी कुई तक जारी हुई. विक्रमी १९३३ कार्तिक [हि० १२९३ शव्वाल = ई० १८७६ नोवेम्बर] में राव राजा विनयसिंहकी राणी और मंगलसिंहकी दादी रूपकुंवरका इन्तिक़ाल हुआ; यह बड़ी अक्लमन्द और राज्यके कामोंसे वाक़िफ़ थीं. इसी सालमें ठाकुर महताबसिंह खोड़ वालेका इन्तिक़ाल हुआ. विक्रमी १९३३-३४ [हि० १२९३-९४ = ई० १८७६-७७] में महाराव राजाके पढ़नेमें ज़ियादह हर्ज हुआ, और इसी वक्त पण्डित मनूफूलने इस्तिअ्फ़ा दिया, उसकी जगह कप्तान मार्टेली असिस्टेण्ट एजेण्ट गवर्नर जेनरल इस कामपर मुक़र्रर हुए.

विक्रमी १९३३ [हि० १२९३ = ई० १८७६] में महाराव राजाकी शादी कृष्णगढ़के महाराजा पृथ्वीसिंहकी दूसरी बेटीके साथ हुई, जिसमें रिआ़यासे न्योतेका रुपया, जो पहिले लियाजाता था, वुसूल न करनेपर उनकी बड़ी नेकनामी व रिआ़या पर्वरी ज़ाहिर हुई. इसी वर्ष पंचायतके मेम्बरोंमेंसे ठाकुर मंगलसिंह गढ़ीवाले, और पंडित रूपनारायण दीवानको उनकी उम्दह कारगुज़ारीके एवज़ सर्कार अंग्रेज़ीसे राय बहादुरका ख़िताब अ़ता हुआ.

विक्रमी १९३४ कार्तिक [हि० १२९४ ज़िल्क़ाद = ई० १८७७ नोवेम्बर] महीनेमें महाराव राजाको सर्कारी तरफ़से पूरे इख्तियारात मिले, और इसी अ़रसेमें मेजर टॉमस केडल वी० सी० पोलिटिकल एजेण्ट अलवर, जिन्होंने कई साल तक राज्यके इन्तिज़ाममें मश्ग़ूल रहकर हर एक सरिश्ते व शहर तथा क़स्बोंको हर तरहसे रौनक़ दी, और मिहर्बानी व नर्मीसे रिआ़याके साथ बर्ताव रक्खा, मारवाड़की एजेन्सीपर तब्दील होकर जोधपुर गये.

विक्रमी १९४३ [हि० १३०३ = ई० १८८६] में महाराव राजाको अव्वल दरजहका तमग़ाय सितारए हिन्द (G. C. S. I.) हासिल हुआ. विक्रमी १९४५ [हि० १३०६ = ई० १८८८] के शुरूपर सर्कारने उनको फ़ौजी कर्नेलका उह्दह और मौरूसी तौरपर 'महाराजा' ख़िताब इनायत किया, जिसकी रस्म कर्नेल वाल्टर, एजेण्ट गवर्नर जेनरल राजपूतानहके हाथसे अदा हुई.

अलवरके जागीरदार व सर्दार.

रियासत अलवरके उत्तर पश्चिम राठमें पुराने चहुवान सर्दार और नरूखंडके

दक्षिणमें नरूका ख़ानदानके लोग रहते हैं, लालावत नरूकोंका पुर्षा लाला था, इसी ख़ानदानमें कल्याणसिंह हुआ, इसकी औलादमें, जिनको बारह कोटड़ी कहते हैं, २५ जागीरदार हैं. इनके सिवा कई एक नरूका ख़ानदान "देश" के नामसे मश्हूर हैं, जो नरूका देशसे आकर सर्दारोंके बुलानेपर अलवरमें आ बसे हैं.

चहुवान– इनका बयान है, कि दिल्लीके प्रसिद्ध राजा पृथ्वीराजकी नस्ल मेंसे हैं.

नीमराणा– यहांका जागीरदार अपनेको खुद मुस्तार बयान करता है, सर्कार अंग्रेज़ीको इस बारेमें बड़ी फ़िक्र हुई, आख़िरकार विक्रमी १९२५ [हि० १२८४ = ई० १८६८] में यह क़रार पाया, कि नीमराणाके राजाको मुल्की और फ़ौज्दारीका इख़्तियार अपने इलाक़हमें रहे, सर्कार अंग्रेज़ीके हुक्मके मुवाफ़िक़ अलवर दर्बारको अपनी आमदनीका आठवां हिस्सह ख़िराजके तौर दिया करे; और अलवरकी गद्दीनशीनीके वक़ ५००) रुपया नज़ानह करे; नीमराणाकी गद्दीनशीनीके वक़ सर्कार अंग्रेज़ीके मातहतोंके दस्तूरके मुवाफ़िक़ बर्ताव किया जावे; नीमराणाका एक वकील अलवरमें और दूसरा एजेण्ट गवर्नर जेनरलके साथ रहा करे; नीमराणामें तिजारतपर महसूल न लियाजाये; और अस्बाबके आने जानेपर राज अलवर महसूल न लेवे; नीमराणा अलवरका जागीरदार सर्दार समझा जावे; विक्रमी १९२५ [हि० १२८४ = ई० १८६८] से विक्रमी १९५५ [हि० १३१५ = ई० १८९८] तक नीमराणासे तीन हज़ार सालानह महसूल दिया जावे. इस बातको दोनोंने मान लिया. नीमराणामें दस गांव २४०००) रुपया सालानह आमदके हैं.

जागीरदार– नीचे उन गोत्रों और उपगोत्रोंके नाम लिखे हैं, जिनको जागीर घोड़ेके हिसाबसे मिलती है. घोड़ोंके टुकड़ेसे नक्द रुपया समझना चाहिये.

नक़्शह.

राजपूत गोत्र.		जागीरदारोंकी संख्या.	घोड़े.
नरूका	बारह कोटड़ी	२६	२२२ १/२
	दशावत	६	४१ १/२
	लालावत	७	४२ १/४
	चित्तरजिका	५	१८ १/२
	देशका	१०	७१ ३/४

राजपूत गोत्र.	जागीरदारोंकी संख्या.	घोड़े.
चहुवान	१९	१११ ३/४
कल्याणोत	२	१३
पचाणोत	७	४१
जनावत	१	१०
राजावत	२	२
कुंभावत	१	४
जोग कछवाहा	१	२
रायाक	१	१ १/४
शैखावत	१	३
बांकावत	१	१
गौड़	९	५८
राठौड़	९	७३
यादव भाटी	७	५६ १/२
बड़गूजर	६	७०
तवंर	१	४
१ सय्यद, १ गुसांई, १ सिक्ख, १ गूजर, १ कायस्थ.	५	३३

ताज़ीम - नीचे लिखे १७ जागीरदार दर्बारमें ताज़ीम पाते हैं :-

१२ कोटड़ीके नरूका, बीजवाड़, पलवा, पारा, पाई, खोड़, थाना, खेड़ा, श्रीचंदपुरा, दशावत नरूका, गढ़ी (२० घोड़े) राठौड़, सालपुर (२८ घोड़े) सुखमेड़ी (११), रसूलपुर (५) बड़गूजर, तसींग (४) गौड़, चमरावली (२४) जादव, कांक वाड़ी (९), मुकुन्दपुर (३). नव ठाकुर, जिनको मालगुज़ारी नहीं लगती, और ताज़ीम दीजाती है, इनमें जाउली ठाकुर जिनके तीन गांव हैं, मुख्य हैं; बख्शी, शाहाबादके खानज़ादह नव्वाब, मंडावरके राव और १३ ब्राह्मणोंको ताज़ीम मिलती है.

शैख़ावत - ये लोग बाल (बान्सूरकी तह्सील) में रहते हैं, और ज़ियादह कछवाहा गोत्रकी शाख़ जयपुरके उत्तरमें आबाद हैं. यह आंबेरके राजा उदयकरणसे उत्पन्न हुए हैं.

शैख़ाजीका बेटा रायमल्ल इन लोगोंका पिता था:-

नरायनपुरके पास एक पुराना मन्दिर और इसके नज़्दीक खेजड़ेके दरख़्तका कुछ बचा हुआ हिस्सह है, जिसके हरे होने और मुरझानेपर शैख़ावत ख़ानदानकी बढ़ती और घटती ख़याल कीजाती है; इनकी अब बहुत कम जागीर रहगई है, और इनके गांवोंपर थोड़ा मह्सूल लगाया गया है.
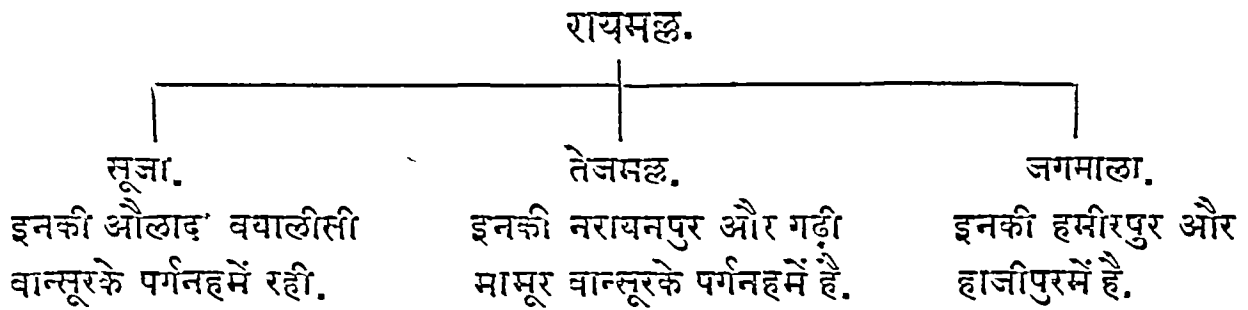
राजावत - ये लोग आंबेरके राजा भगवानदासकी औलाद, उस जगहपर, अब जहां थानह ग़ाज़ीकी तह्सील है, पहिले आबाद थे. उनके नगर, महलों और मन्दिरोंके खंडहर भानगढ़में अबतक पाये जाते हैं. अगर्चि अब ये लोग अक्सर गांवोंमें खेतीसे गुज़र करते हैं, तो भी वे अपना अमीराना व्यवहार रखते हैं.
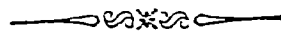
एचिसन्की किताब जिल्द ३,
अ़हदनामह नम्बर ७७.

शराइत अ़हदनामह, जो हिज़ एक्सेलेन्सी जेनरल जिरार्ड लेक साहिब सिपहसालार हिन्द फ़ौज अंग्रेज़ीके, (मुवाफ़िक़ दिये हुए इख़्तियारात हिज़ एक्सेलेन्सी दी मोस्ट नोब्ल मारक्विस वेल्ज़ली गवर्नर जेनरल बहादुरके), और महाराव राजा सवाई बख़्तावरसिंह बहादुरके दर्मियान क़रार पाई.

शर्त पहिली- हमेशहकी दोस्ती ऑनरेबल अंग्रेज़ी ईस्ट इन्डिया कम्पनी और महाराव राजा सवाई बख़्तावरसिंह बहादुर और उनके वारिसों व जानशीनोंके दर्मियान क़रार पाई.

शर्त दूसरी- ऑनरेबल कम्पनीके दोस्त व दुश्मन महाराव राजाके दोस्त व दुश्मन समझे जावेंगे, और महाराव राजाके दोस्त व दुश्मन ऑनरेबल कम्पनीके दोस्त व दुश्मन माने जायेंगे.

शर्त तीसरी- ऑनरेबल कम्पनी महाराव राजाके मुल्कमें दख़्ल न देगी, और ख़िराज तलब न करेगी.

शर्त चौथी- उस सूरतमें, जब कि कोई दुश्मन हिन्दुस्तानमें ऑनरेबल कम्पनीके या उसके दोस्तोंके .इलाक़हपर हमलहका इरादह करेगा, तो महाराव राजा वादह करते हैं, कि वह अपनी तमाम फ़ौज उनकी मददको देंगे, और आप भी पूरी कोशिश दुश्मनके निकालदेनेमें करेंगे; और किसी तरहकी कमी दोस्ती और मुहब्बतमें रवा न रक्खेंगे.

शर्त पांचवीं- जो कि इस अ़हदनामहकी दूसरी शर्तके रूसे ऐसी दोस्ती क़रार पाई है, कि उससे ऑनरेबल कम्पनी गैर मुल्कवाले दुश्मनके ख़िलाफ़ महाराव राजाके मुल्ककी हिफ़ाज़तकी ज़िम्महवार होती है, तो महाराव राजा वादह करते हैं, कि अगर दर्मियान उनके और किसी दूसरे रईसके कोई तकरारकी सूरत पैदा होगी, तो वह अव्वल तकरारकी वजहको गवर्मेण्ट कम्पनीसे रुजू करेंगे, इस नियत से, कि गवर्मेण्ट आसानीसे उसका फ़ैसलह करदे; अगर दूसरे फ़रीक़की ज़िदसे फ़ैसलह सुहूलियतके साथ न होसके, तो महाराव राजा गवर्मेण्ट कम्पनीसे मददकी दर्ख़्वास्त करेंगे, और अगर शर्तके बमूजिब उनको मदद मिले, तो वादह करते हैं, कि जिस क़द्र फ़ौज ख़र्चकी शरह हिन्दुस्तानके और रईसोंसे क़रार पाई है, उसी क़द्र वह भी देंगे.

ऊपरका अह्दनामह, जिसमें पांच शर्तें हैं, हिज़ एक्सेलेन्सी जेनरल जिरार्ड लेक और महाराव राजा बख्तावरसिंह बहादुरकी मुहर और दस्तख़तसे पहेसर मक़ामपर ता० १४ नोवेम्बर सन् १८०३ ई० मुताबिक़ २६ रजब सन् १२१८ हिज्री और १५ माह अगहन संवत् १८६० को दोनों फ़रीक़ने लिया दिया, और जब ऊपर लिखी शर्तोंका अह्दनामह हिज़ एक्सेलेन्सी दी मोस्ट नोबल मारक्विस वेल्ज़ली गवर्नर जेनरल बहादुरकी मुहर और दस्तख़तसे महाराव राजाको मिलेगा, यह अह्दनामह, जिसपर मुहर और दस्तख़त हिज़ एक्सेलेन्सी जेनरल लेकके हैं, वापस किया जायेगा.

राजाकी मुहर.	(दस्तख़त) – जी० लेक.	मुहर.
कम्पनीकी मुहर.	(दस्तख़त) – वेल्ज़ली.	

यह अह्दनामह गवर्नर जेनरल इन् काउन्सिलने ता० १९ डिसेम्बर सन् १८०३ ई० को तस्दीक़ किया.

अह्दनामह नम्बर ७८.

उस सनदका तर्जमह, जो जेनरल लॉर्ड लेक साहिबने राजा सवाई बख्तावरसिंह अलवर वालेको दी.

तमाम मौजूद और आगेको होनेवाले मुतसद्दी और आमिल, चौधरी, क़ानूनगो, ज़मींदार, और काश्तकार, पर्गनों इस्माईलपुर, और मुंडावर मए तअ़ल्लुक़ा दबारपुर, रताय, नीमराना, माडन, गुहिलोत, बीजवाड़, सराय, दादरी, लोहारु, बुधवाना, भुढ़चल नहर, .इलाक़ए सूबह शाहजहांआबादके मालूम करें, कि ऑनरेबल अंग्रेज़ी ईस्ट इन्डिया कम्पनी और महाराव राजा सवाई बख्तावरसिंहके दर्मियान दोस्ती पुरानी और पक्की हुई, इस वास्ते इस दोस्तीके साबित और ज़ाहिर करनेको जेनरल लॉर्ड लेक हुक्म देते हैं, कि ऊपर ज़िक्र किये हुए ज़िले बशर्त मंज़ूरी मोस्ट नोबल गवर्नर जेनरल लॉर्ड वेल्ज़ली बहादुर, महाराव राजाको उनके ख़र्चके लिये दियेजायें.

जब मन्ज़ूरी गवर्नर जेनरल बहादुरकी आजायेगी, तो दूसरी सनद इस सनदके एवज़ दीजायेगी, और यह लौटाई जायेगी.

जबतक दूसरी सनद आए, उस वक़्त तक यह सनद महाराव राजाके दख़्लमें रहेगी.

पर्गनोंकी तफ़्सील.

पर्गनह इस्माईलपुर, मंडावर, तअ़ल्लुक़ा दर्बारपुर, रताय, नीमराना, बीजवाड़, और गुहिलोत और सराय दादरी, लोहारु, बुधवाना, और बुदचलनहर.

ता० २८ नोवेम्बर सन् १८०३ ई० मुताबिक़ १२ शअ़्बान १२१८ हिज्री, और अगहन सुदी १५ संवत् १८६०.

(दस्तख़त) - जी० लेक.

अ़ह्दनामह नम्बर ७९.

उस इक़ार नामहका तर्जमह, जो रावराजाके वकीलने किया.

मैं अह्मदबख़्शख़ां उन पूरे इख़्तियारातके रूसे, जो महाराव राजा सवाई बख़्तावरसिंहने मुझको दिये हैं, और अपनी तरफ़से इक़ार करता हूं, कि एक लाख रुपया सर्कार अंग्रेज़ीको बाबत क़िले कृष्णगढ़ मए इलाक़े और सामानके, जो उसमें हो, दिया जायेगा; और पर्गने तिजारा, टपूकड़ा और कलतूमन, जो दादरी, बदवनोरा और भावनाकरजबके एवज़ मिले थे, महाराव राजाकी मुहर व दस्तख़तसे दिये जायेंगे; और हमेशहके वास्ते लासवाड़ी नदीका बन्द, जिस क़द्र कि राजा भरतपुरके मुल्कके फ़ाइदहके वास्ते ज़ुरूरी होगा, खुला रहेगा; और महाराव राजा इस इक़ार नामहके मुवाफ़िक़ पूरा अमल करेंगे.

जब एक इक़ार नामह महाराव राजाका तस्दीक़ किया हुआ आयेगा, तो यह काग़ज़ वापस होगा.

यह काग़ज़ इक़ारनामहके तौर हस्ब ज़ाबितह समझा जावेगा. ता० २१ रजब सन् १२२० हिज्री.

तर्जमह सहीह है.

(दस्तख़त) - सी० टी० मेटकाफ़,

एजेण्ट गवर्नर जेनरल.

अह्मदबख़्शख़ांकी मुहर.

मुहर.

अह्दनामह नम्बर ८०.

इक़ारनामह महाराव राजा बख़्तावरसिंह रईस माचेड़ीकी तरफ़से, जो ता० १६ जुलाई सन् १८११ ई० को लिखा गया:-

जो कि एकता और दोस्ती पूरी मज्बूतीके साथ सर्कार अंग्रेज़ी और महाराव राजा सवाई बख़्तावरसिंहके दर्मियान क़रार पाई है, और चूंकि बहुत ज़रूर है, कि इसकी इत्तिला सब ख़ास व आमको हो, इसलिये महाराव राजा अपनी और अपने वारिसों व जानशीनोंकी तरफ़से इक़ार करते हैं, कि वह हर्गिज़ किसी गैर रईस और सर्दारसे किसी तरहका इक़ार या इत्तिफ़ाक़ अंग्रेज़ी सर्कारकी बगैर मर्ज़ी और इत्तिला के नहीं करेंगे. इस निय्यतसे यह इक़ारनामह महाराव राजा सवाई बख़्तावरसिंहकी तरफ़से तह्रीर हुआ.

ता० १६ जुलाई सन् १८११ .ई० मुताबिक़ २४ जमादियुस्सानी सन् १२४६ हिज्री. और ज़ाहिर हो, कि यह अह्दनामह, जो दोनों सर्कारोंके दर्मियान क़ाइम हुआ है, किसी तरह उस अह्दनामहको रद न करेगा, जो पहिले ज़ाबितह के मुवाफ़िक़ आपसमें ते हुआ है; बल्कि इससे उसकी और मदद और मज्बूती होगी.

दस्तख़त- महाराव राजा बख़्तावरसिंह.

मुहर महाराव राजा बख़्तावरसिंह.

अह्दनामह नम्बर ८१.

इक़ारनामह महाराव राजा सवाई बनेसिंहकी तरफ़से:-

जो कि तिजारा, टपूकड़ा, रताय और मंडावर वगैरहके ज़िले पर्लोकवासी राव राजा बख़्तावरसिंहको अंग्रेज़ी सर्कारसे जेनरल लॉर्ड लेक साहिबकी सिफ़ारिशपर इनायत हुए थे, मैं इन ज़िलोंकी जमाके मुताबिक़ अपने भाई राजा बलवन्तसिंहको और उसके वारिसोंको हमेशहके लिये आधा नक्द और आधा इलाक़ह अंग्रेज़ी सर्कारकी हिदायतके मुवाफ़िक़ देता हूं; राजा इलाक़ह और रुपयेका मालिक रहेगा. अगर राजा या उसकी औलादमेंसे कोई लावारिस इन्तिक़ाल करेगा, तो इलाक़ह अलवरमें शामिल होजायेगा, और अगर राजा या कोई उसकी औलादमेंसे किसी गैरको, जो उनका सुल्बी (औरस) न हो, गोद रक्खेंगे, तो ऐसे गोद लिये हुएको

मामूली इलाक़ह और रुपया नहीं दिया जावेगा. जो इलाक़ह राजाको दिया जायेगा, वह अंग्रेज़ी इलाक़हके पास और मिला हुआ होगा, और अंग्रेज़ी सर्कारकी हिफ़ाज़तमें समझा जावेगा. भाईचारेका वर्ताव मेरे और राजा मज़्कूरके दर्मियान क़ाइम और जारी रहेगा, और अंग्रेज़ी सर्कार मेरी और राजाकी तरफ़से इस इक़ारनामहकी तामीलकी ज़ामिन रहेगी.

तारीख़ माघ सुदी ६ संवत् १८८२ मुताबिक़ १२ रजब सन् १२४१ हिज्री, और ता० २१ फ़ेब्रुअरी सन् १८२६ ई०

तर्जमह सहीह-

दस्तख़त-सी० टी० मेटकाफ़,

रेज़िडेएट.

मुहर.

गवर्नर जेनरल बहादुरने इसको कौन्सिलके इज्लासमें तस्दीक़ किया. ता० १२ एप्रिल सन् १८२६ ई०.

अह्दनामह नम्बर ८०.

अह्दनामह बाबत लेन देन मुज्रिमोंके ब्रिटिश गवर्मेण्ट और श्रीमान् सवाई शिवदानसिंह महाराव राजा अलवरके व उनके वारिसों और जानशीनोंके दर्मियान, एक तरफ़से कर्नेल विलिअम फ़ेडरिक ईडन एजेण्ट गवर्नर जेनरल राजपूतानहने उन कुल इख्तियारोंके मुवाफ़िक़, जो कि उनको हिज़ एक्सेलेन्सी दि राइट ऑनरेब्ल सर जॉन लेयर्ड मेअर लॉरेन्स, बेरोनेट, जी० सी० बी० और जी० सी० एस० आइ० वाइसरॉय और गवर्नर जेनरल हिन्दने दिये थे, और दूसरी तरफ़से लाला उमाप्रसादने उक्त महाराव राजा सवाई शिवदानसिंहके दिये हुए इख्तियारोंसे किया.

शर्त पहिली- कोई आदमी अंग्रेज़ी या दूसरे राज्यका बाशिन्दह अगर अंग्रेज़ी इलाक़हमें संगीन जुर्म करके अलवरकी राज्य सीमामें आश्रय लेना चाहे, तो अलवर की सर्कार उसको गिरिफ़्तार करेगी; और दस्तूरके मुवाफ़िक़ उसके मांगेजानेपर सर्कार अंग्रेज़ीको सुपुर्द करदेगी.

शर्त दूसरी- कोई आदमी अलवरके राज्यका बाशिन्दह वहांकी राज्य सीमामें कोई संगीन जुर्म करके अंग्रेज़ी राज्यमें जाकर आश्रय लेवे, तो सर्कार अंग्रेज़ी वह मुज्रिम गिरिफ़्तार करके अलवरके राज्यको क़ाइदहके मुवाफ़िक़ तलब होनेपर सुपुर्द करदेवेगी.

शर्त तीसरी- कोई आदमी, जो अलवरके राज्यकी रअय्यत न हो, और अलवरकी राज्य सीमामें कोई संगीन जुर्म करके फिर अंग्रेज़ी सीमामें आश्रय लेवे, तो सर्कार अंग्रेज़ी उसको गिरिफ्तार करेगी, और उसके मुक़द्दमहकी तह्क़ीक़ात सर्कार अंग्रेज़ी की बतलाई हुई अ़दालतमें कीजायेगी; अक्सर क़ाइदह यह है, कि ऐसे मुक़द्दमोंका फ़ैसलह उस पोलिटिकल अफ्सरके इज्लासमें होगा, कि जिसके तह्तमें वारिदात होनेके वक्पर अलवरकी पोलिटिकल निगरानी रहे.

शर्त चौथी- किसी हालतमें कोई सर्कार किसी आदमीको, जो संगीन मुज्रिम ठहरा हो, देदेनेके लिये पाबन्द नहीं है, जब तक कि दस्तूरके मुवाफ़िक़ खुद वह सर्कार या उसके हुक्मसे कोई अफ्सर उस आदमीको न मांगे, जिसके इलाक़हमें कि जुर्म हुआ हो; और जुर्मकी ऐसी गवाहीपर, जो कि उस इलाक़हके क़ानूनके मुवाफ़िक़ सहीह समझी जावे, जिसमें कि मुज्रिम उस वक्त हो, उसकी गिरिफ्तारी दुरुस्त ठहरेगी; और वह मुज्रिम क़रार दियाजायेगा, गोया कि जुर्म वहींपर हुआ है.

शर्त पांचवीं- नीचे लिखे हुए जुर्म संगीन जुर्म समझे जायेंगे:-

१- खून. २- खून करनेकी कोशिश. ३- वह्शियानह क़त्ल. ४- ठगी. ५- ज़हर देना. ६- ज़िना बिल्जब्र (ज़बर्दस्ती व्यभिचार). ७- ज़ियादह ज़ख़्मी करना. ८- लड़का बाला चुरालेना. ९- औरतोंका बेचना. १०- डकैती. ११- लूट. १२- सेंध (नक़्ब) लगाना. १३- चौपाया चुराना. १४- मकान जलादेना. १५- जालसाज़ी करना. १६- झूठा सिक्कह चलाना. १७- ख़यानते मुज्रिमानह. १८- माल अस्बाब चुरालेना. १९- ऊपर लिखे हुए जुर्मोंमें मदद देना, या वर्ग़लाना.

शर्त छठी- ऊपर लिखीहुई शर्तोंके मुताबिक़ मुज्रिमोंको गिरिफ्तार करने, रोक रखने, या सुपुर्द करनेमें, जो ख़र्च लगे, वह दर्ख़्वास्त करनेवाली सर्कारको देना पड़ेगा.

शर्त सातवीं- ऊपर लिखाहुआ अ़हदनामह उस वक्त तक बर्क़रार रहेगा, जब तक कि अ़हदनामह करनेवाली दोनों सर्कारोंमेंसे कोई एक दूसरेको उसके रद करनेकी इच्छाकी इत्तिला न दे.

शर्त आठवीं- इस अ़हदनामहकी शर्तोंका असर किसी दूसरे अ़हदनामहपर, जो दोनों सर्कारोंके बीच पहिलेसे है, कुछ न होगा, सिवाय ऐसे अ़हदनामहके, जो कि इस अ़हदनामहकी शर्तोंके बर्ख़िलाफ़ हो.

ता० १२ ऑक्टोबर सन् १८६७ ई० को मक़ाम माउंट आबूपर तै किया.

फ़ार्सीमें (दस्तख़त) - डब्ल्यू० एफ़्० ईडन,

(दस्तख़त) - उमाप्रसाद, एजेण्ट गवर्नर जेनरल.

वकील अलवरका. (दस्तख़त) - जॉन लॉरेन्स.

इस अ़ह्दनामहकी तस्दीक़ श्रीमान् वाइसरॉय और गवर्नर जेनरल हिन्दने मक़ाम शिमलेपर ता० २९ ऑक्टोबर सन् १८६७ ई० को की.

(दस्तख़त) - डब्ल्यू० म्यूर,

फ़ॉरेन सेक्रेटरी.

रियासत कोटाकी तारीख़.

जुग्राफ़ियह.

यह रियासत राजपूतानहके पूर्वी दक्षिणी हिस्से हाड़ौतीमें बूंदीकी शाख़ गिनी जाती है. इसका विस्तार उत्तर अक्षांश २४°- ३०′ और २५°- ५१′ और पूर्व देशान्तर ७५°- ४०′ से ७६°- ५९′ तक है. इसके पश्चिम व उत्तरमें चम्बल नदीके पश्चिमी किनारेपर बूंदी और उदयपुर, दक्षिणको मुकन्दरा नाम घाटेकी पहाड़ियां व झालावाड़, और पूर्वी हदपर इलाक़ह सेंधिया व छपरा इलाक़ह टौंक और झालावाड़ हैं; कुल रियासतकी लम्बाई दक्षिणसे उत्तरको क़रीब ९० मील और चौड़ाई पूर्वसे पश्चिमको अनुमान ८० मीलके है. रक़्बह ३७९७ मील मुरब्बा, और क़रीब ५१७२७५ कुल आबादीमेंसे ४७९६३४ हिन्दू, ३२८६६ मुसलमान, २५ ईसाई, और ४७५० जैनी हैं. ख़ालिसेकी आमदनी पच्चीस लाख रुपया सालानह मेंसे १८४७२० रुपया ख़िराज और २००००० रुपया कन्टिन्जेण्ट फ़ौजके लिये सर्कार अंग्रेज़ीको दिया जाता है.

मुल्कका सत्ह दक्षिणसे उत्तरकी तरफ़ ढालू है, और नदियां चम्बल, कालीसिन्ध, उजार और नेवज वग़ैरह बहती हैं; इनमें चम्बल और कालीसिन्ध बर्सातके दिनोंमें पायाब नहीं होतीं, और कहीं बारह महीनों इनमें नावें चला करती हैं. पहाड़ोंका एक सिलसिलह अग्निकोणसे वायव्य कोणकी तरफ़ चलागया है, यह पहाड़ कोटा व झालावाड़की सर्हद भी होगया है, और मालवा व हाड़ौतीकी हद भी इसी पहाड़से गिनी जाती है. इसीमें मुकन्दराका वह मश्हूर घाटा है, जिसको दक्षिणसे उत्तरका राजमार्ग कहना चाहिये. ज़मीन इस मुल्ककी उपजाऊ और आबाद होनेपर भी आबो हवा ख़राब है. गर्मीमें ज़ियादह तेज़ीके सबब और बर्सातमें कीचड़ (दलदल) की ख़राब हवासे बीमारी फैलजाती है. राजधानी कोटा चम्बल नदीके दाहिने किनारेपर एक शहर पनाहके अन्दर आबाद है; मुसाफ़िर लोग नदीकी तरफ़से किश्तियोंमें बैठकर जासक्ते हैं. शहरके पूर्व एक तालाब है, जिसके किनारेपर दरख़्तोंकी बहुतायतके सबब एक उम्दह और दिलचस्प मक़ाम नज़र आता है. चम्बल नदीके किनारेपर महारावके महल और एक बहुत बड़ा बुर्ज, जिसको छोटा क़िला कहना चाहिये, एक छोटी गढ़ीके अन्दर बहुत उम्दह बने हुए हैं. ज्यों ज्यों शहरकी आबादी बढ़ती गई, वैसे ही शहरपनाहकी दीवारोंसे जुदे जुदे अन्दरूनी हिस्से होगये हैं; शहरमें बहुतसे हिन्दुओंके मन्दिर हैं, और धनवान लोग भी ज़ियादह आबाद हैं.

कोटेकी निज़ामतें.

१- लाड पुस्या- कोटेसे आध कोस पूर्व दिशामें है. २- दीगोद- कोटेसे ८ कोस पूर्व दिशामें. ३- बड़ोद- कोटेसे १२ कोस पूर्व दिशामें. ४-बारां- कोटेसे २० कोस दक्षिण पूर्वमें. ५- किशन गंज- कोटेसे ३० कोस उत्तरमें. ६- मांगरोल- कोटेसे ३० कोस उत्तर पूर्वमें. ७- अट्यावा- कोटेसे २५ कोस पूर्वोत्तरमें. ८- अणता- कोटेसे १५ कोस उत्तरमें. ९- खानपुर- कोटेसे ३० कोस पूर्व दिशामें. १०- शेरगढ़- कोटेसे २५ कोस उत्तर दिशामें. ११- कनवास- कोटेसे २० कोस दक्षिण दिशामें. १२- घांटोली- कोटेसे १५ कोस दक्षिणमें. १३- नाहरगढ़- कोटेसे ३० कोस पूर्व दिशामें. १४- सांगोद- कोटेसे १७ कोस उत्तरमें. १५- कुंजेड़- कोटेसे २५ कोस पूर्वमें है.
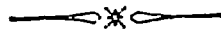
मश्हूर क़िले.

१- शेरगढ़- यह क़िला कोटेसे २५ कोस परवण नदीपर वाक़े है. २- गागरूण- कोटेसे २० कोस अग्नि कोणमें अउ, अमजार और कालीसिंध तीन नदियोंके बीचमें वाक़े है. ३- भमर गढ़- कोटेसे ३० कोस अग्नि कोणमें सीताबाड़ीसे १ कोसपर है. ४- नाहरगढ़- कोटेसे ३० कोस अग्नि कोणमें है. ऊपर लिखे क़िलुओंके सिवा कई छोटे क़िले नीचे लिखे हुए मक़ामातपर हैं:- अणता- अटरू- अट्यावा- मांगरोल- रांवठा- नानता- मुकन्दरा- घांटोली- मधुकरगढ़- बारां वग़ैरह.
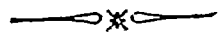
प्रख्यात और मज़्हबी जगह.

१- गेपरनाथ महादेव- कोटेसे ५ कोसपर है. २- गराड़ीनाथ महादेव- चम्बलके पश्चिम किनारेपर. ३- कर्णेश्वर महादेव- कोटेसे २ कोस पूर्व तरफ़ कंसवा गांवमें है. ४- कपिलधारा- नाहरगढ़के नज़्दीक. ५- अधरशिला- अमर निवासके नज़्दीक कोटेसे आध कोस. ६- कांकड़दाकी माता- कोटेसे पूर्व दिशामें है. ७- कर्णाका महादेव- कोटेसे २ कोस अग्निकोणमें. ८- महादेव चार चौमाका- चतुर्मुख, कोटेसे ८ कोस पूर्व दिशामें. ९- बालाजी रंगबाड़ी- कोटेसे २ कोस दक्षिणमें. १०- कृष्णाई माताजी- कोटेसे २० कोस पूर्व रामगढ़में. ११- मट्ठे साहिब- गागरूणमें. १२- गेपीरजी- गराड़ीके पास.

तारीख़.

प्राचीन कालमें यहां नागवंशी और मौर्यवंशी राजाओंका राज्य रहा था, जिनके दो पाषाण लेख हमको मिले हैं, और जिनकी नक़्लें शेष संग्रहमें दी गई हैं.

कोटाके राजा चहुवान ज़ातके हाड़ा गोत्रमें बूंदीकी शाख़ कहलाते हैं. उनके मूल पुरुष बूंदीके राव रत्नके छोटे बेटे माधवसिंह थे, जिनको विक्रमी १६८८ [हि० १०४१ = .ई० १६३१] में जुदी रियासत मिलनेका हाल 'बादशाह नामह' की पहिली जिल्दके ४०१ पृष्ठमें इस तरहपर लिखा है:-

"बालाघाट, मुल्क दक्षिणके लश्करकी अर्ज़ियोंसे बादशाही हुज़ूरमें मालूम हुआ, कि राव रत्न हाड़ाकी ज़िन्दगीके दिन पूरे हो गये, इस लिये क़द्रदान बादशाहने उसके पोते शत्रुशालको, जो उसका वलीअह्द था, तीन हज़ारी ज़ात और दो हज़ार सवारका मन्सब और रावका ख़िताब देकर बूंदी और खटकड़ और उस तरफ़के पर्गने, जहां राव रत्नका वतन था, उसकी जागीरमें .इनायत किये; और मिहर्बानीके साथ फ़र्मान भेजकर उसको बादशाही दर्गाहमें तलब फ़र्माया. राव रत्नके बेटे माधवसिंहको पांच सौ ज़ात और सवारकी तरक़ीसे ढाई हज़ारी ज़ात और डेढ़ हज़ार सवारका मन्सब देकर पर्गनह कोटा और फलायता उसकी जागीरमें मुक़र्रर किया."

बूंदीकी तवारीख़ वंशभास्कर और वंशप्रकाशमें इस रियासतके जुदा होनेका सबब और तरहसे लिखा है, और कोटावाले अपनी तवारीख़में जुदा ही ढंग ज़ाहिर करते हैं. उदयपुरमें प्रसिद्ध है, कि महाराणा जगत्सिंहकी सिफ़ारिशसे माधवसिंह को कोटा मिला. किसी तरहसे हो, परन्तु बढ़ावेसे ख़ाली नहीं हैं; इसलिये लाचार हमको फ़ार्सी तवारीख़ोंका आसरा लेना पड़ा. अल्बत्तह यह तवारीख़ें भी मुसल्मानोंकी बड़ाईके साथ लिखी गई हैं; परन्तु साल संवत्की दुरुस्ती और तारीख़के ढंगसे लिखेजानेके सबब मुवर्रिख़ लोग उन्हींपर सब्र करते हैं. 'मआसिरुलउमरा' में माधवसिंहका हाल इस तरहपर लिखा है:-

"माधवसिंह हाड़ा, राव रत्नका दूसरा बेटा है. शाहजहांके पहिले साल जुलूस हिजी १०३७ [वि० १६८४ = ई० १६२८] को उसका अगला मन्सब हज़ारी छ:सौ सवारका बहाल रहा. दूसरे साल ख़ानेजहां लोदीका पीछा करनेका हुक्म पाया. तीसरे साल जुलूसमें, जब बादशाह दक्षिणको गया था, और एक फ़ौज, जिसका सर्दार शायस्तहख़ां था, फिर सय्यद मुज़फ़्फ़रख़ां हुआ, और जो ख़ानेजहां लोदीके सज़ा देनेको तईनात हुई थी, उसमें यह राजा भी

उनके साथ मुक़र्रर हुआ था. उन दिनों ख़ानेजहांने दक्षिणसे निकलकर मालवेकी राह ली, सो यह ख़ूब तलाश करके उसतक जा पहुंचा. वह भी लाचार घोड़ेसे उतर पड़ा, और लड़ाई हुई. इसमें माधवसिंहने, जो सय्यद मुज़फ़्फ़रख़ांका हरावल था, ख़ानेजहांके बर्छा मारा, जिससे उसका काम तमाम हुआ. राजाको इस उम्दह चाकरीके एवज़में अस्ल व इज़ाफ़ह समेत दो हज़ारी हज़ार सवारका मन्सब और निशान मिला. इसी सालमें इनका बाप राव रत्न मरगया, तो बादशाहने इनको अगले मन्सबपर पांच सदी ज़ात पांच सौ सवारकी तरक़्क़ी दी; और परगनह कोटा व पलायथा जागीरमें बख़्शा."

"छठे साल जुलूस हिजी १०४२ [वि० १६८९ = ई० १६३३] में यह सुल्तान शुजाअ़के साथ दक्षिणको गया. जब महाबतख़ां दक्षिणका सूबहदार मरगया, तो यह ख़ानेदौरां सूबहदार बुर्हानपुरके साथ तईनात हुआ, और जब कि साहू भोंसलेने दौलताबादकी तरफ़ फ़साद उठाया, तो ख़ानेदौरां एक फ़ौजके साथ उसके तदारुकको रवानह हुआ. इनको बुर्हानपुर शहरकी हिफ़ाज़तके वास्ते छोड़गया."

"सातवें साल जुलूस हिजी १०४३ [वि० १६९० = ई० १६३४] में ख़ानेदौरांके साथ जुझारसिंह बुंदेलेकी सज़ादिहीपर मुक़र्रर हुआ; जब उसके मुल्कमें पहुंचे, उस दिन बहादुरख़ां रुहेलेका चचा नेकनाम लड़ाई करके बीचमें ज़ख़्मी पड़ा था; माधवसिंहने उसी जगहसे बाग उठाई, बहुतसे उन बाग़ियोंको जानसे मारा, और कितनोंको भगादिया. जब वे लोग अपने बालबच्चोंका जौहर करते थे, तब माधवसिंहने ख़ानेदौरांके बड़े बेटे सय्यद मुहम्मदके साथ उनपर दौड़ की, और बहुतसोंको मारडाला. जब माधवसिंह बादशाही हुज़ूरमें आया, तो अस्ल व इज़ाफ़ह समेत उसका मन्सब तीन हज़ारी एक हज़ार छः सौ सवार हुआ."

"नवें साल जुलूस हिजी १०४५ [वि० १६९२ = ई० १६३५] में जब बादशाह बुर्हानपुरमें आया, और साहू भोंसलेकी सज़ादिही, और आदिलख़ानियोंका मुल्क लेनेके वास्ते तीन फ़ौजें तीन सर्दारोंके साथ मुक़र्रर हुईं, तो माधवसिंह ख़ानेदौरां बहादुरके साथ तईनात हुआ."

"दसवें साल जुलूस हिजी १०४६ [वि० १६९३ = ई० १६३६] में बादशाहके हुज़ूरमें आया, तो अस्ल व इज़ाफ़ह मिलाकर तीन हज़ारी दो हज़ार सवारका मन्सब हुआ."

"ग्यारहवें साल जुलूस हिजी १०४७ [वि० १६९४ = ई० १६३७] में सुल्तान मुहम्मद शुजाअ़के साथ काबुलको गया."

"तेरहवें साल जुलूस हिजी १०४९ [वि० १६९६ = ई० १६३९] में सुल्तान मुरादबख़्शके साथ फिर काबुलको गया."

"चौदहवें साल जुलूस हिज्री १०५० [वि० १६९७ = ई० १६४०] में जब शाहज़ादह वापस लौटा, और यह दर्बारमें हाज़िर हुआ, इसको तीन हज़ारी ढाई हज़ार सवारका मन्सब मिला."

"सोलहवें साल जुलूस हिज्री १०५२ [वि० १६९९ = ई० १६४२] में ५०० सवारका इज़ाफ़ह पाया."

"अठारहवें साल जुलूस हिज्री १०५४ [वि० १७०१ = ई० १६४४] में जब अमीरुल उमरा सूबहदार काबुलको बदख़्शां लेनेका हुक्म हुआ था, तो यह उसकी मददको मुक़र्रर हुआ. पीछे सुल्तान मुरादबख़्शकी ख़िद्मतमें बल्ख़को गया; जब सुल्तान मुरादबख़्श बल्ख़को छोड़आया, और सुल्तान औरंगज़ेब उसकी जगह मुक़र्रर हुआ, तब इसने उम्दह ख़िद्मतें कीं; और कुछ मुद्दतके लिये बल्ख़के क़िलेकी हिफ़ाज़तपर मुक़र्रर रहा. जब बादशाहके हुक्मके मुताबिक़ शाहज़ादह औरंगज़ेब बल्ख़का मुल्क वहांके अगले मालिकको सौंपकर वहांसे लौटा, तो माधवसिंह काबुल पहुंचने बाद हुक्मके मुवाफ़िक़ शाहज़ादहसे रुख़्सत होकर इक्कीसवें साल जुलूस हिज्री १०५७ [वि० १७०४ = ई० १६४७] में बादशाहके हुज़ूरमें पहुंचा; और वहांसे रुख़्सत लेकर वतनको गया. उसने इसी सालमें इस दुन्यासे कूच किया."

कर्नेल टॉडने माधवसिंहका जन्म विक्रमी १६२१ [हि० ९७१ = ई० १५६४] में और मृत्यु विक्रमी १६८७ [हि० १०३९ = ई० १६३०] में लिखा है, लेकिन् यह नहीं होसक्ता, क्यौंकि विक्रमी १६८८ [हि० १०४० = ई० १६३१] में जब उनके बाप रत्नसिंहका इन्तिक़ाल हुआ, तब इनको कोटा और फलायता मिला; विक्रमी १७०४ [हि० १०५७ = ई० १६४७] में माधवसिंहका इन्तिक़ाल होना उसी ज़मानेकी किताब बादशाहनामहमें लिखा है; सिवा इसके अक्बरनामहमें अबुल्फ़ज़्ल लिखता है, कि जब रणथम्भोरका क़िला अक्बर बादशाहने फ़त्ह किया, तब विक्रमी १६२५ [हि० ९७५ = ई० १५६८] में बूंदीके राव सुर्जणके बेटे दूदा और भोज बादशाहकी ख़िद्मतमें हाज़िर होगये; उस वक्त उनकी उम्र शुरू जवानीपर थी. भोजका पोता माधवसिंह है, जिससे कर्नेल टॉडके लेखपर यक़ीन नहीं होसक्ता. माधवसिंहके पांच बेटे थे- १- मुकुन्दसिंह, २- मोहनसिंह, ३- कान्हसिंह, ४- जुझारसिंह, ५- किशोरसिंह. इनमेंसे बड़े मुकुन्दसिंह गादी बैठे, उनसे छोटे मोहनसिंहको फलायता, कान्हसिंहको कोयला, जुझारसिंहको कोटड़ा, और किशोरसिंहको सांगोद जागीरमें मिला. यह हाल कोटेकी तवारीख़से लिखागया है.

मुकुन्दसिंहका हाल मआसिरुल उमरामें इस तरहपर लिखा है:-

"मुकुन्दसिंह हाड़ा माधवसिंहका बेटा है, वह अपने बापके मरने बाद

इक्कीसवें जुलूस शाहजहानीमें हुज़ूरमें आया, दो हज़ारी और डेढ़ हज़ार सवारका मन्सब और वतन जागीरमें मिला. फिर पांच सौ सवारका इज़ाफ़ह हुआ. बाईसवें साल जुलूस हिजी १०५८ [वि॰ १७०५ = ई॰ १६४८] में सुल्तान औरंगज़ेबकी ख़िदमतमें कन्धारकी लड़ाईपर गया; जब वहांसे लौटा, तो २५ वें जुलूस हिजी १०६१ [वि॰ १७०८ = ई॰ १६५१] में पांच सौ ज़ातका इज़ाफ़ह और नक़ारह निशान मिला. इसी सालमें सुल्तान औरंगज़ेबके साथ दोबारह कन्धारको गया, और २६ साल जुलूस हिजी १०६२ [वि॰ १७०९ = ई॰ १६५२] में सुल्तान दाराशिकोहके साथ कन्धार गया. जब वहांसे लौटा, तो अस्ल व इज़ाफ़ह समेत तीन हज़ारी दो हज़ार सवारका मन्सब हुआ.

२८ साल जुलूस हिजी १०६४ [वि॰ १७११ = ई॰ १६५४] में सादुल्लाहख़ांके साथ क़िले चित्तौड़के बिगाड़नेको तईनात हुआ, और ३१ वें जुलूस हिजी १०६७ [वि॰ १७१४ = ई॰ १६५७] में महाराजा जसवन्तसिंहके साथ, जब वह सुल्तान औरंगज़ेबके रोकनेको मालवेपर तईनात हुआ था, मुक़र्रर हुआ. इसने अपने छोटे भाई मोहनसिंह सहित लड़ाईके दिन ऐसी जुरअत की, कि हरावल फ़ौजके मुक़ाबिल तोपख़ानहसे बढ़गया; और ऐसी कोशिश की, कि कारनामह रुस्तमका दिखा दिया. आख़िर इन दोनों भाइयोंने आबरूके साथ जानें बख़्शीं, याने हिजी १०६८ [वि॰ १७१५ = ई॰ १६५८] में मारेगये."

कोटेकी तवारीख़में इनका इतना हाल ज़ियादह लिखा है, कि मुकुन्दसिंहने अपने मुल्ककी दक्षिणी हद्के पहाड़ी घाटेमें क़िला और शहर आबाद करके उसका नाम मुकन्दरा रक्खा, और आख़िरी वक़ महाराजा जसवन्तसिंहके मददगारोंमें अपने चारों छोटे भाइयों समेत तईनात हुआ. फ़त्हाबादमें विक्रमी १७१५ ज्येष्ठ [हि॰ १०६८ रमज़ान = ई॰ १६५८ जून] में औरंगज़ेबसे मुक़ाबलह करके बड़ी बहादुरीके साथ मुकुन्दसिंह, मोहनसिंह, कान्हसिंह, जुझारसिंह चारों भाई मारेगये; और पांचवां किशोरसिंह ४२ ज़ख़्म खाकर ज़िन्दह बचा. किसी कविने मारवाड़ी भाषामें उस वक़ एक गीत कहा था, जो यहांपर दर्ज किया जाता है:-

गीत.

प्रथम मुकन मोहण अणी थणी जूझार पण, सही भड़ किसोर कान्ह साथै ॥
अथंग अवरंग अलंग ठेलड़ी आवतां, नवाण गावतां लीय माथै ॥ १ ॥
ऊंडै सेन सारसगड़ै उरड़ै, जागिया जड़ै थण सबड़ जाड़ा ॥
काळ कलापादिया दुलोसर दाकलै, हाकलै आणिया सीस हाड़ ॥ २ ॥

लगस फौजां गजां बलो बल लूंबियां, सांचरे हियां कहै भड़ां सांचां ॥
उरसरीगजां साही सरस ऊतरे, पाधरा ओढिया कमळ पांचां ॥ ३ ॥
किसवटै रणवटै थटै अवरंग कसै, अंवर सह धरहरै फरहरै आंच ॥
पांचनर नीमटै नाहिं सारी पृथी, पेट हेकण तणा नीमटै पांच ॥ ४ ॥
वेस चाढे जहर रमा आवध वगल, स्याम ध्रम पार पाड़े सऊजा ॥
सार अड़वड़ थकां उपाड़ै किसोवर, देवपुर च्यार गा रतन दूजा ॥ ५ ॥

मुकुन्दसिंहके सिर्फ़ एक बेटे जगत्सिंह थे, जो चौदह वर्षकी उम्रमें कोटाकी गादीपर बैठे. मआसिरुल उमरामें लिखा है, कि मुकुन्दसिंहका बेटा जगत्सिंह अह्द आलमगीरीमें दो हज़ारी मन्सब और वतनकी सर्दारी पाकर मुद्दत तक दक्षिणमें तईनात रहा.

जब जगत्सिंह विक्रमी १७४० [हि० १०९४ = ई० १६८३] में गुज़रे, और उनके कोई औलाद न रही, तब रियासती लोगोंने कोयलाके कान्हसिंह माधवसिंहोतके बेटे पेमसिंहको गादीपर बिठादिया; लेकिन् वह चाल चलन ख़राब होनेके सबब तेरह महीने बाद ख़ारिज कियागया, और माधवसिंहके पांचवें बेटे किशोरसिंहको गादी मिली. इनका हाल मआसिरुल उमरामें इस तरहपर दर्ज है:-

"जब मुकुन्दसिंह हाड़ेका बेटा जगत्सिंह २५ वें साल जुलूस आलमगीरी हिज्री १०९२ [वि० १७३८ = ई० १६८१] में मरगया, और उसके कोई बेटा नहीं रहा, तो बादशाहने कोटेकी हुकूमत मुकुन्दसिंहके भाई किशोरसिंहको, जो जगत्सिंका चचा था, अता फ़र्माई; और किशोरसिंह, मुहम्मद आज़मके साथ बीजापुरकी लड़ाईपर तईनात हुआ. जिस दिन कि अल्लाहवर्दीख़ांका बेटा अमानुल्लाह काम आया, इसने भी ज़ख़्म उठाया. ३० वें साल जुलूस हिज्री १०९७ [वि० १७४३ = ई० १६८६] में सुल्तान मुअज़्ज़मके साथ हैदराबादकी तरफ़ गया. ३६ वें साल जुलूस हिज्री ११०४ [वि० १७४९ = ई० १६९३] में इसको नक़ारह इनायत हुआ. इसके बाद किशोरसिंह गुज़रगया. ज़ुल्फ़िक़ारख़ां बहादुरकी अर्ज़के मुवाफ़िक़ कोटेकी हुकूमत उसके बेटे रामसिंहको, जो वतनमें था, मिली."

कोटेकी तवारीख़में यह हाल ज़ियादह लिखा है, कि सिन्सिनीके जाटोंकी बग़ावत मिटानेके लिये आलमगीरने अपने पोते शाहज़ादह बेदारबख़्तके साथ राव किशोरसिंहको भेजा, यह वहां बड़ी बहादुरीके साथ लड़कर ज़ख़्मी हुए. इनके साथ वालोंमेंसे घाटीका रावत् तेजसिंह, राजगढ़का आपजी गोवर्धनसिंह, पानाहेड़ाका ठाकुर सुजानसिंह सोलंखी, तारजका ठाकुर राजसिंह वग़ैरह मारेगये. यह ज़ख़्मी

हालतमें अपनी राजधानी कोटेको आये, और कुछ अर्सह बाद आलमगीरने इनको दक्षिण में बुलाया. ये बीमारीसे लाचार थे, इस सबबसे इन्होंने अपने बड़े बेटे विष्णुसिंह को जानेके लिये कहा, लेकिन् वह टालगया; और इसी तरह दूसरे बेटे हरनाथसिंहने भी बहाना ढूंढा; तब तीसरे बेटे रामसिंहको कहा, जो पिताके हुक्मके मुवाफ़िक़ खुशीसे रवानह होकर बादशाहके पास पहुंचा. कुछ दिनों बाद किशोरसिंह भी बीमारीसे फ़ुर्सत पाकर बादशाही ख़िद्मतमें जा हाज़िर हुए; और विक्रमी १७५२ [हि० ११०६ = ई० १६९५] में अर्काटके हमलेमें बड़ी बहादुरीके साथ मारेगये. इनके बेटे रामसिंह, जो ज़ख़्मी होकर ज़िन्दह बचे, वह गद्दीपर बैठे.

५- राव रामसिंह.

रामसिंह ज़ख़्मोंसे तन्दुरुस्त होकर आलमगीरके पास दर्बारमें गये, तब बादशाहने इनसे दर्याफ़्त किया, कि किशोरसिंहका हक़्दार कौन है ? रामसिंहने जवाब दिया, कि बड़े विष्णुसिंह, दूसरे हरनाथसिंह हैं, और तीसरे नम्बरपर मैं हूं. बादशाहने कहा, कि जिसने अपने बापके साथ सर्कारी ख़िद्मतमें ज़ख़्म उठाये, वही उसका हक़्दार है. रामसिंहने सलाम किया, और बादशाहने उसको किशोरसिंहका वारिस बनाया.

कोटेमें विष्णुसिंहने गद्दीपर बैठकर सुना, कि रामसिंह बादशाही मदद लेकर आता है, तो वह भी अपनी जमइयतसे मुक़ाबलेको चले; गांव आंवाके पास लड़ाई हुई, जिसमें विष्णुसिंह ज़ख़्मी हुआ, और हरनाथसिंह मारागया; रामसिंहने फ़त्हयाबीके साथ कोटेपर क़ब्ज़ह करलिया. विष्णुसिंह अपनी ससुराल मेवाड़के इलाक़े पंडेरमें पहुंचा; वहांके राणावतोंने उसकी अच्छी ख़ातिर की, और तीन वर्ष बाद वह उसी जगह मरगया. विष्णुसिंहके एक बेटा पृथ्वीसिंह था, जिसको रामसिंहने बुलवाकर अणता जागीरमें दिया, और इसी तरह हरनाथसिंहके बेटे कुशलसिंहको सांगोद इनायत किया.

मआसिरुल उमरामें राव रामसिंहका हाल इस तरहपर लिखा है:-

" रामसिंह हाड़ा, माधवसिंह हाड़ेका पोता है. जब जगत्सिंह, मुकुन्दसिंह हाड़ेका बेटा २५ वें साल जुलूस आलमगीरी हिज्री १०९३ [वि० १७३९ = ई० १६८२] में गुज़रगया, और उसके कोई बेटा न रहा, तो बादशाहने कोटेकी हुकूमत मुकुन्दसिंहके भाई किशोरसिंहको, जो जगत्सिंहका चचा था, इनायत फ़र्माई. किशोरसिंह शाहज़ादह मुहम्मद आज़मके हम्राह बीजापुरकी लड़ाईपर

तईनात हुआ. जिस दिन, कि अल्लाहवर्दीखांका बेटा अमानुल्लाहखां काम आया, इसने भी ज़ख़्म उठाया."

"३० वें साल जुलूस हिज्री १०९८ [वि० १७४४ = ई० १६८७] में वह सुल्तान मुअ़ज़्ज़मके साथ हैदराबादकी तरफ़ गया; ३६ वें साल जुलूस हिज्री ११०४ [वि० १७४९ = ई० १६९२] में नक़ारह इनायत हुआ. फिर किशोरसिंह गुज़र गया, जुल्फ़िक़ारखां बहादुरकी अ़र्ज़के मुवाफ़िक़ कोटेकी हुकूमत उसके बेटे रामसिंहको, जो वतनमें था, मिली. रामसिंहने अव्वल ढाई सदी, दोबारह छः सदी और पीछे हज़ारीका मन्सब पाया. वह हमेशह जुल्फ़िक़ारखांके साथ तईनात रहा, और संताके बेटे राणू वग़ैरह मरहटोंकी सज़ादिहीमें मश्ग़ूल था. ४४ वें साल जुलूस हिज्री १११२ [वि० १७५७ = ई० १७००] में नक़ारह मिला; ४८ वें साल जुलूस हिज्री १११६ [वि० १७६१ = ई० १७०४] में ढाई हज़ारी मन्सब पाया, और मऊ मैदानाकी ज़मींदारी राव बुद्धसिंहसे उतारकर उसको दीगई, जिसकी यह बड़ी आर्ज़ूमें था. उसको एक हज़ार सवार रखनेका हुक्म हुआ, और उसने आलमगीरके इन्तिक़ालपर आज़मशाहकी हमराही इख़्तियार की; वह चार हज़ारी मन्सब पाकर लड़ाईके दिन सुल्तान अ़ज़ीमुश्शानके मुक़ाबलेमें बड़ी मर्दानगीसे मारा गया. उसके पीछे उसके बेटे भीमसिंहने वतनकी सर्दारी पाई."

"हिज्री ११३१ [वि० १७७६ = ई० १७१९] में, जब सय्यद दिलावर-अ़लीखांकी निज़ामुलमुल्क आसिफ़जाहसे लड़ाई हुई, और उसमें सय्यद दिलावर-अ़लीखां मारा गया, तब यह (भीमसिंह) जान बचाकर न भागा; और इसने बड़ी मर्दानगीसे लड़कर जान देदी. पीछे इसका पोता गुमानसिंह, शत्रुसाल व दुर्जनशाल कोटेके मालिक हुए."

रामसिंहका ज़िक्र कोटाकी तवारीख़में भी बहुत है, पर उसका खुलासह मआसिरुल उमराके लेखमें आचुका है, और राव रामसिंहके मारेजानेका हाल महाराणा दूसरे अमरसिंहके बयान व बहादुरशाहके ज़िक्रमें तफ़्सीलवार लिखागया है- (देखो एष्ठ ९२५). इनके एक बेटे भीमसिंह थे.

६- महाराव भीमसिंह.

जब राव रामसिंह सुल्तान आज़मके साथ बहादुरशाहके मुक़ाबलहपर मारेगये तब बूंदीके राव बुद्धसिंह बहादुरशाहकी तरफ़ थे; उन्होंने कोटेको अपनी रियासत

मिलालेना सोचकर बहादुरशाहसे उस जागीरका फ़र्मान अपने नाम लिखा लिया, और अपने मुलाज़िमोंको लिख दिया, कि फ़ौज लेजाकर कोटा ख़ाली करालो. हाड़ा जोगीराम वग़ैरह बूंदीसे फ़ौज लेकर चढ़े, पच्चीस वर्षकी उम्रका राव भीमसिंह भी अपनी जमइयतके साथ कोटासे चला. पांच कोसपर पाटणके पास मुक़ाबलह हुआ, बूंदीकी फ़ौज शिकस्त खाकर भाग गई. बहादुरशाहको राजपूतानहका फ़साद बढ़ाना मन्ज़ूर नहीं था, क्योंकि उसको दक्षिणकी तरफ़ शाहज़ादह काम्बख़्शका मुक़ाबलह दर्पेश था.

कोटा और बूंदीके विरोधका सविस्तर हाल बूंदीके मिश्रण सूर्यमल्लने अपनी किताब वंशभास्करमें लिखा है, और विरोध शुरू करनेका कारण बुद्धसिंहको ठहराकर उनकी शिकायत की है; लेकिन् हम इन दोनों रियासतोंकी नाइत्तिफ़ाक़ीका बानी (जड़) राव बुद्धसिंहको नहीं कहसक्ते, क्योंकि अव्वल माधवसिंहने कोटा व फलायता वग़ैरह पर्गने बूंदीसे जुदा करालिये, दूसरे राव रामसिंहने मऊ मैदानाके पर्गने बूंदीसे छीनकर आलमगीरके हुक्मसे अपनी रियासतमें शामिल करलिये, तब राव बुद्धसिंहने भी इस वक्त कोटा छीन लेनेकी कोशिश की; लेकिन् हम यह इल्ज़ाम बुद्धसिंहकी निस्बत लगा सक्ते हैं, कि इस समय वह कोटापर इह्सान दिखलाकर भीमसिंहको अपना दोस्त बनासक्ता था; इस मिलापसे दोनों रियासतें आनेवाली आफ़तोंसे बची रहतीं.

राव भीमसिंहको भी यह फ़िक्र हुई, कि दक्षिणसे आनेपर बहादुरशाह ज़रूर फ़ौज भेजेंगे, लेकिन् ईश्वरकी कुद्रतसे बादशाहको सीधा दक्षिणसे पंजाबको जाना पड़ा, जहां सिक्खोंने बड़ी भारी बग़ावत कर रक्खी थी. बहादुरशाह तो उसी तरफ़ बीमारीसे मरगये, और थोड़े दिनोंतक जहांदारशाहकी बादशाहत रही. फिर भीमसिंहने फ़र्रुख़सियरके अह्दमें हुसैनअलीख़ां अमीरुलउमराको अपना मददगार बनाया, यहांतक, कि फ़र्रुख़सियरको तख़्तसे उतारनेमें यह भी सय्यदोंके शरीक थे. आख़िरकार मुहम्मदशाहके शुरू अह्दमें सय्यदों और तूरानियोंमें नाइत्तिफ़ाक़ी बढ़ी, उसका हाल मुहम्मदशाहके ज़िक्रमें लिखा गया है- (देखो पृष्ठ ११४३- ४४).

बूंदीसे बदला लेनेके बहानेसे सय्यदोंने राव भीमसिंहको बहुत बड़ा मन्सब और फ़ौज देकर भेजा; और इशारह यह था, कि निज़ामुल्मुल्क फ़त्हजंगपर चढ़ाई करनेको तय्यार रहें. महाराव भीमसिंहने हाड़ौती पहुंचकर बूंदीपर क़ब्ज़ह करलिया, और बहुतसे ज़िले मालवा व गिर्दनवाहके अपनी रियासतमें मिला लिये. फिर महाराव वग़ैरह निज़ामुलमुल्क फ़त्हजंगसे मुक़ाबलह करनेको चले. इसका हाल मुन्तख़बुल्लुबाबमें ख़फ़ीख़ांने इस तरहपर लिखा है :-

" हिज्री ११३२ [वि० १७७७ = ई० १७२०] में कोटेके महाराव

भीमसिंह हाड़ा और नर्वरके राजा गजसिंह कछवाहेकी तबाहीका बड़ा मुआमलह पेश आया, जो सय्यद दिलावरअलीख़ां और आलमअलीख़ांके हम्राह फ़ौज और सामानकी ज़ियादतीके सबब अमीरुलउमरा हुसैनअलीख़ांकी मददगारीका बड़ा दम भरते थे. हुसैनअलीख़ां बादशाही बख़्शीने महाराव भीमसिंहसे इक़ार किया, कि बूंदीके ज़मींदार सालिमसिंहकी सज़ादिही और निज़ामुलमुल्क फ़त्हजंगका मुआमलह तै होने बाद उसको 'महाराजा' का ख़िताब और जोधपुरके अजीतसिंहके बाद दूसरे राजाओंसे ज़ियादह इज़्ज़त दीजावेगी. उसको सात हज़ारी मन्सब और माही मरातिब देकर राजा गजसिंह नर्वरी और दिलावरअलीख़ां वग़ैरहके साथ १५००० पन्द्रह हज़ार जर्रार सवारों समेत मुक़र्रर किया, कि सालिमसिंहके ख़ारिज करनेको बहाना बनाकर मालवेकी तरफ़ निज़ामुलमुल्कके हालसे ख़बरदार रहें; और जल्द इशारह होनेपर उसका काम तमाम करें. इन लोगोंने बूंदी क़ब्ज़ेमें लाकर हुसैनअलीख़ांको कार्रवाईसे ख़बर दी; उसने ताकीद की, कि जिस वक़्त मौक़ा पावें, आलमअलीख़ांसे मिलकर निज़ामका मुआमलह तै करें. दिलावर अलीख़ां बूंदी लेने बाद राजा भीमसिंह व गजसिंह समेत मालवेमें पहुंच गया. निज़ाम पहिले ही दक्षिणमें जमाव करनेके लिये चलदिया था. दिलावरअलीख़ां वग़ैरहने निज़ामके आदमियोंको मालवेमें क़ैद और क़त्ल करना शुरू किया, और बुर्हानपुरकी तरफ़ रुजू हुए. निज़ामने यह हाल सुनकर बहुत जल्द बुर्हानपुरके शहर व आसीरगढ़को अपने क़ब्ज़ेमें लिया. इसपर हुसैनअलीख़ांने दिलावरअलीख़ां और महाराव भीमसिंहको निज़ामके मुक़ाबलहकी सख़्त ताकीद लिखी."

"बुर्हानपुरसे सत्तरह अठारह कोसके फ़ासिलेपर निज़ाम अपना तोपख़ानह और फ़ौज लेकर दिलावरअलीख़ां और महाराव भीमसिंहके मुक़ाबलेपर आपहुंचा. हिज्री ११३२ ता० १३ शअ्बान [वि० १७७७ ज्येष्ठ शुक्ल १५ = ई० १७२० ता० २० जून] को दोनों तरफ़से मुक़ाबलेकी तय्यारी होगई. शुरूमें निज़ामकी फ़ौज हटनेको थी, लेकिन् एवज़ख़ां हरावलकी दिलेरीसे जमगई; कई बार दोनों तरफ़से हार जीतकी सूरत पेश आती रही; आख़िरमें दिलावरअलीख़ांकी हरावल फ़ौजमेंसे शेरख़ां और बाबरख़ां कारगुज़ार मारे गये, और दिलावरअलीख़ां भी, जो हाथीपर आगे बढ़गया था, गोला लगनेसे मारा गया. इनकी फ़ौजके कुछ पठान वग़ैरह भाग निकले, लेकिन् राजा भीमसिंह व गजसिंहने यह शर्म पसन्द न की, अपने राजपूतों समेत हाथी घोड़ोंसे उतर कर ख़ास निज़ामकी फ़ौजपर हमलह करने लगे. मरहमतख़ां, निज़ामकी बाईं फ़ौजका अफ़्सर दोनों राजपूतोंपर एकदम टूट पड़ा, और उसने एक धावेमें चार सौ

राजपूतोंको वेजान किया. निज़ामके मुक़ाबलहपर कुल चार पांच हज़ार हिन्दू मुसल्मान सवार क़त्ल हुए, भागनेको बहुत कम बचे. निज़ामुल्मुल्क फ़त्हजंगकी फ़ौजने फ़त्हका नक़ारह बजाया. निज़ामकी तरफ़से बदख़्शीख़ां और दिलेरख़ांके सिवा, जो अपने साथियों समेत काम आये, कोई नामी सर्दार नहीं मारागया. निज़ामके हाथ बहुतसा तोपख़ानह और सामान आया. इसके बाद अब्दुल्लाहख़ां वज़ीर व हुसैनअलीख़ां बख़्शीने बादशाहको साथ लेकर निज़ामपर चढ़ाईका इरादह किया."

जब महाराव भीमसिंह विक्रमी १७७७ ज्येष्ठ शुक्ल १५ [हि॰ ११३२ ता॰ १३ शश्र्वान = ई॰ १७२० ता॰ २० जून] को मारे गये, उस वक़ उनके तीन बेटे, अर्जुनसिंह, श्यामसिंह, और दुर्जनशाल थे, जिननेंसे बड़े अर्जुनसिंह कोटेकी गद्दीपर बैठे. भीमसिंहके पीछे कोटेमें दो राणियां और पांच ख़वासें, कुल सात औरतें सती हुई.
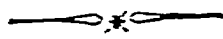
७- महाराव अर्जुनसिंह.

इन्होंने माधवसिंह झालाकी बहिनके साथ शादी की थी. यह थोड़े ही दिनों ज़िन्दह रहकर विक्रमी १७८० [हि॰ ११३५ = ई॰ १७२३] में इस दुन्या को छोड़गये. इनके कोई औलाद न होनेके कारण उनकी मर्ज़ीके मुवाफ़िक़ उनके तीसरे भाई दुर्जनशालको गद्दी मिली.
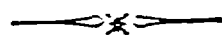
८- महाराव दुर्जनशाल.

इनका राज्याभिषेक विक्रमी १७८० मार्गशीर्ष कृष्ण ५ [हि॰ ११३६ ता॰ १९ सफ़र = ई॰ १७२३ ता॰ १८ नोवेम्बर] को हुआ. इस वक़ श्यामसिंह नाराज़ होकर महाराजा जयसिंहके पास जयपुर चलेगये. महाराजा जयपुर पहिलेसे कोटाके बर्ख़िलाफ़ थे, क्योंकि महाराव भीमसिंह हुसैनअलीख़ांकी हिमायतसे जयपुरकी बर्बादीको तय्यार हुए थे; इस समय जयसिंहने श्यामसिंहको अपनी पनाहमें रखलिया.

विक्रमी १७८५ [हि॰ ११४० = ई॰ १७२८] में जयपुर वालोंने श्यामसिंहको फ़ौजकी मदद देकर कोटा लेनेके लिये भेजा. अन्त्रालिया गांवके पास महाराव दुर्जनशालसे मुक़ाबलह हुआ, श्यामसिंह लड़कर मारागया, जिसकी छत्री अन्त्रालिया गांवमें मौजूद है.

विक्रमी १७९१ [हि॰ ११४७ = ई॰ १७३४] में उदयपुरके महाराणा जगत्सिंहकी कन्या रत्नकुंवरका विवाह महाराव दुर्जनशालके साथ हुआ.
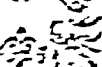
विक्रमी १८०० [हि० ११५६ =.ई० १७४३] में जयपुरके महाराजा सवाई जयसिंहका इन्तिकाल हुआ, तो बूंदीके रावराजा उम्मेदसिंह, जो अपनी ननिहाल बेगूंमें रहते थे, महारावके पास आए; क्योंकि महाराजा जयसिंहने रावराजा बुद्धसिंहसे बूंदी छीनकर वहांकी गद्दीपर दलेलसिंहको बिठादिया था. भीमसिंहने विक्रमी १८०१ आषाढ़ शुक्ल १२ [हि० ११५७ ता० १० जमादियुस्सानी =.ई० १७४४ ता० २२ जुलाई] को राजा उम्मेदसिंह शाहपुरावालेके साथ बूंदीको जा घेरा, और दलेलसिंहको निकालने बाद राव राजा उम्मेदसिंहको कुछ पर्गनह निकालकर बूंदीपर अपना क़ब्ज़ह करलिया. यह हाल मुफ़स्सल तौरपर बूंदीकी तवारीख़ वंशभास्करमें मिश्रण सूर्यमल्लने लिखा है. फिर जयपुरके महाराजा ईश्वरीसिंहने जयआपा सेंधियाकी मददसे बूंदी छीनकर दलेलसिंह को दिला दी, और मरहटी फ़ौजने मए जयपुरकी मददके कोटेको आ घेरा.

विक्रमी १८०२ वैशाख शुक्ल पक्ष [हि० ११५८ रबीउस्सानी = .ई० १७४५ मई] में जियाजी सेंधियाके गोली लगने बाद कोटेकी तवारीख़में सुलह होना लिखा है, और इस बातका ज़िक्र सलूंबरके रावत् कुबेरसिंहने अपने काग़ज़में किया है, जो विक्रमी १८०१ माघ कृष्ण १२ [हि० ११५७ ता० २६ ज़िल्हिज =.ई० १७४५ ता० ३० जैन्युअरी] को उदयपुर महाराजा बख़्तसिंहके नाम लिखा था; उसमें उक्त मितीको सुलह होना पायाजाता है. उस काग़ज़की नक़ल हम महाराणा जगत्सिंह दूसरेके हालमें लिखआये हैं- (देखो पृष्ठ १२३२).

शायद इस काग़ज़के लिखने बाद फिर लड़ाई शुरू होगई हो, तो कोटेकी तवारीख़का लिखना ठीक होसक्ता है. आख़िरकार मरहटोंको पाटण व कापरणका पर्गनह और ४००००० चार लाख रुपया देकर महारावने पीछा छुड़ाया. इनका बाक़ी हाल उदयपुर और जयपुरके ज़िक्रमें आचुका है. यह बड़े दिलेर और मुल्की मुआमलातमें होश्यार थे. विक्रमी १८१३ श्रावण शुक्ल ५ [हि० ११६९ ता० ४ ज़िल्क़ाद = .ई० १७५६ ता० १ ऑगस्ट] को इनका देहान्त होगया.
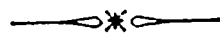
९- महाराव अजीतसिंह.

दुर्जनशालके कोई औलाद न होनेके सबब माधवसिंहके पोते और महाराव किशोरसिंहके बड़े पुत्र विष्णुसिंह (जो अपने भाई रामसिंहसे आंवा गांवमें मुक़ाबलह करके ज़ख़्मी हुए थे, और तीन साल बाद पंडेर गांवमें मरगये) के बेटे पृथ्वीसिंहके पांच कुंवरोंमेंसे दूसरे अजीतसिंह, जो अपने वालिदका देहान्त होनेपर अणतामें गद्दीनशीन होचुके थे, कोटाके महाराव मुक़र्रर हुए. इनके पिता

पृथ्वीसिंहको महाराव रामसिंहने अणता जागीरमें दिया था; पृथ्वीसिंहके पांच बेटे हुए थे- बड़ा भोपसिंह, जिसका इन्तिक़ाल पिताकी मौजूदगीमें ही होचुका था; दूसरा अजीतसिंह; तीसरा सूरजमल्ल, जिसने बंबूलिया जागीरमें पाया, और जिसकी औलाद इस वक्त तक उक्त गांवमें जागीरदार है; चौथे बख़्तसिंहको खेड़ली व इटावा जागीरमें मिला, इनकी औलाद खेड़लीमें मौजूद है; और पांचवें चैनसिंहको सोरखंड और मूंडली जागीरमें मिला, उनके वंशवाले मूंडली, आमली और कोटड़ेके जागीरदार हैं.

महाराव अजीतसिंह कोटेमें गद्दीनशीन होने बाद थोड़े ही दिन राज्य करके विक्रमी १८१५ भाद्रपद कृष्ण ऽऽ [हि० ११७१ ता० २८ ज़िल्हिज = ई० १७५८ ता० २ सेप्टेम्बर] को इस दुन्यासे कूच करगये, और अपने पीछे दो पुत्र, एक शत्रुशाल और दूसरा गुमानसिंह छोड़े, जिनमेंसे बड़े राज्यके मालिक बने.

१०- महाराव शत्रुशाल, अव्वल.

अजीतसिंहका देहान्त होने बाद शत्रुशाल गद्दीपर बैठे, और पट्टाभिषेक विक्रमी १८१५ भाद्रपद शुक्ल १३ [हि० ११७२ ता० ११ मुहर्रम = ई० १७५८ ता० १५ सेप्टेम्बर] को हुआ. उसके बाद जयपुरके महाराजा माधवसिंहसे एक बड़ी भारी लड़ाई हुई, जिसका हाल कोटेकी तवारीख़में इस तरहपर लिखा है, कि क़िला रणथम्भोर जब बादशाही मुलाज़िमोंने जयपुरके महाराजा माधवसिंहको सौंप दिया, (जिसका हाल जयपुरकी तवारीख़में लिखागया है) तो बादशाही ख़ालिसहके समय इन्द्रगढ़, खातोली, गेंता, बलवन, करवाड़, पीपलदा, आंतरौदा, निमोला वग़ैरहके जागीरदार हाड़ा राजपूत क़िले रणथम्भोरके फ़ौज्दार को पेशकशी और नौकरी देते थे; जयपुरवालोंने भी उसी तरह लेना चाहा, तो इन जागीरदारोंने कोटेकी पनाह ली. महाराव शत्रुशालने इन जागीरदारोंसे कोटेकी मातह्तीका इक़्रार लिखवा लिया. यह सुनकर महाराजा माधवसिंहने एक बड़ी भारी फ़ौज कोटेको बर्बाद करनेके लिये भेजदी, और मलहार राव हुल्करको मददके लिये बुलाया; लेकिन् कोटावालोंने हुल्करको चार लाख रुपया देकर अलहदह कर-दिया, और एक फ़ौज जयपुरके मुक़ाबलेको भेजी; कोटेसे अठारह कोसपर भटवाड़ा गांवके पास मुक़ाबलह हुआ; तरफ़ैनके सैकड़ों आदमी मारेगये; आख़िरकार जयपुरकी फ़ौज भाग निकली, और फ़त्ह कोटावालोंको मिली. मलहारराव हुल्करने पहिले इक़्रार करलिया था, कि हम किसीकी तरफ़दारी नहीं करेंगे, लेकिन् भागनेवालोंका सामान लूटेंगे; इसलिये जयपुरवालोंका कुछ सामान हुल्करने लूटा, और बाक़ी इस क़द्र कोटाके हाथ आयाः- हाथी १७, घोड़े १८००, तोपें ७३, और हाथीका पचरंग

निशान वगैरह, जिनमेंसे तोपें और हाथीका निशान अबतक कोटेमें मौजूद बतलाते हैं.

विक्रमी १८२१ पौष कृष्ण ९ [हि० ११७८ ता० २३ जमादियुस्सानी = ई० १७६४ ता० १७ डिसेम्बर] को महाराव शत्रुशालका देहान्त होगया.

११– महाराव गुमानसिंह.

महाराव गुमानसिंहके गादीनशीनीका उत्सव विक्रमी १८२१ पौष शुक्ल ६ [हि० ११७८ ता० ४ रजब =.ई० १७६४ ता० २८ डिसेम्बर] को हुआ. इनके समयमें झाला ज़ालिमसिंहको मुसाहिबी मिली, क्योंकि जयपुरकी लड़ाईके समय मलहार राव हुल्करको, जो जयपुरका मददगार होकर आया था, जुदा करना ज़ालिमसिंहकी कारगुज़ारीसे समझा गया था. अलावह इसके ज़ालिमसिंहकी बहिनके साथ महाराव गुमानसिंहकी शादी हुई थी. ज़ालिमसिंह इस समय महारावका बड़ा मुसाहिब बनगया, लेकिन् कुछ अर्सह बाद महाराव और ज़ालिमसिंहमें नाइत्तिफ़ाक़ी होगई, जिससे वह झाला सर्दार उदयपुरमें महाराणा अरिसिंहके पास चलागया, और महाराणाकी नौकरीमें रहकर कारगुज़ारियां दिखलाईं. यह हाल उक्त महाराणाके ज़िक्रमें लिखा जायेगा; लेकिन् इस मुसाहिबके निकलजानेसे कोटाके कारोबारमें ख़लल आने लगा. पहिले महाराव दुर्जनशालके ज़मानेसे दधिवाड़िया चारण भोपतरामने रियासतका इन्तिज़ाम बहुत ही अच्छा किया था, और जयपुरकी लड़ाईके बाद ज़ालिमसिंहने भी भोपतरामके क़दम बक़दम काम किया. फिर जिन लोगोंने काम किया, उन्होंने अगले कारगुज़ारोंकी ख़िद्मतको रद्द करनेके मत्लबसे नया ढंग जमाया, जिससे बिल्कुल अब्तरी फैलने लगी. आक़िल आदमीको चाहिये, कि अपने दुश्मनकी भी नेक पॉलिसी (दस्तूर हुकूमत) को नहीं छोड़े. आख़िरकार महाराव गुमानसिंहने ज़ालिमसिंहको अपने अख़ीर वक़्से कुछ पहिले कोटेमें बुला लिया (१), जो सेंधियाकी क़ैदमें था; और महारावने कुल कारोबार व अपना छोटी उम्रका लड़का उम्मेदसिंह उसके सुपुर्द करके विक्रमी १८२७ माघ शुक्ल १ [हि० ११८४ ता० २९ रमज़ान = .ई० १७७१ ता० १७ जैन्युअरी] को इस दुन्यासे कूच किया.

(१) सर जॉन माल्कमने अपनी किताबमें ज़ालिमसिंहका कोटेमें आना महाराव उम्मेदसिंहके वक़में लिखा है, लेकिन् हमने ऊपरका बयान कोटेकी तवारीख़से लिया है, जो वहांके प्रसिद्ध मुसाहिब चारण महियारिया लक्ष्मणदानने हमारे पास भेजी.

१२- महाराव उम्मेदसिंह- १.

इनका पट्टाभिषेक विक्रमी १८२७ माघ शुक्ल १३ [हि० ११८४ ता० ११ शव्वाल = ई० १७७१ ता० २८ जैन्युअरी] को हुआ, और यह अपने बापकी जगह गद्दीपर बैठे, लेकिन् कुल कारोबारका मुस्तार ज़ालिमसिंह था. महारावके नज्दीकी रिश्तहदारोंमें स्वरूपसिंह एक ज़बर्दस्त आदमी था, जिससे ज़ालिमसिंहकी मुस्तारीमें ख़लल आने लगा, तब उसने एक धायभाईको बहकाकर विक्रमी १८२९ फाल्गुन शुक्ल ३ [हि० ११८६ ता० २ ज़िल्हिज = ई० १७७३ ता० २४ फ़ेब्रुअरी] को स्वरूपसिंहको मरवाडाला. उसके भाई बन्धु इस बातसे नाराज़ होनेके सबब शहर छोड़कर चलेगये. ज़ालिमसिंहने उनकी जागीरें ज़ब्त करके मुल्कसे निकाल दिया. उनकी औलाद वाले कुछ अर्सेबाद मरहटोंकी सुफ़ारिशसे कोटेमें आये, जिनको गुज़ारेके लिये बंबूलिया, खेड़ली वग़ैरह जागीरें निकाल दीगई.

विक्रमी १८४७ [हि० १२०४ = ई० १७९०] में कैलवाड़ा और शाहाबादका क़िला महाराव उम्मेदसिंह और ज़ालिमसिंहने फ़त्ह करके अपनी रियासतमें मिला लिया. इसी तरह गंगराड़ वग़ैरह कई पर्गने लेकर ज़ालिमसिंहने रियासतको ताक़तवर किया, और मरहटोंसे मेल मिलाप रखकर मुल्कमें कुछ फ़ुतूर नहीं उठने दिया. पहिले लालाजी पंडितसे दोस्ती करली, जो सेंधियाका मुसाहिब था; फिर आंबाजी एंगलियाको अपना धर्म भाई बनाया. इन दोनों आदमियोंको कुटुम्ब सहित कोटेमें रक्खा, जिनके बनाये हुए मकान वहां अबतक मौजूद हैं; और लालाजी पंडितकी सन्तान मेंसे मोतीलाल पंडित इस वक्त कोटेकी कौन्सिलका मेम्बर है. जावरे वालोंके पूर्वज ग़फ़ूरखांको भी कोटेमें रहने दिया. इसी तरह नव्वाब अमीरखांके कुटुम्बियोंको शेरगढ़के क़िलेमें हिफ़ाज़तसे रक्खा. ज़ालिमसिंह मरहटोंके अलावह अंग्रेज़ी अफ्सरोंसे भी मेल मिलाप रखता था.

विक्रमी १८६० [हि० १२१८ = ई० १८०३] में हिंगलाजगढ़के पास जशवन्तराव हुल्करने कर्नेल मॉन्सनसे विरोध बढ़ाया, तब मॉन्सनकी मददको कोयला और फलायताके जागीरदार, जिन दोनोंके नाम अमरसिंह थे, कोटेसे भेजेगये; और ये दोनों सर्दार अच्छी तरह मरहटोंसे लड़कर मारेगये; लेकिन् ज़ालिमसिंह ऐसा आक़िल आदमी था, कि उसने अपनी रियासतपर सद्मह न पहुंचने दिया. बाक़ी हाल हम इस वज़ीरकी बुद्धिमानीका रियासत झालावाड़के बयानमें लिखेंगे.

इस वज़ीरने मेवाड़मेंसे जहाज़पुर, सांगानेर और कोटड़ी वग़ैरह ज़िले दबालिये थे, लेकिन् फिर गवर्मेएट अंग्रेज़ीने वे मेवाड़को दिलादिये. इनका ज़िक्र मेवाड़के हालमें

मौक़ेपर लिखा जायेगा. विक्रमी १८७४ [हि० १२३२ = ई० १८१७] में इसी वज़ीरकी मारिफ़त गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीके साथ महाराव उम्मेदसिंहका अह्दनामह हुआ. महाराव उम्मेदसिंहका विक्रमी १८७६ मार्गशीर्ष शुक्ल २ [हि० १२३५ ता० १ सफ़र = ई० १८१९ ता० १९ नोवेम्बर] को इन्तिकाल होगया. उनके तीन पुत्र- बड़े किशोरसिंह, दूसरे विष्णुसिंह और तीसरे पृथ्वीसिंह थे.

१३- महाराव किशोरसिंह.

महाराव किशोरसिंहका पट्टाभिषेक विक्रमी १८७६ मार्गशीर्ष शुक्ल १४ [हि० १२३५ ता० १२ सफ़र = ई० १८१९ ता० ३० नोवेम्बर] को हुआ. इसके बाद ज़ालिमसिंहने कर्नेल टॉड, पोलिटिकल एजेण्ट पश्चिमी राजपूतानहको ख़रीतह लिख भेजा, कि महाराव उम्मेदसिंहका इन्तिक़ाल होगया, जिसका बहुत रंज है, और उनके वलीअह्द किशोरसिंह को कोटेकी गद्दीपर बिठाया है, जिसकी इत्तिला गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीको दीजाती है; क्योंकि वह इस रियासतके मददगार व दोस्त हैं.

गद्दीनशीनीके बाद महाराव किशोरसिंह और ज़ालिमसिंहके आपसमें ना इत्तिफ़ाक़ी बढ़ने लगी, क्योंकि पेश्तरसे किशोरसिंहको इस मुसाहिबके दबावमें रहना नापसन्द था, अब गद्दी नशीन होनेपर अपना इख़्तियार बढ़ाना चाहा; ज़ालिमसिंहकी ख़वासके बेटे गोवर्द्धनदासने महारावको ज़ियादह भड़काया, जो ज़ालिमसिंहके अस्ली बेटे माधवसिंहके बख़िलाफ़ था.

महारावका दूसरा भाई विष्णुसिंह तो मुसाहिबसे मिलगया, और उससे छोटा पृथ्वीसिंह महारावका फ़र्मांबर्दार रहा. महारावने एक ख़रीतह कर्नेल टॉडको लिख भेजा, कि सर्कार अंग्रेज़ीने हमको रियासतका मालिक तस्लीम किया है, तो राज्यका कुल इख़्तियार भी हमारे हाथमें होना चाहिये; परन्तु गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीने अह्द-नामहके बख़िलाफ़ वज़ीरका इख़्तियार तोड़ना नहीं चाहा. इसपर विरोध ज़ियादह बढ़ा, तब कर्नेल टॉड खुद कोटेमें पहुंचे, और महारावको कहा, कि आपको बहकाने वाले पृथ्वीसिंह और गोवर्द्धनदास वगैरहको निकालदेना चाहिये. यह बात महाराव को ना मन्ज़ूर हुई. पोलिटिकल एजेण्टसे महारावके साम्हने यहांतक सख़्त कलामी हुई, कि उन दोनोंने तलवारोंपर हाथ डाल दिये. आख़िरकार कर्नेल टॉडने ज़ालिमसिंहसे कहा, कि महारावको धमकाकर फ़सादी आदमियोंको गिरिफ़्तार करलेना चाहिये. उसने महारावको डरानेके लिये ख़ास क़िलेकी तरफ़ गोलन्दाज़ी शुरू की, इस वक़् बहुतसे आदमी महारावके शरीक होगये थे. आख़िरकार विक्रमी १८७८ पौष कृष्ण ३

[हि० १२३७ ता० १५ रबीउ़लअव्वल = ई० १८२१ ता० ११ डिसेम्बर] को महाराव किशोरसिंह कोटेसे निकलकर बूंदी पहुंचे. ये कुल बातें ज़ालिमसिंहको अपनी मरज़ीके सिवा लाचारीसे करनी पड़ीं, जिसको अपनी बदनामीका बड़ा ख़ौफ़ था. बूंदीके रावराजाने महारावकी पहिले तो बहुत ख़ातिर तसल्ली की, लेकिन् ज़ालिमसिंहके दबाव और गवर्मेंएट अंग्रेज़ी की लिखावटसे ज़ियादह न ठहरा सके. महाराव वहांसे रवानह होकर दिल्ली पहुंचे, जहां गवर्मेंएटके अफ़्सरोंसे बहुत कुछ अर्ज़ की, परन्तु अह्दनामह और पोलिटिकल एजेएटकी सलाहके बर्ख़िलाफ़ कुछ मदद न मिली तब पीछे लौटकर मथुरा व दृन्दावन होते हुए हाड़ौतीकी तरफ़ चले. इस वक्त ३००० तीन हज़ारके क़रीब हाड़ा राजपूतोंका गिरोह इनसे जामिला था. महारावने पोलिटिकल एजेएटको एक कागज़ लिख भेजा, जिसमें चन्द शर्तें तह्रीर कीगई थीं, उसकी नक़्ल नीचे लिखी जाती है :-

चिठ्ठी महाराव किशोरसिंह, ब नाम कप्तान टॉड साहिब, जिसमें सुल्ह और सफ़ाईके लिये शर्तें दर्ज थीं, मर्क़ूमह आसोज, यानी कुंवार विदी ५, मु० १६ माह सितम्बर, मक़ाम म्यानोसे-

"बाद अल्क़ाब मामूली- चांदख़ांने अफ़्सर अपनी ख़्वाहिश वास्ते दर्याफ़्त करने मेरे मन्शाके ज़ाहिर की है, और वह मैंने पहिले मारिफ़त अपने वकील मिर्ज़ा मुहम्मदअलीबेग और लाला शालिग्रामके आपके पास लिख भेजी है. मैं फिर आपके पास तफ़्सील उन शर्तोंकी भेजता हूं, मुताबिक़ उनके आप कार्रवाई करें; और मेरा इन्साफ़, ब हेसियत वकील सर्कार गवर्मेंएट अंग्रेज़ी, आप करें; मालिकको मालिक और नौकरको नौकरकी तरह रक्खें. ऐसाही हर मक़ामपर होता है, और आपसे पोशीदह नहीं है."

नीचे लिखी हुई शर्तोंकी तामील महाराव किशोरसिंह चाहते थे, जो उनकी चिठ्ठी १६ माह सेप्टेम्बरके साथ आई थीं :-

"१- मुताबिक़ अह्दनामहके, जो दिह्ली मक़ामपर महाराव उम्मेदसिंहके साथ हुआ था, मैं अमल रक्खूंगा."

"२- मुझे हर तरह नाना ज़ालिमसिंहका एतिबार है, जिस तरह वह नौकरी महाराव उम्मेदसिंहकी करते थे, उसी तरह मेरी नौकरी करें; मैं उनके मुल्कके इन्तिज़ाम करनेको मन्ज़ूर करता हूं; मगर मेरे और माधवसिंहके दर्मियान शुब्हा पैदा होगया है, और हम बाहम इत्तिफ़ाक़ नहीं रखसक्ते, इसलिये मैं उसको जागीर दूंगा, उसमें वह रहे; उसका बेटा बापू लाल मेरे साथ रहेगा, और जिस तरह और अह्लकार रियासतका काम अपने मालिकके रूबरू सरंजाम देते हैं, उसी तरह वह मेरे रूबरू

काम करेगा; मैं मालिक और वह नौकर रहेगा. अगर मिस्ल नौकरोंके वह काम करेगा, तो यह कार्रवाई पीढ़ियों तक जारी रहेगी."

"३- जो काग़ज़ सर्कार अंग्रेज़ी या किसी और रियासतको तह्रीर हों, वे मेरी सलाह और हिदायतसे लिखे जावें."

"४- उनकी जानकी और मेरी जानकी ज़ामिन सर्कार अंग्रेज़ी होजाये."

"५- मैं एक जागीर अपने भाई पृथ्वीसिंहके वास्ते अ़लह्दह करदूंगा, वह उसमें रहे; जो मुलाज़िम उसके हम्राह और मेरे भाई विष्णुसिंहके हम्राह रहेंगे, उनको मैं मुक़र्रर करूंगा; सिवाय उनके और जो मेरे रिश्तेदार और हम क़ौम हैं, उनके रुत्बेके मुताबिक़ मैं उनको भी जागीर दूंगा; और वह मिस्ल क़दीम दस्तूरके मेरे हम्राह रहेंगे."

"६- मेरी ख़ास अर्दलीमें तीन हज़ार आदमी और नाइबका पोता बापू लाल (मदनसिंह) मेरे हम्राह रहेंगे."

"७- मुल्की आमदनी किशन भंडार (कृष्ण भंडार) याने ख़ज़ानह रियासतमें रक्खी जावेगी, और वहींसे सब ख़र्च हुआ करेंगे."

"८- हर क़िलेके क़िलेदार मेरे हुक्मसे मुक़र्रर होंगे, और फ़ौजपर मेरा हुक्म जारी रहेगा. नाइब भी अपने हुक्मकी तामील राजके अह्लकारोंसे करावे, मगर वह मेरी सलाह व मन्ज़ूरीसे हो."

"यह सब शराइत मैं चाहता हूं, और ये सब राजरीतिके मुताबिक़ हैं- मिती आसोज याने कुवार ५, संवत् १८७८, (ई० १८२१)."
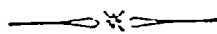
ये शर्तें पोलिटिकल एजेण्टने ना मुनासिब जानीं, क्योंकि तीन हज़ार आदमी ख़ास, फ़ौजकी अफ़्सरी और क़िलेदारोंपर इख़्तियार महारावके हाथमें होना आइन्दह फ़सादको तरक़ी देना था. कर्नेल टॉडने अपनी किताबमें इस विरोधका हाल तफ़्सीलके साथ लिखा है, लेकिन् वह बहुत तूल है, इसलिये उसका ख़ुलासह यहांपर दर्ज किया जाता है- गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीने भी इस सख़्तीको लाचारीके दरजेपर क़ुबूल किया, क्योंकि उसको अह्दनामहकी शर्तोंका लिहाज़ था. आख़िरकार सब हाड़ा राजपूत महारावके शरीक होगये, यहां तक, कि राजपूतानहके दूसरे राजा भी महारावकी हक़ तलफ़ीका अफ़्सोस करते थे. मांगरोल गांवके पास काली सिन्ध नदीपर लड़ाईका मौक़ा मिला; महारावके पास सात आठ हज़ार फ़ौज मुल्की राजपूतोंकी बिदून तोपख़ानहके जमा थी; ज़ालिमसिंहके साथ आठ पल्टनें, चौदह रिसाले और

बत्तीस तोपें थीं; वज़ीरकी मददके लिये गवर्मेंएट अंग्रेज़ीकी तरफ़से एम० मिल्नकी मातह्तीमें दो पल्टनें, ६ रिसाले, और घोड़ोंका एक तोपख़ानह तय्यार होकर विक्रमी १८७८ आश्विन शुक्ल ५ [हि० १२३७ ता० ४ मुहर्रम = ई० १८२१ ता० १ ऑक्टोबर] को लड़ाई शुरू होगई.

हाड़ा राजपूत दिलसे अपने मालिकके हुकूक़ क़ाइम करनेको मुस्तइद थे. वज़ीरकी तरफ़से गोलन्दाज़ी शुरू हुई, एक चाबुक सवार अलफ़ख़ां नामी तोपके गोलेसे उड़गया, जो महारावके आगे खड़ा था; तब कोयलाके जागीरदार राजसिंह और गेंताके दो कुंवर बलभद्रसिंह, सलामतसिंह और उनके चचा दयानाथ, हरीगढ़के चन्द्रावत अमरसिंह, और उनके छोटे भाई दुर्जनशाल वग़ैरह राजपूतोंने अंग्रेज़ी रिसालेपर धावा किया, और बारूद व गोलेकी मारको सहकर टूट पड़े; लेफ़्टिनेन्ट क्लार्क और लेफ़्टिनेन्ट रीड, दो अंग्रेज़ी अफ़्सरोंमेंसे एक राजसिंह और दूसरे बलभद्रसिंह के हाथसे मारेगये; उनका बड़ा अफ़्सर लेफ़्टिनेएट कर्नेल ज़ेरिज़, सी० बी० ज़ख़्मी हुआ; और दूसरी तरफ़से महारावके भाई पृथ्वीसिंह और राजगढ़के जागीरदार देवसिंह वग़ैरहने वज़ीरकी फ़ौजपर हमलह किया, देवसिंह बहुत ज़ख़्मी हुआ, और महाराज पृथ्वीसिंह भी ज़ख़्म खाकर घोड़ेसे गिरा, जिसकी पीठमें एक रिसालदारके हाथका बर्छा लगा था; वह पालकीमें डालकर वज़ीरके लश्करमें लाया गया; लेकिन् दूसरे रोज़ गुज़र गया. कर्नेल टॉड खुद इस लड़ाईमें मौजूद थे, जो अपनी किताबमें हाड़ा राजपूतोंकी बहादुरीका हाल बड़ी तारीफ़के साथ लिखते हैं.

फिर महाराव किशोरसिंह मैदानसे निकलकर गौड़ोंके बड़ोदे होते हुए नाथद्वारे चले गये, और हाड़ा राजपूतोंके लिये कुसूरकी मुआफ़ीका इश्तिहार जारी होगया, कि वे अपने अपने ठिकानोंमें जा बैठें. उन्होंने भी इस बातको ग़नीमत जानकर सब्र किया. उदयपुरके महाराणा भीमसिंहने सुफ़ारिशी होकर गवर्मेंएट अंग्रेज़ीकी मारिफ़त इस विरोधको इस तरहपर मिटाया, कि महारावका ख़ास ख़र्च महाराणा उदयपुरके बराबर किया जावे, और महारावके ख़ानगी कामोंमें वज़ीर और वज़ीरके रियासती कामोंमें महाराव दख़्ल न दें. ये सब शर्तें अह्दनामह नम्बर ५७ में दर्ज हैं, जो अख़ीरमें लिखाजायेगा. महाराव, पोलिटिकल एजेंएटकी शामिलातसे कोटेमें पहुंचे, जहां उनको मौरूसी इज़्ज़तके साथ वज़ीरने विक्रमी १८७८ पौष कृष्ण ९ [हि० १२३७ ता० २२ रबीउ़लअव्वल = ई० १८२१ ता० १८ डिसेम्बर] को बड़ी नर्मीके साथ महलोंमें दाख़िल किया. इसके बाद विक्रमी १८८० [हि० १२३८ = ई० १८२३] में ज़ालिमसिंहका इन्तिक़ाल होगया, और उसका बेटा माधवसिंह

रियासतका काम करता रहा. विक्रमी १८८४ आषाढ़ शुक्ल ८ [हि० १२४२ ता० ७ ज़िल्हिज = ई० १८२७ ता० २ जुलाई] को महाराव किशोरसिंहका देहान्त हुआ. उनके कोई कुंवर न था, इस वास्ते वह अपने तीसरे भाई पृथ्वीसिंहके पुत्र रामसिंहको वलीअ़हद बनागये.

१४- महाराव रामसिंह- २.

जब महाराव किशोरसिंहका इन्तिक़ाल होगया, तो गद्दीपर बैठनेका हक़ उनके दूसरे भाई अण्ताके जागीरदार महाराज विष्णुसिंहका था, लेकिन् महाराव किशोरसिंह जब झाला ज़ालिमसिंहकी अ़दावतके कारण कोटेसे निकले, तब विष्णुसिंह वज़ीरका शरीक रहा, और तीसरा भाई पृथ्वीसिंह महारावके साथ रहकर मांगरोलकी लड़ाईमें मारागया था, इससे किशोरसिंहने उसके बेटे रामसिंहको वलीअ़हद बनाया. इस बातपर माधवसिंह झालाने अपने दोस्त विष्णुसिंहकी तरफ़दारी छोड़दी, क्योंकि पेश्तरका बड़ा बखेड़ा उसको याद था. विक्रमी १८८८ [हि० १२४७ = ई० १८३१] में महाराव रामसिंह मए अपने मुसाहिबके अजमेरमें लॉर्ड बैंटिंककी मुलाक़ातको गये, तो उन्होंने माधवसिंहको चंवर इनायत किया. यह वज़ीर अपने मालिकको हर तरह खुश रखना चाहता था.

विक्रमी १८९० [हि० १२४९ = ई० १८३३] में माधवसिंहका इन्तिक़ाल होगया, और उसका बेटा मदनसिंह कोटेका मुन्तज़िम बना. मदनसिंहसे महारावका विरोध बढ़ने लगा, वह रईसके मुवाफ़िक़ निकास पैसारके वक़ अपनी सलामीकी तोपें चलवाता; इस तरह कई हरकतोंपर आपसका विरोध बहुत तरक़्क़ी पागया. आख़िर-कार विक्रमी १८९५ [हि० १२५४ = ई० १८३८] में गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीने बड़ा फ़साद होजानेके भयसे बीचमें आकर नया बन्दोबस्त किया, कि बारह लाख रुपया सालानह आमदनीके सत्तरह पर्गने मदनसिंहको देकर जुदा राजा बना दिया, और एक फ़ौज कोटा कन्टिन्जेन्ट नई भरती करके उसका ख़र्च महारावसे दिलाना क़रार पाया. एक नया अ़हद्नामह गवर्मेण्टकेसाथ क़रार पाया, जिसकी शर्तोंके पढ़नेसे पाठकोंको हाल मालूम होगा. विक्रमी १९०७ फाल्गुन [हि० १२६७ जमादियुल्अव्वल = ई० १८५१ मार्च] में महारावकी उदयपुर शादी हुई, जिसका बयान महाराणा स्वरूपसिंहके हालमें लिखा जायेगा. विक्रमी १९१४ [हि० १२७३ = ई० १८५७] के बलवेमें कोटा कन्टिन्जेण्ट पल्टनने बग़ावत की, और हाड़ौतीके एजेण्ट मेजर ब्रिटन और उनके दो बेटोंको मारडाला,

जिसका हाल मेलीसन साहिबने अपनी ग़द्रकी तवारीख़की दूसरी जिल्दमें इस तरह पर लिखा है:-

"जब नीमचमें ग़द्र हुआ, तब लॉरेन्स साहिबने मेवाड़, कोटा और बूंदीके लश्करकी मददसे वहांपर पीछा क़ब्ज़ह करना चाहा. मेजर ब्रिटन, पोलिटिकल एजेण्ट कोटा, कोटेसे लश्कर लेकर नीमच भेजे गये."

"जेनरल लॉरेन्सने उनको तीन हफ्ते तक नीमचमें ठहरनेको कहा था, जिससे उक्त मेजरको ठहरना पड़ा; आउवेमें ग़द्र होनेके बाद ब्रिटन साहिब अपना कोटे जाना मुनासिब समझकर अपने दो लड़कों समेत, जिनमेंसे एककी उम्र २१ वर्षकी और दूसरेकी सोलह वर्षकी थी, ईसवी १८५७ ता० १२ ऑक्टोबर [वि० १९१४ कार्तिक कृष्ण ९ = हि० १२७४ ता० २३ सफ़र] को कोटे पहुंचे; और अपनी मेम और बाक़ी चारों लड़के लड़कियोंको नीमच मक़ामपर अंग्रेज़ी लश्करकी हिफ़ाज़तमें छोड़गये."

"ईसवी ता० १३ व १४ ऑक्टोबर [वि० कार्तिक कृष्ण १०- ११ = हि० ता० २४-२५ सफ़र] को महारावसे ब्रिटन साहिबकी मुलाक़ात हुई. मुलाक़ात होनेके बाद महारावने अपने लोगोंसे ज़ाहिर किया, कि ब्रिटन साहिबने कितने एक आदमियोंको रियासतका बदख़्वाह होनेके सबब निकाल देने या सज़ा देनेको कहा है. इस बातके सुनतेही अफ़्सर लोग अपने मातह्तों समेत बदल गये, और महारावकी हुकूमत उठाकर राज्यपर अपना इख़्तियार करलेना चाहा. दूसरे रोज़ फ़ज्रमें बाग़ी लोगोंने एकट्ठे होकर रेज़िडेन्सी सर्जन मिस्टर सेडलर और शहरके हॉस्पिटलके डॉक्टर मिस्टर सेविलको, जो रेज़िडेन्सीके मकानमें रहते थे, मारडाला; और रेज़िडेन्सीपर हमलह किया. चौकीदार और नौकर लोग भागगये; मेजर ब्रिटन, उनके दो लड़के और एक नौकर रेज़िडेन्सीके ऊपर वाले मकानमें रहे. इन लोगोंने चार घंटे तक अपना बचाव किया, लेकिन् अख़ीरमें बाग़ियोंने रेज़िडेन्सीमें आग लगादी. मेजर ब्रिटनने जब बचनेकी कोई सूरत न देखी, तब अपने लड़कोंकी जान बचानेकी शर्तपर बाग़ियोंकी इताअ़त करना कुबूल किया, लेकिन् उन लड़कोंने इस बातको ना मंजूर किया. बाग़ियोंने सीढ़ीके ज़रीएसे मकानपर चढ़कर तीनोंको मारडाला, और साहिबका नौकर भागगया."

"महाराव साहिबने यह हाल जेनरल लॉरेन्सको लिख भेजा, और अपनी तरफ़से दिलगीरी ज़ाहिर की, कि मेरे लश्करने राजके कुल इख़्तियारात अपने क़ब्ज़ेमें लेकर मुझको बेइख़्तियार करदिया है. सर्कार अंग्रेज़ीने महारावको निर्दोष समझा, लेकिन् पूरा पूरा फ़र्ज़ अदा न होनेके सबब उनकी १७ तोप सलामी घटाकर १३ करदी."

"मेजर ब्रिटनको क़त्ल करने बाद बाग़ियोंने महारावको क़ैद करके जबरन् एक काग़ज़पर, कि जिसमें नौ शर्तें थीं, दस्तख़त करालिये; इन शर्तोंमें एक शर्त यह भी थी, कि मेजर ब्रिटन महारावके हुक्मसे मारेगये. महारावने पोशीदह तौरपर क़रौलीके महाराजाके पास आदमी मए काग़ज़के भेजकर उन्हें कहलाया, कि आप लश्करकी मदद भेजें. क़रौलीके राजाने मदद भेजी, और बाग़ियोंको महलोंसे निकलवाकर महारावको क़ैदसे छुड़ाया, जिन्होंने अपनी मददगार फ़ौज वहीं रहने दी."

"रॉबर्ट साहिब .ईसवी १८५८ के मार्च [वि० १९१४ चैत्र = हि० १२७४ रजब] में नसीराबादसे लश्कर लेकर .ईसवी ता० १० मार्च [वि० चैत्र कृष्ण ११ = हि० ता० २४ रजब] को कोटेकी तरफ़ रवानह हुए, और .ईसवी ता० २२ मार्च [वि० १९१५ चैत्र शुक्ल ७ = हि० ता० ६ शअ्बान] को चम्बलके उत्तरी किनारेपर छावनी डाली; उस वक्त मालूम हुआ, कि नदीका दक्षिणी किनारा बिल्कुल बाग़ियोंके क़ब्ज़ेमें है, और क़िला, महल, आधा शहर और नदीका घाट क़रौलीके लश्करकी मददसे महारावने अपने तह्तमें लिया है."

"ईसवी ता० २५ मार्च [वि० चैत्र शुक्ल १० = हि० ता० ९ शअ्बान] को ख़बर मिली, कि बाग़ी लोग महलपर हमलह करते हैं. यह ख़बर सुनते ही रॉबर्ट साहिबने ३०० आदमी मेजर हीद साहिबकी मातह्तीमें महारावकी मददको भेजे, और बाग़ियोंको हटाया. ईसवी ता० २७ मार्च [वि० चैत्र शुक्ल १२ = हि० ता० ११ शअ्बान] को रॉबर्ट साहिब ६०० आदमी और दो तोपें लेकर क़िलेके अन्दर गये, और बाग़ियोंकी तरफ़ तोपें जमाई गईं. .ईसवी ता० २९ मार्च [वि० चैत्र शुक्ल १४ = हि० ता० १३ शअ्बान] को गोले चलने शुरू हुए, और बाग़ियोंको हटाकर दक्षिणी किनारेपर क़ब्ज़ह किया गया; बाग़ी कोटेसे भागनिकले, जिनकी ५० तोपें छीनीगईं. अंग्रेज़ी लश्कर तीन हफ्ते तक कोटेमें रहकर महारावका राज्यमें पूरा अमल दख़ल कराने बाद वापस नसीराबादको चलागया."

थोड़े दिनों बाद दूसरे रईसोंकी तरह महारावको भी गोद लेनेकी सनद दीगई, और कोटा कन्टिन्जेन्टके एवज़ देवली मक़ामकी बे क़वाइद फ़ौज भरती कीगई. विक्रमी १९२३ चैत्र शुक्ल ११ [हि० १२८२ ता० १० ज़िल्क़ाद = ई० १८६६ ता० २७ मार्च] की शामको चौंसठ सालकी उम्रमें महाराव रामसिंहका इन्तिक़ाल होगया. उनके साथ एक राणीने सती होना चाहा था, लेकिन् पोलिटिकल एजेण्टकी हिदायतसे बड़ी मुश्किलके साथ उसको इस इरादेसे बाज़ रक्खागया. महारावके बाद उनके एक बेटे शत्रुशाल बाक़ी रहे थे, जो राज्यके मालिक माने गये.

१५- महाराव शत्रुशाल-२.

यह महाराव विक्रमी १९२३ चैत्र शुक्ल १२ [हि० १२८२ ता० ११ ज़िल्क़ाद = ई० १८६६ ता० २८ मार्च] को कोटेकी गद्दीपर बैठे, जिनको दूसरे वर्ष कर्नेल ईडन, एजेण्ट गवर्नर जेनरल राजपूतानहने ज़ाबितहके साथ मस्नद नशीन किया, और नव्वाब गवर्नर जेनरल बहादुरने रियासतकी सलामी, जो उनके बापके वक्तमें घटा दीगई थी, बदस्तूर सत्तरह तोप बहाल करदी.

महाराव शत्रुशालके गद्दी बैठनेके वक्त रियासत क़र्ज़हसे ज़ेरबार थी, और ख़र्च भी आमदनीसे ज़ियादह था. महारावने कई बार ख़र्चमें तख़्फ़ीफ़ की, और महाराव रामसिंहकी महाराणी फूलकुंवरके मरनेसे, जो मेवाड़के महाराणा सर्दारसिंहकी बेटी थी, साठ हज़ार रुपये सालानह आमदनीकी जागीर ख़ालिसेमें दाख़िल हुई; इस तरहपर ख़र्च आमदनीसे कुछ कम होगया. इन महारावने सती होनेकी दो वारिदातें बहुत कोशिशके साथ रोक दीं, जिसपर अंग्रेज़ी सर्कारसे उनकी तारीफ़ हुई. इन सब बातोंपर बड़ा अफ़्सोस यह था, कि महाराव अपने वालिदके इन्तिक़ाल तक हमेशह ज़नानहमें रहनेके सबब शराब ख़्वारीके आदी होगये थे; पोलिटिकल एजेंटोंने अक्सर बार इस ख़राब आदतको छुड़ानेके लिये सलाह और नसीहतमें कमी नहीं की, लेकिन् जवान उम्र और बड़े दरजहपर पहुंचनेके बाद ऐसी कोशिशें कारगर नहीं होतीं. इसलिये शराब ख़्वारीकी यह कस्रत हुई, कि महाराव हर वक्त बेख़बर रहने लगे, और अक़्ल व होश खो बैठे. ज़नानहमें रहनेके सबब उनके पास तक किसी अह्लकारकी रसाई नहीं होसक्ती थी; दीवानका एतिबार और इख़्तियार कुछ न था, रियासती काम मुल्तवी पड़े रहते थे, एजेंटीकी तह्रीरोंका जवाब बड़ी मुद्दत बाद दियाजाता था; महाराव जैब ख़ासके ख़र्चमें रुपया जमा करना चाहते थे; और अह्लकार ग़बन और फ़िरेबसे रियासतको लूटते थे; क्योंकि वह भी बड़ी रिश्वतें और नज़्रानह देकर मुक़र्रर होते थे, और इस तरह अपने दिये हुए रुपयोंकी कस्र निकालकर ज़ियादह अरसह तक नौकरीपर क़ाइम न रहनेके ख़ौफ़से अपना घर भरलेना चाहते थे. महारावकी तबीअतपर चन्द ख़ानगी नौकरों, गूजर और हज्जाम वग़ैरहका बहुत इख़्तियार था, ये लोग इस सबबसे, कि किसीको रईस तक पहुंचने या पैग़ाम पहुंचानेका इनके सिवा कोई और ज़रीआ न था, राजके कारोबारमें बहुत दख़्ल देने लगे.

विक्रमी १९२४ [हि० १२८४ = ई० १८६७] में महारावने अपने बापके अह्दके अह्लकारोंको मौकूफ़ कर दिया, लेकिन् इसपर किसीको

अफ़्सोस और तअज्जुब न हुआ; क्योंकि वे लोग मुद्दतसे ज़ुल्म और ख़राबीका बाइस थे. विक्रमी १९२६-२७ [हि० १२८६-८७ = ई० १८६९-७०] की रिपोर्टमें लिखा गया है, कि कोटेकी अदालतें बराय नाम और नाकारह हैं; उनके हुक्मोंकी तामील नहीं होती, जो शख़्स रईस और राणी या दीवानसे तअल्लुक़ रखता हो, वह खुदही अदालतके इख्तियारसे बाहर रहना नहीं चाहता, बल्कि रिआयत या लालचसे दूसरोंका भी हिमायती बन जाता है. ज़बर्दस्त लोग अपनी हक़रसी आप कर लेते हैं, और कमज़ोरोंको अदालत भी कामयाब नहीं करा सक्ती.

विक्रमी १९२७ [हि० १२८७ = ई० १८७०] में दीवान गणेशीलाल, जो चार बरससे काम करता था, मरगया; वह छोटी आसामीसे बड़े उह्दहपर पहुंचा था; रईस और रियासतके हालातको खूब पहिचानता था; इसलिये उसने महारावको हर मौक़ेपर रुपया देकर राज़ी रक्खा; और खुदने भी रिआयाको तक्लीफ़ देकर बहुत रुपया कमाया. मुसाफ़िर और सौदागरोंको कोटेके बराबर कहीं तक्लीफ़ न होगी, हर मक़ामपर हर बहानेसे कुछ न कुछ मह्सूल लेलिया जाता है, इनमेंसे कोई राज्यमें जमा होता है, और कोई अह्लकार अपने तौरपर वुसूल करलेते हैं. मुसाफ़िरोंको सबसे बड़ी मुश्किल चम्बल नदी और मुकुन्दरा घाटेको तै करनेमें होती है, जिनके लिये इजाज़त लेनेमें कई दिन गुज़र जाते हैं.

विक्रमी १९२७-२८ [हि० १२८७-८८ = ई० १८७०-७१] की रिपोर्टमें राज्यके नालाइक़ अह्लकारोंकी रिश्वतख़्वारीकी बाबत बहुत शिकायत है. मन्दिरों और राणियोंके नौहरोंमें मुज्रिमोंको पनाह दी जाती है, "कोटेके बावन हुक्म" आम मसल मश्हूर है, अह्लकार लोग ग़ारतगरोंसे हिस्सह लेते हैं, या मुज्रिमोंको जुर्मानह लेकर छोड़ देते हैं, क़ैदकी सज़ा रुपया वुसूल होनेकी उम्मेदके सिवा कभी नहीं दीजाती. शहरकी कोतवाली वग़ैरह अपने खर्चके सिवा राज्यमें रुपया दाख़िल करती है, .इलाक़हके ठेकहदार अक्सर सर्कारी जमा खाजाते हैं, अह्लकारोंको रिश्वत देकर ग़ैर .इलाक़ोंमें भागजाते हैं, और फिर आजाते हैं; अंग्रेज़ी सर्कारका फ़ौज खर्च व ख़िराज बहुत मुश्किल और देरसे अदा कियाजाता है, साइरका ठेका है, और कोई शरह मह्सूलकी मुक़र्रर नहीं है, इस लिये ठेकहदार अपने नफ़्के वास्ते, जो चाहता है, वुसूल करता है; क़र्ज़ह बढ़ते बढ़ते पचास लाखके क़रीब पहुंचा, जिसकी बाबत साहूकारों को कई लाखका इलाक़ह जमा वुसूल करनेके लिये सौंपा गया, और मुद्दतकी बद इन्तिज़ामीसे इलाक़हकी किश्तकारी भी कम होगई. एजेंटीकी बराबर ताकीद रहने से मिर्ज़ा अक्बरअलीबेग, जो पहिले करौलीमें नौकर रहचुका था, अफ़्सर गिराई

किया गया; लेकिन् साहिब एजेंट गवर्नर जेनरलका दौरा होजाने बाद मिर्ज़ा और उसका अमलह तन्ख़ाह न मिलनेके सबब अलहदह होगया.

कोतवालीकी कार्रवाई बहुत ही बदनाम है, जिसपर मुश्किलसे लोगोंको यक़ीन आसके, याने शहरकी बद चलन औरतोंको बहकाकर मालदार और इज़्ज़तदार लोगोंके घर भिजवा देते हैं, और पीछेसे पुलिसवाले मौक़ेपर जाकर दोनोंको गिरिफ़्तार करलेते हैं; औरत आश्नाईका इक़ार करती है, जिसपर एतिबार होकर बहुतसे बे क़ुसूरोंसे जुर्मानह लेलिया जाता है; डाकन होनेका जुर्म किसीपर लगा दिया जाता है, और उसको सज़ा या तक्लीफ़ देकर रुपया पैदा करते हैं. इसी तरह किसीको जादूगर क़रार देनेके लिये पुलिसवाले उसके घरमें चले जाते हैं, और खोपड़ी वग़ैरह बाज़ चीज़ें बरामद करके ख़याली जुर्म क़ाइम करते हैं, और तक्लीफ़ देकर जुर्मानह लेते हैं. जेलख़ानहकी ऐसी अब्तरी है, कि अक्सर बड़े बड़े क़ैदी रुपये के एवज़ रिहा करदिये जाते हैं. फ़ौज तन्ख़ाह न मिलनेके सबबसे एक बरस बाग़ी रही, सिपाहियोंने चोरी और लूटमार शुरू की, उनमेंसे कई आदमी सामान समेत गिरिफ़्तार किये गये, फ़ौजने हमलह करके उन्हें छुड़ा लिया, और महलके चौकमें आ जमे; परदेशी सिपाहियोंको तन्ख़ाह देकर बेबाक़ किया, और देशियोंको हीला करके टाल दिया गया. राजकी कोई शिकायत एजेंटीमें नहीं करने पाता, क्योंकि एजेंटीमें ख़ाली जाने हीसे हर एकको अपनी बर्बादी नज़र आती है; लेकिन् तंग आकर सौ पटेल और ज़मींदारोंने, जब साहिब एजेंट कोटेमें गये, ज़ुल्म और सख़्तियोंकी एक-दम फ़र्याद की, जिसपर पोलिटिकल एजेंटने महारावको रुजूअ् किया; मगर कुछ इन्साफ़की उम्मेद न थी.

राज्य कोटा और कोटड़ियोंके सर्दारोंमें कई सालसे नाइत्तिफ़ाक़ी रही; राज्य हदसे ज़ियादह इताअ़त चाहता है, और सर्दार मामूलसे भी कम चाकरी देना चाहते हैं. ये सर्दार शुरूमें उदयपुरके मातहत राव सुर्जणके ज़ेर हुकूमत थे, जब राव सुर्जणने क़िला रणथम्भोर अक्बर बादशाहको सौंप दिया, तो ये लोग भी ख़ालिसेके ख़िराज गुज़ार होगये. अज़ीज़ुद्दीन आलमगीर सानीके वक्तमें यह क़िला महाराजा माधवसिंह अव्वलको मिला, तो जयपुर वालोंने कोटड़ी वालोंपर अपना ख़िराज मुक़र्रर किया, लेकिन् दोनोंके आपसमें कभी मुवाफ़क़त न हुई. इसपर ज़ालिमसिंह झाला वज़ीर कोटाने ख़िराजका ज़ामिन होकर कोटड़ी वालोंको अपनी तरफ़ लेलिया, और राज्यकी रक़म कोटेकी मारिफ़त जयपुर वालोंको मिलना क़रार पाया. इन सात सर्दारों, इन्द्रगढ़, खातोली, गेंता, पीपलदा, करवाड़, बलवन अंतरौदामेंसे इन्द्रगढ़की आमदनी तीन लाख रुपये और खातोलीकी अस्सी हज़ार सालानहके क़रीब है, और बाक़ीकी कम

तादादमें दस पन्द्रह हज़ार तक हैं; लेकिन् हर एक इनमेंसे महाराजा कहलाता है.

हाड़ौतीके पोलिटिकल एजेएट अपनी रिपोर्टमें लिखते हैं कि:- "ई० १८७२-७३ [वि० १९२९-३० = हि० १२८९-९०] के अख़ीरमें यहांकी हालत ऐसी अब्तर हुई, कि सर्कारी मुदाख़लतका होना बहुत ज़रूरी मालूम हुआ. मैं बराबर महारावजीसे ताकीद करता रहा, कि इस तबाहीसे बचनेके लिये कुछ तद्बीर करना लाज़िम है, लेकिन् इस नेक सलाहका असर ऐसे शख़्सपर कब होता, जो हर तरहकी बुराइयोंमें डूब रहा था, और ख़ुशामदियोंके हाथमें कठ पुतली बनगया था, कि वे जैसा चाहते थे, नचाते थे; लेकिन् रईस और रियासतकी ख़ुश नसीबीसे दर्बारियोंमेंसे एक दो ऐसे प्रतिष्ठित आदमी भी थे, कि जो इस बातको बख़ूबी समझ सक्ते थे, कि कैसा अप्रबन्ध इस रियासतमें फैल रहा है? इन लोगोंने मुझको बहुतसी मदद दी, और उन्होंने रईसको भी अच्छी तरह समझाया, कि रियासतपर पूरी तबाही आवेगी. उन्होंने उनसे यह भी ज़ाहिर करदिया, कि सर्कार अंग्रेज़ी आगे पीछे ज़रूर मुदाख़लत करके इस ज़ुल्म और बदइन्तिज़ामीको मिटावेगी; इसलिये आपको लाज़िम है, कि अपनी नेकनामी और बरिय्यतके लिये रियासतकी दुरुस्तीमें मश्ग़ूल हों."

"आख़िरकार ईसवी १८७३ जुलाई [वि० १९३० आषाढ़ = हि० १२९० जमादियुलअव्वल] में महारावजीपर इस नेक सलाहका असर हुआ, और उन्होंने साहिब एजेन्ट गवर्नर जेनरलके, तथा मेरे नाम लिखा, कि वह इस अप्रबन्धको सुधार नहीं सक्के, इसलिये उन्होंने अपनी रियासतको सर्कार अंग्रेज़ीके सुपुर्द करना चाहा, और जो कुछ प्रबन्ध सर्कार अंग्रेज़ी करे, उसमें अपनी रज़ामन्दी ज़ाहिर की. ईसवी ऑक्टोबर [वि० आश्विन = हि० शअ्बान] में साहिब एजेन्ट गवर्नर जेनरल कोटे आये. महारावजीसे कई एक मुलाक़ातें हुई, तो उन्होंने फिर सर्कारी मददके लिये दर्ख़्वास्त की, और कहा, कि जो कुछ बन्दोबस्त सर्कार करे, मुझको मंजूर है. इस सूरतमें सर्कार अंग्रेज़ीने जयपुरके साबिक़ मुसाहिब नव्वाब फ़ैज़अलीख़ां बहादुर, सी० एस० आइ० को पूरे इख़्तियारात देकर कोटेका मुख़्तार मुक़र्रर करना मुनासिब समझा. मैं फ़ेब्रुअरीमें किशनगढ़के मक़ामपर साहिब एजेन्ट गवर्नर जेनरलके लश्करमें शामिल हुआ, तो वहां मुझसे और नव्वाब साहिबसे मुलाक़ात हुई; और मुझे आख़िरी अह्काम मिले; कुछ दिनके बाद ज़ाबितह साथ लेकर नये मुख़्तारको मुक़र्रर करनेके लिये मैं कोटे गया. इस समय यहांकी हालत बहुत अब्तर थी, महारावजी फिर बुरे सलाहकारोंके हाथमें फंस गये थे, कि जिन्होंने सर्कार अंग्रेज़ीकी कार्रवाईको इस तरहपर महारावजीके

दिलमें जमाया, कि सर्कार आपको गद्दीसे उतारना चाहती है. उन्होंने महारावजीको यह भी सलाह दी, कि सर्कारसे मददके लिये जो दर्ख्वास्त कीगई है, वह वापस लेनी चाहिये, और जहांतक होसके, ऐसी कोशिश करना चाहिये, कि नव्वाब फ़ैज़-अलीखां मुक़र्रर न होनेपावें. उन्होंने यहांतक दर्बारको सुझाया, कि आपकी जो हतक इ़ज़्ज़त होनेवाली है, उससे मरना बिह्तर है; और झूठी गप्पें इन बदमआशोंने उड़ाईं, जिससे रिआयाके दिलमें घबराहट पैदा होगई. इन बरसोंके ज़ुल्मसे लोगोंके घबराजानेमें बिल्कुल शक नहीं था, और उम्मेद थी, कि सर्कार अंग्रेज़ी उनको इस ज़ुल्मसे बचावेगी. फ़ौजकी तन्ख्वाह भी बहुत बाक़ी थी, सर्कारी मुदाख़लतके होनेसे उनको भी बाक़ियातके मिलजानेकी उम्मेद थी. मैं १९ फ़ेब्रुअरीको कोटे पहुंचा. महारावजीने मेरे मन्शाके मुवाफ़िक़ मामूली तौरसे मेरी पेश्वाई की. मैंने महारावजीसे नव्वाब साहिबको मिलाया, और दूसरे रोज़ मैं नव्वाब साहिबको साथ लेकर महारावजीसे मिलने गया, और साहिब एजेन्ट गवर्नर जेनरलका ख़रीतह रईसको दिया, कि जिसमें उस बन्दोबस्तकी बाबत तह्रीर थी, जो अब सर्कार कोटेमें करना चाहती थी. जिन होश्यार सलाहकारोंका ज़िक्र ऊपर होचुका, वह इन्तिज़ाममें शामिल हुए; और जब महारावजी मुझसे अपने इक़ारके मुवाफ़िक़ मिलनेको आए, तो ज़ाहिर होता था, कि कुछ बिह्तरीकी सूरत हुई. महारावजी, नव्वाब साहिबसे बड़े अख़्लाक़के साथ मिले, और ख़ुशीसे सर्कारी मुदाख़लतको क़ुबूल किया."

सर्कारी इन्तिज़ाम.

रियासतका हिसाब बेतर्तीब, नातमाम और एतिक़ादके लाइक़ नहीं था. इस हिसाबके देखनेसे मालूम हुआ, कि पिछले सालमें अट्ठाईस लाख २८००००० रुपये की आमदनी हुई. इसमेंसे जागीर, धर्म खाता और बाक़ियातके १२००००० बारह लाख मिन्हा देनेपर १६००००० सोलह लाख रुपये रहजाते हैं. अन्क़रीब यह कुल आमदनी ज़मीनके हासिलसे है. किसी क़िस्मका टैक्स नहीं लगाया जाता. क़रीब ६००००० छ: लाखके फ़ौजका ख़र्च है, और ६००००० छः लाखके महलका ख़र्च. अलावह इसके रु० १००००० एक लाख रुपया दर्बार ख़ास अपने जैब ख़र्चके लिये लेते हैं. जिस वक़्त नव्वाब साहिबने चार्ज लिया, उस वक़्त पोतेमें रु० ६३२२७ थे. जो लोग दर्बारमें रुपया मांगते थे, उनसे दावा पेश करनेके लिये कहा गया. चूंकि ये हिसाब बहुत बरसोंके हैं, और हरएक रक़मकी जांच होना ज़रूर है, कुल क़र्ज़ेका हिसाब तय्यार करनेमें कुछ अरसह लगेगा. रु० ९००००० का दावा लोगोंने

पेश किया, कुछ अ़रसे तक आमदनीके बढ़नेकी कोई उम्मेद नहीं, लेकिन् इस अ़रसेमें हमको हत्तलइम्कान ख़र्च घटानेकी कोशिश करना चाहिये. हस्ब मंज़ूरी साहिब एजेण्ट गवर्नर जेनरल, अजमेरके मालदार सेठोंसे ६॥) रु० सैकड़ा सालानह सूदपर ६००००० छ: लाख रुपया क़र्ज़ लेना तज्वीज़ हुआ, ताकि कार्रवाई शुरू कीजावे, और सर्कार अंग्रेज़ी तथा फ़ौजका जो कुछ देना बाक़ी है, देदिया जावे. ईसवी १८७३ ता० ३१ डिसेम्बर [वि० १९३० पौष शुक्ल १३ = हि० १२९० ता० ११ ज़ीक़ाद] तक जो टांकेका रु० २४६४२७ बाक़ी था, मार्चमें दिया गया; फ़ौजकी बक़ाया तन्ख़्वाह भी चुकने लगी, कोटड़ीकी जागीरोंकी बाबत जो रुपया जयपुरको देना है, और राजपूतानहके ख़ज़ानेके रु० २४४३१ और देवलीके ख़ज़ानेके रु० १०३१७३ जो देने हैं, उनके भी अदा होनेका बन्दोबस्त होरहा है. राजके ख़ज़ानेका दफ़्तर शहरसे उठाकर एजेन्सीके क़रीब रक्खागया है."

"अ़दालतें- मौजूदह अ़दालतें सिर्फ़ ज़ुल्मके कारख़ाने हैं, कि जिनके हाकिमों के न कोई इख़्तियारात और न कोई कार्रवाईका तरीक़ा साबित है. यह अ़दालतें बन्द कीगईं, और बजाय इनके दीवानी, फ़ौज्दारी, माल व अपीलकी कचहरियां क़ाइम कीगईं. इन अ़दालतोंके खुलनेसे एक महीनेकी मीआ़दके अन्दर दो हज़ार अ़र्ज़ियां पेश हुईं."

"कामदार- जहांतक मुम्किन था, पुराने अह्लकार, जो किसी क़द्र ईमानदार और मोतबर थे, साबित रहे; और जिन्होंने इन्तिज़ाममें मदद दी, उनको उ़म्दह उ़ह्दे बतौर इन्आ़मके दियेगये; और वे ख़ैरख़्वाहीसे नव्वाबको मदद देते हैं."

"नव्वाबकी सलामी- ११ मार्चको इत्तिला मिली, कि रियासत कोटाकी हुदूद के अन्दर ९ तोपकी सलामी मन्ज़ूर हुई है, मैंने कहा, कि क़िलेसे एक सलामी सर हो, तो फ़ौरन् इसकी तामील हुई."

"जेल और डिस्पेन्सरी- मैं और नव्वाब जेल और डिस्पेन्सरीको देखने गये. शिफ़ाख़ानह दुरुस्तीके साथ है, और बहुतसे मरीज़ आते हैं; नेटिव डॉक्टर की लोग बहुत तारीफ़ करते हैं. जेलमें किसी क़द्र सफ़ाई है, और ७० क़ैदियों मेंसे क़रीब आधोंके ज़ेर तज्वीज़ हैं."

"अब कार्रवाई बख़ूबी चल निकली है, पैमाइशका बन्दोबस्त किया गया है, इससे ज़मीनका बन्दोबस्त भी होजायेगा. सड़क, मद्रसे, शहर सफ़ाई और नलोंके बननेका बन्दोबस्त होता है; फ़ौज भी घटाई जावेगी. हिसाब उ़म्दह तरीक़ेपर रक्खा जावेगा; शिकायतें रफ़ा होंगी, और ख़ालिसेकी जो ज़मीन लोगोंने ग़ैर वाजिबी

तौरसे दबाली है, उसके छुड़ानेका बन्दोबस्त होगा. ग़ैर वाजिबी ख़र्च घटाया जायेगा; क़र्ज़ अदा करनेके लिये सालानह क़िस्त क़ाइम कीजायेगी; और आम तौरसे रियासतका इन्तिज़ाम सुधारा जायेगा; लेकिन यह सब काम एक दिनमें नहीं होसके. शुरूमें तो बड़ी सख़्त मिह्नत करनी पड़ेगी. इस साल हम इतनीही रिपोर्ट कर सके हैं, कि बद इन्तिज़ामीका आख़ीर हुआ, और दुरुस्तीकी तरफ़ कार्रवाई शुरू हुई; लेकिन् तरक़्क़ीकी बाबत हम दूसरे साल रिपोर्ट करेंगे."

नव्वाब वज़ीरने कोटेकी अगली सौ परगनोंकी तक़्सीम तोड़कर कमके कुल मुल्कमें आठ निज़ामतें क़ाइम कीं, जिनके मातहत मालके लिये चौबीस तह्सीलदार और फ़ौज्दारी इन्तिज़ामके लिये सत्ताईस थानहदार मुक़र्रर किये गये. नव्वाबने इन्तिज़ामी नक़्शह बनाकर तमाम इलाक़हमें दौरा किया, जिससे रिआयाको बहुत कुछ तसल्ली और इन्साफ़ हासिल हुआ. सद्रकी अदालतें फ़ौज्दारी और दीवानी वग़ैरहका अपील अदालत अपीलमें और उसका मुराफ़ा महकमह ख़ास मुसाहिबतमें होता है. तमाम काम पांच क़िस्मों याने अदालत, जमा और ख़र्च, फ़ौज, पोलिस, और इलाक़ह ग़ैरमें बंटा हुआ है. इसमें कोई शक नहीं, कि यह इन्तिज़ाम जारी रहे, तो दूसरी रियासतोंके लिये भी नज़ीर होजावेगा.

क़र्ज़ ख़्वाहोंने नया इन्तिज़ाम होनेपर नव्वे लाख रुपयेका दावा पेश किया, सर्कारी हुक्मसे तह्क़ीक़ात कीगई, तो मालूम हुआ, कि साहूकारोंने सूदपर सूद लगाने और वुसूली रक़मका सूद मुजा न देनेसे बहुत लालच फैलाया है. आख़िर मुन्सिफ़ानह तौरपर साठ लाख रुपया क़र्ज़ ख़्वाहोंका दुरुस्त होकर फ़ी रुपया ॥-)५ नौ आने सात पाईके हिसाबसे देनेकी तज्वीज़ कीगई. बहुतसे राज़ी हुए, और कुछ नाराज़ रहे; आख़िर बयालीस लाख अठाईस हज़ार तीन सौ उन्नीस रुपया चौदह आने दो पाईपर फ़ैसलह हुआ, जिसमेंसे नौ लाख सत्तानवे हज़ार नव्वे रुपये तेरह आने आठ पाई ई० १८७७ ता० ७ मई [वि० १९३४ ज्येष्ठ कृष्ण ९ = हि० १२९४ ता० २२ रबीउस्सानी] तक अदा होगया, और बाक़ीके लिये सर्कारी हुक्मसे छः लाख रुपया सालानह अदा करनेकी क़िस्त क़रार पाई. नव्वाबने अपनी आख़ीर दो बरसकी रिपोर्टमें लिखा, कि दो सालकी मुद्दतमें सवा पैंतालीस लाखके क़रीब रुपया तह्सील हुआ, और साढ़े उन्तालीस लाखसे कुछ ज़ियादह ख़र्च हुआ; इसके सिवा सवा पन्द्रह लाख रुपयेके क़रीब पुराने क़र्ज़ और बाक़ी तन्ख़्वाहमें दिये गये. नव्वाबने राजका मामूली ख़र्च सवा सत्ताईस लाख रुपया सालानहसे साढ़े अठारह लाख रुपया सालानहके अन्दाज़ ख़ाइम करनेसे नौ लाख सालानहके क़रीब तख़्फ़ीफ़ की.

बन्दोवस्त मालगुज़ारीके वास्ते मुन्शी नियाज़ अह्मद, सर्कारी एक्स्ट्रा असिस्टंट कमिश्नरको और तामीरातके इन्तिज़ामपर मिस्टर ह्यूस, सिविल इन्जिनिअरको मुक़र्रर कियागया. शिफ़ाखानह, टीकालगाना, जेलखानह, शहर सफ़ाई, मद्रसह, अक्सर रिआया के फ़ाइदहके काम क़ाइदहके साथ जारी किये गये; लेकिन् इस मुल्कके लोग काहिली और वेवकूफ़ीसे आरामकी वातोंकी तरफ़ कम तवज्जुह करते हैं. थोड़े अरसहमें नव्वाब मुख़्तारने वहुत उम्दह इन्तिज़ाम राजका किया था, लेकिन् रईसके पास रहने वाले खुशामदी लोगोंने आपसमें रंज करादिया; इसलिये ईसवी १८७६ ता० १ सेप्टेम्बर [वि० १९३३ भाद्रपद शुक्ल १३ = हि० १२९३ ता० १२ शअ्बान] को मुम्ताज़ुद्दौलह नव्वाब सर फ़ैज़अ्लीखां वहादुर, के० सी० एस० आइ० ने ढाई वरससे कुछ ज़ियादह कोटेके इन्तिज़ामपर मुक़र्रर रहकर वहांकी मुख़्तारीसे अंग्रेज़ी सर्कारमें इस्तिअ्फ़ा दाखिल किया.

कोटा एजेन्सी.
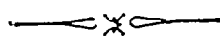
नव्वाव सर फ़ैज़अ्लीखांके वाद अव्वल कप्तान एवट, क़ाइम मक़ाम काम करते रहे, विक्रमी १९३३ माघ कृष्ण ५ [हि० १२९३ ता० १९ ज़िल्हिज = ई० १८७७ ता० ५ जैन्युअरी] को मेजर पाउलेट, पोलिटिकल एजेण्ट और सुपरिन्टेन्डेन्ट मुक़र्रर होकर कोटेमें दाखिल हुए. उन्होंने कई बार इलाक़हका दौरा करके रईसकी ख्वाहिशके मुवाफ़िक़ एक महकमह पंचायत मुक़र्रर किया, जिसमें तीन जागीरदार और एक वाहरका अह्लकार पंडित रामदयाल तईनात हुआ; फ़ौज्दारी, दीवानीमें कुछ तर्मीम होकर इलाक़ेकी निज़ामतें दुगनी करदी गईं, लेकिन् अदालतों और हाकिमोंके क़ाइदे और इख्तियार, जो नव्वाव मुख़्तारने जारी किये थे, वदस्तूर वर्क़रार रहे.

विक्रमी १९३७ [हि० १२९७ = ई० १८८०] में मेजर वेले, पोलिटिकल एजेण्ट होकर कोटे पहुंचे, उन्होंने कई वर्ष तक उम्दह बन्दोवस्त किया. विक्रमी १९४६ [हि० १३०६ = ई० १८८९] में मेजर वेले, चन्द महीनोंकी रुख्सतपर विलायत गये, और उनके एवज़ कर्नेल ए० डब्ल्यू० रॉवर्टस्, क़ाइम मक़ाम पोलिटिकल एजेण्ट होकर कोटेमें आये. विक्रमी १९४६ ज्येष्ठ शुक्ल १३ [हि० १३०६ ता० ११ शव्वाल = ई० १८८९ ता० ११ जून] को महाराव शत्रुशाल

दूसरेने साढ़े सात वर्ष बाइख़्तियार, और साढ़े चौदह वर्ष बेइख़्तियार रहकर पचास वर्षसे ज़ियादह उमरमें बीमारीसे (१) इन्तिक़ाल किया.

महारावकी ज़िन्दगीमें उनकी पसन्दके मुवाफ़िक़ कोटरा महाराज छगनसिंहके दूसरे बेटे उदयसिंह राजके वारिस क़रार दियेजाकर उम्मेदसिंह नामसे मश्हूर कियेगये.

१८—महाराव उम्मेदसिंह—२.

इनका जन्म विक्रमी १९३० भाद्रपद शुक्ल १३ [हि० १२९० ता० १२ रजब = ई० १८७३ ता० ५ सेप्टेम्बर] को हुआ. यह महाराव, जिनको बावन महाराव शत्रुशाल्ने एजेएटी कोटा और रेज़िडेन्सी राजपूतानहको अपनी ज़िन्दगीमें ख़रीते लिखदिये थे, विक्रमी १९४६ ज्येष्ठ [हि० १३०६ शव्वाल = ई० १८८९ जून] को कोटेके रईस माने गये; चन्द रोज़ बाद अंग्रेज़ी सर्कारकी मंज़ूरी आनेपर उनकी गद्दीनशीनीकी रस्म अदा कीगई. विक्रमी १९४६ श्रावण [हि० १३०६ ज़िल्हिज = ई० १८८९ शुरू अगस्त] में दर्बार मेवाड़की तरफ़से टीकेका सामान लेकर मैं (कविराजा श्यामलदास) कोटे गया था, और महाराणा फ़त्हसिंह साहिबकी ज्येष्ठ राजकुमारी नन्दकुंवर बाईकी सगाई महाराव उम्मेदसिंहके साथ पुख़्तह कर आया. इसका कुल हाल उक्त महाराणा साहिबके बयानमें सविस्तर लिखा जायेगा. महाराव उम्मेदसिंहको मैंने देखा, वे बाल नम्र वयस्थांके मध्य, हंसत मुख, बुद्धिमान और अच्छे सजीले स्फटिकके मानिन्द मालूम होते हैं; परन्तु अब जिस रंग ढंगमें समीपी लोग लगावेंगे, वैसेही होंगे.

इन महारावके लिये मेओ कॉलेज अजमेरमें तालीमकी ग़रज़से कुछ मुद्दत तक दाख़िल होनेकी तज्वीज़ अंग्रेज़ी सर्कारसे हुई है.

---
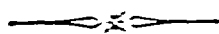
(१) बहुतसे लोग इनके ज़हरसे मरनेकी अफ़्वाहें उड़ाते हैं, और पीला धायभाई और रामचन्द्र वैद्यको इसी इल्ज़ाममें क़ैद कियागया था; वैद्य क़ैदमें ही मरगया, धायभाई मौजूद है; लेकिन जैसी चाहिये, वैसी पुख़्तह सुबूती न गुज़री.

कोटेका अह्दनामह.

एचिसन् साहिबकी अह्दनामोंकी किताब, तीसरी जिल्द, पहिला भाग.

अह्दनामह नम्बर- ५५.

अह्दनामह ऑनरेबल ईस्ट इन्डिया कम्पनी और महाराव उम्मेदसिंह बहादुर राजा कोटा और उनके वारिस और जानशीनोंके दर्मियान, बज़रीए राज राणा ज़ालिमसिंह बहादुर मुन्तज़िम कोटाके, ईस्ट इन्डिया कम्पनीकी तरफ़से हिज़ एक्सिलेन्सी मोस्ट नोबल दि मार्किस ऑफ़ हेस्टिंग्ज़, के० जी० गवर्नर जेनरलके दिये हुए इख्तियारातके मुवाफ़िक़ मिस्टर चार्ल्स थियोफ़िलस मेटकाफ़, और महाराव उम्मेदसिंहकी तरफ़से महाराज शिवदानसिंह, साह जीवणराम, और लाला फूलचन्दकी मारिफ़त, जिनको उक्त महाराव और उनके मुन्तज़िम राजराणाकी तरफ़से पूरा इख्तियार मिला था, तै हुआ.

पहिली शर्त- गवर्मेण्ट अंग्रेज़ी और महाराव उम्मेदसिंह और उनके वारिसों और जानशीनोंके दर्मियान दोस्ती, इत्तिफ़ाक़ और खैरख्वाही हमेशह क़ाइम रहेगी.

दूसरी शर्त-हरएक सर्कारके दोस्त व दुश्मन, दोनों सर्कारोंके दोस्त व दुश्मन समझे जायेंगे.

तीसरी शर्त- गवर्मेंट अंग्रेज़ी कोटेकी रियासत और मुल्कको अपनी हिफ़ाज़तमें रखनेका वादह करती है.

चौथी शर्त- महाराव और उनके वारिस और जानशीन, गवर्मेंट अंग्रेज़ीके साथ इताअत और इत्तिफ़ाक़ रक्खेंगे, और उसके बड़प्पनका लिहाज़ रक्खेंगे, और किसी रईस या रियासतसे, जिनसे अब राह रस्म है, मिलावट नहीं रक्खेंगे.

पांचवीं शर्त- महाराव और उनके वारिस और जानशीन गवर्मेंट अंग्रेज़ीकी रज़ामन्दीके बगैर किसी रईस या रियासतके साथ इत्तिफ़ाक़ या दोस्ती न रक्खेंगे, परन्तु उनकी दोस्तानह लिखापढ़ी दोस्तों और रिश्तहदारोंके साथ जारी रहेगी.

छठी शर्त-महाराव और उनके वारिस और जानशीन किसीपर ज़ियादती नहीं करेंगे, और कदाचित किसीसे किसी तरह तक्रार होजायेगी, तो उसका फ़ैसलह गवर्मेंट अंग्रेज़ीकी मारिफ़त होगा.

सातवीं शर्त- कोटेकी रियासतवाले, जो खिराज मरहटा, (पेश्वा, सेंधिया, हुल्कर और पुंवार) को देते थे, वही अलह्दह तफ्सीलके मुवाफ़िक़ गवर्मेंट अंग्रेज़ीको दिह्ली मक़ाममें दिया करेंगे.

आठवीं शर्त- कोई दूसरी रियासत कोटेकी रियासतसे ख़िराज नहीं मांगेगी; अगर कोई मांगेगा, तो गवर्मेंट अंग्रेज़ी उसको समझावेगी.

नवीं शर्त- कोटेकी फ़ौज गवर्मेंट अंग्रेज़ीके मांगनेपर उसको अपनी हैसियतके मुवाफ़िक़ दीजायेगी.

दसवीं शर्त- महाराव और उनके वारिस और जानशीन अपने मुल्कके पूरे मालिक रहेंगे, और अंग्रेज़ी दीवानी, फ़ौज्दारी वग़ैरहकी हुकूमत इस राजमें दाख़िल न होगी.

ग्यारहवीं शर्त- यह ग्यारह शर्तोंका अह्दनामह दिल्लीमें होकर उसपर मुहर व दस्तख़त एक तरफ़से मिस्टर चार्ल्स थियोफ़िलस मेटकाफ़ और दूसरी तरफ़से महाराजा शिवदानसिंह, साह जीवणराम और लाला फूलचन्दके हुए; और उसकी तस्दीक़ हिज़ एक्सिलेन्सी दि मोस्ट नोब्ल गवर्नर जेनरल और महाराव उम्मेदसिंह और उनके मुन्तज़िम राज राणा ज़ालिमसिंहसे होकर आजकी तारीख़से एक महीनेके अ़र्सेमें आपसमें नक़्लें एक दूसरेको दीजायेंगी. मक़ाम दिह्ली ता० २९ डिसेम्बर सन् १८१७ ई०.

(दस्तख़त) सी० टी० मेटकाफ़.

मुहर.

महाराव राजा उम्मेदसिंह बहादुर.

राज राणा ज़ालिमसिंह.

महाराजा शिवदानसिंह.

फूलचन्द.

(दस्तख़त) हेस्टिंग्ज़.

यह अह्दनामह तस्दीक़ किया, हिज़ एक्सिलेन्सी गवर्नर जेनरल बहादुरने मक़ाम ऊचर कैम्पमें, ता० ६ जेन्युअरी सन् १८१८ ई० को.

(दस्तख़त) जे० एडम,
सेक्रेटरी, गवर्नर जेनरल.

तफ़्सील ख़िराजकी, जो अबतक मरहटा रईसोंको दियाजाता था:-

१ कोटा.
२ सात कोटड़ी.
३ शाहाबाद.

१ कोटेका ख़िराज

नक़्द .... रुपये २०००००

अस्वाव ……	रुपये	१०००००
कुल ……	”	३०००००
नुक़्सानी अस्वाव ……	”	२००००
नक्द ……	”	२८००००

दो लाख अस्सी हज़ार चांदोड़ी,
उज्जैनी और इन्दोरी रुपये.
वट्टा वावत ऊपर लिखेहुए सिक्के
आठ रुपया सेकड़ाके हिसावसे …… ” २२४००

वाक़ी …… ” २५७६००

दो लाख सत्तावन हज़ार छः सो गुमानशाही रुपये, जिसके दिल्लीके रुपये दो लाख चवालीस हज़ार सात सो वीस.

तफ़्सील ऊपर लिखे रुपयोंकी.

हिस्सह सेंधिया.

नक्द ……	रुपये	७७०००
अस्वाव ……	”	३८५००
कुल रुपये	”	११५५००
नुक्सानी अस्वाव ……	”	७७००
नक्द ……	”	१०७८००

एक लाख सात हज़ार आठ सो उज्जैनी,
चांदोड़ी और इन्दोरी रुपये.
वट्टा वावत ऊपर लिखे सिक्के आठ
रुपया सेकड़ाके हिसावसे …… ” ८६२४

वाक़ी गुमानशाही …… ” ९९१७६

हुल्करका हिस्सह उसी क़द्र है, जिस क़द्र सेंधियाका.

पुंवारका हिस्सह.

नक्द ……	रुपये	४६०००
अस्वाव ……	”	२३०००

कुल रुपये	" ६९०००
नुक़्सानी अस्बाब	" ४६००
नक़्द	" ६४४००
वट्टा आठ रुपया सैकड़ाके हिसाबसे	" ५१५२
बाक़ी गुमान शाही	" ५९२४८.

२— सात कोटड़ियोंका खिराज.

नक़्द	बूंदीके रुपये	२२१५८
वट्टा पांच रुपया सैकड़ा	"	११०८
बाक़ी	"	२१०५०
इक्कीस हज़ार पचास गुमानशाही रुपये जिसके सिक्कह दिहली	"	१९९९७॥)

तफ़्सील.

आंतरोदा	बूंदीके रुपये	३८००
वट्टा पांच रुपया सैकड़ा	"	१९०
	गुमानशाही "	३६१०
सेंधियाका हिस्सह	रुपये " १८०५	
हुल्करका हिस्सह	" १८०५	
वल्वन	बूंदीके रुपये	१०००
वट्टा	"	५०
	गुमानशाही "	९५०
सेंधियाका हिस्सह	रुपये ४००	
हुल्करका हिस्सह	" ४००	
पुंवारका हिस्सह	" १५०	
करवाड़, गैंता और पीपलदा	बूंदीके रुपये "	३५६०
वट्टा पांच रुपया सैकड़ा	"	१७८
	गुमानशाही रुपये "	३३८२
सेंधियाका हिस्सह	रुपये १५२०	
हुल्करका हिस्सह	" १५२०	
पुंवारका हिस्सह	" ३४२	

इन्द्रगढ़ और खातोली,— दस गांव हुल्कर और

सेंधियाके ठेकेदारोंके क़ब्ज़ेमें हैं .... बूंदीके रुपये १३७९८
वट्टा पांच रुपया सैकड़ा ... ... " ६९०
गुमानशाही " १३१०८

३- शाहाबादका ख़िराज.

यह ख़िराज अबतक पेश्वाको दिया जाता था. उसकी ठीक तादाद मालूम नहीं हुई, परन्तु अन्दाज़न् २५००० रुपया मालूम हुआ, जिसमें आधा नक़्द और आधा अस्बाब दिया जाता था.

(दस्तख़त) सी० टी० मेट्काफ़. मुहर.

महाराव राजा उम्मेदसिंह बहादुर.
राज राणा ज़ालिमसिंह.
महाराजा शिवदानसिंह.
फूलचन्द.

ततिम्मह शर्त, उस अ़ह्दनामहकी, जो गवर्मेंट अंग्रेज़ी और रियासत कोटाके आपसमें ता० २६ डिसेम्बर सन् १८१७ ई० को हुआ था.

दोनों फ़रीक़ यह मंज़ूर करते हैं, कि महाराव उम्मेदसिंह राजा कोटाके बाद यह रियासत उनके वलीअ़ह्द बड़े बेटे महाराज कुंवर किशोरसिंहको और उनके वारिसोंको सिल्सिलहवार हमेशहके वास्ते मिलेगी, और रियासतके कामोंका कुल इन्तिज़ाम राज राणा ज़ालिमसिंह और उनके पीछे उनके बड़े बेटे कुंवर माधवसिंह और उनके वारिसोंके तअ़ल्लुक़ सिल्सिलहवार हमेशहके लिये रहेगा.

मक़ाम दिह्ली ता० २० फ़ेब्रुअरी सन् १८१८ ई०
दस्तख़त- सी० टी० मेट्काफ़.

महाराव राजा उम्मेदसिंह बहादुर.
राज राणा ज़ालिमसिंह.
महाराजा शिवदानसिंह.
फूलचन्द.
जीवणराम.

याद्दाश्त- इस ततिम्मह शर्तको हिज़ एक्सिलेन्सी गवर्नर जेनरल बहादुरने मक़ाम

लखनऊमें तस्दीक़ किया. ता० ७ मार्च सन् १८१८ ई० को.

(दस्तख़त) जे० ऐडम.

सेक्रेटरी, गवर्नर जेनरल.

अहदनामह नम्बर ५८.

गवर्नर जेनरल इन कॉन्सिलकी मुहरी और दस्तख़ती सनद,
कोटाके महाराव उम्मेदसिंहके नाम.

हाल और आगेको होनेवाले गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीके कुल अहलकार मालूम करें, गवर्मेण्ट अंग्रेज़ी और कोटाके महाराव उम्मेदसिंहके आपसमें, जो दोस्ती क़ाइम हुई है, और जो जो ख़िद्मतें गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीकी उसने की हैं, वे भी ज़ाहिर और साबित हैं, इस सबबसे उसके बदलेमें मोस्ट नोबल मार्किस ऑफ़ हेस्टिंग्ज़, गवर्नर जेनरल इन कॉन्सिलने कप्तान टॉड साहिबके कहनेपर नीचे लिखे मक़ाम उक्त महारावको दिये; और शाहाबादका ख़िराज, जो दिल्लीमें तै पाये हुए अहदनामह ता० २६ डिसेम्बर सन् १८१७ ई० के मुवाफ़िक़, महारावसे लिये जाने लाइक़ था, मुआफ़ किया गया. उसको महाराव और उसके वारिस व जानशीन हमेशह अपने ख़र्चमें लावें.

इस वास्ते महाराव अपनेको मालिक और हाकिम इन मक़ामोंका, और रअय्यतको अपना शरीक हाल जानकर अपना ताबेदार समझें. इसमें कोई दख़्ल नहीं करेगा.

पर्गनह डीग, पर्गनह पंच पहाड़, पर्गनह आहोर, पर्गनह गंगराड़. यह सनद मुहरी व दस्तख़ती गवर्नर जेनरल इन कॉन्सिलकी ता० २५ सेप्टेम्बर सन् १८१९ ई० को मिली.

नम्बर- २४.

महाराव किशोरसिंहके मुहरी व दस्तख़ती इक़ारनामहका तर्जमह,
मक़ाम नाथद्वारा, मिती मार्गशीर्ष कृष्ण १३,
मुताबिक़ ता० २२ नोवेम्बर सन् १८२१ ई०.

मैं (महाराव किशोरसिंह) बहुत अफ़्सोस करता हूं, कि मैंने जो काम साल गुज़श्तहमें किया है, और ख़ासकर थोड़े अरसहसे, जिसका कारण मैं हुआ हूं, और उसी चालकी बुराइयोंसे भी ख़ूब वाक़िफ़ हुआ, चाहे वह बाबत गवर्मेंटके नेक

खयाल या कोटा रियासतकी बिह्तरी या खास अपनी खुशी व बिह्तरीकी थी; और आजकी तारीख इन नीचे लिखी हुई शर्तोंपर अपनी मुहर व दस्तखत करता हूं, जिसके मुवाफ़िक़ मैं आगेको काम करूंगा. इस मेरे धर्म कर्मका श्री नाथजी गवाह है. जो मैं इन शर्तोंसे फिरूं, तो आइन्दह गवर्मेंट अंग्रेज़ीकी मिहर्बानीका हक्दार नहीं हूं.

(१)- जो कुछ गवर्मेंट अंग्रेज़ी हुक्म देगी, मैं खुशीसे उसकी तामील करूंगा; और जो कुछ आप (कप्तान टॉड साहिब) की मारिफ़त मेरे लिये आगेके फ़ाइदे और मज्बूतीकी नसीहत होगी, उसमें कुछ उज्र नहीं करूंगा.

(२)- दिह्लीके अह्दनामहके मुवाफ़िक़ मेरे नामसे और मेरे जानशीनोंके नामसे नानाजी ज़ालिमसिंह और उनके वारिस और जानशीन रियासतके कुल कामोंका इन्तिज़ाम, जैसे कि मेरे बाप राजा उम्मेदसिंहकी ज़िन्दगीमें करते थे, करेंगे; कुल कामों, मुल्की, माली, फ़ौजी, क़िले और बहाली बर्तरफ़ी अह्लकारोंकी बाबत उनको इख्तियार रहेगा, और मैं उसमें दख्ल नहीं दूंगा.

(३)- फ़सादी लोगोंको सज़ा दी गई, और मेरे बद सलाहकार लोग अलग कर दियेगये, या मैंने आपके हुक्मके मुवाफ़िक़ मौकूफ़ करदिये; वे ये थे:- गोवर्द्धनदास, सैफ़अली, महाराजा बलवन्तसिंह, क़ाज़ी मिर्ज़ा मुहम्मदअली, शैख़ हबीब वग़ैरह. ये और दूसरे, कि जिन्होंने मुझे गुमराह किया था, उन सबसे मैं हर्गिज़ आइन्दह किसी तरहका सरोकार नहीं रक्खूंगा.

(४)- मुझे जिस जिस तरहकी खास सिपाह जिस जिस क़द्र रखनेकी इजाज़त दीजावेगी, उससे ज़ियादह लश्कर हर्गिज़ भरती करनेकी कोशिश नहीं करूंगा; और रियासती कामोंमें हर्ज करनेवाले और दख्ल देने वाले लोगोंको न अपने दर्बारमें रक्खूंगा, न उनसे किसी तरहका तअल्लुक़ रक्खूंगा.

तफ्सील नम्बर- १.

तफ्सील रक़म मदद खर्च, जो हर महीनेके बीचमें कोटाके महाराव किशोरसिंहके गुज़ारेके लिये और उनके खानगी मुलाज़िमों और सिपाह वग़ैरहके लिये मुन्तज़िम रियासत कोटा महारावको महा बिद १ संवत् १८७८ मुताबिक़ ता० ८ जैन्युअरी सन् १८२२ ई० से दियाकरेंगे.

नम्बर.		माहवार.			सालानह.		
		रु०	आ०	पाई.	रु०	आ०	पा०
१	मन्दिर श्री ब्रजराजजीका	४००-	०-	०	४८००-	०-	०
२	खास पुण्यार्थ (खैरात)	०-	०-	०	२२००-	०-	०
३	रसोई पन्द्रह रुपया रोज़	४५०-	०-	०	५४००-	०-	०

नम्बर		माहवार.	सालानह.
	ड्योढ़ी (महलके नौकरों) का ख़र्च-		
४	गहना.	०	१३०६-९-९
५	राणियोंका ज़ेवर	०	१२०००-०-०
६	महारावजीके महलमें पहरनेको पोशाक और ख़ैरात	०	१८०००-०-०
७	जैब ख़र्च	२०००	२४०००-०-०
८	शागिर्द पेशह (गुलाम)	१०००	१२०००-०-०
९	फ़ोसला	०	६७९६-८-०
१०	फ़ीलख़ानह	०	३२७६-९-०
११	रथ, गाड़ी ज़नानी सवारी	०	११०३-५-६
१२	महाजान, और पालकीके कहार	०	१२३९-०-०
१३	महलका चौकी पहरा-		
	एक सौ सवार रु० २५ माहवार	२५००	३००००-०-०
	दो सौ पियादे मुताबिक़ तफ़्सील हिन्दी दो सूबहदार फ़ी नफ़र २० रुपये, दो जमादार फ़ी नफ़र १२ रु०, निशानबर्दार ८, हवालदार ८, सिपाही फ़ी नफ़र ७ रु०.	१४६५	१७५८०-०-०
१४	ज़हाइब यानी ऊंट ५	०	३१७-२-०
१५	रेगिस्तानके ऊंट ४	०	४८८-७-९
१६	ईंधन याने लकड़ी वग़ैरह	०	७२०-०-०
१७	घास वग़ैरह	०	८५०-०-०
१८	रौशनाई, तेल, चराग़, सियाही वग़ैरह	०	१८००-०-०
१९	रंगाई कपड़े वग़ैरहकी	०	२०००-०-०
२०	अंबानत याने मरम्मत मकानात	२५०	३०००-०-०
२१	घोड़े, बैल, ऊंटकी ख़रीद तावे	०	६०००-०-०
२२	मरम्मत पर्दा, शतरंजी, क़ानात, डेरा वग़ैरह	०	१०००-०-०
२३	दवाख़ानह, दवा वग़ैरह ख़रीदमें	०	४००-०-०
२४	लौंडा ख़ानह	०	३००-०-०
	कुल ज़र सालियानह		१६४८७७-१०-०

रु० आ० पा०

या ख़र्च माहवारी सिक्कह हाली कोटा १३७३९ - १२ - १०

(दस्तख़त) माधवसिंह.

तफ्सील मदद ख़र्च, जो मुन्तज़िम रियासत कोटा, पृथ्वीसिंहके बेटे बापूलाल और उनके ख़ानदानको हर महीनेके बीचमें दियाकरेंगे- माह वदि १ संवत् १८७८, मुताबिक़ ता० ८ जैन्युअरी सन् १८२२ ई० से-

सालियानह कोटाका हाली रुपया	१८००० - ० - ०
या माहवारी	१५०० - ० - ०

(दस्तख़त-) माधवसिंह.

वे शर्तें, जो कप्तान टॉड साहिबने वास्ते रहनुमाई और पर्वरिश महाराव किशोरसिंह और उनके वारिसोंके तज्वीज़ कीं, और जिसपर कुंवर माधवसिंहने दस्तख़त किये :-

१ - महल व मकानात सैर व बाग़ात वाके़ शहर कोटा और गिर्द नवाह कोटा, याने शहरके महल, महलात उम्मेदगंज, रंगबाड़ी, जगपुरा व मुकुन्दरा; और बाग़ात जो बृजराजजी, गोपालनिवास और बृजविलास नामसे मश्हूर हैं, ये सब महारावके क़ब्ज़हमें रहेंगे; इसमें इख़्तियार महारावका रहेगा; और कुछ दख़्ल मुल्कके बन्दोबस्त करने वालेका न रहेगा.

उन दीवारोंकी हद्दके अन्दर, जो महलोंके लिये शहरमें जुदा खिंची हुई हैं, अक्सर मकान हैं, कि जिनमें राज राणाका ख़ानदान और दूसरी औरतें रहती हैं, वहां पर, वह गली जो नये बुर्जसे खत्री दर्वाज़ेतक है, और जिस दर्वाज़ेको पानी दर्वाज़ा भी कहते हैं, बिल्कुल दोनोंका रास्तह जुदा करदेता है. पस लाज़िम है, कि दोनों तरफ़ वाले अपनी अपनी हद्दोंसे बाहर न जावें- पानी दर्वाज़ा दोनोंमें शामिल है, मगर सिवाय हथियार बन्द सिपाहियोंके पानी लेनेके वास्ते और कोई न जावे; और यह मुन्तज़िम रियासत सिवाय पचास चौकीदारानके वास्ते हिफ़ाज़त उन मक़ामात और कूचेके मुक़र्रर न करेगा.

२ - बन्दोबस्त वास्ते गुज़र औक़ात महाराव और उसके ख़ानदान वग़ैरहके बमूजिब तफ्सील नम्बर १ के तादादी कोटा हाली रुपया एक लाख चौंसठ हज़ार आठ सौ सतहत्तर दस आना तीन पाई सालियानह, या मुब्लिग़ तेरह हज़ार सात सौ उन्तालीस रुपया बारह आना नौ पाई माहवारी दिया जावेगा, और यह रुपया हर आधा महीना गुज़रनेके बाद अमानतके तौरपर हर महीनेमें मारिफ़त

महाजन मुक़र्ररह राजराणाके दियाजावेगा; उसकी रसीद महाराव देकर एक नक़्ल उसकी बख़िद्मत साहिब एजेण्ट सर्कार अंग्रेज़ीके ब तौर सनद रसीद रुपयोंके भेजेंगे-

ख़ास बाइस इस रुपयेके ख़र्चके, जिनका ज़िक्र तफ़्सील नम्बर १ में लिखा है, कुल ज़ेर महाराव बतौर उनके ख़ानगी नौकरों वग़ैरहके और सिपाहियान चौकी पहरा महलात वग़ैरहके हैं.

(३)- महारावके ख़ानदानमें शादी या बालक पैदा होनेकी रस्म सब शान व शौकत मारिफ़त मुन्तज़िम रियासतके होगी, जैसे कि साबिक़ ज़मानहमें होती थी; और अगर महारावके वारिस पैदा होंगे, तो उनकी पर्वरिशके वास्ते जुदा बन्दोबस्त ख़र्चका रस्मके मूजिब मुनासिब कियाजावेगा.

(४)- महाराव और उनके ख़ानदानकी इ़ज़्ज़त व हुर्मत साबिक़ दस्तूर जारी रहेगी, जैसे कि पहिले थी. महाराव वही रस्म त्यौहार वग़ैरह जैसे दशहरा, जन्माष्टमी वग़ैरह हैं, अदा करेंगे, जो पहिले करते थे; और दान पुण्य भूरसी वग़ैरह पहिले मूजिब जारी रहेंगे.

(५)- जब महाराव हवाख़ोरी या शिकारको सवारी करेंगे, तो वही सब अ़लामात राजकी उनके साथ रहेंगी, जो पहिलेसे उनके साथ रहती थीं; और अर्दलीके सिपाही साथ रहेंगे.

(६)- एक सौ सवार और दो सौ पियादे हस्ब तफ़्सील मुन्दरजे नम्बर १ ऊपर लिखीहुई ख़ास चौकी और महलके जो पहरे वग़ैरहके वास्ते हैं, वे बिल्कुल ज़ेर हुक्म महारावके रहेंगे, और कोई उनमें मुदाख़लत नहीं करेगा, और उन सबका, जिनका ज़िक्र बनाम निहाद बाईस ख़र्च रक़म मदद ख़र्च व बसर औक़ातके दर्ज है, मिस्ल मुलाज़िमान ख़ानगी व महलात व दीगर मुतअ़ल्लिक़ान महलातके महाराव मालिक कुलका रहेगा.

(७)- बतौर मदद ख़र्च बापूलालजी वलद पृथ्वीसिंहके और उसके ख़ानदान और दूसरे वसीलह रखने वालोंके मुब्लिग़ अठारह हज़ार रुपया सालियानह, या पन्द्रह सौ रुपया हाली माहवारी मुक़र्रर हुआ है. यह रुपया जिस तरह और जिस वक़् मदद ख़र्च महारावका अदा होगा, उसी तरह अदा होता रहेगा; और पहिली शादीके वक़् उनको मुनासिब ख़र्च मुन्तज़िम रियासत देगा.

(८)- सिपाही या मुत्सद्दी, जिनको मुन्तज़िम रियासतने बर्ख़ास्त किया होगा, या जो उसकी नौकरी छोड़कर चले गये होंगे, उनको महाराव अपनी चाकरीमें न रक्खेंगे; और इसी तरह महारावके बर्ख़ास्त किये हुए या भागे हुए मुलाज़िमोंको मुन्तज़िम रियासत अपने पास नहीं रक्खेगा.

(९)- एक मोतबर आदमी साहिब एजेएट गवर्मेएटकी तरफ़से महारावके पास रहाकरेगा, और यह शख़्स आम किताबत या बातोंमें वकील रहेगा.

(१०)- जो क़र्ज़ह महारावने इस फ़सादके लिये लिया होगा, या वह इसके बाद लेगा, उसकी ज़िम्मह्वारी रियासतकी नहीं होगी.

मिती फागुन वदी १ संवत् १८७८ मुताबिक़ ता० ७ फ़ेब्रुअरी सन् १८२२ ई०.

यहां दस्तख़त माधवसिंहके इस इबारतसे हैं:- "जो कुछ लिखागया है, उसमें फ़र्क़ न होगा."

अह्दनामह नम्बर ५८.

अह्दनामह दर्मियान गवर्मेएट अंग्रेज़ी और महाराव रामसिंह कोटाके.

शर्त पहिली- कोटाके रियासती कामोंके इन्तिज़ाम छोड़नेके बाइस राज राणा मदनसिंहका हक़, जो मुवाफ़िक़ ततिम्मह शर्त अह्दनामह, जो दिह्लीमें हुआ, राजराणा ज़ालिमसिंह और उसके वारिसों और जानशीनोंका था, महाराव रामसिंह उस शर्तके रद्द होजानेमें मंजूरी देते हैं.

शर्त दूसरी- गवर्मेएट अंग्रेज़ीकी रज़ामन्दीसे महाराव इक़ार करते हैं, कि नीचे लिखी तफ्सीलके मुवाफ़िक़ पर्गने राजराणा मदनसिंह और उसके वारिसों और जानशीनोंको दें.

शर्त तीसरी- महाराव और उनके वारिस और जानशीन नीचे लिखे पर्गनोंके हेर फेरमें, जो ज़रूरत हो, नीचे लिखी तफ्सीलके मुवाफ़िक़ दूर करदेंगे:-

शर्त चोथी- महाराव अपनी और अपने वारिसों और जानशीनोंकी तरफ़से इक़ार करते हैं, कि मामूली ख़िराज, जो अब तक कोटाकी तरफ़से गवर्मेएट अंग्रेज़ीको दियाजाता है, देते रहेंगे; अलावह ८०००० कल्दार रुपयोंके, जिनकी बाबत गवर्मेएट अंग्रेज़ीने वादह किया है, कि वह राजराणा मदनसिंह और उसके वारिसों और जानशीनोंसे हर साल लेंगे; और पहिली सर्कारी क़िस्त संवत् १८९५ के शुरूसे राजराणा अदा करेंगे, और जो सर्कारी आधी क़िस्त संवत् १८९४ की फ़स्ल रबीअ् (उन्हाली) की बाबत १३२३६० रुपया बाक़ी है, वह कोटाकी रियासतसे दिया जावेगा.

शर्त पांचवीं- महाराव अपने और अपने वारिसों व जानशीनोंकी तरफ़से इक़ार करते हैं, कि अगर गवर्मेएट अंग्रेज़ी ज़रूरत समझे, तो एक जंगी फ़ौज अंग्रेज़ी अफ्सरोंकी

जानशीनोंमें भरती करें; और यह बात क़रार पाचुकी है, कि यह फ़ौज किसी तरह महाराव व उनके वारिसों और जानशीनोंके रियासती कामोंके बन्दोबस्तकी रुकावट या नुक्सान देनेवाली न होगी.

शर्त छठी- इस फ़ौजका ख़र्च ३००००० रुपये सालानहसे ज़ियादह न होगा.

शर्त सातवीं- अगर यह फ़ौज नौकर रक्खी जायेगी, तो इसके ख़र्चका रुपया भी मुन्तज़िम रियासत, महाराव, और उसके वारिस और जानशीन गवर्मेंट अंग्रेज़ीको छः माहीकी दो क़िस्तोंमें ख़िराजके साथ जमा करेंगे; और पहिली क़िस्तकी मीआद गवर्मेंट अंग्रेज़ी मुक़र्रर करेगी.

शर्त आठवीं- यह बात मालूम रहनी चाहिये, कि दिह्लीमें ते पायेहुए अह्द-नामहकी शर्तें, जो गवर्मेंट अंग्रेज़ी और महाराव उम्मेदसिंह बहादुरके आपसमें ता० २६ डिसम्बर सन् १८१७ ई० को क़रार पाई हैं, और जिनमें इस अह्दनामहकी शर्तोंसे कुछ फ़र्क़ नहीं आया है, क़ाइम और बहाल रहेंगी.

शर्त नवीं- इस अह्दनामहकी ऊपर लिखी शर्तें गवर्मेंट अंग्रेज़ी और महाराव रामसिंह राजा कोटाके आपसमें ते होकर उसपर दस्तख़त और मुहर कप्तान जॉन लडलो क़ाइम मक़ाम पोलिटिकल एजेन्ट और लेफ़्टिनेन्ट कर्नेल नथेनिल आल्विस, एजेन्ट गवर्नर जनरल राजपूतानहके एक तरफ़, और महाराव रामसिंहके दूसरी तरफ़ हुए. इसकी तस्दीक़ दो महीनेके अ़र्सहमें राइट ऑनरेबल दि गवर्नर जनरल बहादुर से होकर यह अह्दनामह आपसमें बदला जायेगा. मक़ाम कोटा, ता० १० एप्रिल सन् १८३८ ई०.

[ ] (दस्तख़त-) जे० लडलो,
क़ाइम मक़ाम पोलिटिकल एजेन्ट.

मुहर महाराव रामसिंह.

[ ] (दस्तख़त-) एन० आल्विस,
एजेन्ट गवर्नर जेनरल.

इस अह्दनामहके उन परगनोंकी तफ्सील, जो राजराणा मदनसिंह और उसके वारिसों और जानशीनोंके वास्ते अ़लह्दह होकर रियासत झालावाड़ नाम जुदा क़ाइम हुई.

चौहट.

मूंकन.

चाचहटा, जिसमें पचपहाड़, आहोर, डग और गंगराड़ शामिल हैं.

झालरापाटन उर्फ़ उमेल. रनाय.

रींचवा.	मोहर थाना.
वंकानी.	फूल बरोड़.
दीलमपुर.	चांचोरनी.
कोटड़ाभट्ट.	कंकोरनी.
सूरेरा.	छीपा बरोड़

शेरगढ़का उस तरफ़ का हिस्सह, याने पूर्व की तरफ़ परवान, या नेवज और शाहाबाद.

वाज़िह हो, कि नर्पतसिंह, झालावाड़का इ़लाक़ह छोड़कर महारावके इ़लाक़हमें वसेगा, और उसका इ़लाक़ह राजराणाके सुपुर्द होगा.

मक़ाम कोटा,

ता० १० एप्रिल सन् १८३८ ई०

(दस्तख़त)- जे० लडलो,

क़ाइम मक़ाम पोलिटिकल एजेएट.

(दस्तख़त)- एन० आलिवस,

एजेएट गवर्नर जेनरल.

राजराणा मदनसिंहकी मुहर.

ऊपर लिखे अ़हृदनामहकी तीसरी शर्तके मन्शाके मुवाफ़िक़, जिस जिसका क़र्ज़ह महाराव और उसके वारिस और जानशीनोंको देना वाजिब है, उसकी तफ़्सील यह है:-

	रु० आ०पा०		रु० आ०पा०
पंडित लालाजी रामचन्द-	१२७३६४-१५-६	छगन कालू नागर-	५००००- ०-०
गोवर्द्धननाथजी-	३०६४३- ५-६	लक्ष्मणगिर हरीगिर-	१०९०१- ०-०
विठ्ठलनाथजी-	३७५१७६- ०-०	बौहरा दाऊदजी ख़ानजी-	११५८८- ६-६
लाला सुगनचन्द-	५६११६- १-०	साह मंगलजी-	८९४८- ५-३
जगन्नाथ सीताराम-	१००८२५- ४-९	साह हमीर वैद्य-	१०९६१७-१०-६
शिवलाल साकिन पतवार-	१००३३- ४-०	दुलजीचन्द उत्तमचन्द-	१०१९५-१०-०
केशवराम वैजनाथ-	२४१७४७-१२-९	माधव मुकुन्द-	१०९५-१३-९
गोविन्ददास रामगोपाल-	२०४४१- १-३	बौहरा वली भाई-	५२५-११-३
गणेशदास किशनाजी-	२०२८१- ९-९	बख़्तावरमल बहादुरमल-	१८२-१५-९
मोहनराम हरलाल-	११३४-१-९		

	रु०	आ०	पा०
नन्दराम पीरूलाल-	७४७३ -	१३ -	०
उम्मेदराम भैरूंराम-	९७७१ -	९ -	०
गोपालदास वनमालीदास-	२९०८ -	१३ -	०
साह जीवणराम-	८३५ -	१४ -	०
सुजानमल शेरमल-	२४४८७ -	८ -	०
मोहनलाल वैद्य-	५५४२३ -	१३ -	०
शालिग्राम-	१४५५४ -	० -	०
मौजीराम मूलचन्द-	३८९३ -	१२ -	६
दलजी मनीराम-	४५७७९६ -	० -	०
कनीराम भूरानाथ-	४०८१९ -	१ -	०
भूरा कामेश्वर-	४७७०३ -	८ -	६
शोभाचन्द मोतीचन्द-	१५६७१ -	२ -	९
शिवजीराम उदयचन्द-	३४८ -	७ -	३
भागचन्द साकिन भदोरा-	५४७ -	२ -	२
वौहरा श्रीचन्द गंगाराम-	६३८३ -	२ -	३

ऊपर लिखा क़र्ज़ह तह्क़ीक़ात करके महाराव हरएक शख़्सको देंगे, और इसके सिवाय भी और किसीको देना होगा, तो तह्क़ीक़ करनेपर, जिसका देने लाइक़ होगा, दिया जावेगा.

मक़ाम कोटा,

ता० १० एप्रिल, सन् १८३८ ई०

(दस्तख़त)- जे० लडलो,

क़ाइम मक़ाम पोलिटिकल एजेएट.

(दस्तख़त)- एन० आलिवस,

एजेएट गवर्नर जेनरल.

मुहर महाराव रामसिंहकी.

अह्दनामह नं० ५९.

अह्दनामह बाबत लेनदेन मुज्रिमोंके, दर्मियान ब्रिटिश गवर्मेएट और श्रीमान् शत्रुशालसिंह बहादुर महाराव कोटा व उनके वारिसों और जानशीनोंके, एक तरफ़से कप्तान आर्थर नील ब्रूस, पोलिटिकल एजेएट हाड़ौतीने, बइजाज़त कर्नेल विलिअम

फ़्रेड्रिक एडन, एजेएट गवर्नर जेनरल राजपूतानहके उन कुल इख्तियारोंके मुवाफ़िक़, जो कि उनको श्रीमान् राइट ऑनरेबल सर जॉन लेयर्ड मेअर लॉरेन्स, बैरोनेट, जी० सी० बी०, और जी० सी० एस० आइ०, वाइसरॉय और गवर्नर जेनरल हिन्दने दिये थे, और दूसरी तरफ़से कविराजा भवानीदानजीने उक्त महाराव शत्रुशालसिंह बहादुरके दिये हुए इख्तियारोंसे किया.

पहिली शर्त – कोई आदमी अंग्रेज़ी या दूसरे राज्यका बाशिन्दह अगर अंग्रेज़ी इलाक़हमें संगीन जुर्म करके कोटाकी राज्य सीमामें आश्रय लेना चाहे, तो कोटेकी सर्कार उसको गिरिफ़्तार करेगी; और दस्तूरके मुवाफ़िक़ उसके मांगेजानेपर सर्कार अंग्रेज़ी को सुपुर्द करदेगी.

दूसरी शर्त – कोई आदमी कोटेके राज्यका बाशिन्दह वहांकी राज्य सीमामें कोई संगीन जुर्म करके अंग्रेज़ी राज्यमें जाकर आश्रय लेवे, तो सर्कार अंग्रेज़ी वह मुज्रिम गिरिफ़्तार करके कोटाके राज्यको क़ाइदहके मुवाफ़िक़ तलब होनेपर सुपुर्द करदेवेगी.

तीसरी शर्त– कोई आदमी, जो कोटाके राज्यकी रअय्यत न हो, और कोटाकी राज्य सीमामें कोई संगीन जुर्म करके फिर अंग्रेज़ी सीमामें आश्रय लेवे, तो सर्कार अंग्रेज़ी उसको गिरिफ़्तार करेगी; और उसके मुक़द्दमहकी तह्क़ीक़ात सर्कार अंग्रेज़ी की बतलाई हुई अदालतमें कीजायेगी; अक्सर क़ाइदह यह है, कि ऐसे मुक़द्दमोंका फ़ैसलह उस पोलिटिकल अफ़्सरके इज्लासमें होगा, कि जिसके तहतमें वारिदात होनेके वक्तपर कोटेकी पोलिटिकल निगरानी रहे.

चौथी शर्त– किसी हालतमें कोई सर्कार किसी आदमीको, जो संगीन मुज्रिम ठहरा हो, देदेनेके लिये पाबन्द नहीं है, जबतक कि दस्तूरके मुवाफ़िक़ ख़ुद वह सर्कार या उसके हुक्मसे कोई अफ़्सर उस आदमीको न मांगे, जिसके इलाक़हमें कि जुर्म हुआ हो; और जुर्मकी ऐसी गवाहीपर, जैसा कि उस इलाक़हके क़ानूनके मुवाफ़िक़ सहीह समझीजावे, जिसमें कि मुज्रिम उस वक्त हो, उसकी गिरिफ़्तारी दुरुस्त ठहरेगी, और वह मुज्रिम क़रार दिया जायेगा, गोया कि जुर्म वहींपर हुआ है.

पाचवीं शर्त– नीचे लिखे हुए जुर्म संगीन जुर्म समझे जावेंगे :–

१– ख़ून. २– ख़ून करनेकी कोशिश. ३– वह्शियानह क़त्ल. ४– ठगी. ५– ज़हर देना. ६– ज़िना बिलजब्र (ज़बर्दस्ती व्यभिचार). ७– ज़ियादह ज़ख़्मी करना. ८– लड़का बाला चुरालेजाना. ९– औरतोंको बेचना. १०– डकैती. ११– लूट. १२– सेंध (नक़ब) लगाना. १३– चौपाया चुराना. १४– मकान जलादेना. १५– जालसाज़ी करना. १६– झूठा सिक्कह चलाना. १७– ख़यानते मुज्रिमानह.

१८- माल अस्बाब चुरालेना. १९- ऊपर लिखे हुए जुर्मोंमें मदद देना, या वर्ग़लाना.

छठी शर्त- ऊपर लिखी हुई शर्तोंके मुताबिक़ मुजिमोंको गिरिफ्तार करने, रोक रखने, या सुपुर्द करनेमें, जो ख़र्च लगे, वह दर्ख्वास्त करनेवाली सर्कारको देना पड़ेगा.

सातवीं शर्त- ऊपर लिखाहुआ अह्दनामह उस वक़्ततक बर्क़रार रहेगा, जबतक कि अह्दनामह करनेवाली दोनों सर्कारोंमेंसे कोई एक दूसरेको उसके रद्द करनेकी इच्छाकी इत्तिला न दे.

आठवीं शर्त- इस अह्दनामहकी शर्तोंका असर किसी दूसरे अह्दनामहपर, जो दोनों सर्कारोंके बीच पहिलेसे है, कुछ न होगा, सिवा ऐसे अह्दनामहके, जो कि इस अह्दनामहकी शर्तों के बख़िलाफ़ हो.

मक़ाम कोटा ता० ६ फ़ेब्रुअरी सन् १८६९ ई०

[मुहर.] (दस्तख़त)- ए० एन० ब्रुक, कप्तान,

[मुहर.] पोलिटिकल एजेण्ट.

[मुहर.] (दस्तख़त)- मेओ.

इस अह्दनामहकी तस्दीक़ श्रीमान् वाइसरॉय और गवर्नर जेनरल हिन्दने मक़ाम फ़ोर्ट विलिअमपर ता० ५ मार्च सन् १८६९ ई० को की.

[मुहर.] (दस्तख़त)-डब्ल्यू० एस० सेटन्कार, सेक्रेटरी,

फ़ॉरेन् डिपार्टमेन्ट, सर्कार हिन्द.

झालरा पाटनकी तारीख़.

जो कि रियासत झालावाड़ राज कोटासे निकली है, इसलिये उसके पीछे यहांकी तारीख़ लिखी जाती है.

जुग्राफ़ियह.

झालावाड़में अलग अलग दो रक़्बे हैं, ख़ास रक़्बेके उत्तर तरफ़ कोटा, और दक्षिण तरफ़ राजगढ़, रियासत सेंधिया व हुल्करके कुछ हिस्से और इलाक़ह दिवेरका जुदा रक़्बह और जावरासे पूर्व तरफ़ सेंधियाका मुल्क और रियासत टौंकके एक न्यारे रक़्बेसे पश्चिम तरफ़ सेंधिया व हुल्करके जुदा जुदा ज़िले हैं. रियासतका यह हिस्सह २४°-४८' और ३०°-४८' उत्तर अक्षांशके दर्मियान और ७५°-५५' और ७७° पूर्व देशान्तरके बीचमें वाक़े है. दूसरा छोटा अलहदह रक़्बह उत्तर, पूर्व और दक्षिणमें इलाक़ह ग्वालियरसे, और पश्चिममें रियासत कोटासे घिराहुआ है. इसका विस्तार २५°- ५' और २५°-२५' उत्तर अक्षांशके बीच और ७७°-२५' और ७६°- ५५' पूर्व देशान्तरके बीच है. रियासतके कुल रक़्बहकी तादाद २६९४ मील मुरब्बा, और १४५७ ग्राम व क़स्बोंमें सन् १८८१ ई० की ख़ानह शुमारीके अनुसार ३४०४८८ आबादी है. आमदनी १५२५२३० रुपयामेंसे ८०००० ख़िराजके सर्कार अंग्रेज़ीको देते हैं.

मुल्ककी सूरत और ज़मीनकी हालत—इस रियासतका ख़ास रक़्बह एक टीलेपर वाक़े है, जो समुद्रके सत्हसे उत्तरमें हज़ार फ़ुटसे ऊंचा, और दक्षिणमें चार सौसे पांच सौ फ़ुट तक और भी ऊंचा होगया है. उत्तरी, पूर्वी और दक्षिणी हिस्से इस रक़्बेके पहाड़ी हैं, जिनमें छोटे बड़े बहुतसे नाले हैं; पहाड़ियोंके ज़ियादह हिस्सेमें घास और जंगल है, और कई जगह पानीके बहावपर बन्द बांध बांध कर बड़े बड़े झील बना-लिये गये हैं. रियासतमें इस रक़्बहका बाक़ी हिस्सह उपजाऊ और मैदान है, जिसमें हमेशह हरे रहने वाले दरख़्त भी दीख पड़ते हैं. शाहाबादका जुदा हिस्सह पश्चिममें ऊंचा है, और उसमें पानी बहुत नीचे पाया जाता है. पूर्वी हिस्सह पांच सौ या छः सौ फ़ुट नीचा है, इसके ऊपर बहुतसी पहाड़ियां और गहरे जंगल होनेके सबब यह हिस्सह भयानक मालूम होता है.

ज़मीन ज़ियादह तर उपजाऊ है, जिसमें काली मिट्टी है, और उसमें अफ़्यून ज़ियादह पैदा होती है. इसमें तीन प्रकारकी ज़मीन है, और हर एककी तीन तीन क़िस्में पैदावारीके मुवाफ़िक़ हैं, याने काली, धामनी और लाल पीली. पिछली खेतीके

हद्में कम पैदावार है; अनुमान किया गया है, कि जोतनेके लाइक़ ज़मीनके चार हिस्सोंमेंसे एक हिस्सह काली, दो हिस्सह धामनी और एक हिस्सह लाल पीली है.

नदियां.

इस रियासतमें कई नदियां हैं, उनमेंसे जो मश्हूर हैं, उनके नाम नीचे लिखे जाते हैं :-

पर्वन- यह नदी दक्षिणी पूर्वी किनारेसे रियासतमें दाख़िल होकर ५० मील बहने बाद कोटा रियासतमें दाख़िल होती है. आधी दूरपर इसमें नींवज, जो बड़ी नदी है, आकर मिलजाती है. वह १६ मील तक रियासत कोटाके साथ हद क़ाइम करती है. इस नदीके पार होनेको दो घाट हैं, एक मनोहर थानहपर और दूसरा भचूरनी मक़ामपर; और नींवज नदीमें भूरेलिया मक़ामपर एक रास्तह भी है.

दक्षिण तरफ़ काली सिन्ध इस रियासतको हुल्कर और सेंधियाके इलाक़ोंसे और उत्तर तरफ़ बढ़कर कोटेकी रियासतसे जुदा करती है. इस नदीमें चटानें बहुत हैं, और इसके किनारे ऊंचे हैं, जिनपर कहीं कहीं दरख़्त ऊगे हुए हैं. इस रियासत में ३० मीलतक यह नदी बहती है, और दो एक जगह छावनी अर्थात् महाराजराणा के मुख्य रहनेके मक़ामसे एक मीलसे कम फ़ासिलेपर है. मक़ाम भवनरसा पर इसमें एक गुज़र गाह है.

आहू नदी, दक्षिण पश्चिमी कोनेसे बहकर रियासतमें ६० मील तक गुज़रने बाद दक्षिणी तरफ़ इलाक़े हुल्कर और टोंकसे, उत्तरमें रियासत कोटेसे उस मक़ामपर, जहां यह कोटेमें दाख़िल होती है, इस राज्यको अलग करती है. इसके पेटेमें चटानें कम हैं, और ऊंचे किनारोंपर, जहां दरख़्त ऊगे हैं, वह रमणीक स्थान है. सुकेत और भेलवाड़ी मक़ामपर नदीपार उतरनेके घाट हैं.

छोटी काली सिन्ध, सिर्फ़ थोड़ी दूर तक राज्यके दक्षिण पश्चिम तरफ़ बहती है. गंगराड़में उससे पार उतरनेकी जगह है.

झील व तालाब- इस रियासतमें अक्सर बड़े क़स्बों व मक़ामातके क़रीब तालाब व बन्द वग़ैरह हैं, जिनके ज़रीएसे उन मक़ामातके आस पासकी ज़मीन सींचीजाती है. राजधानी झालरापाटनके नीचेका तालाब बड़ा है, जहांसे दो मील तक ईंटकी नहर बनी हुई है, जिसको ज़ालिमसिंहने बनवाया था. इसके ज़रीएसे उस तालाबका पानी झालरापाटनके दूसरी तरफ़ वाले गांवोंकी ज़मीनको सेराब करता है.

आबो हवा-यहांकी सिहत बख़्श है, और उत्तरी राजपूतानहकी बनिस्बत गर्मी कम

पड़ती है, दिनके वक़ छायामें थर्मामेटर ८५ या ८८ दरजे तक पहुंचता है, और सुबह, शाम व रातको बराबर ठंड रहती है. बारिश सालमें ३० या ४० इंच औसतके हिसाबसे होती है.

पहाड़ वगैरह– हिन्दुस्तानके दो पहाड़ी सिलसिले अच्छी तरह दिखाई देते हैं, झालरापाटन (राजधानी) दक्षिणी पहाड़ी क़तारके उत्तरी किनारे विन्ध्याचलकी तहपर है. यह पहाड़, जिसका नाम मालभी है, और जो हिन्दुस्तानकी पहाड़ी क़तारके ऊपरी हिस्सहसे विन्ध्याचलकी चटानों तक तअ़ल्लुक़ रखता है, झालरापाटन के क़रीब ही है, जिसमें रेतीले और चिनिया पत्थर पाये जाते हैं. विन्ध्याचलके इस पहाड़ी सिलसिलेमें नीचाई ऊंचाईकी ज़ियादह तफ़ीक़ नहीं है; इनके एक तरफ़ नीचेके पहलू ढलाऊ और एक तरफ़के सीधे और ऊंचे हैं. इन तमामपर रेतीला पत्थर होता है, परन्तु झालरापाटनके नज़्दीककी तहोंमें इख़्तिलाफ़ है. जो दक्षिण पूर्वसे उत्तर पश्चिम तरफ़को हैं, उनके सत्ह नीचेसे मिले हुए, परन्तु ऊपरकी तरफ़ खिंचते गये हैं, जो सत्तर डिगरी पूर्वोत्तर और दक्षिण पश्चिमके गहरावके साथ हैं. उनकी चोटीपर रेतीले पत्थरकी सिल्लियां पाई जाती हैं. यह कैफ़ियत उत्तर पूर्वमें रफ़्तह रफ़्तह कम होजाती है. विन्ध्याचलके सत्हपर और तरहके पत्थर आगये हैं. जहां पहिले सकड़ी घाटियां थीं, वहां यह पत्थर पाये जाते हैं, और इन्हींकी छोटी छोटी पहाड़ियां बन-जानेसे नीचेकी तह छिपगई है. चटानोंकी कई क़िस्में हैं, कोई चौड़ी, कोई चोखूंटी, कोई ढालू और कई गोल वगैरह तरह तरहकी पाई जाती हैं. इनके भीतर कई क़िस्मकी मिट्टी और पत्थर और ताज़ह पानीकी सीपियां मिलती हैं. ये सब चिन्ह दक्षिणी पहाड़ी सिलसिलेके मुताबिक़ हैं, जिनसे साफ़ ज़ाहिर है, कि वह चटानें उड़कर यहां आगई हैं. इस जगह दूसरी जगहोंके मुवाफ़िक़ ऐसे पत्थर पाये जाते हैं, जिनकी अस्लियतकी निस्बत बड़ी बहस है. विन्ध्याचल पहाड़का ज़मानह मालूम नहीं होता है. कमसे कम दर अस्ल दूसरी या तीसरी तहसे मुतअ़ल्लिक़ है. लोहा और लाल पीली मिट्टी (गेरू), जो कपड़ा रंगनेके काममें आती है, शाहाबादके पर्गनहमें बहुत मिलती है.

पैदावार– रियासत झालावाड़की ख़ास पैदावार, मक्का, ज्वार, बाजरा, गेहूं, जव, चना, उड़द, मूंग, चावल, तिल, कंगनी, अफ़ीम, सांठा, (गन्ना) तम्बाकू और रुई वगैरह है.

आबपाशी– आबपाशी अक्सर कुंओंके ज़रीएसे होती है, और पानी भी पर्गनह शाहाबादके सिवा और जगहोंमें नज़्दीकही निकल आता है; लेकिन् खोदते वक़ बसबब सख़्त चटानें निकल आने व ढावोंकी मिट्टी गिरजानेके सोता अच्छा न निकलने और कुएं कम गहरे खोदेजानेसे एक कुएंसे थोड़ीही ज़मीन सींची जा सक्ती है.

राजप्रबन्धका ढंग– शुरू ज़मानेमें कामदारोंको दीवानी, फ़ौज्दारी और माली इख़्तियारात बहुत कम थे; उनके फ़ैसलोंका अपील दारोग़ह पालकीख़ानहकी मारिफ़त महाराजराणाके हुज़ूरमें होता था, जिसका तस्फ़ियह या तो खुद रईस कर देता, या वापस कामदारोंके पास मुनासिब हुक्म लगाया जाकर भेजा जाता था. उस ज़मानहमें फ़ीस नहीं लीजाती थी; लेनदेनके मुक़द्दमे फ़रीक़ैनकी बाहमी रज़ामन्दी से फ़ैसल होजाते थे. खेतीके आलात कभी नहीं बिकते. जब विक्रमी १९०७ [हि० १२६६ = ई० १८५०] में दीवानी व फ़ौज्दारीकी अ़दालतें राजधानीमें क़ाइम हुईं, तो दो वर्षके अ़रसे तक तो सिर्फ़ नामके वास्ते ही इनको माना गया, क्योंकि इख़्तियार पालकीख़ानहके दारोग़हको था, और मुक़द्दमात ज़बानी फ़ैसल किये जाते थे. विक्रमी १९१८ [हि० १२७७ = ई० १८६१] में ये अ़दालतें फिर क़ाइम की गईं; लेकिन् मिस्लें मुरत्तब होकर हर अ़दालतसे रईसके हुज़ूर में हुक्मके वास्ते भेजी जाती थीं. विक्रमी १९३१ [हि० १२९१ = ई० १८७४] के क़रीब अ़दालती कार्रवाई सुस्त पड़गई, लेकिन् कुछ अ़रसे से इसकी बुन्याद जम गई है, क्योंकि पेश्तर अ़दालती ख़र्च जुर्मानोंमेंसे चलता था, और साबिक़वाला अह्लकार काममें मुदाख़लत करता था. ज़मानह हालका न्याय प्रबन्ध इस तरहपर है, कि चौमहला व शाहाबादके तह्सीलदारोंके सिवा, जिनको दो माह क़ैद व ५० रुपये जुर्मानह तकका इख़्तियार है, कुल तह्सीलदार एक माह क़ैद और ४० रुपये तक जुर्मानहकी सज़ा मुज्रिमको दे सके हैं. तह्सीलदारोंके फ़ैसलोंका अपील अ़दालत सद्र दीवानी या फ़ौज्दारीमें एक हफ़्तहकी मीआ़दके अन्दर होता है.

अ़दालत सद्र फ़ौज्दारीको फ़ौज्दारी मुक़द्दमातमें एक साल क़ैद और १०० रुपये जुर्मानह तक सज़ा देनेका इख़्तियार है.

अ़दालत दीवानीको १००० रुपये मालियतके मुक़द्दमात सुननेका इख़्तियार है. इन दोनों अ़दालतोंके फ़ैसलोंका अपील महकमह पंचायतमें होता है, जिसमें तीन मेम्बर हैं, और जिनका अधिकार फ़ौज्दारी मुक़द्दमोंमें तीन वर्ष क़ैद और ३०० रुपये तक जुर्मानहकी सज़ा देनेका है; और दीवानी मुक़द्दमोंमें वे ७००० रुपये मालियतकी समाअ़त कर सके हैं. इस अ़दालतके अपीलकी मीआ़द दो माह तककी है. फ़ौज्दारी मुक़द्दमोंमें दण्ड संग्रह (P. C.) और मुल्की रवाजके मुवाफ़िक़ कार्रवाई कीजाती है. दीवानी मुक़द्दमातमें रु० १२॥ फ़ी सैकड़ाके हिसाबसे फ़ीस ली जाती है, लेकिन् बाहर गांवोंमें आसामीकी हैसियत मालीके मुवाफ़िक़ फ़ीस वुसूल कीजाती है. अ़दालत अपीलके हद्द इख़्तियारसे बाहर वाले मुक़द्दमों और अ़दालत अपीलके

अपीलकी समाअत खुद रईसके इज्लासमें होती है; और तह्सीलदारोंके इख्तियारातसे बाहर जो मुक़द्दमे होते हैं, उनको भी रईस ही सुनता है.

फ़ौज- पुलिसका इन्तिज़ाम अजीब तौरका है; इन लोगोंकी बहाली, बर्तरफ़ी, तन्ख्वाह और ज़िले पुलिसका इन्तिज़ाम एक कारख़ानहके तह्तमें है. १०० सवार और २००० पैदल कुल रियासत भरमें काम देते हैं; चन्द इनमेंसे तह्सीली कामके वास्ते तह्सीलदारके मातह्त हैं, और कुछ वास्ते इन्तिज़ाम पुलिसके उसीके तह्तमें काम देते हैं. तह्सीलदारके मातह्त पेश्कार रहता है, जिसका काम तह्सीलसे कुछ तअल्लुक़ नहीं रखता. बाक़ी सिपाही तीन गिराई अफ्सरोंके तह्तमें हैं, जो रियासतकी सर्हदमें लुटेरे तथा डाकुओंकी तलाशमें गश्त करते हैं; फ़ौज सवार व पैदल गिराई अफ्सरोंके हमाह रहती है. पेश्कार तह्सीलदारकी मारिफ़त और गिराई अफ्सर बाला बाला अपनी अपनी रिपोर्ट और कार्रवाई हाकिम अदालत फ़ौज्दारीके पास भेजते हैं; कुछ अरसह पेश्तर यह मातह्ती सिर्फ़ नामके लिये थी. शहर झालरापाटन व छावनीमें कोतवालकी सुपुर्दगीमें म्युनिसिपल पुलिस है, जो अदालत फ़ौज्दारीके मातह्त है.

जेलख़ानह- पेश्तर क़ैदी लोग, मन्धरथानह, कैलवाड़ा और शाहाबादके गढ़ोंमें बन्द रक्खे जाते थे. विक्रमी १९२२ [हि० १२८१ = ई० १८६५] के क़रीब एक सद्र जेलख़ानह क़ाइम किया गया, जिसके इन्तिज़ामके लिये एक युरेशिअन सुपरिएटेएडेएट मुक़र्रर हुआ. उसने इन्तिज़ाम जेलका अच्छा किया; क़ैदियोंसे सड़क, काग़ज़, और कपड़ा बनानेका काम लियाजाता है, और जेलके मकानमें बनिस्बत पहिलेके सफ़ाई ज़ियादह और जेलके मुतअल्लक़ इन्तिज़ाम दुरुस्त है. क़ैदियोंकी तादाद सवा सौके लगभग रहती है, और कभी ज़ियादह भी होजाती है.

तालीमी हालत व मद्रसह- इस रियासतमें तालीमका तरीक़ह शुरू हालतमें है, ज़िलोंमें ब्राह्मण इत्यादि पाठक लोग बणियों तथा ब्राह्मणोंके लड़कोंको पहाड़े व हिसाब किताब वग़ैरह साधारण तौरपर सिखाते हैं. राजधानी झालरापाटन और छावनीमें अलबत्तह मद्रसे हैं, जिनमें हिन्दी, उर्दू व अंग्रेज़ीकी इब्तिदाई तालीम दियाजाना बयान किया जाता है; लेकिन् उस्ताद लोग ज़ियादह लाइक़ नहीं हैं; और इसमें शक नहीं, कि मद्रसोंको मदद भी कम दीगई है. इसी क़िस्मकी अब्तरियोंसे नतीजह यह होता है, कि अधूरे तालीम याफ्तह स्कूलको छोड़ बैठते हैं.

ज़ात, फ़िर्क़ह और क़ौम- रियासत झालावाड़में नीचे लिखी हुई जातिके लोग आबाद हैं.- ब्राह्मण, राजपूत, बनिया, कायस्थ, जाट, गूजर, माली, खाती,

कुम्हार, लुहार, दर्ज़ी, पटवा, तेली, तंबोली, छीपा, नाई, ओड़, मीना, रंग्रेज़, क़लईगर, मुसल्मान बोहरा, बिसाती, जुलाहा, मोची, धोबी, चमार, कंजर और गडरिये वग़ैरह.

राजपूत क़ौममेंसे झाला राजपूत यहां ज़ियादह हैं, और इनसे उतरकर शुमारमें राठौड़, चन्द्रावत, राजावत, सोलंखी, सीसोदिया शक्तावत और खीची चहुवान हैं. इस इलाक़हमें सोंदिया नामकी एक और क़ौम पाई जाती है, जिसका बयान माल्कम साहिबने अपनी बनाई हुई किताब "सेंट्रल इंडिया" में लिखा है, कि ये लोग अपनेको राजपूत बतलाते हैं, और उनमें कई गोत्र या हिस्से याने राठौड़, तंवर, यादव, सीसोदिया, गुहिलोत, चहुवान, और सोलंखी हैं. कहते हैं, कि सात सौ या नौ सो वर्ष पेश्तर अजमेर व ग्वालियरसे चहुवान, मारवाड़के इलाक़ह नागौर से राठौड़, और मेवाड़से सीसोदिया व दूसरे राजपूत यहां आये; उनसे इस नस्लकी उत्पत्ति हुई. एक बयानसे इस क़ौमका नाम सोंदिया होना इस तरह पाया जाता है, कि ये लोग सिन्ध नामकी दो नदियोंके दर्मियानी हिस्सेमें, जो सिंदवाहा कहलाता था, और पीछे बिगड़कर सोंदवाह कहलाया, रहनेके सबब सोंदिया प्रसिद्ध हुए. या ऐसा हुआ हो, कि पहिले सन्ध्या नामकी एक हिन्दू क़ौम थी, उसका नाम किसी कारणसे सोंदिया पड़गया हो. इन लोगोंका पेशह काश्तकारी और लुटेरापन है; ये बिल्कुल जाहिल होते हैं. रंग इनका गोरा, चिहरा गोल, डाढ़ी मूछ सहित होता है. इस रियासतमें इनके चन्द गांव जागीरी हैं. बादशाही वक़्में बहुतसी जागीर इनके तह्तमें होना सुनागया है, लेकिन् अब उन जागीरी गांवोंमेंसे थोड़ेसे बाक़ी रहगये हैं. उक्त साहिब (माल्कम) का बयान है, कि ये अक्सर राजपूत कहलाते हैं, लेकिन् यह नस्ल कई जातियोंसे बनी हुई है; ग़ालिबन् इनकी नस्ल नीची क़ौमोंसे पाई जाती है. वे अपनेको एक जुदा क़ौम ठहराते हैं, और कहते हैं, कि किसी राजाके शेरके चिहरेवाला एक लड़का पैदा हुआ था, वह जंगलमें निकाल दियागया, और वहां उसने मुख़्तलिफ़ ज़ातोंकी औरतोंसे आश्नाई की, जिसकी औलाद वे लोग हैं, और वही उनका पुर्पा बना. इसमें शक नहीं कि यह क़ौम क़दीम है, लेकिन् इनकी कोई बड़ी बहादुरानह कार्रवाई राजपूत क़ौमकी सी नहीं पाई जाती. जब उनकी ज़मीन चन्द देशी रईसोंने छीनली, तो वे आपसमें लड़ते झगड़ते रहे, और बाद उसके मध्य हिन्दुस्तानमें, जब ३० सालतक हल चल रही, उस ज़मानेमें लूट मार करने लगे. अगर्चि ये लोग गाय व भैंस वग़ैरहका मांस नहीं खाते, और ग्रासिया क़ौमसे अक्सर विरुद्ध हैं, लेकिन् हिन्दू मज़्हबकी बहुतसी बातें नामको भी

नहीं जानते. इस ज़ातमें जैसा ऊपर लिख आये हैं, कई फ़िर्के हैं, लेकिन् आपसमें विवाह सब कर लेते हैं; अक्सर औरतोंका दूसरा विवाह भी होता है; उत्तम कुलके राजपूतोंमें औरत नाता नहीं करसक्ती, इससे ज़ाहिर है, कि इन सोंदियोंने अपने बुज़ुर्गोंकी मर्यादाको छोड़ दिया है. ये शराब खूब पीते हैं, और अफ़ीम भी गहरी खाते हैं. यह लोग ग़ैर क़ौम और शंकर उत्पत्ति होनेके सबब हिन्दू रीति रस्मोंसे अक्सर आज़ाद हैं, और बहुतसी बेजा हरकतें कर बैठते हैं. इनमें बाहम इत्तिफ़ाक़ बिल्कुल नहीं होता, ज़मीन वग़ैरहकी बाबत हमेशह मार पीट और लड़ाई आपसमें किया करते हैं. ये लोग लड़ाईके काममें मज़्बूत, चालाक और बहादुर होते हैं; इनकी औरतें भी मिस्ल मर्दोंके लड़ाईके वक्त घोड़ोंपर सवार होकर हथियारोंसे काम लेसक्ती हैं. इस क़ौमको ज़ियादह लड़ाकू देखकर पिंडारोंकी लड़ाई खत्म होने बाद सर्कार अंग्रेज़ीने इनके घोड़ोंको बिकवा डाला, और गढ़ छीन लिये, तबसे इनका ज़ोर कम होगया, लेकिन् अस्ली ख़ासियत बिल्कुल नहीं बदली. इनके यहां विवाह ब्राह्मण कराता है, और भाटोंका मान खूब रक्खा जाता है, बल्कि भाटोंको जो उनके बुज़ुर्गोंकी वीरता गाते हैं, बहुत कुछ बख़्शिश देते हैं, और दिलके फ़य्याज़ होते हैं. इस क़ौममें वैष्णवी मज़्हब अक्सर लोग रखते हैं.

झालरापाटनमें जैनी लोग ज़ियादह हैं, जिनके कई बड़े बड़े मन्दिर उक्त राजधानीमें बनेहुए हैं; चन्द दादूपन्थी साधू, गिरी, पुरी, भारती, गुसाईं और नाथों के सिवा कूंडा पन्थी मतवाले भी हैं, जिनमें कई क़ौमके आदमी पोशीदह जमा होकर कूंडेमें शामिल खाते हैं, और ज़ातको नहीं मानते. यह मज़्हब थोड़े ही अरसहसे यहां जारी हुआ है.

पेशह– राजपूतोंमेंसे झाला खेती करते हैं, परन्तु इनके साथ दूसरे राजपूत शादी विवाह नहीं करते (१); ब्राह्मण लोग पूजापाठके सिवा ख़ानगी काम करते हैं; बनिये व्यापारका पेशह करते हैं, और चन्द राजके नौकर भी हैं; कायस्थ ज़ातके मनुष्य मुतसद्दी हैं, राज्यमें अक्सर यही लोग अह्लकारीका काम करते हैं.

ज़मीनका क़ब्ज़ह व मह्सूल वग़ैरह– खेतीकी ज़मीनका हाल दर्याफ़्त कियेजानेसे मालूम हुआ, कि कुल रियासतकी धरतीका पांचवां हिस्सह जोता बोया जाता है, बग़ैर बोईजानेवालीका तिहाई हिस्सह ऐसा है, कि जिसमें ज़िराअत होसक्ती है; बाक़ी ज़मीन पहाड़ी और ऊसर है. कुल रियासतकी जोती बोई जानेवाली ज़मीन १०८८४८८ बीघा याने ५०७४१८ एकड़ है, जिसमेंसे ७१६५३१ बीघा, याने ३३१४४० एकड़ ख़ालिसेकी है. इस ख़ालिसेकी ज़मीनमेंसे ३९५९ बीघे (१८४६ एकड़)

(१) ये झाला, राजराणाके ख़ानदानके नहीं हैं.

राजकी तरफ़से जोती बोई जाती है; १०८७२४ बीघे (५०६८३ एकड़) जागीरी, ५९२७१ बीघे (२६७०२ एकड़) उदक और ४५८०० बीघा (२१३५० एकड़) अहल्कारोंको माहवारी तन्ख़्वाहके बदले में दी हुई है.

क़दीम ज़मानेमें यहांपर महसूलका तरीक़ह लाटा और बटाई था; पैदावारीमेंसे २/५ हिस्सह राज्यको और बाक़ीमेंसे गांवका ख़र्च मुजा लियाजाकर काश्तकारको मिलता था. इस तरीक़ेमें हासिल वुसूल करनेवाले काश्तकारोंपर ज़ुल्म करने और धोखा देनेका अक्सर मौक़ा पाते थे. जिस तरह पटेल लोग ज़मीनपर अपना पुश्तैनी हक़ रखते थे, उसी तरह पहिले काश्तकारोंको भी मजाज़ था; वे अपने क़ब्ज़ेकी ज़मीनको फ़रोख़्त या गिरवी रख सक्ते थे; और अगर कोई ख़ुद ज़मीनको नहीं बोता, तो दूसरेको सौंपकर वापस ले सक्ता था; लेकिन् राजराणा ज़ालिमसिंहने इस क़ाइदेको बन्द करके लगानका तरीक़ह जारी किया, और हरएक क़िस्मकी ज़मीनके लिये फ़ी बीघा नक़्द रुपयेका निर्ख़ क़ाइम करदिया, जिससे रियासतकी आमदनीमें तरक़्क़ी हुई. हर गांवमें निर्ख़ जुदा जुदा था, और गांवका ख़र्च अन्दाज़हसे फ़ी बीघा पीछे मुक़र्रर कियाजाकर लगानके साथ जमा होजाया करता था. इसी तरह ठेके वग़ैरहका बन्दोबस्त होनेपर, जो ज़मीन कि पहिले बे जोती बोई पड़ी रहती थी, उसमें ज़िराअ़त होनेसे मुल्कमें पैदावार ख़ूब होने लगी; लेकिन् बाद उसके राजराणा ज़ालिम-सिंहके जानशीनों व रियासतके क़ाइम मक़ाम रईसोंमें लड़ाइयें होने और क़हत-साली होजानेसे हालत बिगड़ गई. अगर्चि ज़मीनका हासिल ज़ालिमसिंहके ठहरायेहुए क़ाइदेपर लियाजाता है, लेकिन कई बातोंमें तब्दीलात होगई हैं. कामदारोंकी चालाकियोंसे ज़मीनमें अदला बदली भी हुई है, याने किसीकी ज़मीन किसीके क़ब्ज़हमें चली गई है. मुआफ़ीकी ज़मीनका भी यही हाल है, बल्कि कई शख़्स बेकार मुआफ़ीके नामसे ज़मीन खाते हैं.

ज़मीनका कुल हासिल क़रीब १७४७१९७ रुपयाके बतलाया जाता है, जिसमेंसे १३२१९४३ रुपया राज्यकी ख़ालिसाई आमदनी है; और मुख्य जागीरों की आमदनी १५१८०२ रुपये हैं. धर्म सम्बन्धी जागीरें ८०६२५ रुपयों की हैं. अहल्कारोंको तन्ख़्वाहके बदलेमें ४३९८३ रुपये, बे लगान ज़मीन ५३४८७ रुपये, और गांव ख़र्चमें ५९९५८ रुपयेके क़रीब आमदनीकी ज़मीन समझीजाती है. ज़मीनका हासिल मनोतीदारके ज़रीएसे जमा होता है, जो कि ज़मींदारका बोहरा होनेके सिवा उसकी तरफ़से हासिलका बाक़ी रुपया राज्यमें जमा करानेका ज़ामिन भी होता है. मनोती-दारोंके लिये राज्यकी तरफ़से किसी तरहकी तन्ख़्वाह या ज़मीन मुक़र्रर नहीं है, वे सिर्फ़

ज़मींदारोंकी तरफ़से ज़ामिन रहते हैं; और जो ज़मींदार, कि ग़रीबीके सबब ज़ामिनकी मारिफ़त रुपया जमा करानेसे मज्बूर रहते हैं. उनकी ज़मीनकी पैदावार तह्सील-दार ज़िला बिकवाकर ज़मींदारको बीज और खानेके लाइक़ रुपया उस आमदनीमेंसे देने बाद बाक़ीको राज्यके हासिलमें जमा करलेता है; ज़मीनका हासिल आसामीवार लिया जाता है, और खेतका कूंना करके हासिल मुक़र्रर करदिया जाता है.

कुल ज़मीनका मालिक रईस है, और यह इससे साफ़ ज़ाहिर है, कि जब खालिसेकी ज़मीनका हासिल बढ़ाया गया था, तो जागीरोंमेंसे भी उसी तरहके मुताबिक़ हासिल तलब किया गया. गांवका मालिक या बिस्वादार सिवाय चौमहलाके और कोई नहीं है. ज़मींदार लोग सिर्फ़ क़ब्ज़हके रूसे ज़मीनके मालिक हैं, वर्नह गिर्वी वग़ैरह रखनेका इख्तियार नहीं रखते, लेकिन् मुन्तज़िमोंकी खराबीसे वे ज़मीनके खुद मुख्तार मालिक होरहे हैं. जागीरदार घोड़े और आदमी रियासतकी नौकरीके वास्ते देते हैं, और त्यौहारोंपर खुद राजधानीमें हाज़िर होते हैं. धर्मखाता और मुआफ़ीदारोंकी ज़मीनपर लगान नहीं है. पटेलोंसे, गांवोंका हासिल एकट्ठा करानेकी नौकरीके सबब हासिल नहीं लियाजाता, और इसी तरह सांमरी व गांवबलाई भी तन्ख्वाहके एवज़ ज़मीन बे लगान पाते हैं, जो, बशर्ते कि उनसे कोई क़ुसूर सख्त न हो, हीन हयात तक उनके क़ब्ज़हमें रहती है.

तह्सील या ज़िले- झालावाड़की कुल रियासत खास तीन क़ुद्रती हिस्सोंमें तक़्सीम कीगई है- १ बसती पर्गने, जो मुकुन्दरा पहाड़के नीचे हैं, और मालवेकी तरफ़ पथरीले मैदानका झुकाव. २ चौमहला- खास मालवा देश. ३ शाहाबाद, जो पूर्वमें उस मैदानका पहाड़ी और वह्शी हिस्सह है. पिछले दोनों हिस्से ज़ालिमसिंहने खुद हासिल किये थे, जिनमेंसे नम्बर २ को मन्दसौरके अह्दनामहमें इल्करने दिया था. इन तीनों हिस्सोंमें जिनका ज़िक्र ऊपर होचुका है, याने कुल रियासतमें बाईस पर्गने हैं. उनके नाम मए तादाद गांव (१) हर एकके ज़ैलके नक़्शहमें दर्ज किये जाते हैं:-

नक़्शह.

नाम पर्गनह.	तादाद गांव.	नाम पर्गनह.	तादाद गांव.
चेचट	४४	डेलनपुर	१२९
सुकेत	६४	अकलेरा	३९
खैराबाद	७७	चेरलिया	१९

(१) ई०-१८९३ ई० में गांव और कस्बोंकी तादाद जो हण्टर साहिबके गज़ेटिअरमें लिखीगई है, उनमें और इसमें फ़र्क़ है, और यह तादाद राजपूतानह गज़ेटिअरसे लिखी गई है.

नाम पर्गनह.	तादाद गांव.	नाम पर्गनह.	तादाद गांव.
जूल्मी	१०	मनोहरथानह	१३१
ऊर्मल (झालरापाटन)	१२८	जावर	४७
बुकरी	७३	छीपावड़ोद	१६३
रीचवा	१३३	शाहाबाद	२५१
अस्नावर	२६	पंचपहाड़	७७
रतलाइ	४२	आवर	४०
कोटड़ा भट्ट	४५	दीग	८६
सरेरा	३७	गंगराड़	१२३

ज़ाहिरा ये हिस्से ग़ैर बराबर हैं, और इनकेलिये जांच दर्कार है. पंचपहाड़, आवर, दीग, और गंगराड़, जो चौमहला नामसे मश्हूर हैं, रियासतके और ज़िलों से दाणकी निस्बत जुदा हैं, और यही कैफ़ियत शाहाबाद ज़िलेकी है.

मश्हूर शहर व क़स्बे - झालरापाटन, छावनी, शाहाबाद, कैलवाड़ा, छीपा-वड़ोद, मनोहरथानह, सुकेत, चेचट, पंचपहाड़, दीग और गंगराड़, इस रियासतमें मश्हूर क़स्बे हैं, जिनका मुफ़स्सल हाल नीचे दर्ज किया जाता है:-

क़दीम झालरापाटनका शहर नई आबादीसे किसी क़द्र दक्षिण दिशाको चन्द्र-भागाके किनारे था, वह नये शहरके बीचों बीचसे चन्द गज़के फ़ासिलेपर है. टॉड साहिबके बयानसे झालरापाटनके शहरकी वजूह तस्मियह यह है, कि क़दीम नग्र पाटनमें १०८ मन्दिर थे, जिनमें बहुतसोंके झालर लगी हुई थी, इसलिये उसका नाम झालरापाटन याने झालरनग्र रक्खा गया; पहिले इसका नाम चन्द्रियोती भी मश्हूर था. औरंगज़ेबके ज़मानेमें यह शहर बर्बाद किया गया, और मन्दिर तुड़वा दिये गये, जिनमेंसे विक्रमी १८५३ [हि० १२१० = ई० १७९६] में क़दीम आबादीका सातसहेली मन्दिर बाक़ी रह गया, जो नई राजधानीमें मौजूद है, और जिसके गिर्द भीलोंके चन्द झोंपड़े हैं. इस शहरकी प्राचीन तारीख़ लानेके लिये दो प्रशस्तियां, जो डॉक्टर बूलरने इण्डिअन् ऐन्टिकेरीकी जिल्द ५ के पृष्ठ १८१ और १८२ में दी हैं, उनकी नक़्ल इस प्रकरणके शेषसंग्रहमें दीगई है. इसी सालमें ज़ालिम-सिंहने नई राजधानी झालरापाटन मए शहरपनाहके आबाद की, और ऊर्मलसे तह्सील उठाकर उक्त नग्रमें बाशिन्दोंको बड़ी तसल्लीके साथ बसाया; उनके

इत्मीनानके वास्ते शहरके बाज़ारमें इस मज़्मूनकी एक प्रशस्ति खुदवाकर क़ाइम करादी, कि जो कोई शहरमें बसेगा, उससे दाण नहीं लिया जावेगा; और हर क़िस्मके मुजिमसे १।) सवा रुपयेसे ज़ियादह जुर्मानह वुसूल नहोगा. इस बातपर कोटा और ख़ासकर मारवाड़से बेशुमार पेशहवर लोग दौड़ आये. विक्रमी १९०७ [हि० १२६६ = ई० १८५०] में पहिले महाराजराणाके समय कामदार हिन्दूमल्लने इस पत्थर (प्रशस्ति) को उखड़वाकर शहरके पास वाले तालाबमें डुबवा-दिया; उस वक़्से वाशिन्दोंके कुल हुक़ूक़ जाते रहे. कहते हैं, कि इस तालाबको जैसू नामी किसी राजपूतने बनवाया था, मगर ज़ालिमसिंहने इसकी मरम्मत कराकर एक पुस्तह नहर इसमेंसे जारी की, जिससे चन्द गांवोंकी ज़मीन सेराब होती है. उक्त शहरमें कई बड़े बड़े मालदार साहूकार महाजन हैं, टकशाल और राज्यके सब कारख़ाने तथा झालरापाटन नामकी तह्सीलका सद्र भी यहीं है.

छावनी- यहां महाराजराणाका महल, अदालतें और कारख़ानोंके मकानात बने हुए हैं; छावनी ऊंची पथरीली ज़मीनपर आबाद है. अगर्चि झालरापाटन शहरसे बस्ती यहां ज़ियादह है, लेकिन् पानीकी कमी है. विक्रमी १९२९-३० [हि० १२८९-९० = ई० १८७२-७३] में होल्डिच साहिब (Lt Holdich, R E) ने झालरापाटन कन्टोन्मेण्ट बनाना शुरू किया, लेकिन् यहां राजाके महलके गिर्द चन्द झोंपड़े थे, पुरानी आबादी दक्षिण तरफ़ दो कोसके फ़ासिलेपर रह गई; पश्चिम तरफ़ एक बड़े तालाबके पास महल है; उत्तर तरफ़ जंगल्दार पहाड़ीके गिर्द फ़सील बनी हुई है. यहांसे शहर ख़ूब दीखता है, रईस अगर्चि छावनीमें रहते हैं, लेकिन् राजधानी इसीको समझना चाहिये. छावनीसे २ 1/2 मील उत्तरको कोटेकी रियासतका क़िला गागरौन है. शहर का नाम पहिले पाटन था, लेकिन् ऐसा भी प्रसिद्ध है, कि पहिला रईस झाला राजपूत होनेसे झालरापाटन नाम पड़गया. यह शहर पहाड़ीके दामनमें आबाद है, इसके पासकी पहा-ड़ियोंका पानी एक झीलमें, जिसपर एक पुस्तह पाल आध मीलसे ज़ियादह बनी है, जमा होता है; और उसपर कईएक मन्दिर व पुराने महल बने हैं; पालके पीछे शहर वाक़े है. पहाड़ीके दामन व शहरके दर्मियान चन्द बाग़ीचे हैं. झीलके सिवा शहरकोट चारों तरफ़ बुर्जों और खाईसे मह्फ़ूज़ है; शहरसे दक्षिण तरफ़ ४०० या ५०० गज़की दूरीपर चन्द्रभागा नदी बहती है, जो उत्तर पूर्वकी तरफ़ चार मील मैदानमें बहने बाद कालीसिन्धसे जा मिली है. चन्द्रभागा और शहरसे छावनीको जानेवाली सड़क के बीच १५० फुट बलन्द एक पहाड़ीपर ज़िक्र कियाहुआ क़िला अधूरा बना हुआ पड़ा है. शहरकी उत्तरी दीवारसे छावनीका राजमहल २॥ कोसके क़रीब है. इस

नये महलके गिर्द ऊंची और चौकोर दीवारोंके कोनोंपर गोल बुर्ज और बीचमें दो दो आधे आधे बुर्ज बने हैं, दीवारोंकी लम्बाई ७३५ फुट है; पूर्वकी तरफ़ सद्र दर्वाज़ह है. छावनीसे डेढ़ मील पूर्व तरफ़ कालीसिन्ध नदी है.

शाहाबाद– यह पर्गनह कोटेके रईसने ज़ालिमसिंहके बेटेको बख़्शा था, जो पीछेसे झालावाड़ रियासतका एक हिस्सह होगया. इस क़स्बेके बसनेका वक़्त ठीक ठीक मालूम नहीं, कि यह किस ज़मानहमें आबाद हुआ, लेकिन् ज़बानी रिवायतों वग़ैरहसे मालूम होता है, कि नीचेका क़िला श्रीराम और लक्ष्मणका बनवाया हुआ है. इस क़स्बेमें १००० मकानोंके क़रीब आबादी है, और आलमगीरके ज़मानहकी एक मस्जिद है. शहरके पास पहाड़ीपर ऊपरी क़िलेको ज़ालिमसिंहने बनवाया था. पान यहां कसरतसे होते हैं, लेकिन् पानी निकम्मा है.

केलवाड़ा– यह शाहाबाद पर्गनेमें है, इसके पास ही उम्दह और सायादार दरख़्तोंके जंगलमें तपत कुंड है, जहां गर्मीके मौसममें मेला लगता है.

छीपाबड़ोद– यह एक पुराना क़स्बह है, छीपा लोग ज़ियादह रहनेके सबब छीपाबड़ोदके नामसे मश्हूर है, और इसी नामको तह्सीलका सद्र मक़ाम है. यहां विक्रमी १८५८ [हि० १२१६ = ई० १८०१] में दूसरे तीन गांवके बाशिन्दोंको पनाह देकर इसका नाम छीपाबड़ोद प्रसिद्ध किया गया.

मनोहरथानह– यह क़स्बह एक तह्सीलका सद्र मक़ाम है, पहिले इसको खातारवेड़ी कहते थे. दिल्लीके शहन्शाहोंके समयमें यह पर्गनह नव्वाब मनोहरख़ां (मुनव्वरख़ां) को दिया गया था, जिसने इस गांवको अपने नामपर आबाद किया. बाद उसके यह भीलोंके हाथ लगा, जिनके पाससे कोटेके महाराव भीमसिंहने छीनकर अपने क़ब्ज़हमें लिया. इसके अन्दर एक पुख़्तह गढ़ी तो पुरानी है, बाहरवालीको भीमसिंहने बनवाया, और शहरपनाह ज़ालिमसिंहने तय्यार कराई. क़स्बहकी आबादी ५०० घरोंकी है; क़िलेके नीचे परवन और काकर दोनों नदियें शामिल होकर एक बहुत गहरा कुण्ड बनगई हैं. पीतलके बर्तन यहां अच्छे बनाये जाते हैं, और क़स्बहके पास ही साखूका एक जंगल है.

सुकेत– यह क़स्बह बहुत पुराना है, जो पहिले सख़्तावत राजपूतोंका मक़ाम था, और इसमें एक क़िला भी था, जिसको महाराष्ट्र (मरहटा) लोगोंने तोड़डाला. क़स्बहमें झालोंकी कुलदेवीका मन्दिर है, जहां हर साल दशहरेके उत्सवपर महाराजराणा पूजा करनेको जाते हैं. यह एक तह्सीलका सद्र मक़ाम है.

चेचट- जो हालमें इसी नामकी तह्सीलका सद्र है, अगले ज़मानहमें सखतावत राजपूतोंका था; लेकिन् कोटेके महाराव भीमसिंहने उनसे छीन लिया.

पंचपहाड़-यह एक तह्सीलका गांव है, जिसका नाम पांच पहाड़ियोंपर आबाद होनेके सबब पंचपहाड़ रक्खा गया, और इसी नामसे पर्गनह भी नामज़द कियागया. कहते हैं, कि पहिले पहल इसको पांडवोंने आबाद किया था, फिर उज्जैनके राजा विक्रमादित्यके क़ब्ज़हमें रहा, अक्बरके अ़ह्दमें रामपुराके ठाकुरने जागीरमें पाया, जिससे उदयपुरके महाराणा दूसरे संग्रामसिंहने छीनकर अपने भानूजे जयपुर वाले राजा माधवसिंहको दिया; बाद उसके कुछ अ़रसह तक हुल्करके तह्तमें रहकर उससे लियाजाने बाद सर्कार अंग्रेज़ीकी तरफ़से ज़ालिमसिंहकी मारिफ़त कोटाके रईसको अ़ता हुआ. इस क़स्बहमें १००० घरोंकी बस्ती है. एक तालाबके किनारेपर जैन और विष्णुके दो मन्दिर हैं, बाहरकी तरफ़ एक मन्दिर माताजीका भी है, और हर एक मन्दिरमें प्रशस्ति लगीहुई है. इस पर्गनहके कुल ७७ गांवोंमेंसे, जिनका रक़बह १५७०६२ बीघा, १४ बिस्वा, और सालानह हासिल १६२३५३-३-०० है, १६ गांव गैर आबाद, ५ धर्मार्पण या दानके, और ५६ खालिसहके हैं. ज़मींदार यहांके अक्सर सोंदिया लोग हैं.

आवर- पांच सौ वर्षका अ़रसह हुआ, कि मुहम्मदशाह खिल्जीके वक्तमें सखतावत राजपूतोंने इस पर्गनहको बसाया था. बाद उसके कई खानदानोंके क़ब्ज़हमें रहताहुआ हुल्करके हाथ लगकर कोटावाले रईसके तह्तमें आया, और अखीरमें झालावाड़के शामिल होगया. इस पर्गनहके मुतअ़ल्लिक़ ४२ गांव हैं, जिनमेंसे चौतीस खालिसहके और बाकी पुण्यार्थ वगैरहमें तक्सीम हैं. इन कुलका रक़बह ७५३७० बीघा, ३२.२ बिस्वा है. क़स्बहमें एक मन्दिर जैनका और मीरां साहिब नामी मुसल्मान पीरकी एक दर्गाह, दो मक़ाम पुराने ज़मानहके हैं.

दीग - अक्बरके ज़मानहमें इस पर्गनहको एक क्षत्रीने बसाया था, इससे पहिले अनोप शहर नामका एक क़दीम क़स्बह इसके आस पास होना बयान किया जाता है, लेकिन् उसका तह्क़ीक़ पता नहीं मिलता, कि वह किस जगह आबाद था. क़स्बह दीग अपनी आबादीके वक्तसे कई हिन्दू व मुसल्मान रईसोंके क़ब्ज़हमें रहता हुआ अखीरमें जशवन्तराव हुल्करके हाथ लगा, जिससे कोटाकी मुसाहबतके वक्त ज़ालिमसिंहने कई दूसरे गांवों समेत ठेकेमें लिया, लेकिन् झालावाड़ रियासत क़ाइम होनेपर मए तीन दूसरे मक़ामोंके मदनसिंह, अव्वल रईस झालावाड़को दियागया. इसके मुतअ़ल्लिक़ ८८ गांवोंमेंसे, जिनका रक़बह २६०३१४ बीघा, ३ बिस्वासे

ज़ियादह और कुल आमदनी सालानह १०२१३६- १-९ है, खालिसहके ६९, जागीरके १०, ग़ैर आबाद ७ और पुण्यार्थ जागीरके २ हैं. इस पर्गनेके पुराने मक़ामात यह हैं- कल्याणसागर तालाब, जिसको कल्याणसिंह चन्द्रावतने विक्रमी १६६३ [हि० १०१५ = ई० १६०६] में बनवाया था; इसके पासही ग़ाइबशाह व लाल हक़्क़ानी मुसल्मान पीरोंकी दो दर्गाहें हैं. एक पक्का कुआ कोटावाले मीरांख़ांका विक्रमी १८६९ [हि० १२२७ = ई० १८१२] में बनवाया हुआ मौजूद है, और मुसल्मानी अमल्दारीके वक़्में बने हुए एक मक़्बरेका खंडहर भी पड़ा है.

गंगराड़- यह क़स्बह इसी नामकी तह्सीलका सद्र मक़ाम, दर्याय कालीसिन्धके किनारेपर वाक़े है, पहिले इसका नाम 'गिरिगरन' था. अगर्चि इसके आबाद होनेका ज़मानह और बसानेवालेका नाम ठीक तौरपर दर्याफ़्त नहीं हुआ, लेकिन् दन्त कथासे पायाजाता है, कि कैरव राजपूतोंने इसे अपने गुरु गर्गचर्ग (गर्गाचार्य) को जागीरमें दिया था. फिर किस किसके क़ब्ज़हमें रहा सो मालूम नहीं, लेकिन् शाहजहां बादशाहके अह्दसे दयालदास झाला और उसकी औलादके क़ब्ज़हमें रहा, जिनसे छीनकर कोटामें मिलाया गया. अब दयालदासकी औलादकी जागीरमें कुंडला इसी रियासतमें है, इस पर्गनेका और हाल दूसरे पर्गनोंका सा ही है. पर्गनहके गांवोंकी तादाद १३७ है, जिसमेंसे ख़ालिसहके ९७, जागीर में २०, ग़ैर आबाद १६ और धर्म सम्बन्धी जागीरमें ४ हैं. कुल पर्गनहकी आमदनी १०७१७८ रुपया है. यहांके पुराने मक़ामात, एक तालाब, और एक मकान है. तालाबके किनारेपर उन चन्द राणियोंके चौरे मए पत्थरमें खुदी हुई प्रशस्तियोंके मौजूद हैं, जो अगले ज़मानहमें सती हुई थीं. नदीके किनारे एक बहुत पुराना मकान है, जिसमें अब राज्यकी कचहरी और दफ़्तर है. मालूम होता है, कि पहिले इस शहरमें जौहरी लोगोंकी दूकानें थीं, क्योंकि अबतक इसके आस पास क़ीमती छोटे छोटे लाल नग पाये जाते हैं.

राटादेई- यह झालावाड़ छावनीसे १४ मील पूर्व हाड़ौती और झालावाड़के बीचके पहाड़ी सिलसिलेपर एक भीलोंकी पाल या बस्ती है. पास वाले एक छोटे मन्दिरसे इसका नाम रक्खा गया है; और 'मानसरोवर' नामके एक खूबसूरत तालाबके पूर्वी किनारेपर बसा है. मुकुन्दरा, गंगराड़, और मनोहरथानह जिस तराईमें आबाद हैं, वही यहां तक चली आई है, जो इस मक़ामपर ६ या ७ सौ गज़ चौड़ी है, और जिसपर आर पार पाल बांधकर यह सरोवर बनालिया गया है. पूर्वी, उत्तरी, और पश्चिमी किनारे इस झीलके पानीके क़रीब तक गुंजान दरख़्तों और करौंदोंकी झाड़ीसे खूबसूरत मालूम होते हैं. यहांपर बाघ व चीतोंके हमेशह पायेजानेसे रियासतके रईस अक्सर शिकारको आते हैं. बयान कियाजाता है, कि क़दीम ज़मानहमें इस झीलके दक्षिणी नशेबपर श्रीनगर नामका एक क़स्बह बड़ी दूर तक आबाद था,

जिसके चिन्ह सिवाय तीन मन्दिरों और कईएक खंडहरोंके कुछ भी दिखलाई नहीं देते, लेकिन् दूर दूरतक घड़ेहुए पत्थर पड़े पायेजानेसे मालूम होता है, कि यह क़स्वह बड़ी दूरतक आबाद था. किसी किसी जगह गली कूचे भी नज़र आते हैं; दक्षिण पश्चिमी किनारेपर भीलोंने एक गांव गरगज नामका बसाया है. सबसे बड़ा मन्दिर महादेवका है, जिसको एक ग्वालने बनवाया था. झीलके दक्षिण तरफ़के खंडहरकी प्रशस्तिसे मालूम होता है, कि यह वैष्णवका मन्दिर है, जिसको शाह दमोदरशाहने विक्रमी १४१६ कार्तिक कृष्ण १ [हि० ७६० ता० १५ ज़िल्क़ाद = .ई० १३५९ ता० ९ ऑक्टोबर] को बनवाया था. कहते हैं, कि यह क़स्वह खीची राजका एक मुख्य स्थान था, जिस राज्यकी राजधानी पहिले मऊ थी. झीलकी पाल बहुत लम्बी चौड़ी है, और उसपर बहुतसी छत्रियां पुराने ज़मानेकी बनीहुई करौंदोंकी झाड़ीके अन्दर ढकीहुई हैं. हर एक चबूतरे और छत्रीपर राजाओं और सतियोंकी मूर्तियां मए उनके नाम और उनकी वफ़ातके साल संवत्के मौजूद हैं. इन छत्रियोंपरके कईएक लेख अजमेर मेरवाड़ा गज़ेटिअरकी तीसरी जिल्दमें दर्ज हैं. झीलके पश्चिम दो मीलके फ़ासिलेपर, जहांसे एक नदी चटानको काटकर निकली है, उसके उत्तर मैदानाके महलका खडहर है, जो खीची राजपूतोंका एक बड़ा स्थान था, और जिसका बड़ा हिस्सह अबतक ऊंची टेकरी व पुराने गढ़के खंडहरके रास्तहके सिरेपर है. महलके नीचे मैदाना नामका एक क़स्वह वाक़े होना बयान कियाजाता है; तीन मन्दिर, एक छत्री और कई चबूतरे वग़ैरह वहां बनेहुए हैं. इस जगहसे वह नदी एक उजाड़ घाटी, और दक्षिणी मगरियोंमें एक लम्बी नालके दर्मियानसे गुज़रकर, जिसके उत्तर रुख़ एक बड़ा वीरान और भयानक जंगल है, मऊ मक़ामके मैदानमें दाख़िल होती है. तमाम मगरियोंमें घाटीरावकी बहादुरानह कार्रवाईके मुतअल्लिक़ कई कहानियें मश्हूर हैं. खीची महाराव क़दीम ज़मानहका एक बड़ा बहादुर शख़्स था.

कदीला– राटादेई और मान सरोवरसे दो मील पूर्व और उसी घाटीमें एक बड़ी झील है, जिसकी लम्बाई २५० गज़ और चौड़ाई १०० गज़के क़रीब है. इसकी निस्बत बयान किया जाता है, कि यह मान सरोवरसे भी ज़ियादह प्राचीन है, जिसको मऊके कदीला नामी किसी राजा या बनियेने नालमें पानीके निकासको रोककर बनवाया था. कदीलाके पश्चिम तरफ़ रंगपट्टन नामका एक प्राचीन नग्र था, लेकिन् अब उसका कोई चिन्ह नहीं पाया जाता. इसके राजाका नाम लाखा, और राणीका नाम शोडी था. कहते हैं, कि एक दिन राजा और राणी दोनों भोला नामी एक डोम (ढोली) का गाना सुन रहे थे. राजाने खुश

होकर डोमको कहा, कि मांग, जो कुछ तू मांगेगा, पावेगा. इसपर राणीने उस डोमको अपने गलेका एक बेशक़ीमती हार मांगनेके लिये अपने गलेकी तरफ़ इशारह किया. जिस वक़ राणीने महलके झरोखेसे यह इशारह डोमको किया, और राजाको नीचे बैठेहुए उसके सामने रक्खेहुए काचमें अक्स पड़नेके सबब राणीकी यह हरकत देखनेसे शुब्हा पैदा होगया, कि राणीने इस डोमको अपने मांगे जानेके लिये इशारह किया है. इसपर राजाने ना खुश होकर राणीको डोमके हवाले करदिया; पर उसने सच्चे ख़िदमतगार की तरह राणीकी ख़िदमत की. बाद एक अरसेके सिर्फ़ एकही मर्तबह राजा व राणीकी मुलाक़ात हुई, उसी वक़ दोनों पत्थरके होगये. उस समयकी एक कच्ची छत्री दोनों की वहांपर मौजूद है. उक्त राणी बड़ी पतिभक्त थी, जिसकी एक छत्री कदीलाकी पालपर बनवाईगई थी, लेकिन् इस वक़ वह मौजूद नहीं है.

मज़्हबी मक़ामात व तीर्थ- झालरापाटनके मुख्य मन्दिरोंकी निस्बत लोग ऐसा बयान करते हैं, कि जिस वक़ यह नया शहर (राजधानी) बनरहा था, उस समय गंगाराम नामी एक लोहारको अपने मकानकी तामीरके दिनोंमें एक स्वाब नज़र आया, जिसमें उसे यह मालूम हुआ, कि इस मक़ामपर ज़मीनमें चार मूर्तियां निकलेंगी. उसने स्वाबके इशारेके मुवाफ़िक़ ज़मीनको खोदा, तो अन्दरसे पत्थरका एक सन्दूक़ निकला, जिसमें द्वारिकानाथ, रामनिक, गोपीनाथ और सन्तनाथकी चार मुर्तियां थीं. इस बातकी ख़बर कोटेमें ज़ालिमसिंहके पास पहुंची; वह यह सुनकर फ़ौरन् झालरापाटनमें आया, और चारों मुर्तियोंपर एक बालकके हाथसे चार हिन्दू धर्म मार्गकी चिट्ठियां रखवाईं, जिसपर यह सिद्धान्त निकला, कि द्वारिकानाथने वल्लभ कुल, रामनिकने विष्णु मार्ग, सन्तनाथने जैनमत पसन्द किया, और उसीके मुताबिक़ मन्दिर बनवाये जाकर पूजा प्रतिष्ठा की गई; ये मन्दिर राजधानीमें मौजूद हैं. गोपीनाथको कोई मार्ग पसन्द नहीं आया, इसलिये उनका कोई मन्दिर नहीं बनाया गया.

चन्द्रभागा (१) नदीकी बाबत ऐसा बयान कियाजाता है, कि एक राजा

---

(१) इसके किनारेपर कई पुराने मन्दिरोंके और क़दीम राजधानी झालरापाटनके खंडहर पाये जाते हैं. एक बयान यह है, कि राजा हूणने यह शहर आबाद किया था; और दूसरा यह भी बयान है, कि राजा भीम पांडवने इस शहरकी बुन्याद डाली थी; और तीसरा बयान यह है, कि राजपूत जैसूने, जिसको पत्थर खोदते वक़ पारस हाथ लगा था, इस शहरको बनाया.

जिसको कोढ़की बीमारी थी, एक रोज़ शिकार खेलनेके समय किसी चितकबरे सूअरका पीछा करता हुआ उस मक़ामपर पहुंचा, जहांसे कि यह नदी बहती है; पास ही एक तलाईमें कुछ पानी भरा था, वह सूअर अपनी जान बचानेके लिये तलाईमें कूदगया और तैरकर दूसरे किनारेपर पहुंचा, तो रंग उसका बिल्कुल सियाह होगया. राजाने जब यह हाल देखा, तो खुद भी उस पानीमें कोढ़ मिटजानेके ख़यालसे नहाया; नहाते ही बीमारीका निशान तक बाक़ी न रहा; उसी समयसे वह मक़ाम तीर्थ माना गया, जहां हर साल कार्तिक महीनेमें एक हफ्तह तक दूर दूरके यात्रियोंकी भीड़ जमा रहती है, मेलेमें गाय, बैल, भैंस और पीतल तांबेके बर्तन वगैरह चीज़ें सौदागर लोग बेचनेको लाते हैं.

वैशाख महीनेमें पाटन तालाबके किनारे एक दूसरा बड़ा मेला होता है, जिसमें हाड़ोती व क़रीबवाली रियासतोंके ज़मींदार वगैरह आते हैं; यहां भी मवेशीकी ख़रीद व फ़रोख़्त होती है. मनोहर थानहमें फाल्गुन महीनेमें शिवरात्रिका बड़ा मेला १५ दिनतक रहता है, जिसमें हज़ारहा यात्री आस पासके जमा होते हैं, मवेशी, बर्तन व कपड़ा वगैरह बिकता है. कैलवाड़ा वाक़े पर्गनह शाहाबादमें १५ रोज़तक एक बड़ा भारी मेला लगता है, यात्री लोग तपतकुंड सीताबारीमें स्नान करते हैं, और ज़िराअ़तके मुतअ़ल्लक़ औज़ारों तथा बैलोंकी यहां सौदागरी होती है.

आमदो रफ्तके रास्ते - रियासतके ख़ास ख़ास रास्ते व सड़कें ये हैं:-

१ छावनीसे झालरापाटन तक सड़क, २ छावनीसे कोटे तक सड़क, ३ आगरा और बम्बईकी शाह राह दक्षिण पूर्वको, और दक्षिणमें आगरा व इन्दौरका रास्तह, दक्षिण पश्चिम उज्जैनको, पश्चिम तरफ़ नीमचको, और उत्तर पश्चिम कोटाको, जिस तरफ़ नई सड़क जावेगी.

तारीख़.

झालरापाटनवाले अपना निकास गुजरातके इलाक़े हलवदसे बतलाते हैं, जो इस समय हलवदकी राजधानी ध्रांगधरामें है. राजपूतानह गज़ेटिअरमें, जो पीढ़ियां ध्रांगधराकी लिखी हैं, उनमें नाम लिखनेमें फेर फार मालूम होता है, इस वास्ते हम

बम्बई गैज़ेटिअर जिल्द ८ के पृष्ठ ९२० से चुनकर लिखते हैं, जो हलवदके राज्य वंशी और बड़वा भाटोंसे दर्यांफ़्त करके लिखागया है.

यह झाला क़ौमके राजपूत, जो पहिले मकवाना कहलाते थे, अपनी पैदाइश मार्कण्डेय ऋषीसे बतलाते हैं, और कीर्तिपुरमें जो थलमें पारकर नगरके पास है, आबाद हुए.

पहिला राजा व्यासदेवका बेटा केसरदेव १ हुआ, जो सिन्धके राजा हमीर सूमरासे लड़कर भाग गया. उसका बेटा २ हरपालदेव मकवाना, पाटणके राजा करण सोलंखीके पास जा रहा; उस सोलंखी राजाने हरपालको २३०० गांवोंका राज्य दिया और हरपालने पाटड़ीमें अपनी राजधानी बनाई. एक दिन मस्त हाथी छूटगया, और हरपालदेवके लड़कोंपर, जो खेल रहे थे, हमलह किया, तब उस राजाकी राणीने उन्हें झाल (हाथमें उठा) कर बचालिया, जिससे उन तीनों लड़कोंकी औलाद झाला कहलाई. उस समय एक चारण भी खड़ा था, जिसे टप्पर (धक्का) देकर बचाया, जिसकी औलादके टापरया चारण कहलाये, जो झाला राजपूतोंकी पौलपर अबतक नेग पाते हैं. हरपालदेवके तीन बेटे थे, बड़ा सोढ़देव, जो पाटड़ीमें गद्दीपर बैठा, दूसरा मांगू, जो जाबूमें रहा और जिसकी औलाद अब लीमड़ीमें है; तीसरा शेखराज, जिसकी सन्तान सचाणा और चोर वड़ोदरामें रही. हरपाल-देवकी वह राणी, जिसको शक्तिका अवतार बतलाते हैं, झाला लोग उसकी अबतक पूजा करते हैं.

सोढ़देवका पुत्र ४ दुर्जनशाल गद्दीपर बैठा. उसके बाद ५ जालकदेव (१), उसके बाद ६ अर्जुनसिंह, जिसको डारिकादास भी कहते हैं, फिर ७ देवराज, इसका पुत्र ८ दूदा, इसका सूर्यसिंह, उसका ९ मांनल, जिसने उत्तरी गुजरातमें मांनलपुर आबाद करके अपने छोटे बेटे सूरजमल्लको दिया. यह मांनल लड़ाईमें मारागया. उसके १० विजयपाल, उसका ११ मेघपाल, उसका १२ पद्मसिंह, उसका १३ उदयसिंह, जिसके २ बेटे थे, बड़ा पृथ्वीराज, और छोटा वेगड़. बड़े भाईने छोटे भाईको राज देदिया, और आप थलमें जा रहा, जिसकी औलादवाले थलेचा झाला कहलाते हैं.

१४ वेगड़ गद्दीपर बैठा, इसने हलवदके पास वेगड़वाव गांव आबाद किया. इसका बेटा १५ रामसिंह हुआ. इसने ध्रांगध्राके इलाक़ेमें रामपुर

---

(१) गुजरात राजस्थानमें जालकदेव लिखा है.

गांव बसाया. उसके बाद १६ वीरसिंह, उसका १७ रणमलसिंह, उसका १८ शत्रुशाल. इसने मांडलमें अपनी राजधानी बनाई. इसका दूसरा नाम सुल्तान है. इसने सुल्तानपुर भी बसाया. वह गुजरातके बादशाह अह्मदशाहसे तीन दफ़ा लड़ा, परन्तु शिकस्त खाई. इनके १२ बेटे थे, जिनमें बड़ा, १९ जैतसिंह, अपने बापकी गद्दीपर बैठा; २ राघवदेव मालवाके बादशाहके पास जारहा, और जागीर मिली, अब उसकी औलाद उज्जैनके पास नर्वरमें है; ३ लाखा, ४ दूदा, ५ प्रतापसिंह, ६ जयमल्ल, ७ मेपा, ८ कान्हा, ९ गजण, १० सारंग, ११ वीरसिंह, १२ देशल.

१९ जैतसिंहको गुजरातके बादशाहोंने पाटड़ीसे निकाल दिया, और वह कुच्छमें जारहे. इसके बाद २० बनवीर गद्दीपर बैठा, जिसका दूसरा भाई जगमल्ल, ३ मूला, ४ पचायण, ५ मेघराज, ६ श्याम था. बनवीरके ६ बेटे हुए, २१ भीमसिंह गद्दीपर बैठा, दूसरा अज्जा, ३ रामसिंह, ४ प्रतापसिंह, ५ पुंजा, ६ लाखा. भीमसिंहके बाद उसका बेटा २२ बाघसिंह गद्दीपर बैठा, यह गुजरातके बादशाहसे लड़कर मारागया. बाघसिंहके बारह लड़के थे, जिनमेंसे पहिले छ: १ नाया, २ महपा, ३ संग्राम, ४ जोधा, ५ अज्जा, ६ रामसिंह तो अपने बापके साथ मारेगये, और एकको मुसल्मान थानहदारोंने मारडाला, जिसका नाम ७ वीरमदेव था, ८ राजधर अपने बापका क्रमानुयायी बना; ९ लाखा, १० सुल्तान, ११ विजयराज, और १२ जगमाल था. बाघसिंहके बाद २३ राजधर गद्दीपर बैठा, जिसने विक्रमी १५४४ माघ कृष्ण १३ [हि० ८९३ ता० २७ मुहर्रम = ई० १४८८ ता० १३ जेन्युअरी] को हलवद शहर आबाद करके उसको अपनी राजधानी बनाया. राजधरके तीन बेटे, १ अज्जा, २ सज्जा और ३ राणू हुए.

राजधर विक्रमी १५५६ [हि० ९०४ = ई० १५००] में मरगया. अज्जा और सज्जा अपने बापको जलानेके लिये गये, पीछेसे राणू गद्दीपर बैठगया, इसपर अज्जा और सज्जा दोनों सुल्तान गुजरातकी मदद लेनेको गये, लेकिन् राणूने नज्रानह देकर मुसल्मानोंको खुश करलिया, तब अज्जा व सज्जा वहांसे निकलकर कुछ दिन जोधपुर रहे और पीछे चित्तौड़में पहुंचे. यह अज्जा, महाराणा सांगा और बाबर बादशाहकी लड़ाईके समय विक्रमी १५८४ [हि० ९३३ = ई० १५२७] में बड़ी बहादुरीके साथ मारागया, जिसकी औलाद मेवाड़के उमरावोंमें सादड़ीके राजराणा हैं. दूसरा सज्जा जो बहादुरशाह गुजरातीके हमलेमें चित्तौड़पर मारागया, उसकी औलादमें गोगूंदा और देलवाड़ाके राजराणा हैं.

२४ राणू हलवदका मालिक रहा. जिसके बाद २५ मानसिंह गद्दीपर बैठा.

सुल्तान बहादुरशाहने मानसिंहसे हलवद छीन लिया था, लेकिन् फिर बादशाहने कुछ इलाक़ह और हलवद उसको देदिया. मानसिंहके बाद उसका बेटा २६ रायसिंह गादी बैठा. इसके पीछे २७ चन्द्रसिंह राज्यका मालिक हुआ; इसके छः बेटे थे १ पृथ्वीराज, २ आशकरण, ३ अमरसिंह, ४ अभयसिंह, ५ रामसिंह, और ६ राणू. पृथ्वीराज अपने बापसे बाग़ी होगया था, और उसने बादशाही ख़ज़ानह भी लूटलिया था, इस सबबसे वह अहमदाबादमें क़ैद होकर उसी हालतमें मरगया. दूसरा आशकरण चन्द्रसेनके बाद विक्रमी १६८४ [हि० १०३७ = ई० १६२८] में हलवदकी गद्दीपर बैठगया. २८ पृथ्वीराजके दो बेटे हुए, १ सुल्तान्, २ राजू; इनमेंसे सुल्तानने, तो बांकानेरका इलाक़ह अपने क़ब्ज़हमें किया, और दूसरे राजूने बढ़वानका ठिकाना लिया. २९ राजूके तीन बेटे थे, १ सबलसिंह, २ उदयसिंह, और ३ भावसिंह, राजू बढ़वानकी गद्दीपर विक्रमी १७०० [हि० १०५३ = ई० १६४३] में मरगया.

राजूका तीसरा बेटा ३० भावसिंह, जो बचपनसे ही ईडरमें आरहा था, उसकी शादी सावर (१) में हुई. भावसिंहका बेटा ३१ माधवसिंह अपनी ननिहाल सावरमें पर्वरिश पाकर होश्यार हुआ था. माधवसिंहकी ताक़त देखकर सावरके ख़ानदानको ख़ौफ़ हुआ, कि ऐसा न हो, जो हमारा ठिकाना छीन लेवे; इस सन्देहको दूर करनेके लिये माधवसिंह पच्चीस सवार लेकर महाराव भीमसिंहके पास कोटे गया; भीमसिंह उस वक़ अच्छे अच्छे राजपूतोंको एकट्ठा कर रहा था, क्योंकि वह सय्यद अब्दुल्लाह और हुसैनअलीका मददगार होकर निज़ामुल्मुल्क फ़त्ह जंगपर चढ़ाई करनेका इरादह रखता था. उसने माधवसिंहको अपना फ़ौज्दार बनाया और उसकी बेटीके साथ अपने बेटे अर्जुनसिंहकी शादी करके नांनता गांव जागीरमें दिया, जो कोटाके क़रीब है.

माधवसिंहके बाद उसका बेटा ३२ मदनसिंह भी अपने बापकी जगह कोटेका फ़ौज्दार और नांनतेका जागीरदार रहा. इनके दो बेटे १ हिम्मतसिंह, और २ पृथ्वीसिंह थे. पृथ्वीसिंहके दो बेटे हुए शिवसिंह, और ज़ालिमसिंह. मदनसिंहके बाद ३३ हिम्मतसिंह बापकी जगह क़ाइम हुआ, जिसने चन्द मारिकोंमें अच्छी अच्छी कारगुज़ारी ज़ाहिर की और जयपुरकी फ़ौजका मुक़ाबलह कोटेकी तरफ़से करनेके सिवा वह

---

(१) सावरकी बाबत बम्बई गज़ेटिअर वग़ैरहमें मालवाके इलाक़हमें होना लिखा है, वह दुरुस्त नहीं है. यह एक ठिकाना (सावर) अजमेर इलाक़हमें सीसोदिया शक्तावत राजपूतोंका मेवाड़की पूर्वोत्तरी सीमापर है.

अह्दनामह क़ाइम किया, जिसके बमूजिब यह रियासत मरहटोंकी ख़िराज गुज़ार हुई, और क़दीम ख़ानदानको नये सिरसे मस्नद हासिल करनेका मौक़ा मिला. हिम्मत-सिंहके कोई औलाद न होनेके कारण उसके बाद पृथ्वीसिंहका छोटा बेटा ३४ ज़ालिमसिंह क्रमानुयायी बना.

विक्रमी १८१७ [हि० ११७३ = ई० १७६०] में जयपुरके महाराजा माधवसिंह अव्वलने कोटापर फ़ौज भेजी, तब ज़ालिमसिंहने जयपुरके मददगार मरहटोंको अपनी अक़्मन्दीसे रोका, जिससे भटवाड़ाके क़रीब कोटाकी फ़ौजने जयपुरकी फ़ौजपर फ़त्ह पाई. इस फ़त्हके होनेसे ज़ालिमसिंहकी बड़ी क़द्र हुई, और वह कोटाकी रियासतका बिल्कुल मुसाहिब बनगया. यह बात हाड़ा राजपूतोंको नागुवार हुई, तब उन्होंने महाराव गुमानसिंहको वर्ग़लाकर काममें ख़लल डाला. ज़ालिमसिंहने ऐसा बेइख़्तियारीके साथ काम करनेसे इन्कार किया; तब महारावने उससे मुसाहिबीका काम और नांनताकी जागीर छीनली. ज़ालिमसिंह कोटेसे निकलकर उदयपुर आया, उन दिनोंमें मेवाड़के सर्दारोंकी ना इत्तिफ़ाक़ीसे महाराणा अरिसिंहको गद्दीसे ख़ारिज करनेके लिये रत्नसिंह नाम दूसरा बनावटी महाराणा खड़ा कियागया था. ज़ालिमसिंहका उस वक़्में आना बहुत मुफ़ीद हुआ, याने महाराणाने ज़ालिमसिंहको आते ही गांव चीताखेड़ा जागीरमें देकर अपने सलाह-कारोंमें शामिल किया. आख़िरकार विक्रमी १८२५ [हि० ११८२ = ई० १७६८] में महाराणा अरिसिंहने मरहटोंसे मुक़ाबलह करनेके लिये उज्जैनकी तरफ़ फ़ौज भेजी, और मेवाड़के बहुतसे सर्दार इस मुक़ाबलहमें मारे गये. ज़ालिमसिंह मरहटोंकी क़ैदमें पड़ा, और वह अंबाजी एंगलियाके बाप त्र्यम्बकरावकी सुपुर्दगीमें रहा. (इस लड़ाईका मुफ़स्सल हाल मौक़ेपर लिखा जायेगा). फिर ज़ालिमसिंह कुछ अ़रसह बाद पंडित लालाजी बल्लालके साथ कोटाको गया, महाराव गुमानसिंहने अगला क़ुसूर मुआ़फ़ करके उसको अपने पास रखलिया, क्योंकि ज़ालिमसिंहके चले जाने बाद इस रियासतका काम अब्तर होगया था.

इसी अ़रसहमें मलहार राव हुल्करका हमलह कोटाके मुल्कपर हुआ, जिसमें कई हाड़े राजपूत बड़ी बहादुरीके साथ मारेगये. ज़ालिमसिंहने अ़क़्मन्दीसे ६००००० रुपया देना करके मरहटोंको पीछा लौटा दिया. इस बातसे महाराव गुमानसिंहने दोबारह ज़ालिमसिंहका इख़्तियार बढ़ादिया, और कुछ अ़रसह बाद गुमानसिंह ज़ियादह बीमार हुआ, तब अपने पुत्र उम्मेदसिंहको, जो नाबा-लिग़ था, ज़ालिमसिंहके सुपुर्द करके परलोकको सिधार गया. उम्मेदसिंह कोटाकी

गद्दीपर बैठा, इस वक्से लेकर पचास वर्ष बादतक ज़ालिमसिंहने कोटाकी रियासतको बड़ी अ़क्लमन्दीके साथ मरहटा लोगोंसे बचाया, और राज्यको बढ़ाया, व आबाद किया, जिसका हाल कोटाकी तवारीख़में लिखा गया है.

विक्रमी १८७४ माघ शुक्ल १४ [हि० १२३३ ता० १३ रबीउस्सानी = ई० १८१८ ता० २० फ़ेब्रुअरी] में गवर्मेंएट अंग्रेज़ीके साथ कोटाकी रियासतका अ़ह्दनामह हुआ, जिसमें एक शर्त यह लिखीगई, कि कोटाकी गद्दीके मुस्तार महाराव और इन्तिज़ाम कुल रियासतका ज़ालिमसिंहकी औलादके हाथमें रहे. इस शर्तपर महाराव उम्मेदसिंहके बाद उनका क्रमानुयायी किशोरसिंह बर्ख़िलाफ़ चलने लगा, और वह कोटासे निकलकर ज़ालिमसिंहको निकाल देनेके लिये एक फ़ौज लेकर चढ़ आया; लेकिन् गवर्मेंएट अंग्रेज़ी वज़ीरकी मददगार थी, इस सबबसे मौज़े मांगरोलके पास महारावने शिकस्त पाई, और नाथद्वारेमें जाकर पनाह ली. फिर महाराणा भीमसिंहकी सिफ़ारिशसे गवर्मेंएट अंग्रेज़ीने महारावको कोटेपर दोबारह क़ाइम किया. विक्रमी १८८० [हि० १२३८ = ई० १८२३] में राजराणा ज़ालिमसिंहका इन्तिक़ाल होगया, और अ़ह्दनामहकी शर्तके मुवाफ़िक़ उनका पुत्र ३५ राज राणा माधवसिंह मुसाहिब बना. यह अपने बापके साम्हनेसे ही कोटाकी कुल रियासतका इन्तिज़ाम करता रहा था, लेकिन् पिछली जो नाराज़गी महारावसे हुई, उसमें ज़ालिमसिंहने इस (माधवसिंह) को बहुत झिड़कियां दीं; और कहा, कि यह सब फ़साद तेरी बद आदतोंके कारण हुआ है. इस शर्मिन्दगीसे माधवसिंह अपनी ज़िन्दगी भर महाराव कोटाके साथ बड़ी नर्मीसे पेश आता रहा. आख़िरकार विक्रमी १८९० माघ [हिज्री १२४९ शव्वाल = ई० १८३४ फ़ेब्रुअरी] में उसका इन्तिक़ाल होगया, तब उसका बेटा ३६ राज राणा मदनसिंह कोटेकी रियासतका मुसाहिब बना.

---
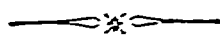
३६ - महाराज राणा मदनसिंह - १.

मदनसिंहके वक्में फिर महाराव रामसिंहसे अ़दावती छेड़ छाड़ होने लगी, और क़रीब था, कि कुछ फ़सादकी बुन्याद क़ाइम हो, लेकिन् गवर्मेंएट अंग्रेज़ी मांगरोल की लड़ाईको नहीं भूली थी; महाराव और उनके मुसाहिबकी ना इत्तिफ़ाक़ीको बिल्कुल मिटानेका इरादह करलिया, और विक्रमी १८९५ [हि० १२५४ = ई० १८३८] में यह फ़ैसलह क़रार पाया, कि जो पर्गनात ज़ालिमसिंहने अपनी बुद्धिमानीसे कोटामें

मिला लिये, उतनी आमदनी ज़ालिमसिंहकी औलादको देकर अलहदह कर दिया जावे; और इसी तरह हुआ, याने बारह लाख रुपया सालानहका मुल्क हस्ब तफ्सील, मुन्दरजे अह्दनामह राजराणा मदनसिंहके तहतमें आया, और जुदा रईस क़रार पाकर पन्द्रह तोपकी सलामी और 'महाराज राणा' ख़िताबसे इज़्ज़त पाई, और झालरापाटन राजधानी मुक़र्रर हुई. उनका रुत्बह व मर्तबह वही मुक़र्रर कियागया, जो राजपूतानहके दूसरे रईसोंका है; सिवा इसके यह भी क़रार पाया, कि अगर दूसरे रईसोंको गोद लेनेका हक़ अता हो, तो उनको भी दियाजावे, मगर विरासतके क़ाइदेके मुवाफ़िक़ सिर्फ़ ज़ालिमसिंहके ख़ानदानमें महदूद रहे. विक्रमी १९०२ [हि० १२६१ = ई० १८४५] में महाराज राणा मदनसिंहका इन्तिक़ाल होनेपर उनकी जगह ३७ महाराज राणा पृथ्वीसिंह झालरापाटनमें गद्दीपर बैठकर झालावाड़का मालिक बना.

३७ - महाराज राणा पृथ्वीसिंह - २.

विक्रमी १९१४ [हि० १२७३ = ई० १८५७] के गद्रमें यह महाराज राणा अंग्रेज़ लोगोंको, जो उनके मुल्कमें पनाहकी ग़रज़से आये, हिफ़ाज़तके साथ अपने पास रखने बाद ख़ैर व आफ़ियतसे अम्नकी जगहोंमें पहुंचाकर सर्कार अंग्रेज़ीके दिली ख़ैरख़्वाह बने. गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीने इस ख़ैरख़्वाहीके एवज़ उनकी बड़ी तारीफ़ की, जिसकी बाबत कप्तान ब्रुस साहिबने भी महाराज राणाकी बहुत कुछ तारीफ़ की है, कि झालावाड़की रियासत हाड़ोतीकी तमाम रियासतोंसे बिह्तर और यहांके रईस सर्कार अंग्रेज़ीके ख़ैरख़्वाह व दिली फ़र्मांबर्दार हैं. अल्बत्तह किसी क़द्र फ़ुज़ूल ख़र्च होनेके सबब क़र्ज़दार हैं, मगर क़र्ज़हकी शिकायत नहीं है; तमाम साहूकार लोग उनका पूरा एतिबार रखते हैं, और महाराज राणाका भी इरादह इस क़िस्मकी बातोंके इन्तिज़ामकी तरफ़ रुजू है. दो साल गुज़श्तहमें जो सलाहें उनको दीगईं, वह भी उन्होंने मन्ज़ूर कीं; अंग्रेज़ी छावनीको जानेवाले अनाजका महसूल मुआफ़ करदिया, और बसूरत तय्यारी रेलकी सड़कके उसके वास्ते इलाक़ह मेंसे ज़मीन देना फ़ौरन् मन्ज़ूर करलिया. गद्रके दूसरे साल नाना राव पेश्वा बाग़ी मेवाड़में नाथद्वारा होकर मेवाड़के पूर्वी हिस्सहमें भागता दौड़ता झालरापाटन पहुंचा, और वहांपर छावनीको घेरकर महाराज राणाको भी क़ैद करलिया, तोपख़ानह, ख़ज़ानह, ज़ेवर, हाथी, घोड़ा वग़ैरह कुल बाग़ियोंने लूटलिया; तब महाराज राणा रातके वक़ उनकी क़ैदसे छूटकर पियादह भागे, और बड़ी तक्लीफ़ और

मुसीबतोंसे शाहाबादके क़िलेमें पहुंचे; बाग़ी लोग भी अंग्रेज़ी फ़ौजके ख़ौफ़से छावनीको छोड़कर भागगये. महाराज राणा फिर अपनी राजधानीमें आये. इस फ़सादमें रियासतका बहुत बड़ा नुक़्सान हुआ.

विक्रमी १९१८ [हि॰ १२७७ = ई॰ १८६१] में महाराज राणाकी लड़कीकी शादी अल्वरके महाराव राजा शिवदानसिंहके साथ हुई. बाद उसके विक्रमी १९२३ [हि॰ १२८२ = ई॰ १८६६] में उक्त महाराजराणा नव्वाब गवर्नर जेनरल साहिबके दर्बार आगरामें शरीक हुए, और वहांसे बनारस वग़ैरह तीर्थके मक़ामातकी ज़ियारत करके विक्रमी १९२४ [हि॰ १२८४ = ई॰ १८६७] में वापस आये. यह फिर बम्बईकी तरफ़ भी बतौर सैरके गये थे, क्योंकि उनको सिर्फ़ मुल्ककी सैर ही करनेका शौक़ नहीं था, बल्कि हर एक जगहके प्रबन्ध वग़ैरहके ढंगसे तजरिबह हासिल करनेका भी था. विक्रमी १९२३-२४ [हि॰ १२८३-८४ = ई॰ १८६६-६७] में महाराज राणाने गवर्मेंट हिन्दुस्तानके मन्शाके मुवाफ़िक़ ग़ैर इलाक़हके मफ़्रूरह मुजिरमोंकी गिरिफ़्तारी व सुपुर्दगीकी बाबत अहदनामह क़ाइम कियाजाना ख़ुशीसे मन्ज़ूर करके उसके मुताबिक़ अमलदरामद किया. दूसरे सालमें उन्होंने फ़ौजदारी व दीवानीके अंग्रेज़ी क़ानूनोंको मुनासिब तर्मीमके साथ अपनी रियासती अदालतोंमें जारी किया, अगर्चि अहलकारोंको यह नया तरीक़ह नागुवार गुज़रा, लेकिन उनकी नाराज़गीका कुछ ख़याल न करके बदस्तूर जारी रखकर, जो अदालती कार्रवाई पेश्तर फ़ार्सी व उर्दूमें होती थी, उन काग़ज़ातकी तर्मीब हिन्दी हर्फ़ोंमें कराई.

विक्रमी १९२५-२६ [हि॰ १२८५-८६ = ई॰ १८६८-६९] के क़हतमें रिआयाकी पर्वरिशके वास्ते इन्होंने पहिलेसे अनाज ख़रीद करलिया, और सड़क वग़ैरहकी तामीर जारी रक्खी, कि जिससे ग़रीब मज़्दूरी पेशह लोगोंको मदद मिले. इसी तरह उन्होंने इस साल सिर्फ़ ख़ैरात व खाना तक्सीम करनेमें एक लाखसे ज़ियादह रुपया ख़र्च किया; और अलावह इसके चन्द मर्तबह देवलीकी छावनीमें अनाज पहुंचाया, जिसपर पोलिटिकल एजेएट बड़े शुक्र गुज़ार हुए; और गवर्मेंटने उनका हस्व ज़ाबितह शुक्रियह अदा किया. इसी साल शहर झालरापाटनमें अंग्रेज़ी डाकख़ानह खोला गया, और एक छापहख़ानह जारी होकर हिन्दी अख़्बार निकलने लगा. दूसरे साल मद्रसह क़ाइम किया गया, जिसमें अंग्रेज़ी, फ़ार्सी व हिन्दीकी तालीम शुरू की गई. शुरू ज़मानहमें इसकी ख़ूब तरक़्क़ी रही, लेकिन बाद उसके यह मद्रसह सिर्फ़ नामके लिये रहगया.

यह महाराज राणा बहुत सादह मिज़ाज और मिलनसार थे. अल्बत्तह लिबास उनका तब्दील होगया था, क्योंकि पहिले रियासतमें पुराना लिबास पहनकर दर्बार वग़ैरह करनेका दस्तूर था, लेकिन् जबसे इन महाराज राणाकी बेटीकी शादी अलवरके महाराव राजा शिवदानसिंहके साथ हुई, उस वक़से अलवर वालोंकी तरह इन्होंने भी अपना लिबास हिन्दुस्तानी बनालिया.

जब लॉर्ड मेओसे मुलाक़ात करनेके लिये उदयपुरसे महाराणा शंभुसिंह अजमेर गये थे, महाराज राणा पृथ्वीसिंह भी वहां आये. इस वक़ तक राजपूतानहके राजा अलवर और झालावाड़को अपने साथ गद्दीपर बिठानेका दरजह नहीं देते थे, जिसमें उदयपुरकी गद्दीपर बैठनेका तो उनको ख़याल भी न था, लेकिन् कोटाके साथ रियासती आदमियोंकी कार्रवाईसे अथवा और किसी सबबसे अजमेरमें महाराणाकी ना रज़ामन्दी होगई. यह मौक़ा झालावाड़को ग़नीमत मिला, उन्होंने निक्सन साहिब, पोलिटिकल एजेण्ट मेवाड़की मारिफ़त महाराणासे मुलाक़ात और बातचीत की. परमेश्वरने महाराज राणाकी ख़्वाहिश पूरी की. जब महाराणा अजमेरसे लौटकर नसीराबाद आये, तो विक्रमी १९२७ कार्तिक शुक्ल ५ [हि० १२८७ ता० १२ शअ्बान = .ई० १८७० ता० २९ ऑक्टोबर] शनिवारको शामके वक़ महाराज राणा महाराणाके कैम्पमें बुलायेगये; उस वक़ मैं (कविराजा श्यामलदास) भी मौजूद था. महाराज राणा पृथ्वीसिंहका चंवर व मोरछल वग़ैरह लवाज़िमह ड्योढ़ीपर रोकदिया गया; उन्होंने महाराणाके पास पहुंचकर दोनों हाथोंसे झुककर सलाम किया, और गादीके नीचे खड़े रहे; महाराणाने एक हाथसे सलाम लिया, और उनका हाथ पकड़के बाईं तरफ़ अपनी गादीपर बिठा लिया; और चंवर, मोरछल वग़ैरह लवाज़िमह उनपर रखनेकी इजाज़त दी, और कोटेकी बराबर लिखावट वग़ैरह सब इ़ज़्ज़तका बर्ताव होनेका हुक्म दिया. फिर उनके साथ बुड्ढे बुड्ढे सर्दारोंने ज़िक्र किया, कि महाराज राणा ज़ालिमसिंहने मेवाड़की जो ख़िझतें और ख़ैरख़्वाहियां की थीं, उनका एवज़ हुज़ूरने इनायत किया. इसी तरह महाराज राणाने भी महाराणाका शुक्रियह अदा किया. महाराणा भी उनके डेरेपर गये. इस समयसे राजपूतानहमें झालरापाटनकी रियासतका दरजह कोटाकी बराबर माना गया, क्योंकि पुरानी तवारीख़ोंके देखनेसे पाया जाता है, कि कुल रियासतोंको कम व ज़ियादह उदयपुरसे इ़ज़्ज़त मिलना साबित है.

महाराज राणा पृथ्वीसिंह जब नाथद्वारामें दर्शन करनेको आये, उस वक़ उदयपुर भी आये थे; और विक्रमी १९२९ कार्तिक शुक्ल १३ बुधवार [हि० १२८९ ता० ११ रमज़ान = .ई० १८७२ ता० १३ नोवेम्बर] को उदयपुर दाख़िल हुए. दाख़िल होनेके समय सलामी व पेश्वाई वग़ैरह कुल इ़ज़्ज़त कोटाके बराबर कीगई; और जबतक

उदयपुरमें क़ियाम किया, उनसे बड़ी मुहब्बतके साथ बर्ताव रहा. विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण १३ [हि० ता० २६ रमज़ान = ई० ता० २९ नोवेम्बर] को महाराज राणा रुख़्सत होकर वापस अपनी राजधानीकी तरफ़ रवानह हुए.

विक्रमी १९२९ [हि० १२८९ = ई० १८७२] के अख़ीरमें एक नामी ग़ारतगर पिरथ्या भील गिरिफ़्तार हुआ, जो कई सालसे रियासत कोटा व झालावाड़में लूट मार करता रहा था. इन महाराज राणाने अपने दो कुंवरों के इन्तिक़ाल और अपनी उम्र ज़ियादह होजानेके सबब लड़का गोद लेना चाहा था, जिसपर एक अ़रसह तक बहस रहनेके बाद विक्रमी १९३१ [हि० १२९१ = ई० १८७४] में गवर्मेंएटसे मन्ज़ूरीका हुक्म हुआ. विक्रमी १९३१ - ३२ [हि० १२९१ - ९२ = ई० १८७४ - ७५] में महाराज राणाने लूनावाड़ेके रईसकी बेटीसे शादी की, और कुछ अ़रसह बाद विक्रमी १९३२ भाद्रपद कृष्ण ११ [हि० १२९२ ता० २५ रजब = ई० १८७५ ता० २७ ऑगस्ट] को चालीस वर्षकी उम्र पाकर बुख़ारकी बीमारीके सबब इस दुन्यासे उठगये. इनके कोई औलाद न थी, इसलिये गुजरातमें बढ़वानके ठिकानेसे एक लड़का बुलवाया गया, जिसको गवर्मेंएट अंग्रेज़ीने बहुत कुछ बहसके बाद, जैसा कि ऊपर लिख आये हैं, मंज़ूर किया; क्योंकि कोटाकी रियासतसे ज़ालिमसिंहकी औलादको यह हिस्सह दियागया था. अब उनकी औलादका ख़ातिमह हुआ, परन्तु गवर्मेंएटको रियासत क़ाइम रखना मंज़ूर था, इसलिये मुतबन्ना रखनेकी इजाज़त दी. मगर उनकी राणियोंमेंसे राणी सोलंखीने अपना हामिलह होना ज़ाहिर किया; और जो कि अस्ली कुंवर पैदा होनेपर गोद लिये हुएका हक़ गद्दी नशीनीका नहीं रहता, इसलिये यह बात मुनासिब समझी गई, कि हमलके नतीजेका इन्तिज़ार किया जावे, और रियासती इन्तिज़ामके लिये महकमह पंचायत, जिसमें वज़ीर और अव्वल सर्दार और परलोक वासी रईसके मोतमद सलाहकारोंमेंसे तीन शख़्स दाख़िल थे, मुक़र्रर हुआ; और उसकी निगरानीके वास्ते डिसेम्बर तक साहिब पोलिटिकल एजेएट पाटनमें मुक़ीम रहे. इलाक़हका दौरह करके रिआयापर जो सख़्ती हाकिम पर्गनात जमाके बढ़ाने और हासिल वुसूल करनेमें करते थे, उनकी शिकायतें दूर करनेके लिये मुनासिब कार्रवाई की. राणी सोलंखीके हामिलह होनेमें शक पाया जाकर पूरी ख़बर्दारी कीगई, कि कोई फ़िरेब व चालाकी न होसके; आख़िरकार विक्रमी १९३३ आषाढ़ शुक्ल १ [हि० १२९३ ता० २९ जमादियुलअव्वल = ई० १८७६ ता० २२ जून] को महाराज राणा

ज़ालिमसिंह, जिनका नाम मस्नद नशीनीसे पहिले बख़्तसिंह था, गद्दी नशीन किये गये. विक्रमी १९३१ माघ [हि० १२९२ मुहर्रम = .ई० १८७५ फ़ेब्रुअरी] में साहिब एजेएट गवर्नर जेनरल पाटनमें आये, और दूसरे महीनेमें कप्तान एबट साहिब पोलिटिकल सुपरिन्टेन्डेएट रियासतके मुक़र्रर हुए, जिनके एह्तिमामसे रियासती इन्तिज़ाम होने लगा. इन साहिबने रियासतकी बिह्तरीके वास्ते दिलोजानसे कोशिश की. महकमह मालका इन्तिज़ाम ख़राब देखकर उसका इन्तिज़ाम राय बहादुर पंडित रूपनारायण पंचसर्दार राज अलवरके बेटे पंडित रामचरणके सुपुर्द कियागया.

महाराज राणा पृथ्वीसिंह छोटा क़द, गेंहुवां रंग, हंसमुख और नेक मिज़ाज थे. उनके समयमें रियासतकी आमदनी क़रीब बीस लाख रुपया सालानह तकके पहुंचगई थी, और यह दिलसे चाहते थे, कि रियासतमें इन्तिज़ामकी दुरुस्ती हो. सिवा इसके गवर्मेएट अंग्रेज़ीका इह्सान भी दिलोजानसे कुबूल करते थे, कि जिसकी बदौलत यह रियासत क़ाइम हुई. सच है ! आदमीको इह्सान भूलजाना बहुत बड़ा ऐब है, और कृतोपकारको माननेसे उस आदमीकी आदमियत दुन्यामें मानी जाती है.

---

२८ – महाराज राणा ज़ालिमसिंह– ३.

यह महाराज राणा विक्रमी १९३२ आषाढ़ [हि० १२९२ रमज़ान = .ई० १८७५ ऑक्टोबर] में नव्वाब वाइसरॉय गवर्नर जेनरलकी मुलाक़ातके वास्ते साहिब पोलिटिकल एजेएटके साथ मक़ाम नीमचको गये, और वहांसे वापस आकर बारह वर्षकी अवस्थामें गादीपर बैठनेके बाद विक्रमी १९३२ फाल्गुन [हि० १२९३ सफ़र = .ई० १८७६ मार्च] में अजमेर मेओ कॉलेजमें तालीम पानेको भेजेगये; अख़ीर एप्रिलमें राणी सोलंखीके हमल और रियासतकी मस्नद नशीनीका मुआमलह तै हुआ, और रियासतका इन्तिज़ाम गवर्मेएट अंग्रेज़ीके मातह्त पोलिटिकल एजेएटने किया; दीवानी, फ़ौज्दारी, अपील और कौन्सिल वग़ैरह कचह्रियां क़ाइम हुईं. सद्र व देहातमें सर्रिश्तह तालीमने रौनक़ पाई; हरएक जगह स्कूल बनायेगये, ज़मीनके मह्सूलका पक्का बन्दोबस्त हुआ; पंडित रामचरण डेप्युटी मैजिस्ट्रेटने इस काममें अच्छी कारगुज़ारी दिखलाई, फिर हरएक कारख़ानह व सर्रिश्तहका मुनासिब प्रबन्ध कियागया, हकीम सआदत अह्मद अपीलमें मुक़र्रर कियागया, जो पहिले अदालत दीवानी का हाकिम था, और उसकी जगह एक दूसरा अह्लकार मुक़र्रर कियागया.

साबिक़ फ़ौज्दार कामकी अब्तरी और एक जन्म क़ैदीको अपनी साज़िशसे भगा देनेके क़ुसूरपर मुअत्तल किया जाकर उसकी एवज़ रिसालदार हसनअलीख़ां, जो अगले रईसके ज़मानहमें भी इस कामपर था, लाला सुखरामकी शामिलातसे क़ाइम मक़ाम फ़ौज्दार मुक़र्रर किया गया. बहरोड़ इलाक़ह अलवरके लाला रामदेव सर दफ़्तर फ़ार्सी व लाला बिहारीलाल क़ाइम मक़ाम सर दफ़्तर हिन्दीने बड़ी मिह्नत व होश्यारीके साथ काम अंजाम दिया. साहिब सुपरिण्टेण्डेण्टके तमाम अमलेकी कार्रवाई क़ाबिल तारीफ़ रही, ख़ासकर मुन्शी गोपालकृष्ण मीर मुन्शी साबिक़ अपने काममें दियानतदारी व ईमानदारीको अच्छी तरह काममें लाकर उम्दह नेकनामी हासिल करगया. विक्रमी १९३३ फाल्गुन [हि० १२९४ मुहर्रम = ई० १८७७ फ़ेब्रुअरी] में कर्नेल वाल्टर साहिब क़ाइम मक़ाम एजेण्ट गवर्नर जेनरल राजपूतानहने इस रियासतका दौरा किया, शहर झालरापाटनकी सैर की, और रियासतके बड़े बड़े लईक़ व होश्यार अहलकार उनके रूबरू पेश किये गये.

विक्रमी १९४३ [हि० १३०३ = ई० १८८६] में सर्कार अंग्रेज़ीकी तरफ़से महाराज राणा ज़ालिमसिंहको मुल्की इख्तियारात दिये गये, लेकिन् एक ग़ैर मामूली एजेण्टी वहां क़ाइम होकर बाबू श्यामसुन्दरलाल, बी० ए० सेक्रेटरी बनाया गया. इन बातोंसे रईसको बहुत रंज था, जिसके सबब एजेन्सीके वक़्के अहलकार उन्होंने मौक़ूफ़ करदिये; और सर्कारी पोलिटिकल अफ़्सरोंके साथ तक्रार बढ़ती गई; आख़िरकार एक वर्षके क़रीब ख़ुद मुख़्तार रहने बाद रईसके मुल्की इख्तियारात सर्कारी हुक्मसे पोलिटिकल एजेण्टको मिलगये. उस वक़्से लेफ़्टिनेण्ट कर्नेल एबट राजके सुपरिण्टेण्डेण्ट रहे. विक्रमी १९४६ [हि० १३०७ = ई० १८८९] में उनके रुख़्सत जानेके सबब मिस्टर मार्टेण्डलको झालरापाटनका क़ाइम मक़ाम चार्ज मिला है.

झालरापाटनका अह्दनामह, एचिसन साहिबकी किताब,
जिल्द तीसरी. हिस्सह पहिला.

अह्दनामह नम्बर ६०.

राज राणा मदनसिंहने, जो वादह किया, कि वह कोटेकी रियासतके कामोंका इन्तिज़ाम, जो मुवाफ़िक़ मन्शा ततिम्मह शर्त अह्दनामह दिहलीके राज राणा जालिमसिंह और उसके वारिसों और जानशीनोंको मिला था, छोड़ते हैं; इस वास्ते नीचे लिखाहुआ अह्दनामह आपसमे गवर्मेण्ट अंग्रेज़ी और राज राणा मदनसिंहके क़रार पाया.

शर्त पहिली- ततिम्मह शर्त अह्दनामह दिहली, लिखा हुआ तारीख़ २० फ़ेब्रुअरी सन् १८१८ ई०, जो आपसमें महाराव उम्मेदसिंह बहादुर राजा कोटा और गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीके हुआ था, यह दफ़ा उसको रद करती है.

शर्त दूसरी- गवर्मेण्ट अंग्रेज़ी कोटाके महाराव रामसिंहकी रज़ामन्दीसे इक़ार करती है, कि वह राज राणा मदनसिंह और उसके वारिस और जानशीनोंको (जो औलाद राज राणा ज़ालिमसिंहके हैं) एक जुदा रियासत और रजवाड़ोंके गद्दीनशीनीके रवाजके मुवाफ़िक़ कोटाकी रियासत मेंसे निकाल देगे, जिसमे नीचे लिखी तफ़्सीलके मुवाफ़िक़ पर्गने शामिल होंगे.

शर्त तीसरी- गवर्मेण्ट अंग्रेज़ी मुनासिब ख़िताब राज राणा और उसके वारिसों और जानशीनोंको देगी.

शर्त चौथी- दोस्ती और इत्तिफ़ाक़ और ख़ैरख़्वाही हमेशहके लिये गवर्मेण्ट अंग्रेज़ी और राज राणा मदनसिंह और उसके वारिसों और जानशीनोंके दर्मियान क़ाइम और जारी रहेगी.

शर्त पांचवीं- गवर्मेण्ट अंग्रेज़ी वादह करती है, कि वह राज राणा मदनसिंहकी रियासतको अपनी हिफ़ाज़तमें रक्खेगी.

शर्त छठी- राज राणा (मदनसिंह) और उसके वारिस और जानशीन हमेशह गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीकी तावेदारी करेंगे, और उनको अपना बड़ा समझेंगे, और इक़ार करेंगे, कि वह किसी ग़ैर रियासतसे मिलावट न करेंगे, और अगर उनसे कुछ तक़ार होगी, तो जो फ़ैसलह उसका गवर्मेण्ट अंग्रेज़ी करदेगी, उसको वह मंज़ूर करेंगे.

चीहट (१).
सुकेत.
चौमहला, जिसमें पंचपहाड़ आहोर, दीग और गंगराड़ शामिल हैं.
झालरापाटन उर्फ़ ऊर्मल.
रीचवा.
बंकानी.
दीलमपुर.
कोटड़ाभट्ट.
सरेरा.

रतलाई.
मनोहरथानह.
फूल बड़ोद.
चांचोरनी.
कंकोरनी.
छीपा बड़ोद.
शेरगढ़का उस तरफ़का हिस्सह, याने पूर्वकी तरफ़ परवान, या नेवज और शाहाबादसे.

वाज़िह हो, कि नरपतसिंह झालावाड़ छोड़कर महारावके इलाक़हमें बसेगा, और उसका इलाक़ह राज राणाके सुपुर्द होगा.

मक़ाम कोटा, ता० १० एप्रिल सन् १८३८ ई० .

मुहर और दस्तख़त- [ ]

[ ] (दस्तख़त)- जे० लडलो, क़ाइम मक़ाम पोलिटिकल एजेएट.

[ ] (दस्तख़त)- एन० आल्विस, एजेन्ट गवर्नर जेनरल.

मुहर महाराव रामसिंह.

तफ्सील क़र्ज़ह, जो राज राणा मदनसिंह और उसके वारिस और जानशीन इस अह्दनामहकी दसवीं शर्तके मुवाफ़िक़ अदा करेंगे.

क़र्ज़ह.

रु०	आ०	पा०	
६१४४७-	१३-	३-	मगनीराम ज़ोरावरमल्ल.
४४३८२१-	३ -	६-	रामजीदास ठाकुरदास.
२६७८३९-	७ -	०-	मोहनराम जुगलदास.

राज राणा मदनसिंह वादह करते हैं, कि वह ऊपर लिखा क़र्ज़ह अपने इलाक़ह पर क़ाइम होने पर सात दिनमें ३२६१३७-७-९ तीन लाख छब्बीस हज़ार एक सौ

(१) यह नाम और जो पृष्ठ १४४८ और ४९ में छपे हैं, वह मुख़्तलिफ़ किताबों और नक़्शोंमें जुदा जुदा तौरपर लिखे हैं, राजपूतानह गज़ेटियरमें चीहटकी जगह चेचट, डीगकी जगह डग, बंकानीकी जगह बुकरी और किसी किताबमें मनोहरथानहकी जगह मंधरथानह या मोहरथानह वग़ैरह बहुत फ़र्क़ पाया जाता है.

सैंतीस रुपया सात आना नौ पाई देंगे; और उसके बाद चार बरसके अरसहमें बाक़ी रुपया ११४५२१७ जिसमें ब्याज ८ रुपये सैकड़े सालानहका भी शामिल है, हर फ़स्लपर नीचे लिखे मुवाफ़िक़ देंगे, और यह कुल रुपया चार बरसमें जमा करा देंगे, जो इसमें देरी हो, तो गवर्मेएट अंग्रेज़ीको इख़्तियार है, कि वह कुछ इलाक़ह झालावाड़से बाक़ी क़र्ज़हके वुसूल करनेके लिये अलग करले. पहिली क़िस्त मिती कार्तिक शुक्ल १५ संवत् १८९५ से शुरू होगी; और दूसरी क़िस्त वैशाख शुक्ल १५ संवत् १८९६ को.

क़िस्तोंका रुपया ब्याज समेत नीचे लिखे मुवाफ़िक़ दियाजावेगा:-

१-क़िस्त १५००००, २-क़िस्त १५००००, ३-क़िस्त १५००००,
४-क़िस्त १५००००, ५-क़िस्त १५००००, ६-क़िस्त १५००००,
७-क़िस्त १५००००, ८-९५२१७.

मक़ाम कोटा, तारीख़ ८ एप्रिल, सन् १८३८ ई०.

मुहर व दस्तख़त-

(दस्तख़त)- जे० लडलो, क़ाइम मक़ाम पोलिटिकल एजेएट.

मुहर व दस्तख़त-

(दस्तख़त)- एन्० आलिवस, एजेएट गवर्नर जेनरल.

दस्तख़त- राज राणा मदनसिंह.

अह्दनामह नम्बर ६१.

अह्दनामह बाबत लेन देन मुजिमोंके दर्मियान ब्रिटिश गवर्मेएट और श्रीमान पृथ्वीसिंह बहादुर महाराज राणा झालावाड़ व उसके वारिसों और जानशीनों के, एक तरफ़से कप्तान आर्थर नील ब्रुस पोलिटिकल एजेएट हाड़ौती बइजाज़त कर्नेल विलिअम फ़्रेड्रिक एडन, एजेएट गवर्नर जेनरल राजपूतानहके उन कुल इख़्तियारोंके मुवाफ़िक़, जो कि उनको श्रीमान राइट ऑनरेबल सर जॉन लेयर्ड मेयर लॉरेन्स, बैरोनेट् जी० सी० बी०, और जी० सी० एस० आइ० वाइसरॉय और गवर्नर जेनरल हिन्दने दिये थे, और दूसरी तरफ़से साह हरपचन्दने उक्त महाराज राणा पृथ्वीसिंह बहादुरके दियेहुए पूरे इख़्तियारोंसे किया.

शर्त पहिली-कोई आदमी अंग्रेजी या दूसरे राज्यका बाशिन्दह अगर अंग्रेज़ी इलाक़हमें संगीन जुर्म करके झालावाड़की राज्य सीमामें आश्रय लेना चाहे, तो झालावाड़की सर्कार उसको गिरिफ़्तार करेगी, और दस्तूरके मुवाफ़िक़ उसके मांगे जानेपर सर्कार अंग्रेज़ीको सुपुर्द करदेगी.

शर्त दूसरी-कोई आदमी झालावाड़के राज्यका बाशिन्दह वहांकी राज्य सीमा में कोई संगीन जुर्म करके अंग्रेज़ी राज्यमें जाकर आश्रय लेवे, तो सर्कार अंग्रेज़ी वह मुज्रिम गिरिफ़्तार करके झालावाड़के राज्यको क़ाइदहके मुवाफ़िक़ तलब होनेपर सुपुर्द करदेवेगी.

शर्त तीसरी-कोई आदमी, जो झालावाड़के राज्यकी रअ़य्यत न हो, और झालावाड़की राज्य सीमामें कोई संगीन जुर्म करके फिर अंग्रेज़ी सीमामें आश्रय लेवे, तो सर्कार अंग्रेज़ी उसको गिरिफ़्तार करेगी, और उसके मुक़द्दमहकी तह्क़ीक़ात सर्कार अंग्रेज़ीकी बतलाई हुई अ़दालतमें कीजायेगी; अक्सर क़ाइदह यह है, कि ऐसे मुक़द्दमोंका फ़ैसलह उस पोलिटिकल अफ़्सरके इज्लासमें होगा, कि जिसके तह्तमें वारिदात होनेके वक्तपर झालावाड़की पोलिटिकल निगरानी रहे.

शर्त चौथी- किसी हालतमें कोई सर्कार किसी आदमीको, जो संगीन मुज्रिम ठहरा हो, देदेनेके लिये पाबन्द नहीं है, जबतक कि दस्तूरके मुवाफ़िक़ खुद वह सर्कार या उसके हुक्मसे कोई अफ़्सर उस आदमीको न मांगे, जिसके .इलाक़हमें कि जुर्म हुआ हो; और जुर्मकी ऐसी गवाहीपर, जैसा कि उस .इलाक़हके क़ानूनके मुवाफ़िक़ सहीह समझी जावे, जिसमें कि मुज्रिम उस वक्त हो, उसकी गिरिफ़्तारी दुरुस्त ठहरेगी, और वह मुज्रिम क़रार दिया जावेगा, गोया कि जुर्म वहींपर हुआ है.

शर्त पांचवीं- नीचे लिखेहुए जुर्म संगीन जुर्म समझे जावेंगे:-

१-ख़ून. २- ख़ून करनेकी कोशिश. ३- वह्शियानह क़त्ल. ४- ठगी. ५- ज़हर देना. ६- ज़िनाबिलजब्र (ज़बर्दस्ती व्यभिचार). ७- ज़ियादह ज़ख़्मी करना. ८- लड़काबाला चुरा लेजाना. ९- औरतोंका बेचना. १०- डकैती. ११- लूट. १२- सेंध (नक़्ब) लगाना. १३- चौपाया चुराना. १४- मकान जला देना. १५- जालसाज़ी करना. १६- झूठा सिक्कह चलाना. १७- ख़या-नतें मुज्रिमानह. १८- माल अस्बाब चुरा लेना. १९- ऊपर लिखेहुए जुर्मोंमें मदद देना या वर्ग़लाना.

शर्त छठी- ऊपर लिखीहुई शर्तोंके मुताबिक़ मुज्रिमोंको गिरिफ़्तार करने

रोक रखने, या सुपुर्द करनेमें, जो ख़र्च लगे, वह दर्ख़्वास्त करनेवाली सर्कारको देना पड़ेगा.

शर्त सातवीं - ऊपर लिखाहुआ अ़ह्दनामह उस वक़् तक बर्क़रार रहेगा, जबतक, कि अ़ह्दनामह करनेवाली दोनों सर्कारोंमेंसे कोई एक दूसरेको उसके रद्द करनेकी इच्छाकी इत्तिला न दे.

शर्त आठवीं - इस अ़ह्दनामहकी शर्तोंका असर किसी दूसरे अ़ह्दनामोंपर, जो दोनों सर्कारोंके बीच पहिलेसे हैं, कुछ न होगा, सिवा ऐसे अ़ह्दनामहके जोकि इस अ़ह्दनामहकी शर्तोंके बख़िलाफ़ हो.

मक़ाम झालरापाटन, ता० २८ मार्च सन् १८६८ ई०.

दस्तख़त और मुहर - (दस्तख़त) - ए० एन० ब्रुस,

पोलिटिकल एजेण्ट.

इस अ़ह्दनामहकी तस्दीक़ श्रीमान वाइसरॉय और गवर्नर जेनरल हिन्दने मक़ाम कलकत्तेमें ता० २८ एप्रिल सन् १८६८ ई० को की.
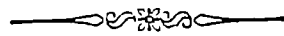
रियासत क़रौलीकी तवारीख़.

जुग़्राफ़ियह.

यह रियासत, जो राजपूतानहकी पूर्वी हदपर उत्तर अक्षांश २६°-३' व २६°-४९', और पूर्व देशान्तर ७६°- ३५' व ७७°-२६' के दर्मियान वाके़ है, अग्नि कोणकी सीमापर दर्याय चम्बल व इलाक़ह ग्वालियरसे, नैर्ऋत्य कोण व पश्चिमको जयपुरसे, उत्तर और ईशान कोणकी तरफ़ भरतपुर और धौलपुरसे और ईशान कोण तथा पूर्वमें रियासत धौलपुरसे घिरी हुई है. इसका रक़बह १२०८ (१) मील मुरब्बा, और आबादी १४८६७० बाशिन्दोंकी है. सालानह कुल आमदनी, जो ज़ियादह तर ज़मीन और दाणसे होती है, विक्रमी १९३८ [हि० १२९८ = ई० १८८१] में अन्दाज़ह करनेसे ४८३८१० रुपयेके क़रीब पाई गई, और उसी सालकी तह्क़ीक़ातसे ख़र्चका तख़्मीनह ४२९५८० रुपये मालूम किया गया है. बाशिन्दोंकी तादाद, जो ऊपर दर्जकी गई है, उसमें ८०६४५ मर्द और ६८०२५ औरतें हैं. रियासतके कुल गांवोंका शुमार एक शहर और आठ सौ इकसठ (२) गांव हैं, जिनमें २५९३० घर और औसत फ़ी मील मुरब्बाके हिसाबसे १२३ बाशिन्दे आबाद हैं. अगर क़ौमों या फ़िर्क़ोंके हिसाबसे कुल आबादीको तक़्सीम कियाजावे तो, मालूम होगा, कि इलाक़ह भरमें १३९२३७ हिन्दू, ८८३६ मुसल्मान, ५८० जैन, और १७ ईसाई हैं. हिन्दुओंमें ब्राह्मण २२१७४, राजपूत ८१८२, बनिया ९६२०, गूजर १५११२, मीना २७८१९, चमार १८२७८, जाट ८०८ और दूसरे लोग ३७२४४ हैं.

ज़मीनकी सूरत- यह इलाक़ह पहाड़ी और अक्सर ऊंचा नीचा (नाहमवार) है, और उस हिस्सेमें, जो चम्बल नदीकी तराईके ऊपरकी तरफ़ डांगके नामसे मश्हूर है, वाके़ है. ख़ास पहाड़ियां उत्तरी सीमापर हैं, जहां कई पहाड़ी सिलसिले सर्हदके बराबर बराबर चलेगये हैं. यहां कोई बहुत ऊंचा पहाड़ नहीं है, सिर्फ़ एक चोटी है, जो समुद्रके सत्हसे १४०० फ़ीटसे भी कम ऊंची है; अगर्चि इन पहाड़ोंमें किसी क़िस्मकी ख़ूबसूरती नहीं पाई जाती, लेकिन् लड़ाईके वास्ते बहुत कामके हैं.

---

(१) वक़ाये राजपूतानहमें १८०० लिखा है.

(२) वक़ाये राजपूतानहमें गांवोंकी तादाद सिर्फ़ ४०५ ही लिखी है, लेकिन् हमने इस रियासतका जुग़्राफ़ियह सम्बन्धी हाल पाउलेट् साहिबके गज़ेटिअरसे लिखा है.

चम्बल नदीके किनारे किनारे एक ऊंची दीवारकी शक्लपर चटानोंका सिलसिलह, जो नदी के किनारे वाली ज़मीनको रियासतके दक्षिण तरफ़की ज़मीनसे जुदा करता है. पहाड़ी घाटोंके उत्तरी तरफ़की ज़मीन कई मील तक ऊंची है; और चटान इतने हैं, कि उनके दर्मियान होकर पानीका निकास नहीं होसक्ता; इसलिये बाशिन्दोंको पानीके वास्ते तालाबोंपर भरोसा रखना पड़ता है, जिनको वे बन्द बनाकर तय्यार करलेते हैं; लेकिन् उत्तरकी तरफ़ बहुत फ़ासिलेपर ज़मीन नीची है, चौरस धरती ज़ियादह है, पहाड़ियां बहुत ऊंची दिखाई देती हैं, और शहरके नज़्दीक वाली नीची ज़मीनमें बहुतसे दराड़े हैं.

पत्थर व धातु- इस इलाक़हके चटान विन्ध्याचलके चटानोंकी मुवाफ़िक़ और क्वार्ड्ज़ (१) पत्थरकी तरह हैं. पिछली क़िस्मके चटान, एक तंग टेकरीपर, जोकि बावलीके दक्षिण पश्चिमी तरफ़से बनास तक चली गई है, नज़र आते हैं. (बावली, क़रौली शहरसे ८ मील नैर्ऋत्य कोणको है). अव्वल क़िस्मके चटान इस सिल्सिलेके दोनों तरफ़ बहुत दूरतक मिलते हैं, अग्नि कोणकी तरफ़ चम्बल नदी तक ऊंची ज़मीन ऐसे ही चटानोंकी है. इस राज्यमें एक तरहका रेतीला पत्थर भांडेरके नामसे मश्हूर है; फ़त्हपुर सीकरीका महल और आगरेके मुम्ताज़ महलके कुछ हिस्से उसी पत्थरके बने हैं, जोकि क़रौलीसे थोड़ी दूरपर निकाला गया था. अलावह इसके नीला, भूरा, लाल, और सिफ़ेद पत्थर भी होता है; कई जगह गांवोंमें मकानात पत्थरके बने हैं; यहां तक कि मकानोंको कैलुओंके एवज़ पट्टियों (सिल्लियों) से पाट कर छत्तें बनाली गई हैं. क़रौलीसे ईशान कोणमें लोहेकी खान है, लेकिन् लोहा निकालनेमें ख़र्च ज़ियादह पड़ता है, इसलिये दूसरी जगहोंसे लाया जाता है. कई जगह चूना बनानेका पत्थर भी पायाजाता है. नीले रंगका पत्थर ख़ासकर कुएं बनानेके काममें आता है, और क़रौलीके पास जो निकलता है, उसकी, बहुत सख़्त होनेके सबब, चक्की वग़ैरह चीज़ें बनाई जाती हैं.

जंगल- क़रौलीके ऊंचे पहाड़ोंपर अक्सर दरख़्त नहीं हैं, चम्बलकी तराईमें धावका झाड़, ढाक, खैर, सेमल, शाल, और नीमके दरख़्त कस्रतसे पायेजाते हैं; दक्षिण पश्चिमी हिस्सेमें झाड़ी बहुत है, इनके सिवा कहीं कहीं बबूलके दरख़्त भी नज़र आते हैं. पर्गनह मांदरेल, तथा एक नलेमें और क़रौलीसे बीस मील उत्तर पूर्वकी पहाड़ियोंपर शीशमके पेड़ खड़ेहुए हैं; और बहुतसे मक़ामातपर आम, गूलर, बेर, ढाक, जामुन, खेजड़ा, कदम्ब, इमली, खजूर वग़ैरह दिखाई देते हैं.

(१) क्वार्ड्ज़का हिन्दी नाम नहीं है.

चम्बलके पास वाले जंगलोंमें शेर, रीछ, रोझ, सांभर और हिरण वगैरह जंगली जानवर कस्रतसे पाये जाते हैं; शेरोंका ख़ौफ़ इतना रहता है, कि बिदून पूरे बन्दोबस्त व ख़बर्दारीके मवेशीको जंगलमें नहीं चरा सके. डांगकी ऊंची ज़मीनमें जहां जहां पानीके चश्मे वगैरह हैं, शिकारका उम्दह मौका है. रियासतके पश्चिमी हिस्सेमें सांपोंकी बड़ी ज़ियादती है, लेकिन् शहरके पास नहीं है. करौलीके जंगलोंमें गोंद, लाख, शहद व मोम वगैरह कुद्रती चीज़ें पैदा नहीं होतीं; ये तमाम चीज़ें चम्बल पार ग्वालियरके जंगलोंमेंसे आती हैं.

नदियां- चम्बल नदी कहीं बहुत गहरी और धीमी, कहीं चटानी और इतनी तेज़ बहती है, कि उसमें किश्तीका जाना बहुत मुश्किल होता है; बर्सातके मौसममें इसका पानी बहुत चढ़जाता है; लेकिन् करौलीकी हद्दमें कोई बड़ी नदी इसके शामिल नहीं मिलती. इस रियासतमें सिर्फ़ पांचनद नामकी एक नदी है, जो पांच धाराओंके मिलनेसे शहरके उत्तर दो मीलके फ़ासिलेपर निकलती है, लेकिन् चम्बलमें नहीं गिरती. ये पांचों धारा करौलीके इलाकेमें बहती हैं, और गर्मीके मौसममें एकके सिवा सबमें थोड़ा बहुत पानी बारह महीने बहता रहता है. यह (पांचनद) नदी उत्तर तरफ़ बहकर बाणगंगामें जा मिलती है.

कालीसुर या डांगर और जिरोता नदी शहरके दक्षिण पश्चिम बहकर दोनों नदियां जयपुरकी तरफ़ मोरेलमें जा गिरती हैं.

आबो हवा- इस राज्यमें कुओंका पानी तो अक्सर अच्छा है, लेकिन् ऊंची चटानी ज़मीनके तालाबोंका पानी गर्मीके दिनोंमें बिगड़ जाता है, इसलिये अक्सर बाशिन्दे अपने चौपायोंको लेकर चम्बलके किनारे चले जाते हैं, परन्तु उसका भी पानी पीनेके वास्ते अच्छा नहीं है. बारिशका अन्दाज़ह करनेसे मालूम हुआ, कि विक्रमी १९३८ [हि० १२९८ = ई० १८८१] में ३१ इंच पानी बरसा. बीमारी इस इलाक़हमें बुख़ार, दस्त और गठियाकी ज़ियादह होती है, लेकिन् हैज़ेकी बीमारी बहुत ही कम हुआ करती है.

पैदावार- करौलीकी रियासतमें गेहूं, चना, जव, बाजरा, ज्वार, चावल, और तम्बाकू पैदा होता है. अलावह इन चीज़ोंके कहीं कहीं ख़राब क़िस्मकी ऊख और शहरके पास भंग बहुत पैदा होती है. खेत तालाबों, कुओं और चम्बलके पानीसे सींचे जाते हैं.

राज्यका इन्तिज़ाम- न्यायके वास्ते इस रियासतमें फ़ौज्दारी अदालत वगैरह कचहरियां ख़ास राजधानीमें, और पर्गनोंके इन्तिज़ामके वास्ते तहसीलदार मुक़र्रर

हैं; और राज्य सम्बन्धी कुल इन्तिज़ाम दूसरी रियासतोंकी तरह यहां भी है.

फ़ौज- कुल फ़ौजकी तादाद १९६२ (१) है, जिसमें १६० सवार, १७७० पैदल और ३२ आदमी तोपख़ानहके हैं. फ़ौजी मुलाज़िम ज़ियादहतर इसी इलाक़हके बाशिन्दे यादव राजपूत और मुसल्मान पठान हैं. तोपख़ानहकी तोपें, जो क़रीब चालीसके हैं, बहुत हल्की हैं; ऐसी कोई तोप नहीं, कि ज़ियादह काममें लाई जासके.

हॉस्पिटल- राजधानी शहर क़रौलीमें एक बड़ा हॉस्पिटल मरीज़ोंके इलाजकी ग़रज़से राज्यकी तरफ़से क़ाइम कियागया है.

मद्रसह- आम तालीमके लिये ख़ास शहर क़रौलीमें एक बड़ा मद्रसह है, जो विक्रमी १९२१ [हि० १२८१ = ई० १८६४] में क़ाइम कियागया था, लेकिन् उसमें लड़कोंकी तादाद कम होनेके अलावह इल्मी तरक़्क़ीका कोई नतीजह दर्याफ़्त न हुआ, क्योंकि मुदर्रिस लोगोंकी तन्ख़्वाह शुरूमें बहुत कम थी. मगर बनिस्बत पहिलेके अब लड़कोंकी तादाद ज़ियादह है; तालिब इल्मोंको अंग्रेज़ी, फ़ार्सी व हिन्दी, तीनों ज़बानें पढ़ाई जाती हैं. अलावह इनके ७ छोटे मद्रसे हिन्दी ज़बानकी तालीमके वास्ते और भी हैं.

टकशाल- क़रौलीकी टकशालमें चांदीके सिक्के याने रुपये बनाये जाते हैं, जिनका वज़्न ग्यारह माशा है, और क़ीमतमें कल्दारके बराबर चलते हैं. विक्रमी १९१५ [हि० १२७४ = ई० १८५८] से पहिले यहांके सिक्कहमें एक तरफ़ दिहलीके बादशाहका नाम मए साल संवत्के और दूसरी तरफ़ क़रौलीके राजाका नाम व संवत् होता था, मगर विक्रमी १९१५ [हि० १२७४ = ई० १८५८] के बाद मुग़ल बादशाहोंकी जगह मलिकह मुअज़्ज़महका नाम रक्खागया है.

जेलख़ानह- शहर क़रौलीमें एक अच्छी जगह मज़्बूत मकान बना हुआ है, जिसमें क़ैदियोंकी तादाद २०० के क़रीब क़रीब रहती है. सफ़ाई वग़ैरहका इन्तिज़ाम ठीक है. राजधानीमें एक डाकख़ानह भी है.

ज़ात, फ़िर्क़ह व क़ौम- इस रियासतमें नीचे लिखी क़ौमोंके लोग आबाद हैं- ब्राह्मण, राजपूत, बनिया, जाट, गूजर, मीना, काछी (माली), कुम्हार, नाई, धोबी, डोम, मुसल्मान, कोली, वग़ैरह; और इनके सिवा कई मुतफ़र्रिक़ ज़ातोंके लोग रहते हैं. यहांके लोग अक्सर वैष्णव मतको मानते हैं, और इसी वज्हसे कृष्णके मन्दिरोंकी तादाद रियासतमें सबसे ज़ियादह याने ३०० है, सिवाय इनके महादेव, देवी, हनुमान इत्यादि हिन्दू मज़्हबके देवताओंके भी स्थान बने हुए हैं, जिनकी इस क़ौमके सब बाशिन्दे पूजा

---

(१) यह हाल पाउलेट् साहिबके बनाये हुए क़रौलीके गज़ेटिअरसे लिखा है, परन्तु वक़ाये-राजपूतानहके मुसन्निफ़ने सन् १८७३- ७४ ई० की रिपोर्टोंका हवालह देकर सवार ४००, पियादह ३२०० और गोलन्दाज़ ३५ लिखे हैं.

करते हैं. राजाकी कुलदेवी अंजनी है, जिसका मन्दिर बीरवास नामी एक मकामपर बना है.

पेशह व दस्तकारी- ज़ियादहतर इस इलाक़हके ब्राह्मण तिजारत, मीना लोग खेती, राजपूत लोग जो यादव क़ौमसे हैं, अक्सर उम्दह सिपाहियानह नौकरी, और जो ग़रीब हैं, या जिनकी हालत दुरुस्त नहीं है, वे काश्तकारी करते हैं. दस्तकारी यहांपर कोई मश्हूर क़िस्मकी नहीं होती, सिर्फ़ मोटी क़िस्मका कपड़ा बनाया जाता है; इसके अलावह चन्द लोग रंगसाज़ी, संग तराशी, टाट बाफ़ी और खातीका काम करते हैं. रंगीन कपड़ा, शक्कर, नमक, रुई, और भैंस तथा बैल ख़ासकर ग़ैर इलाक़ोंसे बिकनेको आते हैं; और यहांसे बाहर जानेवाली चीज़ें चावल, रुई और जानवरोंमेंसे बकरी है.

तह्सील याने पर्गने.

रियासत करौली तह्सीलोंके लिहाज़से पांच हिस्सों याने हुज़ूर तह्सील, जिरोता तह्सील, मांदरेल तह्सील, मांचलपुर तह्सील और ऊतगढ़ तह्सीलमें तक्सीम कीगई है, जिनमेंसे हर एकका मुफ़स्सल हाल ज़ैलमें दर्ज किया जाता है:-

तह्सील हुज़ूर- हुज़ूर या ख़ास राजधानीकी तह्सीलके मातह्त शहर करौलीके आस पासका इलाक़ह है, जिसमें १२५ गांव हैं, जिनमेंसे ९१ तो कूरगांव तअ़ल्लुक़ेके और ३४ गुर्लाके हैं. कुल तह्सीलके बाशिन्दोंकी तादाद ६३१५५ मनुष्य हैं, काश्तकार लोग अक्सर मीना क़ौमसे हैं. इस पर्गनहके कुल गांव छोटे और कूरगांव तअ़ल्लुक़ह, जिसको आंतरी भी कहते हैं, पहाड़ियोंके बीचमें बसा हुआ है; परन्तु ज़मीन यहांकी उपजाऊ है.

तह्सील जिरोता- यह तह्सील क़रौलीसे पश्चिम रुख़को है, और क़रौलीके जागीरदार ठाकुरोंके गांव अक्सर इसी हिस्सेके अन्दर हैं. यहांकी ज़मीन पथरीली और पहाड़ी है, और काश्तकार उमूमन मीना लोग हैं, ब्राह्मण और बनिये भी खेती करते हैं; और राजपूत लोग राज्यकी नौकरीसे गुज़ारा करते हैं. कुओंकी गहराई एकसी नहीं है, किसी गांवमें ६० हाथपर और कहीं २० हाथपर ही पानी निकल आता है. आबादी कुल तह्सीलकी २४००० बाशिन्दोंकी है. जिरोता, जिसके नामसे इस तह्सीलका नाम रक्खागया है, यहांका सद्र मकाम है, जिसमें एक थानहदार, तह्सीलदार, और क़ानूनगो रहता है. यह राजधानी क़रौलीसे २८ मील दक्षिण पश्चिममें है; चौकीदार यहांके मीना लोग हैं. पानी ३० फ़ीटकी गहराईपर पायाजाता है. इस पर्गनेमें कटदाणा नामका एक अनाज पैदा होता है, जो फाल्गुन महीनेमें बोया और आपाढ़में काटाजाता है. लोग कहते हैं, कि

जीराखां नामी एक मुसल्मानने यह क़स्बह आबाद किया था, जिसकी क़ब्र यहांपर मौजूद है. क़स्बेमें कल्याणरायका एक मन्दिर सात सौ वर्षसे ज़ियादह अ़र्सेका बनाहुआ है, जिसकी प्रशस्तिमें विक्रमी ११९५ [हि० ५३२ = ई० ११३८] लिखा है, और क़स्बेके नज़्दीक ही एक पहाड़ीपर शैख़ बद्रुद्दीनकी दर्गाह है.

तह्सील मांदरेल- यह तह्सील, जिसकी आबादी १९००० बाशिन्दोंके क़रीब है, क़रौलीसे दक्षिण तरफ़ वाक़े है; इसमें दो तअ़ल्लुक़े हैं. मांदरेल तह्सीलका सद्र मक़ाम एक बड़े पुराने क़िलेके लिये मश्हूर है, जो यादव राजपूतोंकी राजधानीसे पहिले ज़मानेका बनाहुआ है, और जिसमें एक तालाब और कई मस्जिदें हैं. यह क़िला और सबलगढ़ बहुत अ़र्से तक महाराजा गोपालदासके पुत्र और उसके वारिसोंके क़ब्ज़हमें रहा. यहांके क़िलेदारकी मातह्तीमें ३०० आदमी रहते हैं; क़स्बेकी आबादी १००० घरों तथा १४००० बाशिन्दोंकी है, जिसमें अक्सर बौहरे व महाजन आसूदह व मालदार हैं; ज़मींदारी यहांपर सौ वर्षके अ़र्सेसे ब्राह्मणोंकी होगई है, पहिले मीनोंकी थी. इस पर्गनहमें पानी ७० हाथ गहराईपर मिलता है; गर्मीके मौसममें पानीकी इस क़द्र तक्लीफ़ रहती है, कि बाज़ वक़्त तो २॥ मील फ़ासिलेपर दर्याय चम्बलसे लाया जाता है. क़स्बह मांदरेलके चारों तरफ़ शहरपनाह है, जिसको महाराजा हरबख़्शपालने बनवाया था, और बस्ती या क़िलेसे पश्चिम ज़मीनके सत्हसे ४५०० फ़ीट बलन्द एक पहाड़ीपर मर्दान ग़ाइबकी दर्गाह है; कहते हैं, कि यहांपर रातके वक़्त कोई आदमी नहीं रह सक्ता, अगर रहे, तो मर जाता है.

तह्सील मांचलपुर - यह तह्सील क़रौलीसे उत्तर पूर्व २५४२० आदमियोंकी आबादी की है, जिसमें दो पर्गने हैं, इनमेंसे एक पर्गनह मुसल्मानोंके अ़ह्दमें चौरासी गांव होनेके सबब चौरासीका पर्गनह कहलाया, जो पहिले ज़मानेमें राजा गोपालदासके बुज़ुर्गोंके हाथसे जाता रहा था, लेकिन् पांच सौ वर्षके बाद बादशाह अक्बरसे राजा गोपालदासने दक्षिणकी नौकरीके एवज़ वापस हासिल कर लिया. विक्रमी १८६९ [हि० १२२७ = ई० १८१२] में जयपुरके प्रधान नव्वाब फ़ैज़अ़लीख़ांके बुज़ुर्गोंमेंसे डंडाईखां और रणमस्तख़ांने मांचलपुरको लूटा; विक्रमी १८७४ [हि० १२३२ = ई० १८१७] में राज्य क़रौली और सर्कार अंग्रेज़ीके दर्मियान अ़ह्दनामह क़ाइम होनेसे २० वर्ष पहिले सेंधियाके मातह्त मरहटोंने इस क़स्बहको तह्सीलके दूसरे बारह गांवों समेत नालबन्दीमें ले लिया था. पहिले यहांके ज़मींदार गौंज ठाकुर थे, जिनको महाराजा गोपालदासने निकाल दिये. इस पर्गनहमें १००० फ़ीटसे लेकर १३०० फ़ीट तक बलन्दीकी पहाड़ियां

पाई जाती हैं. क़स्बह मांचलपुर, जो करौलीसे १६ मील उत्तर पूर्व, १००० घरों तथा ५००० बाशिन्दोंसे ज़ियादह आबादीका मक़ाम है, इस तह्सीलका सद्र है. यहां एक अह्लकार रहता है, जिसको प्रधान कहते हैं; वह क़ानूनगोका काम करता और २५० रुपये सालानह तन्ख़्वाह पाता है. यहांपर महादेव और विष्णुके बहुतसे मन्दिर हैं, और बस्तीमें और उसके बाहिर अक्सर पुरानी इमारतें बनीहुई हैं, जिनमें सबसे बड़ा महाराजा 'गोपालदासके महलका खंडहर, इसीके पास एक महादेव और दूसरा मदनमोहनका मन्दिर उसी ज़मानेका बनाहुआ, शहरसे उत्तर रुख़ एक छोटी पहाड़ीपर १२ स्तम्भकी एक क़ब्र पठानोंके वक़्की है, यहांसे एक मील उत्तर एक पुराना कुआ है, जिसको चोर बावड़ी कहते हैं. क़स्बेसे उत्तर तरफ़ कई बाग़ीचे हैं, जिनमेंसे एकको दक्षिणियोंका बाग़ीचा कहते हैं, जो मरहटोंके अह्दमें बना था. इस तह्सीलमें कुओंका पानी २० हाथकी गहराईपर पायाजाता है.

तह्सील ऊतगढ़ - करौली राज्यके दक्षिण पश्चिमी कोणपर यह पर्गनह है, जिसमें छः तअल्लुक़े हैं. क़दीम ज़मानहमें यह पर्गनह लोधी लोगोंके क़ब्ज़हमें था; लेकिन् चार सौ वर्षका अरसह हुआ, कि उनका क़ब्ज़ह छूटगया है, तो भी उन लोगोंके बनायेहुए बन्द और तालाब मौजूद हैं. राजा अर्जुनदेवने लोधियोंसे यहांकी ज़मीनका हासिल वुसूल किया. यहां एक बहुत पुराना क़िला है, जिसके भीतरका हिस्सह महाराजा हरबख़्शपालने बनवाया है; महाराजा जगोमानने अपने बेटे अमरमानको, जिसने अमरगढ़ बसाया, यह क़िला दिया था; लेकिन् उसके बाद उसकी औलादवाले फ़सादी होनेके सबब महाराजा मानकपालके वक़्में अमोलकपालने विक्रमी १८५९ [हि० १२१७ = ई० १८०२] में यह क़िला उनसे छीनलिया.

क़िले.

करौलीके राज्यमें नीचे लिखे मुवाफ़िक़ बारह क़िले हैं, १- करौलीका क़िला या महल, २- ऊतगढ़, ३- मांदरेल, ४- नारोली, ५- सपोतरा, ६- दौलतपुरा, ७- थाली, ८- जंबूरा, ९- खूड़ा, १०- निन्डा, ११- ऊंड और १२- खुदाई. इनमेंसे क़िला ऊतगढ़, मांदरेल और नारोली तो बड़े क़िले हैं, बाक़ी छोटे हैं- सपोतरा करौलीसे २० मील पश्चिममें है, खुदाई उत्तर पूर्वी सीमापर है, जिसमें ५० आदमी रहते हैं, थाली मांचलपुर पर्गनहमें उत्तरी सहहदपर है, जंबूरा मांचलपुरसे थोड़ी दूर पूर्वमें, निन्डा मांदरेलसे तीन मील उत्तर, ऊंड मांदरेलसे उत्तर पूर्व चम्बलके नज़्दीक, खुदाई मांदरेलके नज़्दीक और दौलतपुरा ऊतगढ़ पर्गनहमें पश्चिमी हदपर है.

मश्हूर शहर व क़स्बे.

राजधानी शहर करौली— यह शहर, जिसको विक्रमी १४०५ [हि० ७४९ = ई० १३४८] में राजा अर्जुनदेवने आबाद किया था, और जिसका नाम कल्याणरायके मन्दिरसे रक्खा गया, शहर मथुरा ग्वालियर, आगरा, अलवर, जयपुर, और टौंकसे सत्तर मील फ़ासिलेपर वाके है, शुरू ज़मानहमें मीनोंकी लूट मारके सबब तरक़ीको नहीं पहुंच सका, लेकिन् पीछे राजा गोपालपालने मीनोंको ज़ेर करने बाद शहरको लाल पत्थरकी शहरपनाहसे, जिसका घेरा २। माइलके क़रीब है, महफ़ूज़ किया, और शहरको तरक़्क़ी दी, यहांतक कि रफ़्तह रफ़्तह बाशिन्दोंकी तादाद २८००० तक पहुंचगई. शहर पनाहमें ६ दर्वाज़े और ग्यारह खिड़कियां और उसके चारों तरफ़ मिट्टीका एक चौड़ा धूलकोट है, जिसको तोपके गोलोंका कुछ भी ख़तरा नहीं और उसके गिर्द भद्रावती नदीके दराड़े याने पानीके बहावसे कटीहुई ज़मीनके शिगाफ़ इस तरहपर हैं, जैसे फ़ौलादी तलवारमें जौहर, अगर कोई नावाक़िफ़ आदमी उन दराड़ोंमें चलाजावे, तो उसको सिवा भटकनेके रास्तह मिलना मुश्किल होजाता है, बल्कि वह ऐसी जगह है, कि जिसमें हज़ारों आदमियोंकी फ़ौज ग़ाइब होसक्ती है. शहरके ख़ास बाज़ारकी लम्बाई क़रीब आध मीलके है, और बाज़ारके सिवा दूसरी गलियें बहुत तंग हैं. इस शहरको मैं (कविराजा श्यामलदास) ने भी महाराजा मदनपालके शुरू अहदमें देखा था; शहरके दक्षिण तरफ़ धूलकोटके क़रीब उन यादव राजपूतोंकी देवलियां (१) हैं, जो लड़ाईमें एक साथ मारेगये थे, और जिनके देखनेसे उन राजपूतोंकी बहादुरीका नमूना मालूम होता है. राजाके भाई बेटे लाल छत्तेकी छायामें बदनपर लाल मिट्टी लगायेहुए थे, जिनको शेर बच्चा कहना चाहिये. अगर्चि राज्यके पुराने महल राजा अर्जुनदेवके बनाये हुए इस वक़्त मौजूद नहीं हैं, लेकिन् उस वक़्तके महलोंके बाग़के दरख़्त अबतक हैं; हालके महल राजा गोपालपालने दिल्लीके मकानातके ढंगपर लाल पत्थरके बनवाये हैं, जो क़ाबिल देखनेके हैं; महलोंका घेरा २२५० गज़के क़रीब है, और उनके गिर्द एक ऊंची दीवारका हाता खिंचाहुआ है, जिसमें दो दर्वाज़े हैं. उस दर्वाज़ेपर, जिसको बीच दर्वाज़ह बोलते हैं, उम्दह कारीगरीका काम बना हुआ है. कहते हैं, कि दर्वाज़ोंपर गुलकारीका काम किसी आगरेके कारीगरने बनाया था; दर्वाज़ेके ऊपर एक उम्दह छत्री बनीहुई है; महलोंके

(१) लड़ाईमें मारेजानेवाले राजपूतोंके चबूतरोंको देवलियां कहते हैं.

अन्दर चित्रकारीका काम, जिसमें ख़ासकर रंग महल और दीवान आमका बहुत ही उम्दह है. गवर्नर जेनरलके एजेएट कर्नेल कीटिंगने यहांके महलोंकी निस्बत तारीफ़में लिखा है, कि वे हिन्दुस्तानके सबसे उम्दह मकानातकी क़िस्मसे हैं. शहरके कुल मकानात लाल पत्थरके हैं, जिनमेंसे खूबराम प्रधानका मकान और अत्ता शहरमें अजीतसिंहके मकानात बहुत बलन्द बनायेगये हैं.

राजधानीमें मन्दिर वग़ैरह जो मश्हूर मज़्हबी मकानात हैं, उनके नाम यहांपर दर्ज किये जाते हैं - महाराजा गोपालपालका बनवाया हुआ मदनमोहनका मन्दिर, प्रतापशिरोमणिका मन्दिर, जिसको महाराजा प्रतापपालने बनवाया था, और जिसके ख़र्चके लिये दो हज़ारकी जागीर नियत है. नवलबिहारीका मन्दिर, जिसको महाराजा प्रतापपालकी विधवा राणी नरूकीने बनवाया था, कल्याणरायका मन्दिर, राधाकृष्णका मन्दिर, गोविन्दका मन्दिर, गोपीनाथ, महाप्रभू, मुरारीमनोहर, और बख़्तावर शिरोमणिके मन्दिर तथा चार मस्जिदें हैं. इन मन्दिरोंमेंसे मदनमोहनका मन्दिर सबसे बड़ा है, जिसकी मूर्ति जयपुरके महाराजा जगत्सिंहसे राजा गोपालपाल लाये थे; और गोविन्द तथा गोपीनाथकी मूर्तियां मए दो और प्रतिमाके वृन्दावनसे लाई गई थीं. मन्दिरकी सेवाके वास्ते एक बंगाली ब्राह्मण मुर्शिदाबादके पास वाले एक मन्दिरसे बुलाकर मुक़र्रर कियागया था, जिसके वारिस अबतक इस गद्दीके मालिक हैं; इस मन्दिरके ख़र्चके लिये सत्ताईस हज़ार सालानहकी जागीर राजा गोपालपालकी नियत कीहुई है.

कूरगांव - क़रौलीसे दस मील दूर जयपुरके रास्तेपर ३०० मकान और १००५ आदमियोंकी बस्तीका गांव है, जो नमकके व्यापारके लिये इलाक़हमें मश्हूर है. ज़मीन यहांकी नालोंसे कटीहुई, लेकिन् पैदावारीमें उम्दह है. गांवके पास मकानोंके बहुतसे खंडहर नज़र आते हैं; लोगोंके ज़बानी बयानसे मालूम होता है, कि पहिले यहांपर मुसल्मान पठानोंका एक बड़ा शहर आबाद था, लेकिन् एक मुद्दत हुई, कि मुसल्मान यहांकी ज़मीनके मालिक नहीं रहे, और ऐसा ही हाल लोधी और धांकड़ लोगोंका है.

केला- क़रौलीसे दक्षिण पश्चिम तरफ़ १२ मील फ़ासिलेपर क़िले ऊतगढ़के रास्तेमे है. यहां एक छोटे नलेपर देवीका एक मश्हूर मन्दिर है, जहां हर साल चैत्र कृष्ण ११ को मेला शुरू होता और १५ रोज़तक बराबर जारी रहता है. जिसमें हज़ारहा यात्री इलाक़ह और दूर दूरके जमा होते और भेट चढ़ाते हैं. भेटका रुपया जो ६००० के क़रीब जमा होता है, सदाव्रत्तमें लगाया जाता है. क़रौलीके

रईस इस मक़ामपर कमसे कम एक मर्तबह सालभरमें दर्शन करनेको हमेशह आते हैं; यहांकी प्रशस्तिसे मालूम होता है, कि यह मन्दिर विक्रमी १७८० [हि० ११३५ = ई० १७२३] में बनवाया गया था.

बरखेड़ा, कूरगांव तअ़ल्लुक़ह - यह गांव क़रौलीसे दक्षिण पश्चिमको वाके़ है, जिसमें किसी एक राणी और एक लौंडीके बनवाये हुए दो बाग़ और मरहटा रूपजी सेंधियाकी छत्री, जो यहां मारागया था, है. इस गांवको क़रौलीसे पहिलेका बसा हुआ बतलाते हैं.

सलीमपुर, कूरगांव तअ़ल्लुक़ह - क़रौलीसे १४ मील पश्चिममें है; यहांपर पठानोंके बनवायेहुए क़िलेका खंडहर, मियां मक्खनकी मस्जिद, गांवके क़रीब मदार साहिबका चिल्ला नामकी एक पहाड़ी, जहां एक मुसल्मान फ़क़ीरने चालीस रोज़तक उपवास किया था, है. यहांकी आधी ज़मींदारी पठानोंकी है; कुओंमें पानी ६० हाथसे नीचे पायाजाता है.

मोहोली, कूरगांव तअ़ल्लुक़ह - यह गांव क़रौलीसे दक्षिण पश्चिम आठ मीलपर खीचरी ठाकुरका है, जो क़रौलीके राजाकी एक ख़ास शिकार गाहके लिये, जिसे नीला डूंगर कहते हैं, प्रसिद्ध है. यहां आम, बेर और कई क़िस्मके दरख़्त कस्रतसे होते हैं, पहाड़ियां नज़्दीक होनेकी वज्हसे झाड़ीके अन्दर जंगली जानवर बहुत पाये जाते हैं. कुओंमें पानी २० हाथकी गहराई पर निकल आता है.

अगरी, गुरलां तअ़ल्लुक़ह - यह जयपुरकी सर्हदपर पुराना गांव है, जो अफ़ीमकी पैदाइश और पोलिटिकल एजेण्ट लेफ्टिनेन्ट मंक मेसनके, मीना और दूसरी सर्कश क़ौमोंको ज़ेर करनेकी ग़रज़से, बनाये हुए एक क़िलेके लिये मश्हूर है.

बीचपुरी, गुरलां तअ़ल्लुक़ह - क़रौली शहरसे दक्षिण पूर्व तीन मील बद्रावती नलेपर है, यह और इसके पासके बरेर पहाड़ी, चावर, बालपुरा गांव, रेतीले पत्थर, खड़ीकी खान, तालाब और पुराने मन्दिरोंके लिये, मश्हूर हैं.

नारोली - जिरोतासे दो मील उत्तर जयपुरकी सर्हदसे मिलाहुआ ५०० घर तथा ३००० आदमियोंकी बस्तीका एक क़स्बह है, जो एक बड़े क़िलेके सबब, जिसको विक्रमी १८४० [हि० ११९७ = ई० १७८३] में मुकुन्द ठाकुरोंने बनवाया था, मश्हूर है. यहां हफ्तेमें एक दिन हटवाड़ा होता है; और बारूद बनाई जाती है. जो कि यह क़स्बह जयपुरकी सर्हदसे मिलाहुआ है, इस सबबसे कई बार आपसमें सर्हदी झगड़े हुआ करते थे, लेकिन् लेफ्टिनेण्ट मंक मेसनने मीनारे क़ाइम करके हमेशहका फ़साद मिटादिया.

सपोतरा- यह क़स्बह जिरोतासे ७ मीलके फ़ासिलेपर जिरोता तह्सीलके सबसे बड़े और आबाद गांवोंमेंसे ४०० घरोंकी बस्तीका है; यहां एक क़िला दो सौ बर्षका पुराना, रत्नपालके बेटे उदयपालका बनवाया हुआ है, जिसमें ५० आदमी रहते हैं; और एक उम्दह तालाव बना हुआ है. यहां हफ्तेमें एक दिन हटवाड़ा लगता है. बाशिन्दोंमें ज़ियादह तर मीना लोग ज़मींदार हैं. छीपोंके घरोंकी तादाद भी ज़ियादह है; जोगी लोग बारूद बनाते हैं, जो कोटा और बूंदीको भेजी जाती है. पानी पच्चीस हाथकी गहराईपर पायाजाता है.

खूबनगर- मांदरेलसे १४ मील उत्तर और राजधानी करौलीसे ५ मील पश्चिम में वाके है. यहां शिकारका बहुत उम्दह मौक़ा है, और महाराजा हरबख़्शपालके प्रधान भाऊ खूबरामका बनवाया हुआ उम्दह व बड़ा तालाब है, लेकिन् उसके नीचेकी ज़मीन सख़्त व पथरीली होनेके सबब उसका पानी खेतीके काममें नहीं लाया जा सक्ता.

मेला- करौलीमें व्यापारके लिये कोई मश्हूर मेला नहीं है, सिर्फ़ शहरके नज़्दीक कलकत्ता नाम मक़ामपर शिवरात्रिका एक मेला होता है, जिसमें मवेशीकी ख़रीद फ़रोख़्त होती है.

व्यापारके रास्ते- करौलीके राज्यमें व्यापार सम्बन्धी रास्ते ये हैं:- १- करौलीसे मांचलपुर होकर आगरे जानेवाली सड़क, उत्तर पूर्वमें. २- पश्चिममें इलाक़ह जयपुरके अन्दर कुशलगढ़ और माधवपुरको जानेवाली सड़क. ३- दक्षिणमें शिवपुर व बरोड़ाकी सड़क. ४- ग्वालियर व इन्दौरको जानेवाली सड़क, और ५- नारोलीसे शिवपुर तक. ६- उत्तरी तरफ़ हिन्डौन व बयानाकी सड़क. ७- पूर्वमें मथुरा व धौलपुर जानेवाली सड़क.

तारीख़.

तवारीख़ी हाल इस राज्यका हमको ख़ानगी तौरसे कुछ नहीं मिला, सिर्फ़ कप्तान पी० डब्ल्यू० पाउलेटके गज़ेटिअरसे लिखा जाता है, जो मुझको कर्नेल युएन स्मिथकी मददसे मिला, और थोड़ासा हाल करौलीसे मेरे मित्र डॉक्टर भवानीसिंहने भेजा था, लेकिन् उसमें उक्त गज़ेटिअरका ही आशय है.

यहांके जादव (यादव) राजपूत चन्द्र वंशी श्री कृष्णकी औलादमें गिने जाते हैं. पाउलेट साहिब लिखते हैं, कि महाराजा विजयपाल मथुरा छोड़कर मनी पहाड़को

आया, और वहां एक क़िला विक्रमी १०५२ [हि० ३८५ = ई० ९९५] में बनवाया. बड़वा भाट बयान करते हैं, कि उसका राज बहुत बढ़गया था. ग़ज़नीके मुसल्मानोंने उसपर हमलह किया, और धोखेसे राणियोंका बारूदमें उड़ जाना इस राजाकी ज़िन्दगीके ख़ातिमेका सबब हुआ. यह बर्बादी बयानाके क़िलेमें विक्रमी ११०३ [हि० ४३८ = ई० १०४६] में, जो उसने अपनी ज़िन्दगीमें बनवाया था, विजयपाल (१) के मरने बाद हुई. मुसल्मानोंने बयानेका क़िला छीन लिया. विजयपालके १८ बेटे थे, जिनमें छत्रपाल मुसल्मानोंसे लड़कर मारागया, और गजपालकी औलाद जयसलमेर (२) के भाटी हैं. तीसरे मदनपालने मांदरेल बसाया, और क़िलेको पीछा बनवाया, जिसके निशान अबतक मिलते हैं. विजयपालका सबसे बड़ा बेटा तवनपाल बारह वर्ष तक पोशीदह रहकर अपनी धायके मकानपर आया, उसने तवनगढ़का क़िला बयानाके अग्निकोणमें पन्द्रह मीलपर बनवाया, जिसके निशान अब तक मिलते हैं. तवनपालने डांगके इलाक़हपर क़ब्ज़ह करलिया.

तवनपालके मरने बाद उसका बेटा धर्मपाल गद्दीपर बैठा, और उसने धोलडेरामें जाकर एक क़िला बनवाया, जहां अब धौलपुर आबाद है. उसके बेटे कुंवरपालने गोलारीमें एक क़िला बनवाया, जिसका नाम कुंवरगढ़ रक्खा, और जिसके निशान अबतक मिलते हैं. धर्मपाल मुसल्मानोंकी लड़ाईमें मारागया; जब कुंवरपाल यहांसे निकलकर अंधेरा कटोलाकी तरफ़ चलागया, जो रीवांके पास है, तो उसका भाई मदनपाल मुसल्मानोंके ताबे रहकर तवनगढ़के पास ही रहा, जिसकी औलाद गोंज ख़ानदानके नामसे उस ज़िलेमें मौजूद है. अगर्चि वे मुसल्मान नहीं हुए, तो भी यादव लोग उनको ज़लील समझते हैं.

कुंवरपाल मरगया, तो उसके बाद सहनपाल, नागार्जुन, पृथ्वीपाल, तिलोकपाल, बपलदेव, सांसदेव, अरसलदेव और गोकुलदेव, एकके बाद दूसरा वारिस हुआ.

---

(१) हमको इस राजाके समयका पाषाण लेख काव्यमालाकी प्राचीन लेख मालाके पृ० ५३-५४-५५, ई० सन् १८८९ फ़ेब्रुअरीके अंकसे मिला है, जिसमें क्षितिपालके पुत्र विजयपालके सामन्त मथनदेवका बागौर नाम ग्राम एक मन्दिरको भेट करना लिखा है, उसमें विक्रमी १०१६ माघ शुक्ल १३ [हि० ३४८ ता० १२ ज़िल्क़ाद = ई० ९६० ता० १४ जैन्युअरी] दर्ज है. इससे विजयपालके मरनेके समयमें कुछ फ़र्क़ हो, तो आश्चर्य नहीं. इस पाषाण लेखकी नक़्ल शेष संग्रहमें दी है. बयानाकी एक प्रशस्ति, जो संवत् ११०० की है, उसमें विजयाधिराज लिखा है; इससे यह भी संभव है, कि राजा विजयपालने ज़ियादह उम्र पाई हो, और पहिली प्रशस्तिके वक़्में वह बचपनकी हालतमें हो. इस प्रशस्तिकी नक़्ल शेष संग्रहमें दी गई है.

(२) जयसलमेरकी तवारीख़में इससे फ़र्क़ पाया जाता है.

विक्रमी १३८४ [हि० ७२७ = ई० १३२७] में अर्जुनदेव गद्दीनशीन हुआ, उसने मुसल्मानोंसे मांदरेलका क़िला ले लिया. फिर पुंवार राजपूत और दोरोंसे मेल करके बिल्कुल इलाक़हपर क़ब्ज़ह करलिया. वह सर मथुराके ज़िलेके चौबीस गांव आबाद करके तवनपालकी कुल जायदादपर हुकूमत करने लगा, और कल्याण-रायका मन्दिर बनवाया, जहां अब क़रौली आबाद है.

विक्रमी १४०५ [हि० ७४९ = ई० १३४८] में क़रौली शहरकी नीव डाली, और एक महल, बाग़ व अंजनीका मन्दिर और गढ़कोट नामका क़िला बनवाया, जिसके निशान अबतक मौजूद हैं. विक्रमी १४१८ [हि० ७६२ = ई० १३६१] में विक्रमादित्य गद्दीपर बैठा, उसके बाद विक्रमी १४३९ [हि० ७८४ = ई० १३८२] में अभयचन्द, और विक्रमी १४६० [हि० ८०६ = ई० १४०३] में पृथ्वीराज. बड़वा भाटोंका बयान है, कि इसने ग्वालियरके राजा मानसिंहपर हमलह किया था, और मुसल्मानोंने तवनगढ़का मुहासरह किया, लेकिन् यादवोंने उनको हटा दिये. उनके बाद उदयचन्द उसके बाद प्रतापरुद्र, और चन्दसेन हुए; इसके बारेमें लिखा है, कि वह ऊतगढ़में रहता था. बड़वा लोग उसके बारेमें बहुतसी करामाती बातें कहते हैं. उसका बेटा भारतचन्द रियासतके लाइक़ नहीं था, इसवास्ते उसका पोता गोपालदास अपने दादाकी गद्दीपर बैठा, और वह अक्बर बादशाहकी नौकरीमें बहुत दिनों तक रहा.

अक्बरने उसको रणजीत नक़ारह दिया, जो अबतक रियासतमें मौजूद है, और ऐसा भी बयान है, कि आगरेके क़िलेकी बुन्याद अक्बर बादशाहने इसीके हाथ से डलवाई. मांचलपुरके क़िलेमें महल व बाग़ और झिरीमें महल व बहादुरगढ़का क़िला और गोपाल मन्दिर, यह सब उसीने बनवाये थे. मीना लोगोंको निकालकर पैदावार क़रौलीकी तरक़्क़ी दी. चन्दसेनका दूसरा बेटा जीतसिंह था, जिसकी औलाद कोट-मूंदा यादव कहलाती है. गोपालदासके बड़ा बेटा द्वारिकादास गद्दीका मालिक हुआ, और दूसरे मुकरावकी औलाद सर मथुरा, झिरी और सबलगढ़के मुक्तावत यादव हैं. तुरसाम बहादुरकी औलाद बहादुरके यादव कहलाते हैं. द्वारिकादासका बेटा मगदराय था, जिसके पंचपीर यादव कहलाते हैं, इसका बेटा मुकुन्द था, जिसके कई बेटे, जगोमन, छत्रमन, देवमन, मदनमन, और महामनके नामसे मशहूर थे, जो मुकुन्द यादव कहलाते हैं. मुकुन्दके बाद जगोमन गद्दीपर बैठा. उसके वक़्में सर मथुराके मुक्तावत और सबलगढ़के बहादुर यादवोंने फ़साद मचाया; लेकिन् वह तै किया गया. जगोमनका एक बेटा अनोमन हुआ, जिसकी औलादके मजूरा या कोटरीके यादव हैं.

जगोमनके पीछे उसकी गद्दीपर छत्रमन बैठा. वह बादशाह औरंगज़ेबके साथ दक्षिणकी लड़ाइयोंमें शामिल था. इसके एक बेटा राव भूपपाल था, जिसकी औलादमें इनायतीके राव हैं, और दूसरा शस्तपाल, जिसकी औलादमें मनोहरपुर वाले हैं. छत्रमनके बाद दूसरा धर्मपाल गद्दीपर बैठा; इसने दिल्लीके बादशाहोंको खुश रखकर मुक़ावतों और सबलगढ़ वालोंकी बग़ावतको मिटाया. इसका दूसरा बेटा राव कीर्तिपाल था, जिसकी औलादमें गरेड़ी और हाड़ोतीके जागीरदार हैं; और दूसरा भोजपाल हुआ, जिसके वंशमें रावत्राके जागीरदार हैं.

धर्मपालकी गद्दीपर उसका बड़ा बेटा रत्नपाल बैठा. उसके वक़में मुक़ावत और बहादुर जादव बाग़ी होगये, और खिराज देनेसे इन्कार किया, इसलिये झिरी और खेड़लाको खालिसह करलिया; लेकिन् थोड़े दिनोंके बाद वापस दे दिया.

रत्नपालकी गद्दीपर दूसरा कुंवरपाल बैठा. उसने गुंबदका महल बनवाया. उन्हीं दिनोंमें चम्बल किनारेके राजपूतोंने फ़साद किया, जिनको दिल्ली वालोंकी हिमायत थी, तब कुंवरपालने अपने इलाक़हके दो बादशाही थानोंके आदमियोंको अपना नौकर बना लिया, जिनकी औलाद अबतक क़रौलीमें मौजूद है. फिर उनके बाद गोपालपाल (१) गद्दीपर बैठा. उसके प्रधान खंडेराय और नवलसिंह दो ब्राह्मण अच्छे बुद्धिमान थे. शिवपुर और नरवरका प्रबन्ध भी उन्हींकी सलाहसे होता था. जब गोपालपाल गद्दीपर बैठा, तो इन दोनों प्रधानोंने मरहटोंसे मिलावट करके रियासतमें कुछ खलल न आने दिया. इस राजाने बड़ा होनेपर राज काज अच्छी तरह चलाया, और अपना मुल्क सबलगढ़से सीकरवाड़ तक फैलाया, जो ग्वालियरसे पांच कोसपर है. उसके इलाक़हमें विजयपुर भी शामिल होगया था, उसने झिरी और सर मथुराके मुक़ावतोंको भी अच्छी तरह तावेदार बना लिया. इस राजाने शहर क़रौलीके गिर्द लाल पत्थरकी शहर पनाह, गोपाल मन्दिर, दीवान आम, त्रिपोलिया, और नक़्क़ारख़ानह, नया कल्याण मन्दिर व मदनमोहनका मन्दिर बनवाया. गोपालपालने सर मथुराका ख़िराज देकर महाराजा सूरजमल जाटको भी मिला लिया था. विक्रमी १८१० [हि० ११६६ = ई० १७५३] में यह राजा दिल्ली गया, और बादशाहसे माही मरातिब पाया.

---

(१) पाउलेट साहिबने इसका नाम गोपालसिंह रक्खा है, लेकिन हमारे पास उसी ज़मानेकी तह्रीर मौजूद है, जब कि वह जयपुरके महाराजाके साथ उदयपुरमें आया था, उसमें उसका नाम गोपालपाल लिखा है.

बाद इसके जब विक्रमी १८१३ माघ शुक्ल ९ [हि० ११७० ता० ८ जमादियुल अव्वल = ई० १७५७ ता० २९ जैन्युअरी] को अहमदशाह अब्दाली दिल्लीमें पहुंचा, और उस शहरको लूटकर सूरजमल जाटकी सज़ाके लिये आगे बढ़ा, उसने अपने सेनापति जहांखांको एक फ़ौजके साथ मथुराकी तरफ़ भेजा. उसने मथुराको बर्बाद करके मन्दिरों और मूर्तियोंको मिट्टीमें मिलाया, राजा गोपालपाल, जो पक्का वैष्णव था, इस बातके सुननेसे उसे यहांतक रंज हुआ, कि आठ दिनके बाद वह मरगया. यह राजा करौलीके घरानेमें बहुत अच्छा और बुद्धिमान हुआ. यह राजपूतानहकी बड़ी बड़ी कार्रवाइयोंमें उदयपुर, जयपुर और जोधपुरका शरीक रहा, जिसका ज़िक्र पहिले लिखा गया है. गोपालपालके क़ब्ज़हमें जितने गांव थे, उनकी तफ़्सील पाउलेट् साहिबके गज़ेटिअरसे नीचे लिखी जाती है:-

पर्गनह.	गांव.	
करौली	४४	
कूरगांव और जिरोता	९१	
मांचलपुर	५८	
बहरगढ़	१७	
ऊतगढ़, वागड़	६२	
कोलारी	३३	
मांदरेल	४८	
खरहा	८	
कोटड़ीके गांव	५२	
मांगरोल	३१	चम्बलके दक्षिण.
सबलगढ़	१७१	
विजयपुर	८२	
कुल गांव-	६९७	

इस राजाने दो वर्ष तक १३००० तेरह हज़ार रुपया सालियानह मरहटोंको भी दिया था. गोपालपालकी गद्दीपर उसका चचेरा भाई तुरसामपाल विक्रमी १८१४ [हि० ११७१ = ई० १७५७] में बैठा. इसके समयमें नीपरीके ठाकुर

सिकरवार बाग़ी होगये, और क़िला अपने क़ब्ज़हमें करलिया. उसको सज़ा देनेके लिये राजकी फ़ौज एक पठानकी मातह्तीमें भेजी गई. कुंवारी नदीपर बड़ी भारी लड़ाई हुई, लिखा है, कि नदीका पानी खूनसे लाल होगया था. सिकरवार भाग निकले, और राजकी फ़ौजने फ़तह पाई. तुरसामपालका छोटा बेटा राव जुहारपाल था, जिसने जुहारगढ़ बनवाया, उसका पोता महाराजा प्रतापपाल था.

तुरसामपालका बड़ा बेटा माणकपाल विक्रमी १८२९ कार्तिक कृष्ण १३ [हि० ११८६ ता० २७ रजब = ई० १७७२ ता० २४ ऑक्टोबर] को उसकी जगह गद्दीपर बैठा. उसके वक़्तमें बहुत फ़साद रहा, और रोड़जी सेंधियाने चढ़ाई की. वह क़रौलीसे एक कोस पश्चिम रामपुरतक चलाआया, इसमें रोड़जी मारा गया, जिसकी छत्री भंडारनके बाग़में बनी है. इसके बाद नव्वाब हमदानीकी चढ़ाई लिखी है, जो कि शहरके क़रीब किशन बाग़ (कृष्ण बाग़) तक चला आया, और शहर-पनाह व महलोंपर गोलन्दाज़ी की; रियासतकी फ़ौजने साम्हना करके उसको हटा दिया. फिर सेंधिया और उनके फ़्रांसीसी जेनरल बेपटीस्टने चढ़ाई की, अमर-गढ़के ठाकुरकी दग़ाबाज़ीसे सबलगढ़ और चम्बलके दक्षिणी किनारेका मुल्क उसने लेलिया. यह लड़ाई विक्रमी १८५२ [हि० १२१० = ई० १७९५] में हुई थी. इस राजाके बेटे अमोलकपालने उसके बापसे जुदा ही अपना ढंग जमा लिया था, एक फ़ौज भरती की, जिसको यूरोपिअन अफ़्सरकी मातह्तीमें क़वाइद सिखलाई. नारोली, ऊतगढ़, झिरी, और सरमथुरा वग़ैरह बाग़ी सर्दारोंसे छीन लिये; लेकिन् झिरी और सर मथुरा सर्दारोंसे खिराज लेकर वापस दे दिये; और बापके साथ विरोध होनेसे सबलगढ़ नहीं लेसका. एक दफ़ा उसने अपने बापसे क़रौली छीन लेनी चाही, लेकिन् अपनी बहिनके मना करनेसे छोड़ दिया, और ऊतगढ़के क़िलेमें चला गया, जहां उसका देहान्त होगया. यह ख़बर सुननेसे महाराजा माणकपाल भी बीमार होकर मरगया.

विक्रमी १८६१ [हि० १२१९ = ई० १८०४] में उसका दूसरा बेटा हरबख़्शपाल गद्दीपर बैठा. विक्रमी १८६९ [हि० १२२७ = ई० १८१२] में नव्वाब मुहम्मदशाहख़ांसे मांचीमें लड़ाई हुई, नव्वाबने शिकस्त पाई, जिसके बाद जॉन बेपटीस्टके साथ मरहटी फ़ौजने क़रौलीपर चढ़ाई की, लेकिन् वे इस तरह लौटाये गये, कि पच्चीस हज़ार रुपया सालानह दिये जायेंगे; और कुछ अरसह बाद इस ख़िराजके एवज़ मांचलपुर चन्द गांवों सहित देना पड़ा.

विक्रमी १८७४ कार्तिक शुक्ल १ [हि० १२३२ ता० २९ ज़िल्हिज = ई० १८१७

ता० ९ नोवेम्बर] को करौलीका गवर्मेंएट अंग्रेज़ीके साथ अह्दनामह हुआ, तब वह ज़िला भी करौलीको दिलाया गया. महाराजासे गवर्मेंएटने ख़िराज नहीं लिया, लेकिन् अह्दनामहकी पांचवीं शर्तके मुताबिक़ वक्तपर फ़ौजसे मदद देनेका इक्रार है. राजाने चाहा था, कि चम्बलके दक्षिणी इलाके भी हमको मिलजावें, और उनके एवज़ हम ख़िराज दिया करेंगे; लेकिन् यह दर्ख़्वास्त ना मंज़ूर हुई.

विक्रमी १८८९ [हि० १२४८ = ई० १८३२] में यह महाराजा गवर्नर जेनरलकी मुलाक़ातके लिये धौलपुर गये. भरतपुरकी दूसरी लड़ाईके वक्त महाराजाने गवर्मेंएटके बर्ख़िलाफ़ कार्रवाई की थी, इस सबबसे उनको ज़ुरूर सज़ा मिलती, लेकिन् बचगये.

महाराजा प्रतापपाल, जो हाड़ौतीके राव अमीरपालका बेटा और जवाहिरपालका पोता था, विक्रमी १८९४ [हि० १२५३ = ई० १८३७] में हरबख़्शपालके मरने बाद गद्दीपर बिठाया गया, क्योंकि वह राजा बेऔलाद मरगया था. प्रताप-पालके भी कोई औलाद नहीं थी, सिर्फ़ एक लड़की थी, जो उसके मरने बाद कोटाके महाराव शत्रुशाल दूसरे को ब्याही गई. प्रतापपालके समयमें हरबख़्शपालकी राणीके साथ बखेड़ा उठा, महाराजा करौली छोड़कर मांदरेलमें चला गया, और एक लड़ाई हुई, जिसमें हरबख़्शपालके एकट्ठे किये हुए धन और आदमियोंका नुक्सान हुआ. बाग़ी सर्दारोंने राजाके प्रधान सेवाराम और बिरजूको मार डाला.

विक्रमी १८९५ [हि० १२५४ = ई० १८३८] में कर्नेल सदर्लैण्ड, करौली आये, लेकिन् यह फ़साद नहीं मिटा. आख़िरकार विक्रमी १८९७ [हि० १२५६ = ई० १८४०] में राणीसे सुल्ह होकर महाराजा करौलीमें आये. विक्रमी १८९७ [हि० १२५६ = ई० १८४०] में ट्रेवलिअन साहिबने करौलीमें पहुंचकर महाराजाको गवर्मेंएटकी तरफ़से गद्दी नशीनीका ख़िल्अत दिया. विक्रमी १८९८ [हि० १२५७ = ई० १८४१] में ठाकुरोंका फ़साद मिटानेके लिये एक अंग्रेज़ अफ़्सर आया, लेकिन् कुछ फ़ाइदह नहीं हुआ. विक्रमी १८९९ [हि० १२५८ = ई० १८४२] में महाराजा कर्नेल सदर्लैण्डसे मुलाक़ात करनेको बयाना गये, और विक्रमी १९०१ [हि० १२६० = ई० १८४४] में कप्तान मौरिसन् करौलीमें आया, लेकिन् ख़ानगी फ़साद मिटनेकी कोई सूरत नहीं निकली. विक्रमी १९०२ [हि० १२६१ = ई० १८४५] में मेजर थॉर्स-बी ने आकर कुछ दिनोंतक फ़सादको रोका. विक्रमी १९०६ [हि० १२६५ = ई० १८४९] में महाराजा प्रतापपालका देहान्त होगया, तब हाड़ौतीसे

लाकर नृसिंहपालको गद्दीपर बिठाया. यह राजा लड़का था, इसलिये विक्रमी १९०६ वैशाख शुक्ल ४ [हि० १२६५ ता० २ जमादियुस्सानी = .ई० १८४९ ता० २६ एप्रिल] को लेफ़्टिनेएट मंक मेसन् प्रबन्धके लिये करौलीमें आया. तह्क़ीक़ात करनेके बाद थोड़े सिपाही कोटा कण्टिन्जेएटके दो तोपोंके साथ बुलाये जाने और पोलिटिकल एजेएटकी मददपर डिप्युटी मैजिस्ट्रेट सैफ़ुल्लाहखांके रहनेसे प्रबन्ध अच्छी तरह होगया, जिससे अबतक लोग उक्त साहिबकी तारीफ़ करते हैं. विक्रमी १९०९ [हि० १२६८ = ई० १८५२] में नृसिंहपाल मरगया. उसके कोई औलाद नहीं रही. तब रियासतको ज़ब्त करनेका विचार गवर्नर जेनरलकी कौन्सिलमें हुआ; लेकिन् आख़िरको यह क़रार पाया, कि रियासतको बर्क़रार रखना चाहिये; और इस बारेमें जो ख़त कितावत हुई, उसमें विलायतके हाकिमोंने यह क़ाइदह निकाला, कि पुरानी देशी रियासतोंमें वारिस न होनेकी हालतमें गोद लेना मन्जूर किया जावे. जो कि इस रियासतको बर्क़रार रखना था, इसलिये एक वारिस नियत करना ज़रूर हुआ. भरतपाल और मदनपाल दो गद्दीके दावेदार थे, लेकिन् मदनपाल हाड़ौतीका राव होनेके सबब गद्दीका मालिक बनगया, और सर हेनूरी लॉरेन्सने उसको जयपुरसे अपने साथ लाकर विक्रमी १९१० फाल्गुन् शुक्ल १५ [हि० १२७० ता० १४ जमादियुस्सानी = .ई० १८५४ ता० १४ मार्च] को गद्दीपर बिठाया.

विक्रमी १९१२ [हि० १२७१ = .ई० १८५५] में एजेन्सी उठाली गई. विक्रमी १९१६ [हि० १२७५ = .ई० १८५९] तक कोई एजेएट रियासतमें नहीं था, इसलिये एजेएट गवर्नर जेनरल राजपूतानहसे ख़त किताबत होती रही. विक्रमी १९१६ [हि० १२७५ = .ई० १८५९] में क़र्ज़ बहुत बढ़ जानेके कारण महाराजाकी मददके लिये एक अफ़्सर भेजा गया था, लेकिन् वह सिर्फ़ महाराजाकी सलाहके लिये था, जिसको विक्रमी १९१८ [हि० १२७८ = .ई० १८६१] में पीछा बुला लिया; लेकिन् विक्रमी १९२५ [हि० १२८५ = .ई० १८६८] के अकालमें क़र्ज़ होगया था, और महाराजाने दो लाख रुपया सर्कार अंग्रेज़ीसे क़र्ज़ लेकर अपनी प्रजाकी मदद की. विक्रमी १९१४ [हि० १२७३ = .ई० १८५७] के ग़द्रमें सर्कारकी बड़ी ख़ैरख़्वाही की, और कोटाके बाग़ियोंकी सज़ाके लिये फ़ौज भेजी. इन कामोंके बदलेमें जी० सी० एस० आइ० का ख़िताब मिला, और दो फ़ाइर बढ़ाकर १७ तोपकी सलामी मुक़र्रर होगई, एक लाख सत्तर हज़ार क़र्ज़का रुपया सर्कारने छोड़ दिया, और एक ख़िल्अ़त भी मिला.

विक्रमी १९२६ श्रावण शुक्ल ८ [हि० १२८६ ता० ७ जमादियुलअव्वल = .ई० १८६९ ता० १६ ऑगस्ट] को महाराजा मदनपालका इन्तिक़ाल होगया.

वक़ाये राजपूतानहके एष्ठ ६४२- विक्रमी १९२७-२८ [हि० १२८७-८८ = ई० १८७० - ७१] की रिपोर्टमें लिखा है, कि " इस रईसको अजब हिम्मत थी, अपनी रियासतपर बिल्कुल क़ादिर था, कुल मुआमलातमें अपनी तज्वीज़से फ़ैसला देता था; निहायत उम्दगी और सफ़ाईसे काम करता था; आम इजाज़त थी, कि सुब्ह और शामकी हवाख़ोरीमें, जो कोई चाहे, अपनी अर्ज़ी पेश करे, या ज़बानी अर्ज़ करे. उसके हमनशीन व मुसाहिबोंको फ़ैसलह मुक़द्दमातमें दस्तन्दाज़ी करनेकी मुत्लक़ मजाल न थी; जुर्मोंके बन्द करनेमें पूरी कोशिश थी; कुसूरवार कैसी ही बचावकी जगहपर छिपता, वहांसे पकड़ा चला आता, और सज़ा पाता था. सती और लड़कियोंका मारना और धरनाके जुर्मको एक साथ बन्द करदिया; अल्बत्तह उदारताके कारण ख़र्च ज़ियादह था, इस सबबसे रियासत क़र्ज़दार रहती थी, और मह्सूल सख़्त थे; अगर्चि ग़ैर मुस्तहक़ लोगोंके वास्ते हदसे ज़ियादह फ़य्याज़ था, मगर बर्ख़िलाफ़ तरीक़े बाज़ रईसोंके, कि नालायक़ोंके वास्ते फ़य्याज़ और हक़दारोंके वास्ते कन्जूस हैं, उसने कालके वक़्में दो लाख रुपया सर्कार अंग्रेज़ीसे क़र्ज़ लेकर ग़रीब लोगोंको बांटा. महाराजा मदनपालके मरनेपर उनका भतीजा लक्ष्मणपाल, राव हाड़ौती, वारिस रियासत समझा गया था, मगर बस्वा वाली राणीके गर्भ होनेसे उसकी मस्नद नशीनीकी नौबत न पहुंची, कि विक्रमी १९२६ भाद्रपद शुक्ल ६ [हि० १२८६ ता० ४ जमादियुस्सानी = .ई० १८६९ ता० १२ सेप्टेम्बर] को लक्ष्मणपाल मरगया. इसपर जयसिंहपाल, जो कि हाड़ौतीका रईस हुआ था, वारिस करौली समझा गया.

विक्रमी १९२७ माघ [हि० १२८७ ज़िल्क़ाद = .ई० १८७१ जैन्युअरी] में साहिब एजेण्ट गवर्नर जेनरलने करौलीमें जाकर महाराजा जयसिंहपालको, जो कि उस वक़्त बत्तीस सालका बहुत होश्यार था, खिल्अ़त मस्नद नशीनी व इस्तियार रियासत दिया. ठाकुर द्वपभानसिंह तंवर राजपूत, महाराजा मदनपालके स्वसुरको, जो चन्द वर्षोंसे रियासतका बन्दोबस्त करता था, महाराजा मदनपालके मरने पीछे और जयसिंहपालकी गद्दी नशीनी तक रियासतमें पूरा इस्तियार रहा; और उसने बहुत ईमान्दारीसे काम किया. इसी सबबसे उसकी बहुत क़द्र और इज़्ज़त थी. जब महकमह पंचायत मुक़र्रर हुआ, तो वह भी उसमें शामिल हुआ, लेकिन् बुढ़ापे और नाताक़तीके सबब मिह्नत नहीं करसक्ता था. इस पंचायतके महकमहमें उसके सिवा नीचे लिखेहुए और सर्दार शामिल थेः-

१- मलूकपाल, सिपहसालार, रिसालेका अफ़्सर और महाराजाका रिश्तहदार.

२- छत्रपाल, अफ़्सर रिसालह और महाराजाका रिश्तहदार.

३- श्यामलाल, मौरूसी अह्लकार, जो पहिले हिन्दी दफ़्तरका अफ़्सर भी था.

४- दीवान वलदेवसिंह, जो पहिले मालके सरिश्तेका अफ़्सर था. इसका एक वेटा तह्सीलदार था; और दूसरा महाराजाकी खिद्मतमें हाज़िर रहता था. एजेन्सी आवू और राजपूतानहकी विकालतोंपर क़रौलीके एक पुराने खानदानके लोग मुक़र्रर हैं, कि उनमेंसे एक फ़ज़्लरुसूल एजेन्सी पश्चिमी राजपूतानहमें रहता है. उस ज़मानहमें पंचायतके सिवा मिर्ज़ा अक्वरअलीवेग एक और अह्लकार महाराजा वैकुण्ठ वासीके अह्दसे अदालतका हाकिम और सलाहकार था; मगर पीछे कामसे अलहदह होगया. करौलीके लोग इसको बहुत अच्छा समझते थे. राज्यके .इलाक़हमें चारों अह्लकार क़रौलीके रहनेवाले थे. .इलाक़ह गैरके लोग कम नौकर थे, और तह्सीलदारोंका इख्तियार बे हद था.

महाराजा मदनपालके पीछे इन्तिज़ाममें नुक्सान आगया, क्योंकि महकमह पंचायतके सिवा कोई अदालत न थी. महाराजा जयसिंहपालने मदनपालके मुवाफ़िक़ यही तज्वीज़ की, कि महकमह अदालत जुदा करके उसपर एक आदमी मुक़र्रर कियाजावे; और पंचायतमें सिर्फ़ अपीलकी समाअ्त हो. सरिश्तह तालीममें सिर्फ़ एक मद्रसह राजधानीमें था, जिसकी कुछ भी दुरुस्तीकी उम्मेद न थी; अल्बत्तह वलियुल्लाह डॉक्टरकी कारगुज़ारी, डॉक्टर हार्वी साहिवने तारीफ़के साथ लिखी है. महाराजा मदनपालके इन्तिक़ालके समय रियासतपर दो लाख साठ हज़ार रुपया क़र्ज़ था, जिसमें दो लाख सर्कार अंग्रेज़ीका और साठ हज़ार साहूकारोंका था; कप्तान वाल्टर साहिव, पोलिटिकल एजेण्टने राजके खर्चमें ऐसी कमी की, कि पचास हज़ारसे ज़ियादह रुपया सालानह क़र्ज़में दिया जावे; और गैर मामूली खर्चके लिये कुछ वचत भी हो. इस तद्बीरसे विक्रमी १९२७ - २८ [हि० १२८७- ८८ = .ई० १८७० और ७१] तक गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीका सत्तर हज़ार रुपया अदा होगया, और साहूकारोंका क़र्ज़ह भी कुछ कम होगया; परन्तु महाराजा जयसिंहपालकी गद्दी नशीनीसे खर्च ज़ियादह होगया, ताहम रियासतकी आमद भी चार लाखसे पांच लाख होगई, सिर्फ़ मालका वन्दोवस्त पुख़्तह न हुआ, पुराने रवाजके साथ वढ़ावेपर ठेका दियाजाता था.

विक्रमी १९२८ [हि० १२८८ = .ई० १८७१] की रिपोर्टमें मेजर वाल्टर साहिवने लिखा है, कि " महाराजा जयसिंहपाल वहुत होश्यार हैं, मैं विलायतसे पीछा

आया, तब महाराजाने भरतपुर आकर मुझसे मुलाक़ात की, फिर मैंने भी क़रौलीमें जाकर मुल्कका दौरा किया, और वहांके हालात देखकर बहुत ख़ुश हुआ. मुझको यक़ीन है, कि महाराजा अपनी रियासत और रिआ़याकी तरक़्क़ीका बहुत फ़िक्र रखते हैं, और रियासतका बहुतसा काम ख़ुद करते हैं. उनके हुक्म बहुत ठीक और इत्मीनानके होते हैं. उनको शहर क़रौलीकी सफ़ाई और हिफ़्ज़ानि सिहतकी बहुत फ़िक्र है, पानीका निकास और फ़र्शबन्दी शहरकी तज्वीज़ की है. इसमें दस हज़ार रुपया ख़र्च होगा, थोड़ा शहरके बड़े आदमियोंसे वुसूल होकर बाक़ी राजसे दियाजायेगा. गद्दी बैठनेसे थोड़े समय पीछे हिफ़्ज़ सिहत और प्रजाके आरामकी तद्बीर करना महाराजाकी निहायत ख़ुश तद्बीरी ज़ाहिर करता है."

"क़रौलीसे कुशलगढ़ और हिन्डौनकी सड़कें, जिन दोनोंपर आमद रफ़्त रहती है, तय्यार करते हैं; कूरगांवमें मुसाफ़िरोंके आरामके वास्ते सराय तय्यार कराई है, और तरक़्क़ी की तद्बीरोंपर हर तरह मुस्तइद हैं. उनके मिज़ाजमें फ़ुज़ूल ख़र्ची नहीं है. यक़ीन है, कि उनके बन्दोबस्तसे रियासतकी आमदनी और ख़र्चका अच्छा बन्दोबस्त होजायेगा. ठाकुर वृषभानसिंह, जिसने महाराजा मदनपालके मरनेसे महाराजा जयसिंहपालकी मस्नद नशीनी तक बहुत अच्छी तरहसे काम किया था, अब भी बराय नाम दीवान है; मगर बहुत बुड्ढा होगया है, काम नहीं कर सक्ता; सब उसका अदब करते हैं, और महाराजा साहिब उसका बहुत एतिबार करते हैं. जेलख़ानह साफ़ है, और क़ैदी तन्दुरुस्त रहते हैं. अस्पतालमें इ़लाज अच्छी तरह होता है; मद्रसेमें बाज़े लड़के अच्छे पढ़ते हैं; उनमेंसे एकने गवर्मेण्ट कॉलिज आगरामें भरती होनेकी दर्ख़्वास्त की, जो कि जुलाईमें दाख़िल होगा. हिन्दुस्तानके दूर दूर मक़ामातपर भी हर साल इ़ल्मकी तरक़्क़ी होती जाती है, मगर जबतक इन मद्रसोंकी निगरानीके लिये कोई अफ़्सर मुक़र्रर न किया जावे, उनमें तरक़्क़ी नहीं होसक्ती. अक्सर रईस और उनके अहलकार बे इ़ल्म होते हैं; जब तक कि उनको विद्याका फ़ाइदह अच्छी तरह न मालूम हो, उम्मेद नहीं होसक्ती, कि वे सिर्फ़ नामकी मददिहीसे कुछ ज़ियादह करसकें."

"विक्रमी १९२९-३० [हि० १२८९-९० = ई० १८७२-७३] में महाराजाने पंचायतका महकमह तोड़कर इज्लास ख़ास मुक़र्रर किया, और ठाकुर वृषभानसिंह, जो अ़दालतका हाकिम था, और तामील व मुक़द्दमात शुरूका फ़ैसलह भी करता था, उसकी अपील महकमह इज्लास ख़ासमें होती थी; बे क़ाइदह अ़दालत और अहलकारोंकी कमीसे बहुतसी मिस्लें बाक़ी रहती थीं, और कामके जारी करनेमें भी

सुस्ती होती थी. कुशलगढ़की रिआ़याने रियासत जयपुरसे नाराज़ होकर महाराजा क़रौलीसे दर्ख़्वास्त की, कि अपने नामका एक क़स्बह आबाद कीजिये, हम वहां आ- रहेंगे; इसपर महाराजाने अपने नामसे जयनगर आबाद किया, और बड़ौदेकी सड़कको दुरुस्त करके दुतरफ़ह दरख़्त लगादिये. इन महाराजाने क़दीम बाग़ात और मकानातकी अच्छी दुरुस्ती करवाई. यह महाराजा विक्रमी १९३२ मार्गशीर्ष कृष्ण ५ [हि० १२९२ ता० १९ शव्वाल = .ई० १८७५ ता० १७ नोवेम्बर] को दस्तोंकी बीमारीसे, जो कुछ अ़रसह तक रही, इन्तिक़ाल करगये. इनके कोई औलाद न थी, लेकिन् एक मुलाक़ातमें उन्होने पोलिटिकल एजेण्ट कर्नेल राइटको कहदिया था, कि मेरे बाद हाड़ौतीका राव अर्जुनपाल गद्दीपर बिठाया जावे. उसी हिदायतके मुवाफ़िक़ अर्जुनपालको गद्दीपर बिठायागया.

महाराजा अर्जुनपाल.

यह महाराजा विक्रमी १९३२ माघ शुक्ल ५ [हि० १२९३ ता० ४ मुहर्रम = .ई० १८७६ ता० ३१ जैन्युअरी] को गुज़रेहुए महाराजाकी इजाज़त और पोलिटिकल एजेण्टकी सम्मतिसे गद्दीपर बिठाये गये. इस वक़्त एक क़रीबी रिश्तह्दार सज्जनपालने, जो पहिले क़रौलीकी गद्दीका दावा रखता था, लाचार होकर हाड़ौतीका राव बनना चाहा, लेकिन् उस ठिकानेके हक़्दार भंवरपालको राव बनादिया गया था, इस लिये उसका यह मनोरथ भी पूरा न हुआ. रियासतके कई लोग सज्जनपालके मददगार होगये थे, लेकिन् वह कुछ चारा न जानकर महाराजा अर्जुनपालके क़दमों पर आ गिरा, तब उसके लिये महाराजाने कुछ जागीर मुक़र्रर करदी. हाड़ौतीके राव भंवरपालको तालीमके लिये मेओ कॉलिज अजमेरमें भेजनेकी हिदायत हुई, लेकिन् औरतोंकी जाहिलानह मुहब्बतने इस उ़म्दह लियाक़तसे उसको बाज़ रक्खा, और महाराजा अर्जुनपालने भी लाचारीका जवाब दिया, कि मेरा इसमें इख़्तियार नहीं है.

इन महाराजाके शुरू अ़हदसे ही बद इन्तिज़ामीने इस रियासतमें क़दम रक्खा, क्योंकि उनका मुसाहिब ठाकुर वृषभानसिंह बिल्कुल ज़ईफ़ और फ़ालिजकी बीमारीसे बेकाम होगया था, अलबत्तह उसका नाइब रामनारायण होश्यार और पुख़्तह मिज़ाज आदमी था, मगर महाराजा मदनपाल व जयसिंहपालके बराबर

लियाक़त नहीं रखता था, और जागीरदारोंकी सर्कशीको मिटानेकी ताक़त रईसमें न हो, तो अकेला नाइब किसतरह काम चलासक्ता है.

विक्रमी १९३९ [हि० १२९९ = ई० १८८२] में सर्दारोंकी सर्कशी और मुल्की बद इन्तिज़ामीके सबब सर्कार अंग्रेज़ीने मुदाख़लतके साथ महाराजाको बे दख़्ल करने बाद एक पोलिटिकल अफ्सर इन्तिज़ामपर रखदिया. सर्कारी अफ्सरके मातह्त कौन्सिल काम अंजाम देनेको क़ाइम रही, और मालगुज़ारीकी निगरानीपर मुन्शी अमानतहुसैन, जो ज़िला अजमेरमें तह्सीलदार रहचुका था, मुक़र्रर कियागया.

विक्रमी १९४३ [हि० १३०३ = ई० १८८६] में महाराजा अर्जुनपाल गुज़र गये, और उनके गोद माने हुए कुंवर भंवरपालने जवान उम्रमें राज्य पाया.

महाराजा भंवरपाल.

यह विक्रमी १९४३ भाद्रपद [हि० १३०३ ज़िल्हिज = ई० १८८६ सेप्टेम्बर] में क़रौलीकी गद्दीपर बैठे. कौन्सिल बदस्तूर सर्कारी अफ्सरकी निगरानीमें राज्यके कारोबार चलाती रही. विक्रमी १९४३ फाल्गुन [हि० १३०४ जमादियुस्सानी = ई० १८८७ फ़ेब्रुअरी] में जनाब मलिकह मुअज़्ज़मह इंग्लिस्तान और क़ैसरह हिन्दुस्तानकी ज्युबिली, याने पचासवें साल जुलूसकी रस्मपर उम्दह कारगुज़ारीके सबब मुन्शी रशीदुद्दीनख़ां मेम्बर कौन्सिलको "ख़ान बहादुर" ख़िताब सर्कारसे मिला.

विक्रमी १९४६ ज्येष्ठ शुक्ल ९ [हि० १३०६ ता० ७ शव्वाल = ई० १८८९ ता० ७ जून] को अंग्रेज़ी सर्कारकी तरफ़से महाराजा भंवरपालको मुल्की इख़्तियारात हासिल हुए; लेकिन् कौन्सिल उनके मातह्त बदस्तूर बहाल चली आती है.

राज्य क़रौलीके पांच लाख सालानह ख़ालिसहकी आमदनीके सिवा, डेढ़ लाख आमदके गांव जागीर, ख़ैरात और नौकरी वगैरहमें बंटे हुए हैं; और तमाम छोटे बड़े जागीरदारोंकी तादाद चालीस बयान कीजाती है, जिनमेंसे यादवोंकी कोटड़ियोंका नक़्शह यहां दर्ज कियाजाता है.

नम्बर.	जागीर.	गांव.	छटूंद.	शाख.	कैफ़ियत.
६	"	कावदा उम्मेदपुरा	१७९-०-०	"	" "
७	इनायती	इनायती	१५३-१२-०	"	महाराजा छत्रपालके वंश में हैं, और अमरगढ़ व हाड़ौतीसे नीचे बैठते हैं.
८	इनायतीके मातह्त जागीर	गुलाबपुरा	५१-४-०	"	इनायतीके जागीरदार.
९	अमरगढ़	अमरगढ़ जरोली नीसाणो कारो गुढ़ो अरूढ़ वगीद किशोरपुरा सुल्तानपुर जरोद भागीरथपुरा खुशालपुरा चतरभुजपुरा डूंगरी तलाव जतनपुरा कंवरपुर वाजनो लछमनपुरा	१०००-०-०	जगमान	महाराजा जगमानके वंश में हैं.
१०	अमरगढ़के मातह्त जागीर	मजोरा	२०३-०-०	"	दर्बारके जागीरदार.

नम्बर.	जागीर.	गांव.	छटूंद.	शाख.	कैफ़ियत.
११	वर्तूण	वर्तूण हरसिंह पुरा बुद पुरा खेमपुरा कमालपुरा	१०५९–८–०	मुकुन्द	महाराजा द्वारिकादासके पुत्र मुकुन्दके वंशमें हैं; और रावंत्राके नीचे बैठते है.
१२	मातहत जागीर (नारोली)	नारोली चरीकी पार्वतीपुरा वंदीपुरा एदलपुरा	२५७–०–०	"	दर्बारके जागीरदार.
१३	" लोलरी	लोलरी	६९–०–०	"	" "
१४	" सिमार	सिमार	१७९–०–०	"	" "
१५	" "	खो	२३१–८–०	"	" "
१६	" "	सेमदों	२०५–०–०	"	" "
१७	" "	फ़तहपुर	२०९–०–०	"	" "
१८	" "	केदारपुरा	७०–०–०	"	" "
१९	केला "	केला	४१–८–०	ठाकुर	महाराना कुंवरपालकी पासवानके पुत्रकी औलादमें है.
२०	वाजनो	वाजनो	४४–०–०	सलीदी	महाराजा द्वारिकादास के पुत्रकी औलादमें है.
२१	महोली	महोली	२९४४–०–०	खिंची	मालूम नहीं, कि यह किस खानदानमें हैं.
२२	हरनगर	हरनगर भीकमपुरा	२८३–६–०	हरीदास	द्वारिकादासकी औलादमें.

नम्बर.	जागीर.	गांव.	छटूंद.	शाख.	कैफ़ियत.
२३	फ़तहपुर	फ़तहपुर	६२९-०-६	"	" "
२४	रामपुरा	रामपुरा	४८८-७-०	"	" "
२५	मेंगरी	मेंगरी	३७२-२-९	"	" "
२६	वख़्तपुरा	वख़्तपुरा	७४४-५-३	"	" "
२७	चैनपुर	चैनपुर	६१८-८-०	"	" "
२८	माची	माची दीपपुरा	२३९-०-०	"	" "
२९	टटवाई	टटवाई	२२८-०-०	"	" "
३०	बिनेग	विनेग		"	हरबख़्शपालके वक्तमें खूब-नगर तालावकी ज़मीन लेली, जिसके एवज़में छटूंद छोड़ दी गई.
३१	कोटो	कोटो	६०९-०-०	"	" "
३२	मचानी	मचानी	२९८-५-०	"	" "
३३	केशपुरा	केशपुरा	४०६-८-०	"	" "
३४	कानपुरा	कानपुरा	५१४-०-०	"	" "
३५	मोराखेड़ा	मोराखेड़ा खेड़ो काशीरामपुरा (ज़ब्त किया गया) रेहो मदीली			
३६	वेनसाहट	वेनसाहट	१३५-०-०	"	
३७	बीड़वास	बीड़वास	६९-४-०	"	

क़रौली राज्यमें ठाकुरोंके ख़ानदानकी सैंतीस कोटड़ियोंमें मुख्य हाड़ौती, अमरगढ़, .इनायती, रावंत्रा, और वर्तूण हैं. इन ठिकानेदारोंको महाराजा ख़ुद आकर तलवार बंधाते व घोड़ा सिरोपाव देते हैं.

हाड़ौतीके ठाकुरकी ख़ास जागीर गरेरीके नज़्दीक एक गांवमें थी, यहांका पहिला राव कीर्तिपाल, राजा धर्मपालका दूसरा बेटा था; यह धर्मपाल क़रौलीकी गद्दीपर विक्रमी १७०१ [हि० १०५४ = .ई० १६४४] में बैठा. विक्रमी १७५४ [हि० ११०९ = .ई० १६९७] में हाड़ौती और फ़त्हपुरके ठाकुरोंके आपसमें सर्हदी तनाज़ा खड़ा हुआ, और उन्हींके कुटुम्ब वालोंको पंच क़ाइम किया. हाड़ौती वालोंकी तरफ़से गोली चली, जिससे गरेरीका कीर्तिपाल, जो पंचायतमें शामिल था, मरगया. इससे महाराजाने कीर्तिपालके बेटोंको हाड़ौती पर क़ाबिज़ होनेका हुक्म दिया; हाड़ौतीके ठाकुर दूसरे ठाकुरोंके मुवाफ़िक़ ख़ैरख़्वाह मश्हूर नहीं हैं. महाराजा हरबख़्शपालने एकट नलाकी बहादुरानह लड़ाईके बाद इस जागीरको लेलिया, और छः वर्ष बाद कुछ जुर्मानह लेकर वापस दिया. यहांके ठाकुर राव कहलाते हैं. अमरगढ़ ठाकुरका दरजह बराबर है, इसलिये दर्बारमें दोनों एक साथ हाज़िर नहीं होते. अमरगढ़का पहिला ठाकुर राजा जगमानका बेटा था, यह राजा जगमान विक्रमी १६६२ [हि० १०१४ = .ई० १६०५] में क़रौलीकी गद्दीपर बैठा था. अमरमानके बारेमें ऐसा बयान है, कि वह दिल्लीके बादशाहके पास गया, और वहांसे मन्सब पाया. महाराजा माणकपालके वक़्में ठाकुरको क़ैद करके अमरगढ़की जागीर छीनली थी, मगर कुछ दिन बाद वापस देदी. महाराजा हरबख़्शपालने भी विक्रमी १९०४ [हि० १२६३ = .ई० १८४७] में यह जागीर फिर लेली, और वापस दी. महाराजा प्रतापपालके ज़मानहमें यहांका ठाकुर लक्ष्मणचन्द बदमआशोंका मददगार बना, और सिक्कहगरोंका मददगार मालूम होनेपर जयपुर एजेन्सीके वकीलोंकी कोर्टने तज्वीज़ किया, कि पन्द्रह हज़ार रुपया जुर्मानह ठाकुरसे लिया जाकर वह रुपया फ़ायदह आमके काममें ख़र्च किया जाये.

क़रौलीका अह्दनामह.

एचिसन् साहिबकी किताब, जिल्द ३, हिस्सह १,
अह्दनामह नम्बर ७०.

अह्दनामह ऑनरेब्ल अंग्रेज़ी ईस्ट इंडिया कम्पनी और महाराजा यदुकुल

चन्द्रभाल हरबख़्शपालदेव राजा करौलीके दर्मियान, मारिफ़त मिस्टर चार्ल्स थियोफ़िलिस मेट्कॉफ़के, जिसको ऑनरेबल कम्पनीकी तरफ़से हिज़ एक्सिलेन्सी दि मोस्ट नोब्ल मार्क्विस ऑफ़ हेस्टिंग्ज़, के० जी० गवर्नर जेनरलने इख़्तियारात अता किये थे, और मारिफ़त मीर अताकुलीके, जिसको उक्त राजाने अपनी तरफ़से पूरे इख़्तियारात दिये थे, तै पाया.

शर्त पहिली– दोस्ती, एकता और ख़ैरख़्वाही, गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीके, जो एक फ़रीक़ है, और राजा करौली व उनकी औलादके, जो दूसरा फ़रीक़ है, हमेशहके वास्ते जारी रहेगी.

शर्त दूसरी– अंग्रेज़ी सर्कार राजा करौलीकी रियासतको अपनी हिफ़ाज़तमें लेती है.

शर्त तीसरी– राजा करौली अंग्रेज़ी सर्कारकी बुज़ुर्गीका इक़ार करके हमेशहकी इताअतका वादह करते हैं; वह किसीपर ज़ियादती न करेंगे, और किसी ग़ैरके साथ सुल्ह या मुवाफ़क़त अंग्रेज़ी सर्कारकी मर्ज़ीके वग़ैर न करेंगे; अगर इत्तिफ़ाक़से कोई तक़ार किसी रईसके साथ होजावे, तो वह फ़ैसलहके लिये अंग्रेज़ी सर्कारकी सर पंचीमें सुपुर्द कीजावेगी. राजा अपने मुल्कके पूरे हाकिम हैं, अंग्रेज़ी हुकूमत उनके मुल्कमें दाख़िल न होगी.

शर्त चौथी– अंग्रेज़ी सर्कार अपनी खुशीसे राजा और उसकी औलादको वह ख़िराज मुआफ़ फ़र्माती है, जो वह साबिक़में पेश्वाको देते थे, और जो पेश्वाने अंग्रेज़ी सर्कारके नाम तब्दील करदिया था.

शर्त पांचवीं– राजा करौली, जब अंग्रेज़ी सर्कार तलब करे, अपनी फ़ौज अपनी हैसियतके मुवाफ़िक़ देंगे.

शर्त छठी– यह अह्दनामह, जिसमें छः शर्तें दर्ज हैं, दिह्ली मक़ामपर तय्यार होकर उसपर मिस्टर चार्ल्स थियोफ़िलिस मेट्कॉफ़ और मीर अताकुलीके मुहर और दस्तख़त हुए; और इसकी तस्दीक़ कीहुई नक़्ल दस्तख़ती हिज़ एक्सिलेन्सी दि मोस्ट नोब्ल गवर्नर जेनरल और महाराजा करौलीकी आजकी तारीख़ ९ नोवेम्बर सन् १८१७ .ई० से दिह्ली मक़ाममें एक महीनेके अन्दर दीजावेगी– फ़क़त.

दस्तख़त– सी० टी० मेट्कॉफ़.　　　　मुहर.

मुहर राजा.　　　　मुहर मीर अताकुली.　　　　दस्तख़त– हेस्टिंग्ज़.

मुहर कम्पनी.

इस अह्दनामहको हिज़ एक्सिलेन्सी गवर्नर जेनरलने कैम्प सलियामें तारीख़ १५ नोवेम्बर सन् १८१७ ई० को तस्दीक़ किया.

दस्तख़त- जे ऐडम,

सेक्रेटरी, गवर्नर जेनरल.

अह्दनामह नम्बर ७१.

अह्दनामह बाबत लेन देन मुज्रिमोंके दर्मियान ब्रिटिश गवर्मेएट और श्री मान् मदनपाल महाराजा करौली, जी० सी० एस० आइ० व उसके वारिसों और जानशीनोंके, एक तरफ़से लेफ़्टिनेएट कर्नेल रिचर्ड हार्ट कीटिंग, सी० एस० आइ० और वी० सी० एजेएट गवर्नर जेनरल, राजपूतानह, जिसको श्री मान् राइट ऑनरेब्ल सर जॉन लेयर्ड मेअर लॉरेन्स, बैरोनेट्, जी० सी० बी० और जी० सी० एस० आइ० वाइसरॉय और गवर्नर जेनरल हिन्दसे पूरा इख़्तियार मिला था, और दूसरी तरफ़से फ़ज़्लरसूलख़ांने, जिसको उक्त महाराजा मदनपालने पूरे इख़्तियार दिये थे, तै किया.

शर्त पहिली- कोई आदमी अंग्रेज़ी या दूसरे राज्यका बाशिन्दह अगर अंग्रेज़ी .इलाक़हमें संगीन जुर्म करके करौलीकी राज्य सीमामें आश्रय लेना चाहे, तो करौलीकी सर्कार उसको गिरिफ़्तार करेगी; और दस्तूरके मुवाफ़िक़ उसके मांगेजाने पर सर्कार अंग्रेज़ीको सुपुर्द करदेगी.

शर्त दूसरी- कोई आदमी, करौलीके राज्यका बाशिन्दह वहांकी राज्य सीमामें कोई संगीन जुर्म करके अंग्रेज़ी राज्यमें जाकर आश्रय लेवे, तो सर्कार अंग्रेज़ी वह मुज्रिम गिरिफ़्तार करके करौलीके राज्यको क़ाइदहके मुवाफ़िक़ तलब होनेपर सुपुर्द कर देवेगी.

शर्त तीसरी- कोई आदमी, जो करौलीके राज्यकी रअ़य्यत न हो, और करौलीकी राज्य सीमामें कोई संगीन जुर्म करके फिर अंग्रेज़ी सीमामें आश्रय लेवे, तो सर्कार अंग्रेज़ी उसको गिरिफ़्तार करेगी; और उसके मुक़द्दमहकी तह्क़ीक़ात सर्कार अंग्रेज़ीकी बतलाई हुई अदालतमें कीजायेगी; अक्सर क़ाइदह यह है, कि ऐसे मुक़द्दमोंका फ़ैसलह उस पोलिटिकल अफ़्सरके इज्लासमें होगा, कि जिसके तह्तमें वारिदात होनेके वक़्पर करौलीकी पोलिटिकल निगरानी रहे.

शर्त चौथी- किसी हालतमें कोई सर्कार किसी आदमीको, जो संगीन मुज्रिम ठहरा हो, देदेनेके लिये पाबन्द नहीं है, जबतक कि दस्तूरके मुवाफ़िक़ ख़ुद वह सर्कार या उसके हुक्मसे कोई अफ़्सर उस आदमीको न मांगे, जिसके .इलाक़हमें कि जुर्म हुआ हो, और जुर्मकी ऐसी गवाहीपर, जैसा कि उस इलाक़हके क़ानूनके

मुवाफ़िक़ सहीह समझी जावे, जिसमें कि मुजिम उस वक़ हो, उसकी गिरिफ्तारी दुरुस्त ठहरेगी, और वह मुजिम क़रार दिया जायेगा, गोया कि जुर्म वहींपर हुआ है.

शर्त पांचवीं- नीचे लिखे हुए जुर्म संगीन जुर्म समझे जावेंगेः-

१- ख़ून. २- ख़ून करनेकी कोशिश. ३- वह्शियानह क़त्ल. ४- ठगी. ५- ज़हर देना. ६- ज़िना बिल्जब्र (ज़बर्दस्ती व्यभिचार). ७- सख़्त ज़ख़्मी करना. ८- लड़का बाला चुरा लेजाना. ९- औरतोंका बेचना. १०- डकैती. ११- लूट. १२- सेंध (नक़ब) लगाना. १३- चौपाया चुराना. १४- मकान जलादेना. १५- जालसाज़ी करना. १६- झूठा सिक्कह चलाना. १७- ख़यानति मुजिमानह. १८- माल अस्बाब चुरालेना. १९- ऊपर लिखे हुए जुर्मोंमें मदद देना या वर्ग़लान्ना.

शर्त छठी- ऊपर लिखी हुई शर्तोंके मुताबिक़ मुजिमोंको गिरिफ्तार करने, रोक रखने, या सुपुर्द करनेमें, जो ख़र्च लगे, वह दर्ख़्वास्त करनेवाली सर्कारको देना पड़ेगा.

शर्त सातवीं- ऊपर लिखा हुआ अह्दनामह उस वक़ तक बर्क़रार रहेगा, जबतक कि अह्दनामह करनेवाली दोनों सर्कारोंमेंसे कोई एक दूसरेको उसके रद्द करनेकी ख़्वाहिश ज़ाहिर न करे.

शर्त आठवीं- इस अह्दनामहकी शर्तोंका असर किसी दूसरे अह्दनामहपर, जो दोनों सर्कारोंके बीच पहिलेसे है, कुछ न होगा, सिवा ऐसे अह्दनामहके जोकि इस अह्दनामहकी शर्तोंके बर्ख़िलाफ़ हो.

मक़ाम अजमेर, तारीख़ २७ नोवेम्बर सन् १८६८ ई० को तै पाया.

(दस्तख़त)- फ़ज़्लरसूलख़ां,
वकील, महाराजा करौली, जी० सी० एस० आइ०,
फ़ार्सी हर्फ़ोंमें.

(दस्तख़त)- आर० एच० कीटिंग,
एजेण्ट गवर्नर जेनरल.

(दस्तख़त)- जॉन लॉरेन्स,
वाइसरॉय और गवर्नर जेनरल हिन्द.

इस अह्दनामहकी तस्दीक़ श्री मान् वाइसरॉय और गवर्नर जेनरल हिन्दने मक़ाम फ़ोर्ट विलिअमपर ता० २० डिसेम्बर सन् १८६८ ई० को की.

(दस्तख़त)- डब्ल्यू० एस० सेटन्कार,
सेक्रेटरी, गवर्मेण्ट हिन्द, फ़ॉरिन डिपार्टमेण्ट.

शेष संग्रह नम्बर १.

हरवेनजीके खुरेपर शिवालयमेंकी प्रशस्ति.

श्रीमहागणपतयेनमः ॥ श्रीमहादेवायनमः श्रीएकलिंगेश्वरोजयति.
अथ जोशी हरिवंशकारित श्रीसदाशिवालयप्रशस्तिर्लिख्यते.

तत्रादौ मंगलाचरणं नृपवंशवर्णनं च ॥ श्री कंठः कंठतटी विलुठन्नागाधिपमानात् हारावलिपरिवीतो गिरिजानुगतः स वः पायात् ॥ १ ॥ यत्राभवन् भूपतयो विशिष्टा मनुप्रणीतोत्तमधर्मनिष्ठाः ॥ पराक्रमाक्रांतविपक्षशिष्टाः सोयं जयत्युष्णकरस्यवंशः ॥ २ ॥ पुरंदरपुरोपमोदयपुरस्य निर्माणकृत्तथोदयसरस्वतः समितितर्जितक्षोणिपः ॥ पुरंदरसमः क्षितावुदयसिंहवर्मा भवत्तदन्वयविभूषणं बहुलबाहुवीर्यः सुधीः ॥ ३ ॥ प्रतापसंतापितशत्रुवर्गः प्रतापसिंहस्तनुजस्तदीयः ॥ रणे रिपून्राणयतीति सिद्धपदंदधत् सार्थकमाविरासीत् ॥ ४ ॥ ततोमरसमो जज्ञे मरसिंहनरेश्वरः कर्णप्रतिभटः कर्णसिंहराणस्ततोभवत् ॥ ५ ॥ जगत्सिंहनृपस्तस्माद्राजसिंहस्ततः परं जयसिंहस्ततोजातोमरसिंहस्तु तत्सुतः ॥ ६ ॥ संग्रामसिंहनरपो भवत्संग्राम कोविदः ॥ तस्य पुत्रोमहाराण जगत्सिंहोधरातलं ॥ ७ ॥ प्रत्यर्थिदर्पदलनोदग्रजाग्रद्भुजार्गलः ॥ प्रसन्नो निजधर्मस्थः प्रशास्ति महितः सतां ॥ ९ ॥ सद्वृत्तः स्वप्रकाशप्रचयपरिसरव्याप्तविश्वावकाशो रंध्राभावेपिभूयः श्रुतिविषयवरोदिग्वधूर्भूषयंश्च ॥ एकोनेकाभिलापप्रवितरणपटुः सद्गुणः कोपि भास्वन्सद्वंशोन्मुक्तमुक्तामणिरिव जयति श्रीजगत्सिंहभूपः ॥ १० ॥ अथ हरिवंशवंशवर्णनं ॥ स्वामिमयूरत्रस्ते शेषे नासापुटं विशति चीत्कुर्वन्धुतमूर्द्धा जयति गणेशः सतांडवे शंभोः ॥ ११ ॥ अरुणशरीर निचोल सृग्भूषा कापिजगदादौ ॥ सहपुरुषेण शयाना सिंधौवालैवकेवलं जयति ॥ १२ ॥ यः पूर्वमंभोधिमयेत्र विश्वे शेषे पुराणः पुरुषोधिशेते ॥ तन्नाभिपद्मोदरसंचरिष्णुश्चतुर्मुखः केवलमाविरासीत् ॥ १३ ॥ तेनांबरोक्त्या नियमास्थितेन ज्योतिः परंचिंतयताथ किंचित् ॥ नासापुटन्यस्तसुनिश्चलाशो तेपेतपो दुश्चरमात्मनैव ॥ १४ ॥ प्रसादमासाद्य सदेवतायाः ससर्ज विश्वं कमलासनोथ ॥ विप्रानथ क्षत्र मथोविशोथ शूद्रांस्तथा न्यानपि जंतुसंघान् ॥ १५ ॥ विप्रेषु सप्तर्षि

गणान् विधाय सप्तर्षिषु प्राग्र्यमथोचकार ॥ सकश्यपंकश्यपतोथविश्व जगद्ग-

त्सृटु रुदेन्मुदैव ॥ १६ ॥ शनावड़ास्तेन जरासुसृष्टा: प्रमत्तदंडव्यसनेतिचंडा: ॥ धर्मार्थगोपायननिष्ठचित्ता: परोपकारैकविसारिवित्ता: ॥ १७ ॥ रेवा वदातश्चरितै: सुरेज्यो भुवंसमुत्तीर्ण इव स्वय य: ॥ शिवार्चनव्यग्रकर: सरेवादासद्विजन्मा जगती तले भूत् ॥ १८ ॥ ततस्तनूज: समुदैत्सताराचंदाभिध: क्षोणितलप्रसिद्ध: ॥ तारासुचंद्र: किमयं प्रजासु य: कांतिभिर्भ्रांतिभरं व्यधत्त ॥ १९ ॥ तदौ रसोरावनगाधिराजाद्वाप्तसर्वप्रभुशक्तिरत्र ॥ गुणैकभूर्भूमिसुराग्रगण्योधिकर्धि रास्ते हरिवंशशर्मा ॥ २० ॥ यदाज्ञया सिंधुरपिस्वसीमां मुमोच विभ्यन्न खिलास्त्रवेत्ता ॥ सजामदग्न्यो जगतीतलेस्मिन्मन्ये विमूर्तिर्हरिवंशवेष: ॥ २१ ॥ विलासवाटीविलसस्ववापीलसत्पुरस्त्रीजनकौतुकानि ॥ निरीक्ष्य हठेन महेश्वरेण विहाय कैलासमवासि यत्र ॥ २२ ॥ पीयूशवापीरुचिर: स्वरुच्या स्फुरत्स्ववाटीनिकटेतिरम्य: ॥ महेश्वरस्यातिमहान्निवेशोव्यधायि येना चलसानुतुंग: ॥ २३ ॥ गिरिवरतनयासुत: प्रहृष्टो जगति निरीक्ष्यविलास वापिकाया: ॥ उपवनतरु राजि रंजितायाश्छविमधिकां सशिवोपि यत्र तस्थौ ॥ २४ ॥ शिवसौध: शिवावापी वाटिका हरिमंदिरं ॥ अकारि हरिवंशेन चतुर्भद्रं चतुष्ट्य- थे ॥ २५ ॥ व्योमांकमुनिभूसंख्ये वर्षे मासि च माधवे ॥ दले सिते त्रयो दश्यां तिथौच भृगुवासरे ॥ २६ ॥ जगतीशे जगत्सिंहे महीं शासति सद्गुणे ॥ यथोक्तविधिना चक्रे प्रतिष्ठां भूरिदक्षिणां ॥ २७ ॥ हरिवंशेश्वरस्यात्र हरि- वंशोमुदान्वित: ॥ वापीं वाटिकया युक्तां शिवायचसमर्पयत् ॥ २८ ॥ श्रीरूप भट्टजनुपा कविराड्वंदितांघ्रिणा रामकृष्णेन रचिता प्रशस्ति रियमुत्तमा ॥ २९ ॥ सूत्रधारवरेण्येनापीतविद्येन शिल्पिना ॥ संभूय चारुशीलेन विश्रुतेनेंद्रभानुना ॥ ३० ॥ श्रीरस्तु ॥ शुभमस्तु ॥ संवत् १७९० वर्षे वैशाख शुद १३ दिन राणा श्री जगत्सिंह जी विजयराज्ये शनाचड़ जाति जोशी हरिवंश ताराचंदोत श्री हरि वंशेश्वरजीरी तथा हरिमंदिररी प्रतिष्ठा कीधी ने बाड़ी बावड़ी सुधी तयार कराये ने देवरे चढ़ाई.

शेष संग्रह, नम्बर २.

गोवर्द्धन विलासमें मानजी धायभाईके कुंडकी प्रशस्ति.

श्री महा गणपतये नम: ॥ श्रीएकलिंगजी प्रसादात् अथ धात्रेय भ्रातृ मानजि- त्कारापितकुंड प्रशस्तिर्लिख्यते ॥ उच्चैरुद्दंडशुंडाभ्रमणभवभयत्रस्तसिंदूरदैत्यग्रास-

व्यासंगजाग्रंनिजभुजभुजगभ्राजमानः प्रगर्जन् हृष्यत्स्वर्वासिहस्तच्युतसुर-कुसुमामोदमाद्यद्द्विरेफभ्रांतिभ्राजत्कपोलाद्गलितमदजल : पातुव : श्रीगणेश : ॥ १ ॥ अथार्त्तिमद्वीक्ष्य जगत्समस्तं कलौ हरि : स्वेन कृतावदानः ॥ रिरक्षिपुर्लोकमगाधसत्त्वोदेवोभवद्गूजरवंश देव : ॥ २ ॥ गूरेपधातुस्तु घनांधकार-वाचीति सर्वागमसिद्धमेव ॥ जर्ज्जर्त्तितं स्वप्रभयानितांत ततोजनैर्गूजर इत्यभाणि ॥ ३ ॥ स्वधर्मनिष्ठः स्वकुलैकशिष्टः श्रेष्ठः समस्तार्यजनस्य हृष्ट : ॥ मान्यो वदान्यो जगदेकधन्यो भंभाभिधस्तत्रवभूव वित्त : ॥ ३ ॥ नाथाभिधो गूजरवंशनाथ : सुतस्तदीयोभवदद्वितीय : ॥ अनाथवंधुर्गुणसंघसिंधुर्धरातले धन्यतम : सदैव ॥ ४ ॥ तेज : समूह : किमु मूर्तएवं व्यतर्कि लोकैर्यमुदीक्ष्य दूरात् ॥ सभूतले भूरिगुणोतिभव्यस्तेजाभिधानोजनि तत्तनूज : ॥ ५ ॥ सुतस्तत : केशवनिष्ठचित्त : क्षितावभूत् केशवदाससंज्ञ : ॥ सदा सुवेप: श्रितभूमिदेश : स्फुरत्सुकेश : किमसावपीशः ॥ ६ ॥ भीलाभिधा भूमि तलप्रसिद्धा धात्री स्वयं चंद्रकुमारिकाया : ॥ गुणैकभूमि : सुकृतैकलभ्या यस्याभवद्योपिदिलेव मूर्त्ता ॥ ७ ॥ तस्यामुदार : श्रुतशास्त्रसार : परोपकारव्रतधार उच्चै : ॥ धनाभिधानोगिरिशैकतान : सन्मानदोमान-जिदास पुत्र : ॥ ८ ॥ यद्दानमाप्यार्थिमधुव्रतौघाभवंति पुष्टाः सहसैवतुष्टा : ॥ समुल्लसद्दंतरुचि : सनानो (?) महेभतां क्षोणितले बिभर्ति ॥ ९ ॥ स्वादिष्टपानीय पिपासुभिः सोनाहायि देवैरपिदत्तदृग्भि : ॥ सुधासमांभ : परिपूर्णमध्य : कुंड : कृतोयेन महानखंड : ॥ १० ॥ स्वादूदकैर्य : परिपूर्णमध्य : स्वादूदकं सिंधुमपि व्य जैपीत् ॥ समानकुंड : सुमहानखंडो गणं सुराणां स्पृहयत्यजस्रं ॥ ११ ॥ पंचांक-सप्तैकमितेथ वर्षे शुक्रावदातछदविष्णुघस्रे ॥ तत्र प्रतिष्ठां निगमोपदिष्टामचीक-रन्मानजिदत्युदार : ॥ १२ ॥ सराजलोकस्तदवेक्षणेच्छुर्निमंत्रितो यत्र जगज्जने-श : ॥ समाययौवीरवरैरनेकै: सदा मुदा वंदितपादपीठ : ॥ १३ ॥ सभोजनै : पड्रसवद्भिरुच्चैर्विभूपणैर्नैकविधैर्दुकूलै : ॥ उपायनैरश्वगजोपयुक्तै : संमानितो-भूदतिसंप्रहृष्ट : ॥ १४ ॥ दानैरनेकैरतिदक्षिणाढ्यैर्द्विजातयो यत्र निवृत्तदुखा : ॥ फुल्लाननांभोजरुचोतिहृष्टा : कल्पद्रुमानप्यहसन्नजस्रं ॥ १५ ॥ अदभ्रदान स्रवदभ्रपुष्पप्रवाहमीक्ष्यार्थिसमुच्चयो त्र ॥ हतस्वदारिद्रमलो मलोथ लोलोप्य-लोलोजनि लब्धकाम : ॥ १६ ॥ नखाभ्रमालागलदंवुबिंदु विभूपणालिट् तडि-दादिनांतं ॥ प्रहर्पितोन्मत्तमयूरभिक्षुर्वृष्ट्येवयत्पाणिरुपाचचार ॥ १७ ॥ असौ हयानुग्ररयान्मतंगान्मदच्युत : स्यंदनजातमत्र धनानि धान्या

नि च याचकेभ्यो ददौ दयावानतिकीर्तिकामः ॥ १८ ॥ ऋग्वेदिनः समपठन्त ऋचो यजूंषि तद्वेदिनः कृतकरस्वरचारु तत्र ॥ छंदांसि सामकुशलाः प्रतत (?) स्वकंठमाथर्वणा उपनिषन्निचयं च सम्यक् ॥ १९ ॥ वादित्रध्वनिमिश्रितो जनरवै र्वंदिस्वनै र्बृंहितै र्हेषाभिः पुरसुंदरीजनमुखोद्गीतैश्च गीतैः शुभैः ॥ दिग्व्यापी दिविषत्सभासु कथयन् कुंडप्रतिष्ठोत्सवं स्वाध्यायाध्ययनध्वनिः प्रविततो ब्रह्मांडमापूरयत् ॥ २० ॥ आघ्राय यत्रातिहुताज्यगंधं तदैव सर्वे त्रिदशा जगत्सु ॥ वीताखिलोत्पत्तिविनाशदुःखाः स्वसौमनस्यं प्रथयांबभूवुः ॥ २१ ॥ विकचपुष्पभरावनतैस्ततैः प्रचुरदध्वगसौख्यकरैः परैः ॥ तरुवरै र्जितनंदनसंपदं व्यथितचित्तहरामथ वाटिकां ॥ २२ ॥ सम्मानिता मानजिता समस्ता सभाजितस्तत्र सुरा नराश्च ॥ जयस्वनैस्तुष्टहृदोऽमुमुच्चैरवाकिरन् पुष्पभरैरतीव ॥ २३ ॥ इति स्वदानस्रवदंवुधारामरप्रसादप्लवमानकीर्तिः ॥ मानो महीशागमनप्रहृष्टस्तत्र प्रतिष्ठोत्सवमभ्यकार्षीत् ॥ २४ ॥ श्रीमज्जगत्सिंहनृपप्रसादादवाप्तसर्वाभिमतः प्रहृष्टः ॥ मानः समाप्याखिलकृत्यमित्थं शुभे मुहूर्ते विशदात्मगेहं ॥ २५ ॥ श्रीरूपभट्टद्विजराजजेन श्रीरामकृष्णेन वुधेन वुध्या ॥ इलाविलासाहितचेतसेयं मानप्रशस्ति र्निरमायि रम्या ॥ २६ ॥ सुरूपरूपद्विजराजजन्मा वुधो भवत्येव न तत्र चित्रं ॥ इलाविलासोद्धुरचित्तवृत्ति र्नक्षत्रभूः क्षत्रकुलत्रयोपि ॥ २७ ॥ भूवियद्भूमिभूताब्धिसंख्य स्तत्र धनव्ययः ॥ खातमारभ्य संजज्ञे प्रतिष्ठावधिको खिलः ॥ २८ ॥ संवत् १७९५ वर्षे ज्येष्ठमासे शुक्लपक्षे ११ दिने गूजर ज्ञाति वास उदयपुर झांझाजी सुत नाथाजी तत्पुत्र तेजाजी तत्पुत्र केशवदासजी तत्पुत्र चिरंजीवी धायभाईजी श्री मानजी कुंड वाड़ी तथा सारी जायगा वंधाई कुंडरी खुदाई मंडाई कुमठाणो तथा व्याव वृद्धरा समस्त रुपीया ४५१०१ अखरे रुपीया पैंतालीस हजार एक सौ एक लगाया संवत् १७९९ वर्षे चैत्रमासे शुक्ल पक्षे १ दिने गुरु वासरे महाराजा धिराज महाराणाश्रीजगत्सिंहजीविजय राज्ये मेदपाटज्ञाती भटरूपजी तत्पुत्र भटरामकृष्ण या प्रशस्ति वणाई छै.

शेषसंग्रह नम्बर ३.

(उदयपुरमें दिल्ली दर्वाज़ेके पास, वाईजीराजके कुंडके दर्वाज़ेके साम्हने पश्चिम दिशामें रास्तेपर पंचोलियोंके मन्दिरकी प्रशस्ति.)

॥ श्रीगणेशाय नमः॥ श्रीगुरुभ्यो नमः॥ श्री एकलिंगप्रसादात्ः॥ योजेतुं त्रिपुरं

हरेण हरिणा दैत्याननेकान्पुनः पार्वत्या माहिषासुरप्रशमने ध्यातः पुरा सिद्धये ॥ देवैरिंद्रपुरोगमैरनुयुगं संसेव्यते सर्वदा विघ्नध्वांतविदारणैकतरणिः पायात्स नागाननः ॥ १ ॥ श्रीदैकलिंगेश्वरसन्निधाने क्षेत्रे शुभे नागहृदे प्रसिद्धे ॥ शैलोपरिस्थाभवभीतिहर्त्री क्षेमंकरी क्षेमकरी सदास्तु ॥ २ ॥ दग्धो येन मनोभवस्त्रिजगतां जेता ललाटेक्षणप्रोद्भूतानलतेजसा शलभवद्दुःखौघविध्वंसनः ॥ बालेंदुद्युतिदीप्तपिंगलजटाजूटोहिभूषान्वितो देवः शैलसुतायुतो भवतु वः सर्वार्थसिद्ध्यै शिवः ॥ ३ ॥ यस्योदयेस्याज्जगतः प्रबोधः क्रियाः समस्ताः श्रुतिभिः प्रयुक्ताः ॥ ब्रह्मादिभिर्वंदितपादपद्मो रविस्त्रिकालं स धुनातु मोहं ॥ ४ ॥ योरूपैः किल मत्स्यकच्छपमुखै ब्रह्मादिभिः प्रार्थितः प्रादुर्भूय भरंभुवोदनुसुतैर्जातं जहाराखिलं ॥ यं ध्यायंति सदैव योगिनिवहा हृत्पंकजे संस्थितं सो यं वो वितनोतु वांछितफलं त्रैलोक्यनाथो हरिः ॥ ५ ॥ इति मंगलाचरणं.

यो धर्मराजस्य पुरो महामतिः शुभाशुभं कर्म नृणां सदैव हि ॥ सुगुप्तमप्यालिखतीश्वराज्ञया स चित्रगुप्तः किलविश्रुतोऽभवत् ॥ ६ ॥ पुरातपस्यतः कायाद्ब्रह्मणः समभूदसौ ॥ तस्मात्कायस्थसंज्ञां वै स लेभे लोकविश्रुतां ॥ ७ ॥ द्वादशासन्सुतास्तस्य कायस्था इति विश्रुताः॥ तेष्वेकोह्यभवत् ख्यातो भट्टनागरसंज्ञकः ॥ ८ ॥ भट्टनागरवंशे ये जाताः कायस्थसत्तमाः ॥ ते भवन् भुवि विख्याताः सर्वे वै भट्ट नागराः ॥ ९ ॥ भट्टनागरवंशेपि विविधागोत्रजातयः ॥ क्षेत्रेशा गोत्रदेव्यश्च संबभूवुः पृथक् पृथक् ॥ १० ॥ अथ देवजिद्वंशवर्णनम् ॥ गोत्रे वै कश्यपाख्ये प्रचुरतरगढीवालसंज्ञे प्रसिद्धे यत्र क्षेमंकरीति त्रिजगति महिता पूज्यते गोत्रदेवी ॥ तत्रासीद्वंशधुर्यः सकलगुणयुतो रत्नजिद्धर्मबुद्धिस्तस्या सन् सूनवस्तु त्रय इह विदिता राजकार्येषु दक्षाः ॥ ११ ॥ टीलाख्यश्चैव सिंहाख्यो वेणीसंज्ञ स्तथापरः ॥ त्रयो पि क्षितिपालानां मान्या ह्यासन् गुणैर्युताः ॥ १२ ॥ टीलाभिधस्याथ गुणैकधामा सोमाभिधः पुत्रवरो बभूव ॥ तस्याभवद्भूपकुलाभिमान्यः स भोगिदासस्तनयो वरिष्ठः ॥ १३ ॥ भोगीदासस्य पुत्रस्तु पुंजराजाह्वयो भवत् ॥ तस्यासीत्सूर्यमल्लाख्यः सुतो वंशधुरंधरः ॥ १४ ॥ श्रीसूर्यमल्लस्य कुले प्रसिद्धः सुतोऽ भवद्देव जिदाख्यया च ॥ स वै जगत्सिंहमहीश्वरस्य विश्वासपात्रं परमं बभूव ॥ १५॥ श्रीमत्संग्रामसिंहक्षितिपतितनयः श्रीजगत्सिंहभूतिं चक्रे मात्यः सचिव इव सदा देवजित्संज्ञके स्मिन् ॥ सो पि प्रीतिं क्षितीशादतुलमतिरवाप्यातुलां धर्मनिष्ठ श्चक्रे सर्वो पकारं खलु वचनमनः कर्मभिः प्रीतचेताः ॥ १६ ॥ कृत्वा पराधं किल भूपते वै भयेन यस्तं शरणं जगाम ॥ दत्वाभयं देवजिदाह्वयस्तं ररक्ष भूपालवराभि

मान्यः ॥ १७ ॥ स दामोदरदासस्य पौत्रीं भूपालमंत्रिणः ॥ उपयेमे शुभे लग्ने रूपचंद्रसुतां वरां ॥ १८ ॥ सारूपचंद्रस्य सुता गुणाढ्या नाम्ना वसंताख्य कुमारिकासीत् ॥ भक्ता स्वपत्युर्नितरां बभूव शचीव शक्रस्य रमेव विष्णोः ॥ १९ ॥ तस्याः सुता सर्वगुणैरुपेता नाम्ना गुलाबाख्य कुमारिकासीत् ॥ पिता ददौ तां शिवदासनाम्ने विहारिमंत्रीदुहितुः सुताय ॥ २० ॥ भूयस्ततोन्यां नृपवाजिशालाधिकारिणः श्यामलदास नाम्नः ॥ सुतां शुभां सूर्यकुमारिकाख्यामुदारबुद्धिर्विधिनोपयेमे ॥ २१ ॥ तस्यामायुष्मंतं युगलकिशोरेति नामतः पुत्रं ॥ लेभे देवजिदाख्यः प्रद्युम्नं कृष्ण इव मनोज्ञं ॥ २२ ॥ ज्ञात्वा देवजिदाह्वयः शुभमतिः संसारमल्पायुषं चित्तं चंचलमध्रुवं ध्रुवमतिर्धृत्वा सुधर्मे धियं ॥ निर्धार्याखिलधर्मजातमसकृत्संसारपारप्रदं प्रासादौ किल वापिकां शुभजलां कर्तुं मनः संदधे ॥ २३ ॥ आहूय शिल्पिप्रवरान् शुभेन्हि सत्कृत्य वस्त्रादिभिरेकवित्तः ॥ पुरोपकंठे स चतुर्भुजस्य प्रासादमुच्चैस्तुहरेश्चकार ॥ २४ ॥ शिवालयं तथैवैकं हरेः प्रासादपृष्ठतः ॥ मनोज्ञं कारयामास शिल्पिभिः शास्त्रकोविदैः ॥ २५ ॥ हरेः प्रासादतश्चैकां नैर्ऋत्यां दिशि शोभनां ॥ स वापीं कारयामास शीतामलजलामपि ॥ २६ ॥ वाटिकां देवयोश्चैव पूजार्थं सुमनोयुतां ॥ मध्ये प्रासादयोश्चक्रे नानाद्रुममनोहरां ॥ २७ ॥ इत्यादि शोभनस्यात् ॥ प्रासादौ वाटिकां वापीं कारयित्वा शुभे हनि ॥ देवजित्कारयामास प्रतिष्ठां द्विजपुंगवैः ॥ २८ ॥ विनायकस्थापनवासरं हि प्रारभ्य सर्वः किल जातिवर्गः ॥ चकार भोज्यैर्विविधैः सदैव तत्रैव सद्भोजनमाप्रतिष्ठं ॥ २९ ॥ मंडपं लक्षणैर्युक्तं कुंडैः पंचभिरन्वितं ॥ प्रासादाद्दिशि पूर्वस्यां कारयामास शिल्पिभिः ॥ ३० ॥ तथान्यं मंडपं चैव विष्णोः प्रासादपृष्ठतः ॥ वाप्याः शिवालयस्यापि प्रतिष्ठार्थं समातनोत् ॥ ३१ ॥ शिल्पिनौ शास्त्रवेत्तारौ तत्रास्तां कर्मकारकौ ॥ इंद्रभानुः सुमतिमान् रूपजित्संज्ञकस्तथा ॥ ३२ ॥ संभृत्याखिलसंभारान् दैवज्ञैः कथिते दिने ॥ ब्रह्माचार्यमुखान् वव्रे देवजिद्द्विजसत्तमान् ॥ ३३ ॥ ब्रह्मातुतत्रामृतरायसंज्ञो गुरुः कुलस्यास्य बभूव विप्रः ॥ तथा महानंदइति प्रसिद्धो ह्याचार्य आसीत्सुविधानदक्षः ॥ ३४ ॥ तत्राचार्याज्ञया तेन वृताये ऋत्विजो द्विजाः ॥ चक्रुस्ते मंडपे सर्वे पारायणजपादिकं ॥ ३५ ॥ पारायणं वेदचतुष्टयस्य केचित्तथा सूक्तजपं प्रचक्रुः ॥ स्तोत्राण्यनेकानि तथैव केचिद् रुद्रस्य सूक्तानि तथा परेच ॥ ३६ ॥ पठतां तत्र विप्राणां वेदघोषो महानभूत् ॥ तेन शब्देन खं भूमिं दिशश्चापि विनेदिरे ॥ ३७ ॥ कृत्वा पारायणं विप्रा स्तथा मंत्रजपादिकं ॥ सर्वे जपदशांशेन जुहुवुस्ते पृथक् पृथक् ॥ ३८ ॥ सकारयित्वा

हवनं द्विजैस्तैः संमोदितो मंडपमाजगाम ॥ पूर्णाहुतिं कर्तुमतिप्रतीतः पत्नीद्वया-न्वो निजबंधुयुक्तः ॥ ३९ ॥ पूर्णाहुतिं चापि विधाय विप्रैर्युक्तः पठद्भिः किल वेद-मंत्रान् ॥ प्रासादमध्ये स चतुर्भुजस्य मूर्तिं हरेस्थापितवांश्च शंभोः ॥ ४० ॥ प्रासा-दस्य महोत्सवं किल तदा द्रष्टुं समभ्यागताः सर्वे नागरिका जना मुमुदिरे कृत्वा हरे-र्दर्शनं ॥ तत्रानंदयुतः स देवजिदपि प्रीतो न्वितो बांधवै विप्रैश्चापि चकार वेष्टनमथो सूत्रेण देवालये ॥ ४१ ॥ तस्य स्वसृसुतापतिः शुभमतिः कल्याणदासाभिधः काशीनाथकिशोरसंज्ञक सुतद्वंद्वेन युक्तो थ वै ॥ जामाता शिवदाससंज्ञक इति ख्यातो न्वितः सद्गुणैरासन्सूत्रसुवेष्ठनस्य समये सर्वे पुरो गामिनः ॥ ४२ ॥ दानान्य-नेकानि तदा द्विजेभ्यो ददौ ततस्तत्र महोत्सवे सः ॥ गोभूहिरण्याश्वगजादिकानि स देवजिद्विष्णुमहेशतुष्ट्यै ॥ ४३ ॥ दीयतां हूयतां चैव भुज्यतां चेति सद्ध्वनिः ॥ समुद्भूतस्तदा तत्र व्याप्तः सर्वदिगंतरं ॥ ४४ ॥ महोत्सवं तं प्रविधाय सम्यक् संतोष्य विप्रान् बहुदक्षिणाभिः ॥ ज्ञातीन्समस्तानथ विप्रवर्यान् संभोजयामास विचित्रभोज्यैः ॥ ४५ ॥ प्रासादस्योत्सवे वै नृपतिरपि जगत्सिंह नामा सुधामा वैरिव्रातस्यजेता निजजनसहितस्तद्गृहेष्वाजगाम ॥ तत्रस्थित्वा महार्हाभरणसुवसनै देवजित्पूज्यमानो नानाभोज्यैः सुधाभैर्विविधरसयुतैर्भोज-नं वै चकार ॥ ४६ ॥ तस्मिन्देवमहोत्सवे किल जगत्सिंहं महीनायकं ह्यायातं निज-बंधुभृत्यसहितं शुद्धांतसस्यन्वितं ॥ सद्वस्त्रैस्तपनीयतंतुरचितैरन्यै विचित्रैः शुभैः संपूज्यातुलमोदमानमनसं चक्रे स देवाभिधः ॥ ४७ ॥ सद्वस्त्रैः समलं कृतं नरपतिं भोज्यैरनेकैः पुनः संभोज्याखिलबांधवानुगयुतं भक्त्या युतोदेवजित् ॥ धृत्वानन्नयना-ग्रतो हयवरं ह्युच्चैश्रवः सन्निभं द्रव्यं पंचसहस्रसंख्यकमपि प्रादात्प्रतीतं नृपं ॥ ४८ ॥ भोजयित्वा तु संपूज्य धनादिभिरनन्यधीः॥ जगत्सिंहं महीपालं चक्रेसंप्री तमानसं ॥ ४९ ॥ द्वयं प्रासादयोरेवं कृत्वा देवजिदाह्वयः॥ तयोर्हरिहरौस्थाप्य बभूवा-नंदसंयुतः ॥ ५० ॥ प्रासाददक्षाग्रिमभागयोश्च चक्रेशुभानट्टपरंपरां च ॥ पश्चात्तथैकामपि धर्म्मशालां स कारयामास हरेस्तु तुष्ट्यै ॥ ५१ ॥ शालाः शुभा स्तत्र सकारयित्वा रम्यां तथैवाट्टपरंपरांच ॥ संलेखयित्वा किल ताम्रपट्टे समर्पयद्विष्णु-महेशतुष्ट्यै ॥ ५२ ॥ तथैवदेवालयसन्निधाने भूमिं गृहीत्वा च नृपाज्ञयैव ॥ द्रव्येण तत्रापि गृहाणि दत्वा संवासयामास स जातिवर्गं ॥ ५३ ॥ खेटाभिधे भूमिपतिप्रदत्ते ग्रामे निजे सीरयुगोन्मितां गां ॥ संलेखयित्वा किल ताम्रपट्टे ददौ कृपारामधरासुराय ॥ ५४ ॥ कृत्वा प्रासादमुच्चैस्तरमतिविशदं कीर्तिपुंजं ययोर्व्यांतस्मिन्देवाधिदेवं सुरनरनमितं स्थापयित्वा रमेशं ॥ अन्यस्मिन्वै मृडानीपतिमतिमुदितः प्राप्तसर्वा

भिलापोरेमे सर्वैरुपेतः सुतयुवतिजनैर्देवजिद्धर्मबुद्धिः ॥ ५५ ॥ श्रीमद्विक्रमभूपराज्यसमयादष्टादशानां शते याते वर्षगणे तथैव शुभदे मास्युत्तमे माधवे ॥ पक्षे चैव सिते तिथावपि तथाष्टम्यां गुरोर्वासरे चक्रे देवजिदाह्वयः सुविधिना देवप्रतिष्ठोत्सवं ॥ ५६ ॥ श्रीमद्देवजिदाह्वयाऽभिरचितप्रासादयो रुत्तमा नाथूरामधरासुरेण रचिता येयं प्रशस्तिः शुभा तांदृष्ट्वा मुदमाप्नुवंतु विबुधा ये वै जनाः सज्जना वंशो देवजितः सदैव परमां दृद्धिं समायात्वयं ॥ ५७ ॥ श्रीजगत्सिंह भूपस्य प्रीतिपात्रं महामतिं ॥ सुपुत्रो देवजिज्जीयाच्चिरं सर्वसुखान्वितः ॥ ५८ ॥ कायस्थोत्तमदेवजिद्विरचितप्रासादयुग्मस्थितौ विप्रैर्वेदविधानतः सुविधिना नित्यं समभ्यर्चितौ ॥ देवावब्धिसुताद्रिजाप्रियतमौ सर्वार्थसिद्धिप्रदौ श्रेयो वः कुरुतामुभौ हरिहरौ देवारिदर्पापहौ ॥ ५९ ॥ इतिश्री कायस्थ वंशावतंसदेवजित्कारितप्रासादप्रशस्तिः संपूर्णा-श्वेटपागोत्रजातेन सूत्रधारेणधीमता अमरारमेनरचितः प्रासादः त्वष्टसूनुना ॥ १ ॥ संवत् १८०० वर्षे वैशाख शुदि ८ गुरौ देवरारी प्रतिष्ठा कीधी.
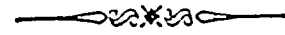
शेषसंग्रह नम्बर ४.

(मांडलगढ़की भीतरी तलहटीके बाज़ारमें, महतंजीके मन्दिरमें जातेहुए दाईं तरफ़की सुरह.)
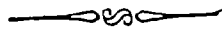
सिद्ध श्री दिवाणजी आदेसातु प्रत दुवे महता देवीचंदजी कस वा मांडलगढ़ तलेटीरा समसत पंचा कस अपरंच थे जमापातर राषेर गामरी आवादान करज्यो, आसाम्या वारणे गई हे ज्याने पाछी ल्यावज्यो, आदका देवालको अेक आसामीको हात पकड डंड करणो नहीं, अपदत्त परदत्त जे पालंती वसुंधरा तेनरा राजराजेंद्र जवलग चंद्र दिवाकरा, अपदत्त परदत्तं येहरंति वसुंधरा तेनरा नरकं यांति जवलग चंद्र दिवाकरा, लिखतां गोड सोलाल संभूरा सवत् १८०२ रा काती सुद ४ रवे.

शेषसंग्रह नम्बर ५.

(भट्याणीजीकी सरायके मन्दिरकी सुरह.)

श्रीगणेशाय नमः श्री एकलिंगजी प्रसादात् सिद्ध श्री तावापत्र प्रमाणे सुरे श्री मन्महीमहेंद्र महाराजा धिराज महाराणाजी श्री जगत्सिंहजी आदेशात् ठाकुरजी श्री द्वारिकानाथजीरो देवरो राणीजी भट्याणीजी करायो जींपर सादू तथा सेवग रहेगा जीरा भाता सारू धरती हल १ एकरी आगे पेमारी सराय मांहेथी देवाणी थी, तींरे बदले भट्याणीजीरी सराय माहेथी धरती वीगा ३८॥ साडा अडतीस मध्ये पीवल वीगा १८ अठारे माल मंगरारी वीगा २०॥ साडा वीस देवाणी पेमारी सरायरी धरती हल १ री रो हासल भट्याणीजीरी सराय मेलेसी पेली तावापत्र संवत् १८०२ रा काती विद ८ सोमेरो साह पुसालरे भंडार सूंप्यो लागत विलगत घर ठाम सुदी उदक आघाट करे श्री रामार्पण कीधो, स्वदत्त परदत्तं वा ये हरंति वसुंधरा षष्ठि वर्ष सहस्राणि विष्ठायां जायते क्रमी प्रत दुवे पंचोली हरकिसन लिषितं पंचोली गुलावराय कान्होत संवत् १८०७ वर्षे असाड् विद ४ शने.

रियासत कोटाकी प्रशस्तियां,

इंन्डिअन एण्टिक्केरी जिल्द १४ वीं प्रष्ठ ४५–४६ से.

शेषसंग्रह नम्बर – ६.

ॐनमो रत्नत्रयाय॥ जयन्ति वादाः सुगतस्य निर्म्मलाः समस्तसन्देहनिरासभासुराः॥ कुतर्क्कसम्पातनिपातहेतवो युगान्तवाता इव विश्वसन्ततेः॥ १॥ योरूपवानपि विभर्ति सदैव रूपमेकोप्यनेक इव भाति च यो निकामं॥ आरादगात्परधियः प्रतिमर्त्यवेद्यो योनिर्ज्जितारिरजितश्च जिनः सवोव्यात्॥ २ ॥ भिनित्ति योनृणाम्मोहं तमो वेश्मनि दीपवत्॥ सोव्याद्वः सौगतो धर्म्मो भक्तमुक्तिफलप्रदः॥ ३॥ आर्यसंघस्य विमलाः शरच्छशिजिताश्रियः जयन्ति जयिनः पादाः सुरासुरशिरोर्च्चिताः॥ ४॥ आसीदम्भोधिधीरः शशिधवलयशा विन्दुनागाभिधानस्तत्सूनुः पद्मनागो भवदसमगुणैर्भूपिताशेपवंशः॥ तस्याप्यानंदकारी करनिकरइवानुष्णरश्मेस्तनूजो जातः सामन्तचक्रप्रकटतरगुणः सर्व्वणागोजितारिः॥ ५॥ तस्याभूद्दयिता विशुद्धयशसः श्रीरित्युरः शायिनी कृष्णस्येव महोदया च शशिनो ज्योत्स्नेव विश्वम्भरा॥ गौरीवाद्विदशोसमा शमवतः प्रज्ञेव वातायिनो गम्भीरा यदि वा महोर्म्मिवलया वेलेव वेलाभृतः॥ ६॥ ताभ्यामभूद्गुणाम्भोधिर्व्वशीकृतमनोमलः॥ देवदत्तइतिख्यातः सामन्तः कृतिनांकृती॥ ७॥ येषान्नतिर्जिनगुरौ गुरुता गुणेषु संगोर्थिभिः सततदाननिवद्धगर्द्धैः॥ भीतिः प्रकाममघतो जगदेकशत्रो स्तेषामयं कृतविशेष-

गुणोन्ववाये ॥ ८ ॥ येषांभूतिरियं परेति न परैरालोक्यतेऽर्थार्थिभिर्येषाम्मुद्विभवः परः परमुदः स्वप्नेपि नाभूत्तनौ ॥ येषामात्महितोदयाय दयितं नासीद्गुणासादनं तेषामेष वशीशशाङ्कधवले जातः कुलाम्भोनिधौ ॥ ९ ॥ सम्पादितजनानन्दः समासादितसन्ततिः ॥ कल्पशाखीव जगतामेष भूतो गुणाकरः ॥ १० ॥ विश्वाश्वासविधौतृणीकृतसितज्योत्स्नोदयोदेहिनामन्तः शुद्धिविचारणे सुरगुरोरप्याहितात्पोदयः गांभीर्याकलनेनिकामकलितःक्षीरोदसारस्त्वयं ॥ यतन्नूनमहो गुणागुणितनु व्यासंगिनः संगताः ॥ ११ ॥ तावन्मानधनायशस्ततिभृतस्तावच्चतावद्बुधास्तावत्तायिसुतानुकारकरणास्तावत्कृपाम्भोधयः ॥ तावन्नचस्तपरोपकारतनवस्तावत्कृतज्ञाः परे यावन्नास्य गुणेक्षणे क्षणमपि प्राप्तावधानो जनः ॥ १२ ॥ यस्योद्वीक्ष्य गुणानशेषगुणिनामद्याप्यवज्ञात्मनि निर्व्वाणाखिलमानसन्ततिपतच्चेतोविकासा समा ॥ भानौ ध्वस्तसमस्तनैशतमसि स्वैरं करालीकृति प्रातर्येन कलावलोपि विगलच्छायः शशाङ्को न किम् ॥ १३ ॥ यस्यान्वयेप्यगुणजन्मनदृष्टपूर्वमासादिता न च गुणैर्गणनव्यवस्था ॥ याता मुहूर्तमपि नो कलिदोपलेशा स्सोयन्निरस्तसमतो भुवि कोप्यपूर्वः ॥ १४ ॥ यस्य दानमतिरक्षत दाना भापितान्यफलवन्ति न सन्ति ॥ प्राणदानविहितावधिसख्यं तस्य को गुणनिधेरिह तुल्यः ॥ १५ ॥ नाना सन्ति दिनानि सन्ति विविधा श्चन्द्रांशुशीता निशा स्सन्त्यन्याः शतशो बलाजितजगन्नारीसमस्ताश्रियः ॥ तन्नानन्दिजगत्त्रयेपि सुदिनं सा वा निशा साबला यज्जन्मन्यगमन्निमित्तपदवीमस्यापरैर्दुर्गमाम् ॥ १६ ॥ कोशवर्द्धनगिरेरनुपूर्व्वं सोयमुन्मिषितधीः सुगतस्य ॥ व्यस्तमारनिकरैकगरिम्णो मन्दिरं स्म विदधाति यथार्थम् ॥ १७ ॥ सुखान्यस्वन्तानि प्रकृतिचपलं जीवितमिदं स्त्रियाः प्राणप्रख्यास्ताडिदुदयकल्पाश्च विभवाः ॥ प्रियोदर्काश्चालं क्षणसुखकृतो दुःखबहुला विहारस्तेनायं भवविभवभीतेन रचितः ॥ १८ ॥ सान्द्रध्वानशरद्बलाकनिवहत्यक्तार्कबिम्बोज्वल संसाराङ्कुरसंगभगचतुरं यत्पुण्यमात्तम्मया ॥ जैनावासविधेरतोयमखिलो लोकत्रयानन्दनीं तेनारं सुगतश्रिय जितजगद्दोषांजनः प्राप्नुयात् ॥ १९ ॥ प्रशस्तिमेनामकरोज्जातः शाक्यकुलोदधौ ॥ जज्जकः कियदर्थांशनिवेशविहित स्थितिम् ॥ २० ॥ संवत्सराङ्क ७ (१) माघ शुदि ६ उत्कीर्णा चणकेन.

---

(१) इस लेखके अक्षर पुरानी लिपिके होनेके सबब संवत्का अंक पढ़नेमें शायद कोई गलती हुई हो, तो तअज्जुब नहीं. इंन्डिअन ऐंटिकेरीकी चौदहवीं जिल्दके ३५१ पृष्ठमें फ्लीट साहिबने इसकी बाबत एक नोट लिखा है; और संवत् वगैरहके हिन्दसोंकी अस्ल लिपि बतलाकर इस संवत्के अंकको ८७९ पढ़ा है.

शेषसंग्रह नम्बर- ७.

जर्नल ऑफ़ दि बॉम्बे ब्रैञ्च ऑफ़ दि रॉयल एशियाटिक सोसाइटी की

जिल्द १६ वीं पृष्ठ ३८२ से ३८६ तक.

ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः स्सकल संसार सागरोत्तारहेतवे॥ तमोगर्त्ताभिसंपातहस्ता लम्बायशम्भवे ॥ १ ॥

श्वेतद्वीपानुकाराः क्वचिदपरिमितैरिन्दुपादैः पतद्भिर्न्नित्यस्थैस्सान्धकाराः क्वचिदपि निभृतैः फणिपैर्भ्भोगभागैः सोष्माणो नेत्रभाभिः क्वचिदति शिशिराजन्हुकन्याजलौघैरित्थं भावैर्व्विरुद्धैरपि जनितमुदः पान्तु शम्भोर्ज्जटा वः ॥ २ ॥ भोगीन्द्रस्य फणामणिद्युतिमिलन्मौलीन्दुलोलांशवो नेत्राग्नेश्छुरितास्सधूम कपिशैर्ज्वालाशिखाग्रैः क्वचित् ॥ मुक्ताकारमरुन्नदीजलकणैराकीर्णशोभाः क्वचिच्चेत्थं शाश्वतभूषणव्यतिकराः शम्भोर्ज्जटाः पान्तु वः ॥ ३ ॥ स्थाणोर्व्वः पातु मूर्द्धना सरइव सततव्योमगंगाम्बुलोलस्फूर्ज्जद्भोगीन्द्रपंकश्लथविकटजटाजूटकल्हारहारी ॥ मन्दं यत्र स्फुरन्त्यो धवलनरशिरोवारिजन्मान्तरालस्पष्टः प्रोद्यन्मृणालांकुरनिकरइवाभान्ति मौलीन्दुभासः ॥ ४ ॥ नेत्रक्रोडप्रसक्तोज्वलदहनशिखापिंगभासां जटानां भारं संयम्य कृत्वा सममममृतकरोद्भासि मौलीन्दुविम्वं ॥ हस्ताभ्यामूर्द्धन मुद्यद्विशशिखिवदनग्रन्थिमातत्यनागं स्थाणुः प्रारब्धनृत्तो जगदवतु लयोत्कंम्पिपादांगुलीकः ॥ ५ ॥ चूड़ाचारुमणीन्दुमण्डितभुवः सद्भोगिनामाश्रयः पक्षच्छेदमयार्तिसंकटवतां रक्षाक्षमोभूभृतां ॥ दूराभ्यागतवाहिनीपरिकरो रत्नप्रकारोज्वलः श्रीमानित्थमुदारसागरसमो मौर्यान्वयो दृश्यते ॥ ६ ॥ दिङ्नागाइव जात्यसंभूतमुदो दानोज्वलैराननैर्व्विस्त्रम्भेण रमन्त्यभीतमनसा मानोद्धुरास्सर्व्वतः ॥ सद्वंशत्ववशप्रसिद्धयशसो यस्मिन्प्रसिद्धागुणैः श्लाघ्याभद्रतया च सत्वबहुला पक्षैस्ससंभूभृतः ॥ ७ ॥ इत्थं भवत्सु भूपेषु भुजन्त्सु सकलां महीं ॥ धवलात्मा नृपस्तत्र यशसा धवलोऽभवत् ॥ ८॥ कायादिप्रकटार्जितैरहर्ग्रहः स्वैरेव दोषैः सदा निर्व्वस्त्राः सततक्षुधः प्रतिदिनं स्पष्टीभवद्यातनाः ॥ रात्रौ संचरणा भृशं परगृहेष्वित्थं विजित्यारयो येनाद्यापि नरेन्द्रतां सुविपदो नीताः पिशाचा इव ॥ ९ ॥ कोप्राल्लूनमहेभकुम्भविगलन्मुक्ताफलालंकृतस्फीतास्त्रस्तुतिमण्डिता अपि मुहुर्येनोर्जितेन स्वयं ॥ उन्नाली रिव पंकजैः पुनरपि च्छिन्नैः शिरोभिर्द्विपां विक्रान्तेन विभूपिता रणभुवः त्यक्ता नरैः कातरैः ॥ १० ॥ इत्थं तस्य चिरन्तनो द्विजवरस्सन्नप्युपात्तायुधप्रीतिप्रेतनरेन्द्रसत्कृतिमुदः-पात्रं प्रसिद्धो गुणैः॥ यस्याद्यापि रणांगणे विलसितं संसूचयन्ति द्विषत्सुप्यच्छोणितमर्म्मरा रणभुवः प्रेतप्रयाः (?) प्रायशः ॥ ११ ॥ शब्दस्यार्थ इव प्रपादनपटोर्म्मार्ग्ग-

त्रयीसंज्ञितो धर्म्मस्सेव्य विशुद्धभावसरलो न्यायस्य मूलं सतः ॥ प्रामाण्यप्रगत — — — — — यस्साध्यस्य संसिद्धये तस्याभूदभिसंगतः प्रियसखः श्रीसंकुकाख्यो नृपः ॥ १२ ॥ देगिणीनाम तस्यासीद्धर्मपत्नी द्विजोद्भवा ॥ तस्यां तस्याभवद्वीरः सूनुः कृत-गुणादरः ॥ १३ ॥ यशस्वी रूपवांदाता श्रीमां शिवगणोनृपः ॥ शिवस्य नूनं सगणो येन तद्भक्ततां गतः ॥ १४ ॥ खड्गाघातदलत्तनुत्रविचटद्वन्हिस्फुलिंगोज्वलज्वालादग्धक-बन्धकण्ठकुहरप्रोन्मुक्तनादोल्वणे ॥ नाराचग्रथिताननाकुलखगप्रोद्धान्तरक्तासव-प्रीतप्रेतजने रणेरतधिया येनासकृच्चेष्टितं ॥ १५ ॥ ज्ञात्वा जन्मजरावियोगमरणक्लेशैर-शेषैश्चितं स्वार्त्थस्याप्ययमेव योग उचितो लोके प्रसिद्धः सतां ॥ तेनेदं परमे-श्वरस्य भवनं धर्म्मात्मना कारितं यद्दृष्ट्वैव समस्तलोकवपुषां नष्टं कलेः कल्मषं ॥ १६ ॥ पुष्पाशोकसमीरणेन सुरभावुत्फुल्लचूतांकुरे काले मत्तविलोलषट्पदकुले व्यारुद्ध-दिङ्मण्डले ॥ जातेपाङ्गनिरीक्षणैककथके नारीजनस्य स्मरे क्लृप्तं सद्भवनं भवस्य सुधिया तेनेह कण्वाश्रमे ॥१७॥ कालेन्दोलाकुलानां तनुवलनभरात्प्रस्फुटत्कंचुकानां कान्तानां दृश्यमाने कुचकलशतटीभाजि संभोगचिन्हे ॥ यस्मिन्प्रेयोभिमुख्य-स्थितिझटितिनमच्छस्मितार्द्धेक्षणानां भ्रूभंगैरेव रम्यो हृदयविनिहित स्सूच्यते प्रेमबन्धः ॥१८॥ मत्तद्विरेफझङ्कारसहकारविराजिताः ॥ संवीक्ष्य ककुभो वाष्पं मुंचन्ति पथिकांगनाः ॥१९॥ धूपादिगन्धदीपार्त्थं खण्डस्फुटितहेतुना ॥ ग्रामौ दत्तौ क्षयानीमिः सर्व्वार्ट्टोचोणिपद्रको ॥२०॥ पालयन्तु नृपाः सर्वे येषां भूमि रियं भवेत्॥ एवं कृते तेधर्म्मा-र्थं नूनं यान्ति शिवालयं ॥२१॥ संसारसागरं घोरं अनेन धर्म्मसेतुना ॥ तारयिष्यत्यसौ नूनं जन्यौ चात्मानमेव च ॥२२॥ यावत्ससागरां पृथ्वीं सनगां च सकाननां ॥ यावदि-न्दुस्तपेद्भानुस्तावत्कीर्तिर्भ्भविष्यति ॥ २३ ॥ संवत्सरशतै र्यातैः सपंचनवत्यर्ग्गलैः ॥ सप्तभिर्म्मालवेशानां मन्दिरं धूर्जटेः कृतं ॥ २४ ॥ अलुब्धः प्रियवादी च शिवभक्तिरतः सदा ॥ कारापकोशव्दगणः धार्मिकः शांसितव्रतः ॥ २५ ॥ दक्षः प्राज्ञो विनीतात्मा गुरुभक्तः प्रियंवदः ॥ ततो — — — — — — कश्चास्मिकायस्थो गोमिकांगजः ॥२६॥ उत्कीर्णं शिवनागेन द्वारशिवस्य सूनुना ॥ सूनुना भट्टसुरभेर्द्देवटेन श्रुतोज्वलाः ॥२७॥ श्लोका अमी कृता भक्त्या मौलिचन्द्रसुधाजुषः ॥ कृष्णसुतो गुणाढ्यश्च सूत्रधारो-त्रणणकः ॥ २८ ॥ एतत्कण्वाश्रमं ज्ञात्वा सर्व्वपापहरं शुभं ॥ कृतं हि मन्दिरं शम्भोः धर्म्मकीर्तिविवर्द्धनं ॥ २९ ॥ यतिहीनं शव्दहीनं मात्राहीनं तु यद्भवेत् ॥ तत्सर्व्वं साधुचित्तेन मर्पणीयं वुधैस्सदा. ॥ ३० ॥

तेजोभिर्द्वादशार्कं प्रतिविह ....

२ – – – ह्मेन्द्रोपेन्द्ररुद्रैः प्रलय भयभृतैरीक्षितंभ्रान्त .... गः र्ह्ला-लाटम्वः पुनातु स्मरतनुदहनेलोच ....

३ ....गा पत्नी तथाम्भोनिधेस्तत्सक्ते न विभेष्यगाधपि कथं निर्द्दग्धकामव्र-तिन् इत्थं वाक्यपरंपरा विगर्हणे............ ....

४ ....येनविहसन्नुच्चैश्चिरंवः श्रिये॥ श्रीदुर्ग्गगेणे नरेन्द्रमुख्ये सति संपादित लोकपालवृत्ते ....

५ वश्र्यर्यकलाविपश्चितीह॥ यस्मिंप्रजाः प्रमुपिताः विगतोपसर्ग्गाः स्वैः कर्म्मभि विदध-ति स्थिति ... .

६ ....विप्राः पदं विविदिशतिपर स्मरारे .... सर्व्वोपारि विस्तृथलरः सत्वप्रवृत्युज्वल ज्वालादग....

७ ....म....कवि द्विपश्च कुरुते तुल्यकु....त्वादहः यद्धैः पविशेषविग्रहरुचिर्जात कथमम् ....

८ ....

९ ....शरणागतार्त दीनार्ति.. ....

१० ....समर्थो पि॥ तस्य वरजः........ कृते पितृदेवार्चन विप्रपूजा ....

११ .... भिपूजिता सुतार्थी प्रयातः स्वगृहात्कदमी... . .. .

१२ ....ग्रहगत ... .

(काव्यमालान्तर्गत प्राचीन लेख माला पृष्ठ ५३–५४–५५).

रियासत करौलीकी प्रशस्तियां.

शेषसंग्रह नम्बर १०.

मथनदेवमहीपतेर्दानपत्रम्.

ॐ स्वस्ति ॥ परमभट्टारकमहाराजाधिराजपरमेश्वरश्रीक्षितिपालदेवपा-दानुध्यातपरमभट्टारकमहाराजाधिराजपरमेश्वरश्रीविजयपालदेवानामभिप्रवर्धमान-कल्याणविजयराज्ये संवत्सरशतेपु दशसु षोडशोत्तरकेषु माघमाससित-पक्षत्रयोदश्यां शनियुक्तायामेवं १०१६ माघसुदि १३ शनावद्य श्रीराज्यपुराव-स्थितो महाराजाधिराजपरमेश्वरश्रीमथनदेवो महाराजाधिराजश्रीसावटसूनुर्गुर्जर प्रतीहारान्वयः कुशली स्वभोगावाप्तवंशपोतकभोगसंबद्धव्याघ्रवाटकग्रामे समुपग-तान्सर्व्वानेव राजपुरुपान्नियोगस्थान्क्रमागमिकान्नियुक्तकानियुक्तकांस्तन्निवासिमह-

इण्डिअन ऐण्टिकेरी, जिल्द १४ वीं पृष्ठ १०.

शेषसंग्रह नम्बर ११.

ॐ ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॥ आसीन्निर्वृतकान्वयैकतिलकः श्रीविष्णुसूर्य्यासने श्रीमत्काम्यकगच्छतारकपथः श्वेतांशुमान्विश्रुतः ॥ श्रीमान्सूरिमहेश्वरः प्रशमभूः श्वेताम्वरग्रामणी राज्ये श्री विजयाधिराज नृपतेः श्रीश्रीपथायांपुरि ॥ ततश्च ॥ नाशं यातु शतं सहस्रसहितं संवत्सराणान्द्रुतं ॥ म्लानोभाद्रपदः सभद्र पदवीम्मासः समारोहतु ॥ सास्यैवक्षयमेतु सोमसहिता कृष्णाद्वितीयातिथिः पञ्चश्रीपरमेष्ठिनिष्ठहृदयः प्राप्तो दिवं यत्र सः ॥ अपिच ॥ कीर्त्तिर्दिक्करिकान्तदन्तमुशलः प्रोद्भूतलास्यक्रमम् क्वापि क्वापि हिमाद्रिमु ― ― महीसोत्प्रासहासस्थितिम् ॥ क्वाप्यैरावतनागराजजनितस्पर्द्धानुबन्धोद्धुरम् भ्राम्यन्ती भुवनत्रयं त्रिपथगेवाद्यापि न श्राम्यति ॥ सं० ११०० भाद्र वदि २ चन्द्रे कल्याणकदिने प्रशस्तिरियं साधुसर्वदेवेनोत्कीर्णेति.

छप्पय.

मिहर वंश मनि मौलि रान संग्राम गौनदिव ।
तासु पुत्त जगतेस ईश मेवार वंश इव ॥
सूर चन्द कुल सकल एक मत होन उमग्गिय ।
नद खारी तट निखिल करन मत्तिय डेराकिय ॥
दल संधिमुहर राजन दियउ हितदल मरहट्ठन हतै
पैं फूट मूंठ ऐसी परी फिर दक्खिन लीनी फ़तै ॥ [illegible]
कुम्भ गेह को कलह हान मेवार [illegible] हुव ।
वन माधव आंबेर भीरु ननिहाल [illegible]भुव ॥
एक एक ते अनख लाग मरहट्ठ[illegible] [illegible]ाये ।
रजपुत्तनके रुहिर विहर तन भुम्मि [illegible] ॥
वनवाय महल तालाव बिच जगनिवास लखि मोद जिय ।
पातलकुमार दे कैदपन कठिन गौन कैलास किय ॥ २ ॥
इम जयपुर आमेर वंश इतिहास खास बनि ।
कुल नारव की कथा बीच राजन अलवर वनि ॥
चढ़े हड्ड वरवीर मध्य कोटा पति मन्निय ।
जिम जालिम बरजोर आप पट्टन घर अन्निय ॥

ढुंढुंवन उदन्त तिमभुम्मि दवि कहि जद्दवकुलकी कथा ।
करोली राज थप्पन कियउ जिम अवनतिउन्नति जथा ॥ ३ ॥
पाहन लेख प्रमान कछुक संग्रह फिर किन्नो ।
बानक बीर बिनोद उक्क आनक जिम दिन्नो ॥
सज्जन आशय समुझ पित्र इच्छा प्रति पालक ।
ले शासन फतमाल कित्ति मरहट्टन कालक ॥
कबिराज दास श्यामल कियउ वानिक वीर बिनोदको ।
पूरन प्रवाह पायोदपथ मद प्रवाह बुध मोदको ॥ ४ ॥

महाराणा जगत्सिंह २.

बारहवां प्रकरण समाप्त.